मक्सिम गोर्की
वे तीन

"मक्सिम गोर्की" के छद्मनाम से पहली साहित्यिक कृतियों का प्रकाशन १८६२ में हुआ था। उस समय उनका रचयिता केवल २४ वर्ष का था। लेकिन उस समय तक वह इतना कुछ अनुभव कर चुके थे और इतना कुछ झेल चुके थे, उनके पास जीवन के अनुभवों का इतना समृद्ध भंडार जमा हो चुका था कि इस मामले में उनके पूर्वगामी और समकालीन लेखकों में शायद ही किसी की तुलना उनसे की जा सकती थी। तब से सारे संसार में सोवियत साहित्य की अनूठी प्रतिभा मक्सिम गोर्की (१८६८-१६३६) की ख्याति गूंज रही है। उनके उपन्यासों, लघु उपन्यासों, कहानियों और नाटकों का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में हुआ है।

अपने लघु उपन्यास 'वे तीन' में गोर्की ने क्रान्ति से पहले के रूस का, जीवन के अन्यायों के विरुद्ध निष्क्रिय प्रतिरोध की निरर्थकता का चित्रण किया है। इस लघु उपन्यास के तीनों नायक अलग-अलग तरीकों से अपने आपको जीवन के क्रूर बंधनों से छुड़ाना चाहते हैं। उनमें से एक, इल्या लुन्योव, इस प्रश्न का उत्तर खोजते हुए कि "जीवन कैसे बिताना चाहिये", अपराध करता है। दूसरा, नेक और भीरु याकोव फ़िलिमोनोव, जीवन से डरता है। केवल तीसरा, पावेल ग्राचोव, जो स्वतंत्र स्वभाव का है और अपने सामने कोई उद्देश्य रखता है, अंत में जीवन का सही मार्ग खोजने में सफल होता है।

मक्सिम गोर्की

वे तीन

रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

अनुवादक : मुनीश सक्सेना

М. Горький
ТРОЕ
Повесть

На языке хинди

M. Gorky
THE THREE
A novel

In Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित

Г $\frac{4702010200-063}{031(01)-89}$ без объявления

ISBN 5-05-003354-3

केर्जेनेत्स नदी के कछार के जंगलों में न जाने कितनी सूनी एकाकी क़ब्रें चारों ओर बिखरी हुई हैं ; इन क़ब्रों में बूढ़े संन्यासियों या पुराण-पंथियों की हड्डियां सड़ रही हैं, और अंतीपा नामक ऐसे ही एक संन्यासी के बारे में केर्जेनेत्स नदी के कछार के गांववाले यह क़िस्सा सुनाते हैं।

कठोर स्वभाव का धनी किसान अंतीपा लुन्योव पचास वर्ष की आयु तक इस संसार के पापमय जीवन का आनंद लेने के बाद अचानक चिंता में डूब गया, उदासीन हो गया और अपने परिवार को छोड़कर जंगल में जाकर रम गया। वहां एक गहरे खड्ड के किनारे उसने पेड़ काटकर लकड़ी के लट्ठों से एक कुटिया बनायी जिसमें वह सर्दी-गर्मी आठ साल तक रहा, वह किसी को उस कुटिया में घुसने नहीं देता था, न मित्रों को और न अपने सगे-संबंधियों को। कभी-कभी लोग जंगल में रास्ता भटककर अंतीपा की कुटिया के पास आ निकलते और उसे दरवाज़े के सामने घुटने टेककर प्रार्थना करता हुआ पाते। उसे देखकर डर लगता था : उपवास रखते-रखते और प्रार्थना करते-करते वह सूखकर बिल्कुल कांटा हो गया था और जानवरों की तरह उसका सारा शरीर बालों से ढक गया था। किसी भी मनुष्य को देखते ही वह उठ खड़ा होता और चुपचाप ज़मीन तक झुककर उसका अभिवादन करता। अगर उससे जंगल से बाहर निकलने का रास्ता पूछा जाता तो वह एक शब्द भी कहे बिना पगडंडी की ओर इशारा कर देता, एक बार फिर ज़मीन तक झुकता और अपनी कुटिया में वापस जाकर दरवाज़ा बंद कर लेता। उन आठ वर्षों के दौरान देखा तो उसे कितने ही लोगों ने था, लेकिन उसकी आवाज़ किसी ने भी नहीं सुनी थी। उसके बीवी-बच्चे उससे मिलने आते थे ; जो खाना और कपड़े-लत्ते

वे लाते थे उन्हें वह स्वीकार कर लेता था और दूसरे सभी लोगों की तरह ही उनके सामने भी ज़मीन तक झुकता था, लेकिन सभी लोगों की तरह उनसे भी एक शब्द नहीं बोलता था।

जिस साल सारे आश्रम नष्ट कर दिये गये थे उसी साल उसका देहांत हुआ था, और उसकी मृत्यु इस ढंग से हुई थी।

पुलिस का एक अफ़सर और उसके सिपाही जंगल में आये, और वहां उन्होंने अंतीपा को अपनी कुटिया में घुटने टेककर चुपचाप प्रार्थना करते हुए पाया।

"ऐ, सुनता है!" पुलिस अफ़सर ने चिल्लाकर कहा। "बाहर निकल! हम तेरा यह अड्डा गिराने जा रहे हैं!.." लेकिन अंतीपा ने उसकी बात अनसुनी कर दी।

पुलिस का अफ़सर लाख चीखा-चिल्लाया, लेकिन संन्यासी ने जवाब में एक शब्द भी नहीं कहा। पुलिस अफ़सर ने अपने सिपाहियों को अंतीपा को बाहर घसीट लाने का हुक्म दिया, लेकिन जब उसके सिपाहियों ने उस संन्यासी को उनकी उपस्थिति की ओर कोई ध्यान दिये बिना बड़ी तन्मयता से निरंतर प्रार्थना में लीन देखा तो उसकी आस्था की दृढ़ता से वे चकित रह गये और उन्होंने पुलिस अफ़सर की आज्ञा का पालन करने से इंकार कर दिया। इसके बाद पुलिस अफ़सर ने कुटिया गिरा देने का आदेश दिया। बड़ी सावधानी से कि उस बूढ़े को कोई हानि न पहुंचने पाये, वे कुटिया की छत उतारने लगे।

बूढ़े के सिर के ऊपर कुल्हाड़े चल रहे थे, तख़्ते ज़मीन पर गिरकर फटते जा रहे थे, उन आघातों की गूंज चारों ओर जंगल में फैल रही थी; इस शोर से भयभीत चिड़ियां कुटिया के ऊपर मंडलाने लगीं और पेड़ों पर पत्तियां कांपने लगीं। संन्यासी प्रार्थना में लीन रहा, मानो उसने न कुछ सुना हो और न कुछ देखा हो... काम करने-वाले दीवारों के लट्ठे उखाड़ने लगे, फिर भी संन्यासी घुटनों के बल अपनी जगह निश्चल बैठा रहा। जब आख़िरी लट्ठा उखाड़ दिया गया और ख़ुद पुलिस अफ़सर ने संन्यासी के पास आकर उसे बालों से पकड़ा तब अंतीपा ने अपनी आंखें आकाश की ओर उठाकर भगवान से धीमे स्वर में कहा:

"हे परमपिता, दयानिधान, इन्हें क्षमा कर देना!"

और फिर पीठ के बल गिरकर उसने अपने प्राण त्याग दिये। जब यह घटना हुई उस समय अंतीपा का बड़ा बेटा याकोव तेईस साल का था, और छोटा बेटा तेरेंती अठारह साल का। किशोरावस्था में ही याकोव का नाम, जो एक हट्टा-कट्टा और ख़ूबसूरत लड़का था, लोगों ने उसकी हरकतों की वजह से 'बवंडर' रख दिया था और अपने बाप के मरने के वक़्त तक वह उस इलाक़े का अव्वल नंबर का पियक्कड़ और उपद्रवी नौजवान मशहूर हो चुका था। सभी उसकी शिकायत करते थे – उसकी मां, उसके पड़ोसी, गांव का मुखिया; उसे जेल में बंद कर दिया गया, सरे-बाज़ार लाठियों से उसकी मरम्मत की गयी, उस पर किसी तरह का मुक़द्दमा चलाये बिना भी यों ही उसे मारा-पीटा गया, लेकिन इनमें से कोई भी उपाय उसके उद्दंड स्वभाव पर अंकुश लगाने में सफल नहीं हुआ और उसके लिए गांव में रहना दिन-ब-दिन ज़्यादा मुश्किल होता गया, पुराणपंथियों के बीच, उन लोगों के बीच जो बैल की तरह मेहनत करते थे, हर नयी चीज़ से दूर भागते थे, और पुराणपंथी विश्वासों का कट्टरता से पालन करते थे। याकोव तम्बाकू पीता था, वोदका पीता था, और विदेशी काट के कपड़े पहनता था। वह प्रार्थना के लिए गिरजाघर में नहीं जाता था, और जब गांव के बड़े-बूढ़े उसे बुरा-भला कहते थे और उसके बाप का हवाला देते थे, तो वह हंसकर जवाब देता:

"धीरज रखो, भलेमानसो, हर बात का एक वक़्त आता है। जब मैं जी भरकर पाप कर लूंगा, तब मैं भी प्रायश्चित करूंगा! लेकिन वह वक़्त अभी नहीं आया है। मेरे सामने मेरे बाप का हवाला मत दो – पचास साल तक उन्होंने पाप का जीवन बिताया और प्राय-श्चित तो बस आठ ही साल किया!.. मेरे पाप तो अभी चिड़िया के बच्चे के कोमल परों की तरह हैं; जब वे चिड़िया के परों की तरह बढ़ जायेंगे तब इस सूरमा के भी प्रायश्चित करने का वक़्त आयेगा।"

"विधर्मी!" गांववाले याकोव लुन्योव के बारे में कहते और उससे डरते तथा नफ़रत करते। अंतीपा के मरने के कोई दो साल बाद याकोव की शादी हो गयी। उसके बाप ने तीस साल की कठिन मेहनत से जो ज़मीन-जायदाद बनायी थी उसे उसने भोग-विलास में उड़ा दिया था और गांव में कोई उसे अपनी बेटी देने को तैयार नहीं था।

वह दूर के किसी गांव की एक सुंदर अनाथ लड़की को ब्याह लाया और शादी की धूमधाम का ख़र्च पूरा करने के लिए उसने अपने बाप के शहद की मक्खियों के छत्ते बेच दिये। उसका भाई तेरेंती विनम्र, चुप्पा, लंबे हाथोंवाला कुबड़ा था; उसने याकोव के ज़िंदगी के ढर्रे के खिलाफ़ उंगली तक नहीं उठायी। उसकी बीमार मां अपना अधिकांश समय चूल्हे के पासवाले चबूतरे पर लेटे-लेटे काट देती थी, जहां से वह अपनी भर्रायी हुई धमकी-भरी आवाज़ में उससे कहती रहती थी:

"अरे कमबख़्त!.. कम से कम अपनी आत्मा पर तो कुछ रहम कर!.. कभी तो सोच कि तू क्या कर रहा है!.."

"तुम परेशान न हो, मां," याकोव जवाब देता। "बापू भगवान के सामने मेरी पैरवी कर लेंगे।"

लगभग पूरे एक साल याकोव अपनी पत्नी के साथ सुख-चैन से रहा। यहां तक कि उसने काम भी करना शुरू कर दिया, लेकिन उसके बाद वह फिर रंगरलियां मनाने लगा, शराब पीने लगा और कई-कई महीने घर से ग़ायब रहने लगा और जब वह अपनी पत्नी के पास लौटकर आता तो चीथड़े लगाये हुए और बुरी तरह चोट खाया हुआ और भूखा... याकोव की मां मर गयी; उसके क्रिया-कर्म के बाद भोज के अवसर पर शराब के नशे में चूर याकोव ने अपने पुराने दुश्मन गांव के मुखिया की खूब धुनाई की, और इस अपराध में उसे जेल भेज दिया गया। सज़ा काटकर वह फिर गांव लौटा – बहुत चिड़चिड़ा और बदला लेने की भावना से भरा हुआ, सिर घुटा हुआ। गांववाले दिन-ब-दिन उससे ज़्यादा नफ़रत करने लगे थे और उनकी इस नफ़रत ने बढ़ते-बढ़ते उसके परिवार-वालों को भी अपनी लपेट में ले लिया था, ख़ास तौर पर अनपकारी कुबड़े तेरेंती को, जिसका गांव के लड़के-लड़कियां उसके बचपन से ही मज़ाक़ उड़ाते आये थे। गांववाले याकोव को डाकू और जेल का पंछी कहते थे और तेरेंती को दानव और जादूगर। तेरेंती उनके मज़ाक़ और उनके गाली-कोसने चुपचाप सह लेता; इसके विपरीत याकोव जवाब में उन्हें धमकियां देता:

"अच्छा, ठहर जाओ!.. मैं तुम लोगों को मज़ा चखाऊंगा!"

जब गांव में भयानक आग लगी थी तब वह चालीस साल का

था। उस पर आग लगाने का आरोप लगाया गया और साइबेरिया भेज दिया गया।

याकोव की पत्नी और उसके बेटे इल्या की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी तेरेंती पर आ पड़ी। याकोव की पत्नी उस अग्निकांड के दौरान पागल हो गयी थी; इल्या उस समय दस साल का संजीदा, हृष्ट-पुष्ट, काली आंखोंवाला लड़का था। जब भी इल्या घर से बाहर निकलता गांव के छोकरे उसका पीछा करते और उस पर पत्थर फेंकते और बड़ी उम्र के लोग जब उसे देखते तो कहते:

"अरे, शैतान के बच्चे! क़ैदी की औलाद!.. तेरा मुर्दा निकले!.."

आग लगने से पहले, तेरेंती तारकोल, सुई-धागा और इसी तरह की दूसरी छोटी-मोटी चीज़ें बेचा करता था; हाथ-पांव का कोई काम तो उसके बस का था नहीं। लेकिन उस आग में, जिसमें आधा गांव जलकर राख हो गया था, लुन्योव परिवार का घर और उसके साथ ही तेरेंती का सारा सामान भी जल गया था; इसलिए जब आग बुझी तो लुन्योव-परिवार के पास इस दुनिया में एक घोड़े और तैंतालीस रूबल के अलावा कुछ भी नहीं बचा था। तेरेंती समझ गया कि अब गांव में रहने का कोई डौल नहीं था, कि वह अब वहां रोज़ी नहीं कमा पायेगा; इसलिए उसने अपनी भाभी की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी पचास कोपेक महीने पर एक ऐसी औरत को सौंप दी जो अकेली रहती थी; अपने लिए उसने एक पुरानी गाड़ी ख़रीदी और उस पर अपने भतीजे को बिठाकर पेत्रूखा फ़िलिमोनोव नामक दूर के एक रिश्तेदार से मदद मांगने, जो शहर में एक शराबख़ाने में आबदार का काम करता था, वहां जाने का फ़ैसला किया। रात को चोरों की तरह चुपके से तेरेंती अपने बाप का घर छोड़कर गाड़ी लेकर निकल पड़ा। गाड़ी हांकते-हांकते वह अपनी बड़ी-बड़ी बछड़ों जैसी काली आंखों से बीच-बीच में पीछे मुड़कर देखता जाता था। घोड़ा धीरे-धीरे चल रहा था, लीक में गाड़ी झटके खाती हुई आगे बढ़ रही थी, और थोड़ी ही देर में इल्या पयाल में घुसकर बच्चों की गहरी नींद सो गया...

रात गये भेड़िये के हौंकने जैसी रोंगटे खड़े कर देनेवाली आवाज़ सुनकर उसकी आंख खुल गयी। चारों ओर चांदनी छिटकी हुई थी,

गाड़ी जंगल के छोर पर खड़ी थी और घोड़ा ओस में भीगी घास खाते-खाते बीच-बीच में फुफकार उठता था। दूर खेत में चीड़ का एक बड़ा-सा अकेला पेड़ इस तरह खड़ा था मानो उसे जंगल से खदेड़ दिया गया हो। इल्या की तेज़ आंखें अपने चाचा की खोज में परेशान होकर इधर-उधर घूम रही थीं; बीच-बीच में उसे घोड़े के ज़मीन पर टाप मारने की धीमी आवाज़ सुनायी दे रही थी जिसकी स्पष्टता रात की निस्तब्धता के कारण और भी बढ़ जाती थी। उसके फुफकारने की आवाज़ गहरी आहों जैसी सुनायी देती थी; बच्चे के कानों में विचित्र कांपती हुई उदास आवाज़ गूंज रही थी, जिसे सुनकर उसके रोम-रोम में डर समाया जा रहा था।

"चाचा," उसने धीरे से पुकारा।

"एह?" तेरेंती ने जवाब दिया, और हौंकने की आवाज़ अचानक बंद हो गयी।

"तुम कहां हो?"

"यहां हूं... सो जाओ..."

इल्या ने अपने चाचा को जंगल के छोर पर एक छोटी-सी टीकरी के ऊपर बैठा हुआ देखा, एक काली छाया की तरह जो किसी उखड़े हुए पेड़ का ठुंठ भी हो सकती थी।

"मुझे डर लग रहा है," लड़के ने कहा।

"डर काहे का?.. यहां हमारे अलावा कोई भी तो नहीं है..."

"कोई हौंक रहा था..."

"तुमने सपना देखा होगा..."

"नहीं, सच्ची..."

"कोई भेड़िया होगा... कहीं दूर... सो जाओ..."

लेकिन इल्या को नींद नहीं आयी। भयानक निस्तब्धता थी और हौंकने की आवाज़ उसके कानों में गूंज रही थी। उसने आंखें गड़ाकर चारों ओर नज़र दौड़ायी और देखा कि उसका चाचा दूर जंगल के बीच एक पहाड़ी पर बने पांच गुंबदोंवाले सफ़ेद गिरजाघर की ओर देख रहा है, जिसके ऊपर बड़ा-सा गोल चांद अपनी पूरी आभा से चमक रहा था। लड़के ने रोमोदानोव्स्की गिरजाघर को पहचाना; उससे दो किलोमीटर की दूरी पर उसका अपना गांव कितेज्नाया जंगल के बीच एक खड्ड के सिरे पर बसा हुआ था।

"हम अभी बहुत दूर नहीं आये हैं," उसने चिंतामग्न होकर कहा।

"क्या बात है?" चाचा ने पूछा।

"मैं कह रहा था कि हमें चलना चाहिये... कहीं वहां से कोई आ न जाये..."

इल्या ने शत्रुता के भाव से सिर हिलाकर गांव की ओर संकेत किया।

"ठहरो, अभी चलते हैं," चाचा ने कहा।

फिर चारों ओर निस्तब्धता छा गयी। इल्या गाड़ी के सामनेवाले पटरे पर टिककर उसी ओर आंखें गड़ाकर देखने लगा जिधर उसका चाचा देख रहा था। जंगल की गहरी काली परछाइयों में गांव साफ़ दिखायी नहीं दे रहा था, लेकिन इल्या को अपनी कल्पना में ऐसा लगा कि गांव उसे दिखायी दे रहा है, उसके सारे घर और लोग और सड़क के बीच में कुएं के पासवाला वह पुराना बेद का पेड़। बेद के पेड़ के नीचे उसका बाप फटी हुई क़मीज़ पहने लेटा हुआ था, उसके हाथ-पांव रस्सियों से बंधे हुए थे। उसके हाथ पीठ के पीछे ऐंठकर बांध दिये गये थे, उसका नंगा सीना आगे की ओर तना हुआ था और उसका सिर मानो बेद के पेड़ के तने से चिपका हुआ था। वह निश्चल पड़ा था जैसे मार डाला गया हो; वह भयभीत आंखों से किसानों को देख रहा था। उसके चारों ओर बहुत-से लोग इकट्ठा थे और वे सभी चिल्ला रहे थे और उसे गालियां दे रहे थे। इस बात को याद करके बच्चा उदास हो गया और कोई चीज़ जैसे उसके गले में आकर अटक गयी। उसे ऐसा लगा कि वह अभी रो देगा, लेकिन इस डर से कि कहीं उसके चाचा के विचारों में विघ्न न पड़े वह अपने सारे शरीर को कड़ा करके आंसू रोकने की कोशिश कर रहा था...

अचानक हौंकने की धीमी-धीमी आवाज़ फिर आने लगी। पहले तो एक बहुत लंबी आह सुनायी दी, फिर ऐसा लगा कि कोई सुबक-सुबककर रो रहा है और फिर यह आवाज़ निश्चित रूप से एक दर्द-भरी हुंकार में बदल गयी:

"ऊ-ऊ-ऊ-ऊ!"

बच्चा डर के मारे सिहर उठा और उसका दम घुटने लगा। आवाज़ कांपती रही और तेज़ होती गयी।

"चाचा! क्या तुम हुंकार रहे हो?.. इल्या ने चिल्लाकर पूछा।

तेरेंती ने कोई जवाब नहीं दिया, वह हिला तक नहीं। लड़का कूदकर गाड़ी से नीचे उतरा, भागकर उसके पास पहुंचा और उसके पांवों पर गिरकर उनको पकड़कर रोने लगा। अपनी सिसकियों के बीच उसने चाचा को कहते सुना:

"उन्होंने हमें घर से बेघर कर दिया। हे भगवान! अब हम कहां जायें?.."

"तुम घबराओ नहीं... मैं बड़ा हो जाऊंगा... उन सबको मज़ा चखा दूंगा!.." लड़का अपने आंसू पीते हुए बोल रहा था।

जी भरकर रो लेने के बाद वह ऊंघने लगा। चाचा ने उसे गोद में उठाकर गाड़ी में लिटा दिया और फिर अपनी जगह वापस जाकर फूट-फूटकर रोने लगा – एक लंबी, दर्द-भरी हौंकने की आवाज़, मानो कोई कुत्ते का बच्चा रो रहा हो।

...इल्या को शहर में अपना पहुंचना अच्छी तरह याद था। बहुत सबेरे जब उसकी आंख खुली थी तो उसे एक चौड़ी-सी गंदले पानी की नदी दिखायी दी थी, जिसके उस पार एक ऊंची पहाड़ी थी जिस पर जहां-तहां फलों के घने बग़ीचों से घिरे हुए लाल और हरी छतोंवाले मकान थे। एक-दूसरे के साथ सुंदर ढंग से सटे हुए ये मकान पहाड़ी की ढलान पर बढ़ते गये थे और चोटी के पास पहुंचकर पांत बांधकर बड़े गर्व से नदी के ऊपर दृष्टि जमाये तक रहे थे। छतों के ऊपर गिरजाघरों के सुनहरे गुंबद तथा उनकी सलीबें दिखायी पड़ रही थीं जो दूर तक आकाश को बेधती चली गयी थीं। सूरज अभी निकल ही रहा था; उसकी तिरछी किरनें घरों की खिड़कियों में प्रतिबिंबित हो रही थीं, और सारा शहर रंग-बिरंगी लपटों में खोकर सोने की तरह चमक रहा था।

"अरे वाह!" लड़के ने उल्लास-भरे स्वर में कहा और मूक भावातिरेक से इस भव्य दृश्य को एकटक देखने लगा। लेकिन शीघ्र ही उसके मन में एक विचलित कर देनेवाला विचार उठा: वे यहां

रहेंगे कहां – ज़ीन के पतलून पहने झबरे बालोंवाला वह छोटा-सा लड़का और उसका भोंडा-सा कुबड़ा चाचा? क्या वे लोग उन्हें उस समृद्ध, साफ़-सुथरे, सोने की तरह दमकते हुए लंबे-चौड़े शहर में घुसने देंगे? उसके मन में यह विचार आया कि उनकी गाड़ी यहां नदी के किनारे शायद इसीलिए खड़ी हुई थी कि वे ग़रीब लोगों को शहर में नहीं घुसने देते। शायद उसका चाचा इजाज़त लेने ही गया होगा।

डूबते हुए दिल से इल्या ने अपने चाचा की खोज में इधर-उधर नज़र दौड़ायी। वह चारों ओर दूसरी गाड़ियों से घिरा हुआ था; कुछ गाड़ियों पर दूध के बर्तन लदे थे, कुछ पर मुर्ग़ियों-बत्तख़ों के टापे, खीरे, प्याज़ और आलू के बोरे और रसीली बेरियों से भरे टोकरे। किसान औरतें और मर्द गाड़ियों पर या उनके पास बैठे या खड़े थे।

जैसे लोगों को इल्या अब तक देखता आया था, ये लोग वैसे नहीं थे: ये लोग ऊंचे स्वर में बोलते थे और हर शब्द का उच्चारण बहुत साफ़-साफ़ करते थे, और नीले रंग की ज़ीन के बजाय वे रंग-बिरंगे सूती कपड़े या लाल तूल के कपड़े पहने हुए थे। उनमें से लगभग सभी के पांवों में बूट थे, और कमर पर तलवार बांधे हुए जो आदमी उनके बीच घूम रहा था उससे डरना तो दूर रहा वे झुककर उसे सलाम तक नहीं करते थे। इल्या को यह बात बहुत अच्छी लगी। गाड़ी पर बैठे-बैठे धूप में चमकते हुए इस उल्लासमय दृश्य को देखकर वह उस समय के स्वप्न देखने लगा जब वह भी बूट और लाल तूल की क़मीज़ पहनेगा।

दूर किसानों के बीच उसकी नज़र तेरेंती चाचा पर पड़ी। क़दम जमाकर डग भरते हुए वह रेत की मोटी तह पर चल रहा था; उसका सिर पीछे की ओर तना हुआ था और उसके चेहरे पर हर्ष का भाव था। काफ़ी दूर से ही वह मुस्कराने लगा और इल्या को कुछ दिखाते हुए उसकी ओर उसने अपने हाथ बढ़ाये।

"भगवान हमारे साथ है, इल्या!" उसने कहा। "तनिक भी कठिनाई के बिना मैंने चाचा को खोज निकाला है। लो, तब तक यह खाओ!.."

और उसने इल्या की ओर एक बिस्कुट बढ़ा दिया।

लड़के ने लगभग श्रद्धा के भाव से बिस्कुट लेकर अपनी क़मीज़ के अंदर डाल लिया।

"क्या शहर में जाने नहीं दे रहे हैं?" उसने घबराकर पूछा।

"अभी थोड़ी देर में जाने देंगे... बस नाव आ जाये तो आगे चलें।"

"हम भी?"

"ज़रूर, हम भी!"

"अच्छा, मैं तो समझा था कि हमें जाने ही नहीं देंगे... हम लोग वहां रहेंगे कहां?"

"मालूम नहीं..."

"अगर उस बड़े-से लाल घर में रहने को मिलता तो कितना अच्छा होता..."

"वह तो फ़ौजी बैरक है... उसमें सिपाही रहते हैं..."

"अच्छा! तो फिर उसमें – दिखायी दिया? वह, वहां।"

"वाह, क्या कहने! वह तो हमारे लिए बहुत ऊंचाई पर है।"

"कोई बात नहीं है!" इल्या ने विश्वास के साथ कहा, "हम वहां तक चढ़ जायेंगे!"

जवाब में तेरेंती ने सिर्फ़ आह भरी और फिर किसी ओर चल दिया।

उन्हें शहर के छोर पर बाज़ार के चौक के पास एक बड़े-से स्लेटी रंग के घर में रहना पड़ा। उसकी चारों दीवारों से लगे हुए कितने ही सायबान बने थे – उनमें से कुछ उस घर की तुलना में नये थे और कुछ उस घर की तरह ही मैले स्लेटी रंग के थे। उस घर की सारी खिड़कियां और दरवाज़े ऐंठे हुए थे और सारे तख़्ते चरचराते थे। सायबान, चारदीवारी और फाटक सब झुककर एक-दूसरे के सहारे टिके हुए थे, और उन सबके मिलने से सड़ी हुई लकड़ी का एक बड़ा-सा ढेर बन गया था। खिड़कियों के कांच पुराने होकर धुंधले पड़ गये थे; मकान के सामने की कुछ कड़ियां बाहर की ओर उभर आयी थीं जिनकी वजह से वह घर बहुत-कुछ अपने मालिक जैसा ही लगने लगा था, जो वहां शराबख़ाना चलाता था। वह भी बूढ़ा और बदरंग था; ढीली-ढाली खालवाले चेहरे पर उसकी आंखें भी उतनी ही धुंधली थीं जितने कि खिड़कियों के कांच; चलते वक़्त उसे एक मोटी-सी छड़ी का सहारा लेना पड़ता था – शायद अपने बाहर निकले हुए पेट को साथ लेकर चलना उसे दूभर था।

जब इल्या शुरू-शुरू में इस घर में रहने आया तो उसने हर जगह चढ़कर हर चीज़ को अच्छी तरह देखा-भाला। उस घर की आश्चर्यजनक समाई देखकर वह दंग रह गया; उसमें इतने बहुत-से लोग घुस-पिलकर रहते थे कि इल्या को पूरा यक़ीन था कि उसमें जितने लोग थे उतने तो पूरे कितेज्नाया गांव में भी नहीं थे। घर की दोनों मंज़िलों पर शराबख़ाना था, जिसमें हमेशा जमघट रहता था। ऊपर अटारी पर कुछ शराबी औरतें रहती थीं। उनमें से एक काले बालों और भारी आवाज़-वाली लंबे-चौड़े डील-डौल की भीमकाय औरत थी जिसका पुकारने का नाम मुटल्ली था; जब भी इल्या की आंखें उसकी ग़ुस्सैली काली आंखों से चार होतीं तो उसकी रूह तक कांप जाती। तहख़ाने में रहते थे: अपनी अपाहिज बीवी और सात साल की बेटी के साथ पेर्फ़ीश्का मोची; दादा येरेमेई कबाड़ी; दुबली-पतली बहुत ऊंची आवाज़ में बोलनेवाली एक बूढ़ी भिखारिन जिसे लोग पोपली कहते थे; दबा-सहमा और बहुत कम बोलनेवाला एक अधेड़ उम्र का गाड़ीवान जिसका नाम मकार स्तेपानिच था। आंगन के एक कोने में लोहार की दुकान थी जिसमें सबेरे से रात तक भट्ठी सुलगती रहती थी, गाड़ियों के पहियों पर हाल चढ़ाये जाते थे, घोड़ों की नालबंदी की जाती थी, हथौड़ा चलने की आवाज़ आती रहती थी, लंबा-तगड़ा लोहार सावेल गला खोलकर गीत गाता रहता था लेकिन उसकी आवाज़ में कोई उल्लास नहीं होता था। कभी-कभी उसकी बीवी, जो सुनहरे बालों और नीली आंखोंवाली भरे बदन की छोटे क़द की औरत थी, लोहारख़ाने में आती थी। वह हमेशा अपने सिर पर एक सफ़ेद शाल ओढ़े रहती थी, और उस कालिख-भरे कोने की पृष्ठभूमि पर उसका वह सफ़ेद सिर देखने में कुछ अजीब-सा लगता था। उसकी हंसी में चांदी की खनक थीं; और उसकी हंसी के जवाब में सावेल भी घन की चोटों की तरह ठहाका मारकर हंस पड़ता था। लेकिन ज़्यादातर वह जवाब में गरज पड़ता था।

इस पुराने मकान के हर कोने में कोई न कोई इंसान ज़रूर दिखायी देता था, और बहुत सबेरे से रात देर गये तक वहां ऐसा शोर और चीख़-पुकार मची रहती थी कि सारा घर कांप उठता था, जैसे किसी पुराने ज़ंग-लगे बर्तन में कोई चीज़ खौल रही हो, उबल रही हो।

दिन ढले सब लोग अपने-अपने बिलों से रेंगकर बाहर निकल आते और आंगन में या फाटक के पास पड़ी हुई बेंच पर बैठ जाते ; पेफ़ींश्का मोची अकार्डियन बजाता, सावेल कोई गीत गुनगुनाता और मुटल्ली अगर नशे में होती तो कोई ख़ास उदास धुन छेड़ देती जिसके बोल किसी की समझ में न आते, और वह सारी देर फूट-फूटकर रोती रहती।

आंगन के किसी एक कोने में सारे बच्चे दादा येरेमेई के चारों ओर घेरा बनाकर बैठ जाते।

"दादा, कोई कहानी सुनाओ!" वे उसकी मिन्नत करते। "हमारे अच्छे दा-दा!"

बूढ़ा क्षण-भर उन लड़कों को अपनी सूजी हुई लाल आंखों से देखता, जिनमें से गंदले आंसू उसके मुंह की झुर्रियों पर बहते रहते थे, फिर उड़े हुए रंगवाली अपनी पुरानी हैट सिर पर मढ़कर वह बहुत ऊंची कांपती हुई आवाज़ में लहक-लहककर शुरू करता :

"किसी राज्य में, किसी देश में, एक विधर्मी लड़का पैदा हुआ, जिसके मां-बाप को उनके पापों की सज़ा सब कुछ जाननेवाले ईश्वर ने इस तरह दी थी..."

दादा येरेमेई जब अपना काला पोपला मुंह खोलते थे तो उनकी लंबी सफ़ेद दाढ़ी हिलने लगती थी, और साथ ही उनका सिर भी हिलता था, और आंसू एक-एक करके उनके गालों पर लुढ़कते रहते थे।

"यह विधर्मी बेटा बहुत ही ढीठ आदमी निकला," दादा कहानी सुनाते रहते। "वह हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास नहीं रखता था, न ही उसे पवित्र कुमारी मरियम से कोई लगाव था ; गिरजाघर के सामने से निकलता तो सिर तक नहीं झुकाता था और वह अपने मां-बाप का कहना कभी नहीं मानता था..."

बच्चे पूरा ध्यान लगाकर बूढ़े की महीन आवाज़ सुनते रहते और एक भी शब्द कहे बिना बैठे उसके चेहरे को घूरते रहते।

लेकिन जितने ध्यान से पेत्रूख़ा आबदार का बेटा याकोव सुनता था उतने ध्यान से कोई नहीं सुनता था। वह एक दुबला-पतला लड़का था, जिसकी नाक नुकीली थी और जिसकी पतली-सी गर्दन पर एक बड़ा-सा सिर टिका हुआ था। जब वह दौड़ता था तो उसका सिर एक

ओर से दूसरी ओर इस तरह हिलता था जैसे अभी अपनी डंठल से टूटकर गिर पड़ेगा। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी और उद्विग्न थीं। वे हर चीज़ पर से इस तरह जल्दी से गुज़र जाती थीं मानो उन पर जम जाने से डरती हों, और अगर कभी वे जम भी जाती थीं तो ऐसे अजीब ढंग से बाहर की ओर निकल आती थीं कि उसके चेहरे का भाव बिल्कुल भेड़ों जैसा लगने लगता था। अपने कोमल पीले चेहरे और साफ़-सुथरे कपड़ों की वजह से वह दूसरे लड़कों से बिल्कुल अलग लगता था। इल्या ने फ़ौरन उससे दोस्ती कर ली।

"क्या तुम्हारे गांव में बहुत-से जादूगर हैं?" याकोव ने अपनी जान-पहचान के पहले ही दिन उससे पूछा।

"काफ़ी हैं," इल्या ने जवाब दिया। "हमारा पड़ोसी ही जादूगर था।"

"लाल बालोंवाला?" याकोव ने दबी ज़बान से पूछा।

"नहीं, उसके बाल सफ़ेद थे... वे सफ़ेद बालोंवाले होते हैं।"

"सफ़ेद बालोंवाले इतने बुरे नहीं होते। उनके दिल में दया होती है। लेकिन लाल बालोंवाले – बाप रे बाप! – वे तो ख़ून चूस लेते हैं।"

वे दोनों आंगन की सबसे अच्छी और सबसे शांत जगह पर कूड़े के ढेर के पास एल्डर की झाड़ी के तले बैठे थे ; पास ही लाइम का एक बड़ा-सा पुराना पेड़ था। सायबान और मकान के बीच की संकरी-सी जगह में से दब-सिकुड़कर ही वहां तक पहुंचा जा सकता था ; यहां बाहर की कोई आवाज़ नहीं आती थी ; इस कोने से ऊपर आसमान और घर की उस दीवार के अलावा कुछ भी दिखायी नहीं देता था, जिसकी तीन खिड़कियों में से दो तख़्ते जड़कर बंद कर दी गयी थीं। लाइम की डालों पर गौरैयाएं चहकती रहती थीं और दोनों लड़के नीचे पेड़ की जड़ों के पास बैठकर चुपके-चुपके तरह-तरह की बातें करते रहते थे।

दिन भर कोई बड़ी-बड़ी और रंग-बिरंगी चीज़ों का झुंड इल्या के मुंह के सामने चीख मारकर और शोर मचाकर मंडलाता रहता था और उसे अंधा और बहरा बना देता था। पहले तो वह भौंचक्का रहने लगा था और ऐसा लगता था कि उसके होश-हवास गुम हो गये हैं। शराबख़ाने में उस मेज़ के पास खड़े-खड़े जिस पर उसका चाचा तेरेंती पसीने में नहाया हुआ बर्तन धोता रहता था, इल्या लोगों को

आते-जाते, खाना खाते, गाते, चिल्लाते, एक-दूसरे को चूमते, एक-दूसरे से लड़ते, और शराबख़ाने के धुएं-भरे वातावरण में पागलों की तरह धका-पेल करते देखता रहता था।

"अरे! बेटा!" उसका चाचा अपना कूबड़ झटककर और गिलासों को लगातार ज़ोर से खनकाकर कहता। "यहां क्या कर रहा है तू? चला जा यहां से आंगन में, नहीं तो मालिक तुझे देख लेगा – गालियां देगा!"

"अरे वाह!" इल्या मन ही मन अपना प्रिय नारा देता और वहां से बाहर चला आता। उसका सिर शराबख़ाने के कोलाहल से चकराता रहता था। आंगन के एक कोने में सावेल हथौड़ा चलाता रहता था और अपने यहां काम सीखनेवाले लड़के को झिड़कता रहता था, तहख़ाने की एक खिड़की में से पेर्फ़ीश्का मोची के लहकदार गीत की धुन हवा पर तैरती हुई आती रहती थी, अटारी पर से शराबी औरतों के चीख़ने-पुकारने और डांटने-फटकारने की आवाज़ें आती रहती थीं। लोहार का बेटा पावेल एक लाठी को घोड़ा बनाकर उस पर सवारी करता रहता था और ग़ुस्से से चिल्लाता रहता था:

"रुक जा, शैतान!"

उसके गोल शरारती चेहरे पर जहां-तहां कालिख के निशान लगे रहते थे, माथे पर गूमड़ा पड़ा रहता था, और उसकी क़मीज़ फटी रहती थी, जिसके अनगिनत छेदों में से उसके छोटे-से हृष्ट-पुष्ट शरीर की झलक दिखायी देती रहती थी। पावेल उस घर में सबसे शरारती लड़का था। वह दो बार भोंडे इल्या की पिटाई कर चुका था; और जब इल्या रोता हुआ अपने चाचा के पास गया था तो चाचा ने केवल अपने दोनों हाथ फैलाकर कहा था:

"क्या करें? सह लेना है।"

"मैं उसे बताऊंगा!" इल्या ने आंसू बहाते हुए प्रण किया था।

"ख़बरदार!" उसके चाचा ने सख़्ती से उससे कहा था। "कभी ऐसा करने की सोचना भी नहीं!"

"तो फिर वह क्यों करता है?"

"वह? वह तो यहीं का है... तुम परदेसी हो..."

इल्या पावेल से बदला चुकाने की धमकी देता रहा और इस पर

चाचा को इतना ग़ुस्सा आया था कि अपनी आदत के ख़िलाफ़ वह इल्या पर ज़ोर से चिल्लाया था। तभी इल्या के मन में धुंधला-सा विचार उठा कि वह अपने आपको "यहीं के" लड़कों के बराबर नहीं समझ सकता और इसलिए पावेल के प्रति अपनी शत्रुता की भावना को छिपाकर उसने याकोव से अपनी दोस्ती पहले से भी ज़्यादा बढ़ा ली थी।

याकोव बहुत गंभीर लड़का था। वह कभी किसी से लड़ता नहीं था और ऊंचे स्वर में भी शायद ही कभी बोलता था। वह खेल-कूद में भी कभी-कभार ही हिस्सा लेता था, हालांकि उसे उन खेलों को बयान करने का बड़ा चाव था जो अमीरों के बच्चे अपने बाग़ीचों में या शहर के पार्क में खेलते थे। याकोव ने अगर किसी और से दोस्ती की तो वह थी पेर्फ़ीश्का मोची की सात साल की बेटी माशा। वह दुबली-पतली, मैली-कुचैली लड़की थी जिसका काले घुंघराले बालों-वाला छोटा-सा सिर सुबह से रात तक आंगन में फुदकता दिखायी देता था। उसकी मां भी हमेशा वहां तहख़ाने के दरवाज़े पर बैठी रहती थी। वह लंबे क़द की औरत थी जिसकी पीठ पर एक मोटी-सी चोटी लटकती रहती थी, और वह हर वक़्त सिर झुकाये कुछ न कुछ सीती-पिरोती रहती थी। जब कभी वह अपनी छोटी बच्ची को देखने के लिए कि वह कहां है अपना सिर उठाती थी तभी इल्या को उसकी सूरत दिखायी देती थी। वह रूई की तरह फूला हुआ ठस नीला चेहरा था, मानो किसी लाश का चेहरा हो, और इस अप्रिय चेहरे पर काली-काली कोमल आंखें भी निश्चल थीं। वह कभी किसी से बोलती नहीं थी। वह अपनी नन्ही बच्ची को भी इशारे से ही बुलाती थी, बस कभी-कभार वह कर्कश, दबे स्वर में चिल्लाकर पुकारती थी:

"माशा!"

शुरू में तो वह इल्या को अच्छी लगी थी लेकिन जब उसने सुना कि दो बरस से वह चल-फिर नहीं पाती थी और जल्दी ही मर जायेगी, तो उसे उससे डर लगने लगा था।

एक दिन जब वह उसके पास से होकर गुज़र रहा था तो उसने इल्या की क़मीज़ पकड़कर सहमे हुए लड़के को अपनी ओर घसीट लिया था।

"मैं तुझसे विनती करती हूं, माशा को कोई नुक़सान न पहुंचाना," उसने कहा था।

उसकी सांस इतनी रुक-रुककर आती थी कि उसे बोलने में बहुत कठिनाई होती थी।

"उसको कोई नुक़सान न पहुंचाना, मेरे अच्छे बच्चे!.."

और इतना कहने के बाद उसके चेहरे पर दयनीय दृष्टि डालकर उसने उसे छोड़ दिया था। इल्या उस दिन से याकोव की तरह ही मोची की उस छोटी-सी बच्ची का पूरी तरह ख़्याल रखने लगा था और वह पूरी कोशिश करता था कि उस पर कोई आंच न आने पाये। इल्या इस बात से बहुत प्रभावित हुआ था कि बड़ी उम्र के आदमी ने उससे कोई उपकार करने को कहा था, क्योंकि बड़ी उम्र के ज़्यादातर लोग छोटे लड़कों को मारने-पीटने और उन पर हुक्म चलाने के अलावा कुछ नहीं करते थे। जब गाड़ीवान मकार अपना छकड़ा धोता होता था, उस वक़्त अगर कोई बच्चा उसके पास चला जाता था तो वह उसे ठोकर मारता था या उनके मुंह पर गीला कपड़ा मारता था। अगर कोई उत्सुकतावश सावेल के लोहारखाने में चला जाता था तो उसे बहुत ग़ुस्सा आता था और वह बच्चों पर कोयले के बोरे गिरा देता था। अगर कोई पेर्फ़ीश्का की खिड़की के सामने खड़े होकर उसकी रोशनी रोकता था तो जो भी चीज़ उसके हाथ में आ जाती थी वह फेंककर मारता था... कभी-कभी बड़ी उम्र के लोग बच्चों को सिर्फ़ इसलिए मार बैठते थे कि उनके पास और कुछ करने को नहीं होता था या वे उनके साथ खेलना चाहते थे। लेकिन दादा येरेमेई उन पर कभी हाथ नहीं उठाता था।

जल्दी ही इल्या यह सोचने लगा कि गांव का जीवन शहर के जीवन से अच्छा था। गांव में तो वह जहां जी चाहे घूमने-फिरने जा सकता था, लेकिन यहां चाचा ने उसे आंगन से बाहर निकलने को भी मना कर दिया था। गांव में ज़्यादा शांति थी, वहां ज़्यादा जगह थी, और सभी लोग एक ही जैसा काम करने में लगे रहते थे जो सभी की समझ में आता था। यहां तो जिसके जी में जो आता था वही वह करता था, यहां सभी लोग ग़रीब थे, अपना पेट भरने के लिए सभी किसी दूसरे के आसरे रहते थे, हमेशा उन्हें आधा पेट ही खाने को मिल पाता था।

एक दिन तेरेंती ने दोपहर का खाना खाते समय बहुत गहरी आह भरकर अपने भतीजे से कहा:

"पतझड़ के दिन आ रहे हैं, इल्या, शिकंजा पहले से भी ज़्यादा कस जायेगा... हे भगवान!.."

और वह अपने बंदगोभी के शोरबे के प्याले में उदासी के साथ घूरते हुए विचारों में खो गया। लड़का भी सोच में पड़ गया। दोनों उसी मेज़ पर खा रहे थे जिस पर कुबड़ा बर्तन धोता था।

"पेत्रूखा कह रहा था कि याकोव के साथ तुम्हें भी स्कूल जाना चाहिये। मैं भी समझता हूं कि जाना चाहिये... यहां तो पढ़ाई के बिना आदमी का काम ही नहीं चल सकता, उसी तरह जैसे उसके आंखें न हों। लेकिन स्कूल जाने के लिए जूते और कपड़े भी तो होने चाहिये। हे भगवान, हमारा एक ही तो सहारा है!.."

अपने चाचा की आहें सुनकर और उसकी आंखों में उदासी देखकर इल्या के दिल में एक टीस-सी उठी।

"चलो, यहां से चलें!.." उसने धीरे से सुझाव रखा।

"कहां?" कुबड़े ने सपाट स्वर में पूछा।

"हम चले जायेंगे – जंगल में!" इल्या ने कहा और उसमें अचानक फ़ुर्ती आ गयी। "याद है तुमने मुझे बताया था कि दादा जंगल में न जाने कितने बरस अकेले रहे थे! और हम तो दो हैं! हम पेड़ों की छाल उतारेंगे!.. लोमड़ियां और गिलहरियां मारेंगे!.. तुम्हारे पास बंदूक़ होगी और मेरे पास जाल होंगे!.. मैं चिड़ियां पकड़ूंगा – सच्ची, मैं पकड़ूंगा! वहां बेरी होगी, कुकुरमुत्ते होंगे... चलो चलें, चलेंगे न?"

चाचा ने उसे बड़े स्नेह से देखा।

"और भेड़ियों और भालुओं का क्या होगा?" उसने मुस्कराकर कहा।

"हमारे पास बंदूक़ जो होगी," इल्या ने उत्साह से कहा। "जब मैं बड़ा हो जाऊंगा तो जंगली जानवरों से नहीं डरा करूंगा!.. मैं उन्हें निहत्था ही मार डालूंगा!.. मुझे अब भी किसी से डर नहीं लगता है! यह कोई ज़िंदगी नहीं है – मैं छोटा हूं, लेकिन इतना तो मैं भी समझ सकता हूं! यहां ज़्यादा ज़ोर से पिटाई होती है। जब लोहार सिर पर मारता है तो दिन भर खोपड़ी झन्नाती है।"

"आह! बेचारा अनाथ बच्चा!" तेरेंती ने कहा, अपना चमचा फेंक दिया और जल्दी से उठकर वहां से चला गया।

उस दिन शाम को, जब इल्या आंगन में मंडराते-मंडराते थक गया तो शराबख़ाने में आकर अपने चाचा की मेज़ के पास फ़र्श पर बैठ गया। आंख लगते-लगते उसने तेरेंती को दादा येरेमेई से बातें करते सुना, जो वहां चाय पीने आया था। उस कबाड़ी की कुबड़े से दोस्ती हो गयी थी और वह हमेशा उसकी मेज़ के पास ही आकर बैठता था।

"तुम चिंता न करो," इल्या ने येरेमेई को अपनी चिचियाती आवाज़ में कहते सुना, "असल चीज़ तो बस एक है और वह है भगवान। हम सब भगवान के चाकर हैं, जैसा कि धर्मग्रंथ में लिखा है। भगवान तुम्हारे सारे दुःख देखता है। तुम्हारा भी सुख का दिन आयेगा जब वह अपने फ़रिश्ते को बुलाकर कहेगा, 'पृथ्वी पर जाओ, देवदूत, और मेरे तुच्छ सेवक तेरेंती के सारे दुःख हर लो'।"

"भगवान पर ही तो भरोसा करता हूं, दादा। और मैं कर भी क्या सकता हूं?" तेरेंती ने धीरे से कहा।

"मैं इल्या को स्कूल भेजने भर को पैसा जुटा लूंगा," येरेमेई ने ऐसी आवाज़ में कहा जिस आवाज़ में आबदार पेत्रूख़ा उस समय बोलता था जब उसे ग़ुस्सा आता था। "मैं तुम्हें पैसा क़र्ज़ दे दूंगा। जब तुम्हारे पास पैसा हो जाये तो वापस कर देना..."

"ओह, दादा!" तेरेंती ने दबी ज़बान से कहा।

"बस, तुम कुछ कहो नहीं। अभी तो तुम अपने लड़के को मुझे दे दो – उसका यहां कोई काम नहीं है!.. और वह मेरी थोड़ी-बहुत मदद कर देगा – मेरे पैसे के सूद के बदले... कभी कोई चीथड़ा ज़मीन से उठाकर दे देगा, कभी कोई हड्डी – मैं, बूढ़ा, अपनी कमर तोड़ने से बच जाऊंगा।"

"अरे, भगवान तुम्हारा भला करे!" कुबड़े ने गूंजती हुई आवाज़ में ज़ोर से कहा।

"भगवान मेरा भला करेगा और मैं तुम्हारा भला करूंगा और तुम उस लड़के का भला करोगे और लड़का भगवान का भला करेगा और यह चक्कर इसी तरह चलता रहेगा... और किसी पर किसी का कोई क़र्ज़ा नहीं होगा... अरे भाई, मैंने न जाने कितने बरस ज़िंदगी

काटी है और न जाने कितनी चीज़ें देखी हैं, लेकिन भगवान को छोड़कर कुछ भी नहीं देखा है। सब कुछ उसी का दिया है और सब कुछ उसी के पास चला जायेगा – उसी का है, लौटकर उसी को मिल जायेगा।"

इल्या उनकी बातों की हल्की-हल्की गूंज सुनते-सुनते सो गया। अगले दिन बहुत सबेरे दादा येरेमेई ने उसे जगाया और ख़ुश होकर उससे कहा:

"चल, मेरे साथ बाहर चल, इल्या! जल्दी से उठ जा, बच्चे!"

येरेमेई कबाड़ी की प्यार-भरी देखभाल में इल्या का सुखी जीवन शुरू हुआ। रोज़ बूढ़ा उसे बहुत सबेरे जगा देता और दोनों देर शाम तक चीथड़े, हड्डियां, फटा हुआ काग़ज़, पुराने लोहे के टुकड़े और चमड़े की छोटी-छोटी कतरनें जमा करते शहर में घूमते रहते। शहर बहुत बड़ा था और उसमें दिलचस्पी की असंख्य चीज़ें थीं। इसलिए पहले कुछ दिन तक तो इल्या बूढ़े की ठीक से मदद नहीं कर पाया, वह लोगों और घरों को ध्यान से देखता रहा, हर चीज़ पर आश्चर्य करता रहा और उसके बारे में सोचता रहा और बूढ़े से उनके बारे में ढेरों सवाल करता रहा... येरेमेई हर वक़्त बातें करने को तैयार रहता था। वह सिर झुकाये हुए ज़मीन पर नज़रें जमाये अपनी छड़ी की शाम से रास्ते भर ठक-ठक करता हुआ घर-घर जाता और अपनी फटी कमीज़ की आस्तीन से या मैले बोरे के छोर से अपनी बहती हुई आंखें पोंछता जाता, इसके साथ ही वह लगातार अपनी एक ही सुर पर चलनेवाली लयदार आवाज़ में अपने छोटे-से सहायक को समझाता जाता:

"यह घर सेठ प्चेलिन का है, साव्वा पेत्रोविच का। बहुत अमीर आदमी है यह साव्वा पेत्रोविच!.."

"दादा," इल्या पूछता, "लोग अमीर कैसे बन जाते हैं?"

"अपना ख़ून-पसीना एक करके, मतलब है, काम करके। वे सारा दिन काम करते हैं, सारी रात काम करते हैं और अपना पैसा बचाते हैं, और जब ढेर-सा पैसा जुड़ जाता है तो वे घर बनवा लेते हैं और घोड़े ख़रीदते हैं, अच्छे-अच्छे बर्तन और तरह-तरह की चीज़ें ख़रीदते हैं। हर चीज़ नयी। फिर कारिंदों को और चौकीदारों को

और तरह-तरह के लोगों को काम करने के लिए नौकर रख लेते हैं और ख़ुद आराम करते हैं – चैन से रहते हैं। इसे कहते हैं गाढ़े पसीने की कमाई का सुख भोगना ... हुं! लेकिन कुछ दूसरे लोग भी होते हैं जो पाप के सहारे अमीर बनते हैं। प्येलिन के बारे में लोग कहते हैं कि जब यह सेठ प्येलिन नौजवान था तब इसने एक आदमी का ख़ून कर दिया था। हो सकता है लोग जलन के मारे ऐसा कहते हों, और हो सकता है कि यह सच भी हो। बड़ा दुष्ट आदमी है यह प्येलिन, और उसकी आंखों में भय झलकता है... उसकी आंखें बेचैन रहती हैं और वह हमेशा दूसरों से आंखें चुराता रहता है ... हो सकता है प्येलिन के बारे में जो कुछ कहा जाता है सब झूठ हो ... ऐसा भी हो सकता है कि आदमी अचानक अमीर बन जाये ... उसकी क़िस्मत खुल जाये ... सच्चाई क्या है यह तो भगवान ही जानता है ... हम कुछ भी नहीं जानते!.. हम तो बस इंसान हैं! इंसान तो भगवान के बीज होते हैं ... बीज हैं बेटा, हम सभी इंसान! भगवान ने हमें धरती पर बिखेर दिया था और कहा था, 'फूलो-फलो, देखूं तो कि तुम आगे चलकर क्या निकलते हो।' यही बात है। और यह घर सबनेयेव का है, मित्री पाव्लोविच सबनेयेव का ... वह तो प्येलिन से भी ज़्यादा अमीर है। वह तो सचमुच दुष्ट आदमी है, इतना मुझे अच्छी तरह मालूम है ... मैं इसका फ़ैसला नहीं कर सकता हूं, इसका फ़ैसला तो भगवान ही कर सकता है। लेकिन इतना मुझे मालूम है अच्छी तरह ... वह हमारे गांव का मुखिया था और ऐसा चोर था वह कि बस! सब कुछ हमारा चुरा ले गया वह। भगवान मित्री पाव्लोविच की हर बात बड़े धीरज से सहता रहा, लेकिन आख़िरकार उसका धीरज भी टूट गया और उसने पलटा लेना शुरू किया। पहले तो वह बहरा हो गया, यही मित्री पाव्लोविच, फिर उसके बेटे को घोड़ों ने मार डाला ... और अभी कुछ दिन हुए उसकी बेटी घर से भाग गयी ..."

इल्या उस बूढ़े का एक-एक शब्द घूंट-घूंट करके पीता रहता, विशाल घरों को देखता रहता और बीच-बीच में कहता:

"काश मैं इस घर को अंदर से बस एक बार झांककर देख पाता!.."

"देखोगे! जी लगाकर पढ़ो, जब तुम बड़े हो जाओगे तो हर चीज़ देखोगे! हो सकता है कि तुम ख़ुद अमीर बन जाओ ... तुम्हारा

एक ही काम है, जीना ... आह-आह! अब मुझी को ले लो – मैं इतने दिन जिया हूं और इतनी चीज़ें देखी हैं कि मेरी आंखें थककर चूर हो गयी हैं ... देखते हो, मैं इन आंसुओं का बहना नहीं रोक सकता और इसीलिए मैं इतना दुबला और कमज़ोर हूं ... इन आंसुओं के साथ मेरा सारा सत्त बह जाता है।"

जब बूढ़ा भगवान के बारे में बातें करता था तो इल्या को बहुत मज़ा आता था, वह इतने प्यार से और इतनी गहरी आस्था से ये बातें करता था। उसके कोमल शब्द बच्चे के मन में इस पक्की आशा की ज्योति जगा देते थे कि आगे चलकर बेहतर दिन आनेवाले हैं। वह अधिक उल्लासित हो उठा और शहर में रहने के पहले दिनों के मुक़ाबले में अब वह अपने आपको ज़्यादा बच्चा महसूस करने लगा।

वह बड़ी उत्सुकता से बूढ़े को कूड़े के ढेरों को कुरेदने में मदद देता। कचरे को उलट-पुलटकर उसमें से चीज़ें ढूंढ निकालने में एक अजीब ही आकर्षण था, और जब भी कोई ख़ास मूल्यवान चीज हाथ लग जाती तो बूढ़े के चेहरे पर ख़ुशी देखकर उसे बहुत आनंद मिलता था। एक दिन इल्या को बड़ा-सा चांदी का चम्मच मिल गया। इसके बदले में बूढ़े ने उसे आधा पौंड पेपरमिंट केक ख़रीद दिया। दूसरी बार उसने एक फफूंदी लगा हुआ बटुआ खोद निकाला जिसमें एक रूबल से ज़्यादा की रक़म निकली। कभी उन्हें छुरी-कांटे, ढिबरी-पेंच, पीतल की टूटी हुई चीज़ें मिल जातीं, और एक बार तो इल्या ने एक खड्ड में से, जहां शहर के लोग कूड़ा डालते थे, एक भारी-सा पीतल का शमादान खोद निकाला। जब भी इल्या कोई मूल्यवान चीज़ ढूंढ लेता था तो बूढ़ा उसे कोई मिठाई उपहार में ख़रीद देता था।

"देखो, दादा!" इसी तरह की कोई चीज़ ढूंढकर इल्या ख़ुशी से चिल्ला पड़ता। "यह देखा? अरे वाह!"

"चिल्लाओ नहीं! चिल्लाओ नहीं! हे भगवान!" बूढ़ा घबराकर अपने चारों ओर नज़र डालता और उससे गिड़गिड़ाकर कहता।

जब भी कोई असाधारण चीज़ मिल जाती तो वह हमेशा डर जाता, और जल्दी से उसे बच्चे के हाथों से झपटकर अपने बड़े-से बोरे में डाल लेता।

"अपना मुंह बंद रखना सीखो," वह बड़ी नरमी से कहता, और उसकी सूजी हुई आंखों से आंसू बहते रहते।

उसने इल्या को एक छोटा बोरा और शाम लगी हुई छड़ी दे दी थी। लड़के को इस साज़-सामान पर बड़ा गर्व था। वह अपने बोरे में तरह-तरह के डिब्बे, टूटे हुए खिलौने, चीनी के टूटे हुए बर्तनों के टुकड़े जमा करता रहता था; जब वह अपनी पीठ पर उनका बोझ महसूस करता और चलते वक़्त उनकी ख़ड़ख़ड़ाहट सुनता तो उसे बहुत अच्छा लगता। दादा येरेमेई ने उसे सिखा दिया था कि कौन-कौन-सी चीज़ें चुनी जायें।

"ये-ये चीज़ें चुनकर घर लाया करो और उन्हें बच्चों को दे दिया करो। वे बहुत ख़ुश होंगे इन चीज़ों से। दूसरों को ख़ुश रखना बड़ी अच्छी बात है। भगवान हमसे यही चाहता है... ख़ुशी की ज़रूरत सभी लोगों को है पर इस दुनिया में इस चीज़ की कितनी कमी है! इतनी कमी है कि कुछ लोग तो जिये चले जाते हैं और उन्हें उम्र भर इसका स्वाद नसीब नहीं होता! एक बार भी नहीं – ज़रा सोचो!"

इल्या को आंगन-आंगन जाने के बजाय शहर के घूरे को कुरेदना ज़्यादा पसंद था। वहां येरेमेई जैसे दो-तीन और कबाड़ियों के अलावा कभी कोई नहीं होता था, इसलिए चोरों की तरह चौकन्ने रहने की कोई ज़रूरत नहीं होती थी कि हाथ में झाड़ू लेकर अहाते का चौकी-दार कहीं न आ जाये और गालियां देकर भगा न दे।

रोज़ लगभग दो घंटे तक घूरे को कुरेदने के बाद येरेमेई का यह कहना एक नियम-सा था:

"बस, बहुत हो गया, इल्या! अब चलकर थोड़ा सुस्ता लें और कुछ खा-पी लें!"

और यह कहकर वह अपनी क़मीज़ के अंदर से एक रोटी निकालता और अपने सीने पर सलीब का निशान बनाकर रोटी के दो टुकड़े कर लेता। रोटी खा लेने के बाद वे दोनों खड्ड के किनारे लेटकर कोई आधा घंटा आराम करते। यह खड्ड नदी के किनारे तक जाता था और उन्हें वहां से लेटे-लेटे यह नदी दिखायी देती थी। वह चौड़ी-सी रुपहले नीले रंग की नदी लहरें मारती हुई खड्ड के साथ-साथ धीरे-धीरे बहती जाती थी, और जब इल्या नज़र जमाये उसे देखता रहता था तो उसका जी

नदी के पानी पर तैरने को चाहता था। नदी के पार दूर तक घास के मैदान फैले हुए थे जिनमें ऊंचे-ऊंचे भूसे के ढेर भूरी-भूरी मीनारों की तरह खड़े थे, और बहुत दूर, धरती के बिल्कुल छोर पर, जंगल की काली, कटी-फटी दीवार जाकर नीले आकाश में लीन हो गयी थी। घास के मैदान में शांति रहती थी और यह आभास होता था कि वहां की हवा स्वच्छ और शुद्ध और सुगंधित होगी... यहां तो सड़ते हुए कचरे की दम घोट देनेवाली बदबू थी; वह इल्या के सीने पर एक बोझ बनी रहती थी, उससे उसकी नाक में चरपराहट होती थी और दादा येरेमेई की तरह उसकी आंखों से भी पानी बहने लगता था।

पीठ के बल लेटे-लेटे वह आसमान के नीले गुंबद को टकटकी बांधे देखता रहता था और उसके शिखर को खोजने का व्यर्थ प्रयास करता रहता था। उस पर उदासी और नींद छाने लगती थी और उसके दिमाग़ के परदे पर धुंधली-धुंधली तस्वीरें गुज़रने लगती थीं। उसे लगता था कि कोई पारदर्शी विशाल नरम काया, जिसके आयाम दृष्टि की पकड़ में नहीं आते थे और जिससे हल्की-हल्की सुखद आंच-सी निकलती थी, जिसमें से एक झीनी-झीनी आभा प्रसारित होती थी, वहां दूर नीलिमा में तैर रही थी, एक ऐसी काया जो कठोर भी थी और दयालु भी; और ऐसा लगता था कि वह और दादा येरेमेई और सारा संसार इसी काया की ओर बहते चले जा रहे हैं, निरंतर ऊपर की ओर सीमा से मुक्त व्योम में,उस नीलवर्ण झिलमिलाहट में, शुचिता तथा ज्योति के उस अनंत विस्तार में... और उसके मन पर एक मधुर शांत उल्लास छा जाता था।

शाम को घर लौटकर जब वह आंगन में पांव रखता तो एक ऐसे आदमी के गर्वाभास के साथ जो दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद आराम करने घर लौटा हो और जिसके पास उस तरह के बेकार के कामों में नष्ट करने के लिए कोई समय न हो जिनमें दूसरे बच्चे अपना समय गंवाते थे। उसकी गंभीर मुद्रा और उसकी पीठ पर लदे हुए बोरे को देखकर, जिसमें हमेशा तरह-तरह की दिलचस्प चीज़ें होती थीं, दूसरे बच्चों के मन में उसके प्रति सम्मान की भावना जागृत होती थी।

दादा येरेमेई बच्चों को देखकर मुस्कराता और हमेशा इस तरह की कोई मज़ाक़िया बात कहता, जैसे:

"लो, आ गया ऊंटों का क़ाफ़िला अपनी पीठ पर गट्ठर और ठसा-ठस भरे हुए बोरे लादे ... इल्या! जाकर अपना थोबड़ा धो ले और आकर मेरे साथ शराबख़ाने में चाय पी ले! .."

इल्या लापरवाही से इतराता हुआ तहख़ाने में अपने यहां चला जाता और लड़कों का झुंड झिझकते हुए उसके बोरे को टटोलता हुआ उसके पीछे-पीछे आता। सिर्फ़ पावेल हमेशा आकर उसके रास्ते में खड़ा हो जाता था।

"अच्छा, कबाड़ी, हमें दिखा तो क्या लाया है तू!" वह चिढ़ाते हुए चिल्लाकर कहता।

"सबर करो!" इल्या उसकी बात बीच में ही काटकर गंभीरता से कहता। " चाय पी लूं तो दिखाऊंगा ..."

शराबख़ाने में उसका चाचा बड़ी स्नेह-भरी मुस्कराहट से उसका स्वागत करता।

"तो कमाऊ पूत घर आ गया? कैसा बेचारा बच्चा है मेरा! थक गया?"

जब उसका चाचा उसे कमाऊ पूत कहता तो इल्या को बहुत अच्छा लगता, लेकिन अकेले उसका चाचा ही उसे यह नहीं कहता था। एक दिन पावेल ने हमेशा की तरह कोई शरारत की तो सावेल ने उसे पकड़कर उसका सिर अपने दोनों घुटनों के बीच दबोच लिया और रस्सी से उसकी धुनाई करने लगा।

"अब कभी शरारत न करना, कुत्ते का पिल्ला, हद हो गयी शरारत की," उसने चिल्लाकर कहा। "यह ले ... और ले ... और ले! तेरी उमर के दूसरे लड़के अपनी रोज़ी कमाते हैं, और तू बस अपना पेट भर लेता है और कपड़े फाड़ता रहता है!"

पोवेल पांव पटक-पटककर तड़पता रहा और गला फाड़कर चिल्लाता रहा, लेकिन रस्सी बड़ी बेरहमी से उसकी पीठ पर पड़ती रही। इल्या को अपने दुश्मन की दर्दनाक और क्रोध-भरी चीख़-पुकार सुनकर अजीब-सा संतोष हुआ, लेकिन लोहार के शब्दों से उसके मन में अपनी श्रेष्ठता का आभास पैदा हुआ और तभी उसे लड़के पर तरस आया।

"बस करो, चाचा सावेल!" वह अचानक पुकार उठा।

लोहार एक आख़िरी कोड़ा रसीद करके इल्या की ओर मुड़ा और चिढ़कर बोला:

"तू बीच में न पड़! बड़ा आया वकील बनकर! तू भी मेरे हाथ की एकाध खाना चाहता है?" इतना कहकर उसने पावेल को एक ओर ढकेल दिया और लोहारख़ाने में चला गया। पावेल उठा और अंधों की तरह लड़खड़ाता हुआ आंगन के एक अंधेरे कोने में चला गया। इल्या उसके पीछे-पीछे गया, उसके मन में दया उमड़ी पड़ रही थी। पावेल कोने में जाकर घुटनों के बल बैठ गया और अपना सिर बाड़ से टिकाकर दोनों हाथ कूल्हों पर रखकर पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से रोने लगा। इल्या अपने पराजित शत्रु से कोई स्नेहपूर्ण बात कहना चाहता था, लेकिन उसके मुंह से केवल ये शब्द निकल सके:

"बहुत दर्द होता है?"

"चल हट यहां से!" पावेल चिल्लाया।

इस तरह झिड़क दिये जाने पर उसे बहुत बुरा लगा। और उपदेश देने के भाव से उसने अपनी बात शुरू की:

"तू हमेशा दूसरों को मारता-पीटता रहता है – अब तुझे भी ..."

लेकिन वह अपनी बात अभी पूरी भी नहीं कर पाया था कि पावेल उस पर झपटा और उसे ज़मीन पर पटक दिया। इल्या को भी ताव आ गया और दोनों गुत्थमगुत्था होकर गेंद की तरह ज़मीन पर लुढ़कने लगे। पावेल ने उसे काटा और खरोंचा; इल्या उसके बाल पकड़कर उसका सिर बार-बार ज़मीन से इतनी बुरी तरह टकराता रहा कि आख़िरकार पावेल चिल्ला उठा:

"बस, अब जाने दे!"

"देखा?" इल्या ने उठते हुए विजयगर्व से कहा। "मैं तुझसे तगड़ा हूं। ख़बरदार, जो अब कभी मुझे हाथ लगाया!"

आस्तीन से अपने चेहरे का ख़ून पोंछते हुए वह वहां से चल दिया। अपनी त्योरियां चढ़ाये वह मनहूस लोहार आंगन के बीच में खड़ा था। उसे देखकर इल्या डर से कांपते हुए रुक गया; उसे यक़ीन था कि सावेल अब उसकी पिटाई करेगा कि उसने उसके बेटे पर हाथ क्यों उठाया। लेकिन लोहार केवल अपने कंधे बिचकाकर बोला:

"ऐंठ क्या रहा है? पहले कभी मुझे देखा नहीं है क्या? अपने रास्ते लग!"

उस दिन शाम को सावेल ने इल्या को फाटक के बाहर पकड़ लिया और उसके सिर पर उंगली से हल्का-सा टहोका मारा।

"धंधा कैसा चल रहा है, कबाड़ी?" उसने उदासी-भरी मुस्कराहट के साथ पूछा।

इल्या बेहद ख़ुश होकर हंस पड़ा: यह सच्चा सुख था। वह भयानक लोहार, जो अहाते भर में सबसे तगड़ा आदमी था, जिससे सभी डरते थे और जिसकी सभी इज़्ज़त करते थे, उसके साथ हंसी-मज़ाक़ कर रहा था! सावेल ने अपनी फ़ौलादी उंगलियों से इल्या का कंधा पकड़ लिया और उसके मुंह से ये शब्द सुनकर इल्या की ख़ुशी और बढ़ गयी:

"ओह हो! तू भी अच्छा ख़ासा दमदार लौंडा है! आसानी से घिसने-टूटनेवाला नहीं है तू। जब तू बड़ा हो जायेगा तो मैं तुझे अपने लोहारख़ाने में काम पर लगा लूंगा।"

इल्या ने लोहार की भारी-भरकम टांग पकड़ ली और कसकर उससे चिपट गया। सावेल ने उस छोटे-से लड़के के दिल का हर्षातिरेक से धड़कना ज़रूर महसूस किया होगा क्योंकि उसने अपना भारी हाथ उसके सिर पर रख दिया और क्षण भर चुप रहकर फिर भारी आवाज़ में कहा:

"बेचारा, अनाथ बच्चा!.. चल, बस अब छोड़ दे!.."

उस दिन शाम को जब इल्या अपना रोज़ का काम करने लगा – दिन-भर की बटोरी हुई दिलचस्प चीज़ें बांटने का काम–तो वह ख़ुशी से फूला नहीं समा रहा था। बच्चे मैले बोरे पर ललचायी हुई नज़रें जमाकर बैठ गये। एक-एक करके इल्या ने बोरे में से सूती कपड़े के टुकड़े, लकड़ी का एक सिपाही जिसका रंग मुसीबतें झेलते-झेलते फीका पड़ गया था, जूते की पालिश की एक ख़ाली डिबिया, बालों के तेल का ख़ाली डिब्बा और चाय की एक चिटकी हुई प्याली निकाली जिसका हैंडिल टूट गया था।

"यह मेरा है!" – "नहीं मेरा!" उत्कंठित स्वर चिल्ला उठे, और छोटे-छोटे मैले हाथ उन बहुमूल्य चीज़ों की तरफ़ लपके।

"ठहरो! छीना-झपटी मत करो!" इल्या ने आदेश दिया। "अगर सारी चीज़ों पर एक साथ झपट्टा मारोगे तो खेल ही क्या होगा? देखो, दुकान खुली है! कपड़े का यह टुकड़ा किसे चाहिये? बेहतरीन छींटदार कपड़ा! पचास कोपेक! ख़रीद ले, माशा!.."

"ख़रीद लिया!" माशा की ओर से याकोव ने जवाब दिया और जेब से चीनी के बर्तन का वह टूटा हुआ टुकड़ा निकाला जो उसने इसी मौक़े के लिए रख छोड़ा था और उसे व्यापारी के हाथ में बढ़ा दिया।

"यह तो कोई बात न हुई," इल्या ने वह टुकड़ा वापस करते हुए कहा। "तुझे मुझसे सौदा करना पड़ेगा, शैतान। तू कभी सौदा नहीं करता!.. ऐसे कौन माल ख़रीदता है?"

"मैं भूल गया था," याकोव ने माफ़ी मांगते हुए कहा।

और फिर ज़ोरदार सौदेबाज़ी शुरू हुई। इधर गाहक और व्यापारी अपने काम में खोये हुए थे और उधर पावेल को जो भी चीज़ अच्छी लगी उसे वह चुराकर भाग गया और उछलते और नाचते हुए चिढ़ाने के अंदाज़ में बोला:

"यह देखो, यह मैंने चुरा लिया! देखो, मेरे पास क्या है! और किसी ने मुझे चुराते देखा तक नहीं! मूरख! शैतान!"

उसके इस हथकंडे पर वे आगबबूला हो उठे। छोटे बच्चे तो रोने-चिल्लाने लगे और इल्या और याकोव ने चोर को आंगन में चारों ओर दौड़ाना शुरू किया। लेकिन शायद ही कभी वे उसे पकड़ पाते थे। धीरे-धीरे वे उसके इन हथकंडों के आदी हो गये थे और उन्हें उससे किसी अच्छी बात की उम्मीद ही नहीं रह गयी थी। वे सभी उससे सख़्त नफ़रत करने लगे थे और कोई उसके साथ खेलता नहीं था। पावेल सबसे अलग-थलग रहता था, लेकिन वह हमेशा किसी न किसी को कोई नुक़सान पहुंचाने की घात में रहता था। बड़े सिरवाला याकोव मोची की घुंघराले बालोंवाली छोटी-सी बेटी का उसी तरह ध्यान रखता था जैसे कोई धाय बच्चे का रखती है। वह लड़की उसकी सेवाओं को अपना हक़ समझकर स्वीकार करती थी और भले ही वह कभी-कभी उसके साथ प्यार का बर्ताव करती हो लेकिन अकसर उसे थप्पड़ भी मार देती थी और खरोंच भी लेती थी। इल्या के साथ याकोव की दोस्ती पहले से भी ज़्यादा गहरी हो गयी थी और वह इल्या को अपना कोई न कोई विचित्र सपना सुनाता रहता था:

"...समझ लो मेरे पास ढेरों पैसा हो, सारे रूबल ही रूबल – बड़ा-सा बोरा भरके! और मैं उसे लादकर जंगल के पार ले जा रहा हूं। अचानक – डाकू! चाकू लिये हुए! भला मुझे डर नहीं लगेगा, क्या? मैं भागने लगता हूं, और अचानक मुझे ऐसा लगता है कि बोरे के अंदर कोई चीज़ हिल-डुल रही है... मैं बोरा फेंक देता हूं और उसमें से निकलता क्या है, ढेर सारी चिड़ियां – फुर्र, फुर्र! – इतनी कि गिने न गिनी जायें! वे मुझे झपटकर उठा लेती हैं और लेकर उड़ जाती हैं – दूर, बहुत दूर आसमान में!.."

वह अचानक रुक गया, उसकी आंखें बाहर उभर आयीं और वह भीगी बिल्ली जैसी सूरत बनाये बैठा घूरता रहा।

"फिर?" इल्या ने उसे बढ़ावा दिया; वह क़िस्से का अंत सुनने को बेचैन था।

"मैं उड़ गया, हमेशा के लिए..." याकोव ने सपने में खोये-खोये अपनी बात पूरी कर दी।

"कहां?"

"हमेशा के लिए..."

"छिः!" इल्या ने तिरस्कार-भरी निराशा के साथ कहा। "तुम्हें कुछ नहीं याद है!.."

बूढ़ा येरेमेई शराबख़ाने में से निकलता और हाथ उठाकर आंखों पर उसका छज्जा बनाये चारों ओर देखने लगता।

"इल्या! तू कहां है? सोने का वक़्त हो गया!" वह पुकारकर कहता।

इल्या आज्ञाकारी भाव से बूढ़े के पीछे चल देता और भूसे के बोरे पर लेट जाता, जो उसके बिस्तर का काम देता था। उस बोरे पर लेट-कर वह सुनहरे सपने देखता था और उस कबाड़ी के साथ उसका जीवन सुख से बीत रहा था। लेकिन यह हालत बहुत दिन नहीं रही।

दादा येरेमेई ने इल्या को बूट जूते, एक लंबा भारी कोट और एक टोपी ख़रीद दी और उसे स्कूल भेज दिया गया। वह भय और कौतूहल के साथ स्कूल के लिए रवाना हुआ और लौटकर आया तो उदास था, उसका दिल दुखा हुआ था और आंखों में आंसू डबडबा रहे

थे। लड़कों ने उसे फ़ौरन दादा येरेमेई का हाथ बंटानेवाले के रूप में पहचान लिया था और उसे चिढ़ाते हुए वे एक साथ कहते थे:

"कबाड़ी! गंदा भंगी कहीं का!"

कुछ ने उसके चुटकियां काटी थीं, कुछ ने जीभ निकालकर उसे चिढ़ाया था, और एक लड़के ने तो पास आकर उसे सूंघा तक था और मुंह बनाकर पीठ फेर ली थी।

"उफ़, कितनी बदबू आती है!" उसने चिल्लाकर कहा था।

"वे आख़िर मुझे चिढ़ाते क्यों हैं?" इल्या ने अपने चाचा से पूछा। "क्या फटे-पुराने कपड़े जमा करने में कोई शर्म की बात है?"

"कोई नहीं, बेटा," तेरेंती ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा और अपना चेहरा भतीजे की कुछ खोजती हुई सवालिया नज़रों से छिपा लिया। "बस उनकी शरारत है... धीरज रखो!..कुछ दिन में आदत पड़ जायेगी..."

"और वे लोग मेरे जूतों और मेरे कोट का भी मज़ाक़ उड़ाते हैं!.. कहते हैं कि वे मेरे नहीं हैं, घूरे में से निकालकर लाये गये हैं!.."

दादा येरेमेई ने आंख मारकर उसे दिलासा दिया।

"धीरज रखो, बेटा," उसने कहा, "भगवान तुम्हारा पूरा करेगा! उसके अलावा किसी की कोई हैसियत नहीं है!"

भगवान की बातें करके बूढ़े को ऐसा अपार हर्ष होता था और उसके न्याय में उसे इतना विश्वास था मानो उसे मालूम हो कि भगवान क्या सोचता है और उसके क्या-क्या इरादे हैं। उसकी बातें सुनकर बच्चे के चोट खाये हुए मन को उस समय तो शांति मिल जाती, लेकिन दूसरे दिन यह भावना और भी ज़ोर से उभर आती। इल्या अपने आपको काम करनेवाला आदमी, एक महत्त्वपूर्ण आदमी समझने का आदी हो चुका था; सावेल लोहार तक उसके साथ भलमन-साहत से बातें करता था और ये स्कूली लड़के उसका मज़ाक़ उड़ाते थे, उसे चिढ़ाते थे। यह बात उसकी बर्दाश्त के बाहर थी। उसके मन पर स्कूल की जो पहली छाप पड़ी थी उसकी कटुता बढ़ती ही गयी, और दिन-ब-दिन वह उसके दिल में और गहरी पैठती गयी। स्कूल जाना उसके लिए एक कष्टदायक कर्त्तव्य बन गया। अध्यापक ने फ़ौरन पहचान लिया कि वह तेज़ लड़का है और वह दूसरों के सामने

उसे आदर्श के रूप में रखने लगा। इसकी वजह से दूसरे बच्चे उसे और भी नापसंद करने लगे। आगे की बेंच पर बैठकर वह महसूस करता था कि पीछे दुश्मन हैं जो हमेशा उसे अपनी आंखों के सामने पाकर उसकी हंसी उड़ाने के लिए कोई न कोई सूक्ष्म और सटीक बात निकालते थे और उसकी हंसी उड़ाते थे।

याकोव भी उसी स्कूल में जाता था और उसे भी लड़के उतना ही नापसंद करते थे; वे उसे दुंबा कहते थे। उसे लगातार सज़ा मिलती रहती थी, क्योंकि वह फिसड्डी लड़का था और उसका ध्यान कहीं और रहता था, लेकिन उसे सज़ा मिलने की कोई परवाह नहीं थी। सच तो यह है कि उसके चारों ओर जो कुछ होता रहता था वह उसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं देता था। घर पर और स्कूल में दोनों ही जगह वह सबसे अलग-थलग रहकर अपनी ज़िंदगी बिताता था, और शायद ही कोई दिन ऐसा होता था जब वह इल्या से कोई बेढब सवाल पूछकर उसे आश्चर्य में न डाल देता हो।

"इल्या!" वह कहता, "लोग इतनी छोटी-छोटी आंखों से सब कुछ देख कैसे लेते हैं? पूरा शहर देख लेते हैं। या इस सड़क को ही ले लो – यह पूरी की पूरी हमारी आंखों में कैसे समा जाती है?"

शुरू-शुरू में तो इल्या इन सवालों की ओर भरपूर ध्यान देता था, लेकिन धीरे-धीरे उसे इन सवालों से उलझन होने लगी थी, क्योंकि उनकी वजह से उसका ध्यान उन बातों की ओर से भटकने लगा था जो उसके लिए महत्त्वहीन नहीं थीं। इस तरह की बहुत-सी बातें थीं, और लड़के ने जल्दी ही और सूक्ष्मतया उन्हें देखना सीख लिया था।

एक दिन स्कूल से लौटकर उसने येरेमेई से व्यंग-भरी मुस्कराहट के साथ कहा:

"मास्टर साहब? हुंह! अपने हित की बात खूब पहचानते हैं वह... कल दुकानदार मलाफ़ेयेव के बेटे ने खिड़की का कांच तोड़ दिया था तो उन्होंने उसे बस हल्की-सी डांट बताकर छोड़ दिया, और आज उन्होंने अपने पैसों से कांच लगवा दिया..."

"देखो, कितने दयालु हैं वह!" येरेमेई ने सराहना करते हुए कहा।

"दयालु," इल्या ने तिरस्कार से कहा। "जब वान्का क्लुचर्योव ने कांच तोड़ दिया था तो उन्होंने उसे खाने को नहीं दिया था और

उसके बाप को बुलवाकर कहा था, 'कांच के लिए चालीस कोपेक देना!' और वान्का के बाप ने उसे मारा भी था।"

"ऐसी बातों को अनदेखा कर दिया करो, इल्या," बूढ़े ने बेचैनी से आंखें झपकाते हुए उसे सलाह दी थी। "अपने मन को समझा लिया करो कि इनसे तुम्हें कोई सरोकार नहीं है। क्या उचित है और क्या अनुचित, यह फ़ैसला करना भगवान का काम है, हमारा नहीं! हम तो इस काम को कर नहीं सकते। उसके पास सच्ची कसौटी है!.. कितने बरस मैंने इस दुनिया में बिताये हैं, और कितना अन्याय मैंने देखा है! अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता रत्ती-भर भी न्याय नहीं है!.. फिर भी मुझे देखो, अस्सी बरस का होने को आया; ज़रूर इतने लंबे अरसे में कहीं न कहीं तो न्याय से मेरा भी पाला पड़ा होगा। लेकिन मैंने कभी देखा नहीं, कभी यह जाना नहीं कि उसका मज़ा कैसा होता है।"

"इसमें जानने की क्या बात है?" विश्वास न करते हुए इल्या बोला। "अगर इससे चालीस कोपेक लिये हैं तो उससे भी लो। न्याय तो यह है!"

लेकिन बूढ़ा उससे सहमत नहीं हुआ। वह बड़ी देर तक यही बातें करता रहा कि इंसान तो अंधे होते हैं और वे एक-दूसरे के बारे में कोई फ़ैसला नहीं कर सकते। न्याय तो भगवान ही कर सकता है। इल्या बड़े ध्यान से सुनता रहा, लेकिन उसके चेहरे पर उदासी और गहरी होती गयी और उसकी आंखें और निस्तेज होती गयीं।

"भगवान फ़ैसला कब करेगा?" उसने अचानक बूढ़े से पूछा।

"यह तो कोई नहीं जानता। जब वह घड़ी आयेगी तो वह आसमान से उतरकर नीचे आयेगा और ज़िंदा-मुर्दा सभी का फ़ैसला करेगा... लेकिन कब, यह कोई नहीं जानता... तुम कभी मेरे साथ संध्या की प्रार्थना में चलना, बेटा।"

अगले शनिवार को येरेमेई के साथ इल्या भी गिरजाघर गया। वे दो दरवाज़ों के बीच ड्योढ़ी में भिखारियों के साथ खड़े थे। जब भी सड़क की तरफ़वाला दरवाज़ा खुलता था तो इल्या ठंडी हवा के थपेड़े की चपेट में आ जाता था। उसके पांव जम जाते थे और गर्म रखने के लिए वह उन्हें पत्थर के फ़र्श पर पटकता था। कांच के दरवाज़े

के पार उसे ज्योतिर्मय आकृतियां बनाती हुई मोमबत्तियों की झिलमिलाती हुई, कांप-कांपकर जलती हुई सुनहरी लवें दिखायी दे रही थीं, जिनकी रोशनी पादरी के चोग़े की कशीदाकारी पर, लोगों के काले सिरों पर, देव-प्रतिमाओं पर और देव-प्रतिमाओं की दीवार की ख़ूबसूरत नक़्क़ाशी पर पड़कर उन्हें आलोकित कर रही थी।

बाहर की अपेक्षा यहां गिरजाघर में लोग अधिक कृपालु और भीरु लग रहे थे। उनकी शांत मौन आकृतियों को स्पर्श करती हुई सुनहरी जगमगाहट में वे अधिक आकर्षक भी लग रहे थे। जब भी गिरजाघर के अंदर जाने का दरवाज़ा खुलता गीत की एक उष्ण सुगंधित स्वर-लहरी तैरती हुई बाहर उसके पास तक आती। वह लहर लड़के को मानो बड़ी नरमी से अपनी लपेट में लेती जा रही थी और वह खुश होकर उसे पी रहा था। उसे यहां दादा येरेमेई के पास खड़े होकर उसे प्रार्थना के शब्द बुदबुदाते हुए सुनना अच्छा लग रहा था। गिरजाघर के आर-पार सुमधुर स्वर तैर रहे थे, और इल्या बड़ी अधीरता से दरवाज़ा खुलने की प्रतीक्षा कर रहा था ताकि उन स्वरों की उष्ण सुगंध की लहरें बहती हुई उसके पास तक फिर पहुंचें। वह जानता था कि गानेवालों की टोली में, जो बाक़ी लोगों से ऊंचाई पर खड़ी थी, सबका मज़ाक़ उड़ानेवाला स्कूल का एक सबसे दुष्ट लड़का ग्रीशा बूब्नोव और हमेशा छेड़कर लड़नेवाला तगड़ा लड़का फ़ेद्या दोल्गानोव भी थे, लेकिन उस समय वे न तो उसे बुरे लग रहे थे और न ही उनसे उसे चिढ़ हो रही थी। उसे उनसे कुछ ईर्ष्या ही हो रही थी। उसका स्वयं जी चाह रहा था कि वह गानेवालों की टोली में होता और वहां से एकत्रित लोगों को नीचे नज़र डालकर देखता।

गिरजाघर से बाहर निकलने पर उसके मन में दया का भाव उमड़ने लगा और वह बूब्नोव, दोल्गानोव और दूसरे सभी छात्रों के साथ मेल-जोल कर लेने को तैयार था। लेकिन सोमवार को जब वह स्कूल से घर लौटा तो वह उतना ही खिन्न और उदास था जितना हमेशा रहता था।

हर भीड़ में एक न एक आदमी ऐसा ज़रूर होता है जो वहां अटपटा महसूस करता है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वह दूसरों से अच्छा या बुरा है। ज़रूरी नहीं है कि किसी का दिमाग़ बहुत तेज़

हो या नाक बेतुकी हो तभी उसका मज़ाक़ उड़ाया जाये। मज़ाक़ उड़ाने के लिए किसी को नक्कू बना लेने की प्रेरणा भीड़ को केवल आमोद-प्रमोद की इच्छा से मिलती है। इस मौक़े पर इल्या लुन्योव को नक्कू बना लिया गया। उसका अंजाम बहुत बुरा होता अगर ठीक उसी क्षण एक ऐसी घटना न हो गयी होती जिसकी वजह से स्कूल में उसकी सारी दिलचस्पी ख़त्म हो गयी और वह अपने आपको स्कूल से परे महसूस करने लगा।

सारा क़िस्सा शुरू इस तरह हुआ कि एक दिन जब वह स्कूल से याकोव के साथ घर वापस आया तो उसे फाटक के पास शोर-गुल सुनायी दिया।

"वह देखो!" उसने अपने दोस्त से चिल्लाकर कहा, "ज़रूर फिर कोई लड़ाई हो रही होगी। जल्दी चलो, चलकर देखते हैं!"

वे लपककर आगे पहुंचे और देखा कि आंगन में कुछ अजनबी लोग इधर-उधर भाग रहे हैं और चिल्ला रहे हैं:

"पुलिस बुलाओ! उसे बांध दो!"

लोहारख़ाने के पास बहुत घनी भीड़ थी। लड़के धक्का-मुक्की करते हुए भीड़ के बीच में तो पहुंच गये, लेकिन जल्दी ही वहां से वापस चले आये। एक औरत औंधे मुंह बर्फ़ में पड़ी थी। उसकी गुद्दी पर ख़ून और कोई चिपचिपी चीज़ जमी हुई थी, और सिर के चारों ओर की बर्फ़ गहरे लाल रंग की हो गयी थी। उसके पास ही एक मिंजी हुई सफ़ेद शाल और लोहार की बड़ी-सी संड़सी पड़ी हुई थी। सावेल लोहारख़ाने की चौखट पर सिमटा-सिकुड़ा बैठा था और उस औरत के हाथों को घूर रहा था जो सामने की ओर फैले थे और उनकी उंगलियां बर्फ़ में धंसी हुई थीं। लोहार की त्योरियों पर गहरे बल थे, उसके चेहरे पर मुर्दनी छायी हुई थी; उसने अपने दांत इतने कसकर भींच रखे थे कि जबड़ों के जोड़ के पास दो गोल-गोल गूमड़े-से उभर आये थे। अपने दाहिने हाथ से उसने दरवाज़े की चौखट पकड़ रखी थी, उसकी काली-काली उंगलियां बेचैन थीं, उंगलियों को छोड़कर उसका सारा शरीर निश्चल था।

लोग कठोर मुद्रा से चुपचाप उसे घूर रहे थे और अहाते में हालांकि काफ़ी शोर और चहल-पहल थी, लेकिन यहां लोहारख़ाने के पास

बिल्कुल खामोशी थी। बूढ़ा येरेमेई, पसीने से तर और बाल बिखेरे हुए भीड़ को चीरकर आगे पहुंचा।

"लो, यह पी लो, सावेल", उसने कांपते हाथ से पानी उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा।

"इसे, बदमाश को पानी की नहीं, फांसी के फंदे की ज़रूरत है," भीड़ में से किसी ने धीरे से कहा।

सावेल ने पानी अपने बायें हाथ में ले लिया और बड़ी देर तक पानी पीता रहा। सारा पानी पी चुकने के बाद उसने खाली बर्तन में घूरकर देखा और अपनी खोखली आवाज़ में बोला:

"मैंने उसे पहले ही मना किया था, 'बाज़ आ जा, छिनाल कहीं की!' मैंने उससे कहा था। 'तुझे मार डालूंगा मैं!' मैंने पहले ही कह दिया था। मैंने उसे कितनी बार माफ़ किया... एक बार नहीं, कई बार... लेकिन वह मानती ही नहीं थी। सो उसका यह नतीजा हुआ... पावेल अब अनाथ हो गया... उसका ध्यान रखना, दादा... भगवान भला करे तुम्हारा..."

"हाय, नसीब!" दादा ने करुणा-भरे स्वर में कहा और अपना कांपता हुआ हाथ लोहार के कंधे पर रख दिया।

"कमबख़्त!.. इसकी यह मजाल कि भगवान की बात करता है!.." भीड़ में से फिर आवाज़ आयी।

यह सुनते ही लोहार की भवें तन गयीं।

"तुम लोग यहां क्या कर रहे हो?" उसने गरजकर कहा। "भाग जाओ यहां से सब!"

उसके शब्द चाबुक की तरह लगे और भीड़ बुड़बुड़ाती हुई वहां से खिसकने लगी। लोहार उठा और चलकर अपनी मरी हुई बीवी के पास तक गया, लेकिन झटके से पीछे घूमकर सीधा, अपना विशाल शरीर लिये लोहारखाने में जा पहुंचा। सभी ने देखा कि वह निहाई पर बैठ गया और अपना सिर इस तरह पकड़कर झोंके खाने लगा मानो उसमें असह्य पीड़ा हो रही हो। इल्या को उस पर तरस आ रहा था; वह वहां से चला आया और आंगन में इधर-उधर ऐसे टहलने लगा जैसे नींद में चल रहा हो। वह एक गरोह से दूसरे गरोह के पास जाता;

वह लोगों की आवाज़ें तो सुन रहा था लेकिन वे कह क्या रहे थे यह उसकी समझ में बिल्कुल नहीं आ रहा था।

पुलिसवालों ने आकर भीड़ को तितर-बितर कर दिया, और फिर वे लोहार को लेकर चले।

"अच्छा, सलाम, दादा," फाटक से बाहर निकलते हुए सावेल ने पुकारकर कहा।

"सलाम, सावेल इवानिच। सलाम, भाई," येरेमेई ने उसके पीछे लपककर जल्दी-जल्दी चिल्लाकर कहा।

किसी और ने लोहार को विदा करते हुए कुछ नहीं कहा...

छोटी-छोटी टोलियां बनाकर लोग आंगन में इधर-उधर खड़े थे, बातें कर रहे थे, उदासी से उस औरत की लाश को देख रहे थे; किसी ने उसके सिर पर कोयले का बोरा डाल दिया। एक पुसिल-वाला अपने दांतों में पाइप दबाये लोहारखाने की चौखट पर वहीं बैठा था जहां सावेल बैठा करता था। वह पाइप पीता जाता था, ज़मीन पर थूकता जाता था और बुझी-बुझी आंखों से दादा येरेमेई की ओर देखकर उस की बातें सुन रहा था।

"तुम समझते हो कि उसने उसे मारा है?" येरेमेई ने धीमे रहस्य भरे स्वर में कहा। "उसने नहीं, बल्कि शैतान के कारिंदों ने – उन्होंने ही उसकी जान ली है। कोई आदमी किसी दूसरे आदमी की जान नहीं ले सकता। नहीं मार सकता है आदमी, भलेमानसो!"

जो कुछ हुआ था उसका रहस्य सुननेवालों के सामने खोलते हुए उसने दोनों हाथ पहले अपने सीने पर रखे, फिर हाथों को इस तरह हिलाया जैसे किसी को भगा रहा हो और ज़ोर से खांसा।

"संड़सी तो उसी ने चलायी थी – शैतान नहीं आया था चलाने," पुलिसवाले ने ज़मीन पर थूकते हुए अपना मत व्यक्त किया।

"लेकिन उससे यह काम कराया किसने?" बूढ़े ने चिल्लाकर कहा। "तुम्हें यही देखना होगा – उसे उकसाया किसने?"

"देखो, वह तुम्हारा कौन लगता है – यह लोहार? तुम्हारा बेटा है?" पुलिसवाले ने पूछा।

"नहीं, नहीं!"

"कोई रिश्तेदार है?"

"बिल्कुल नहीं। मेरा कोई रिश्तेदार नहीं है..."

"फिर तुम्हें उसकी क्या चिंता?"

"हे परमात्मा!"

"मुझे तुमसे बस इतना कहना है," पुलिसवाले ने सख़्ती से उसे डांटते हुए कहा। "बूढ़े होने की वजह से तुम यह सारी बक-बक कर रहे हो... चले जाओ यहां से!"

पुलिसवाले ने मुंह के एक कोने से धुएं का घना बादल बाहर निकाला और बूढ़े की तरफ़ पीठ फेर ली। लेकिन येरेमेई अपने हाथ हिलाकर ऊंची आवाज़ में जल्दी-जल्दी फिर बोलने लगा।

इल्या का चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी आंखें फटी हुई थीं; वह लोहारखाने से हटकर उस गरोह के बीच जा मिला जिसमें मकार, पेर्फ़ीश्का, मुटल्ली और अटारी पर रहनेवाली कुछ दूसरी औरतें खड़ी थीं।

"अरे भैया, वह तो शादी के पहले ही बदचलन थी," एक औरत कह रही थी। "कौन जाने पावेल लोहार का बेटा हो ही नहीं, उस मास्टर की औलाद ही जो दुकानदार मलाफ़ेयेव के यहां रहता था।"

"वही जिसने अपने गोली मार ली थी?" पेर्फ़ीश्का ने पूछा।

"वही! उसी से तो उसका पहला चक्कर चला था।"

पेर्फ़ीश्का की अपाहिज बीवी भी ऊपर आ गयी और अपने चीथड़ों में लिपटी हुई तहख़ाने के दरवाज़े के पास अपनी जगह पर बैठी रही। उसके हाथ निर्जीव-से उसकी गोदी में रखे हुए थे; उसकी काली-काली आंखें आसमान पर टिकी हुई थीं; उसने अपने होंट कसकर बंद कर रखे थे और वे दोनों छोरों पर नीचे की ओर झुक आये थे। इल्या की नज़र बारी-बारी से उसकी आंखों और आसमान के बीच आ-आ रही थी और उसके मन में यह विचार उठा कि पेर्फ़ीश्का की घरवाली भगवान को देख रही होगी और चुपचाप उससे कोई फ़रियाद कर रही होगी।

थोड़ी ही देर में आंगन के सब बच्चे भी तहख़ाने के दरवाज़े के पास जमा हो गये। ठिठुरते हुए अपने कपड़ों में लिपटकर वे सीढ़ियों पर बैठ गये और भय विस्मित होकर सावेल के बेटे के मुंह से उस घटना का ब्यौरा सुनने लगे। पावेल का चेहरा उतरा हुआ था और उसकी चालाक आंखों में उलझन और खिसियाहट का भाव था। पर वह अपने को हीरो महसूस कर रहा था: इससे पहले कभी किसी ने

उसकी ओर इतना ध्यान नहीं दिया था। अपना यह क़िस्सा वह कम से कम एक दर्जन बार सुना चुका था, और अब वह मानो अनिच्छापूर्वक, भावशून्य होकर बोल रहा था।

"तीन दिन पहले जब वह चली गयी थी, तो पापा दांत पीसकर रह गये थे, और तभी से उन्हें उस पर ग़ुस्सा सवार था और वह पागलों की तरह गरज रहे थे। वह बार-बार मेरे बाल पकड़कर खींचते थे... मैं समझ गया कि कुछ होनेवाला है। फिर वह घर आयी। कमरा बंद था – हम लोग लोहारख़ाने में थे। मैं धौंकनी के पास खड़ा था। मैंने उसे हम लोगों की तरफ़ आते देखा। वह देहरी पर खड़ी हो गयी और बोली, 'चाभी देना मुझे!' पापा ने संड़सी उठा ली और उसकी तरफ़ बढ़े... वह धीरे-धीरे उसके पास पहुंचते जा रहे थे... देखकर मैंने तो डर के मारे आंखें बंद कर लीं! मैं चिल्लाना चाहता था, 'मां, भागो!' लेकिन मैं चिल्ला न सका... जब मैंने आंखें खोलीं उस वक़्त भी वह उसकी ओर बढ़ रहे थे! देखते कैसी आग बरस रही थी उनकी आंखों से! तभी वह पीछे हटने लगी, और उसने भागना चाहा, मगर..."

पावेल का चेहरा फड़कने लगा और उसके दुबले-पतले हड़ियल शरीर में सिहरन दौड़ गयी। उसने एक गहरी सांस ली, और धीरे-धीरे सांस छोड़ते हुए बोला:

"उसी वक़्त उन्होंने उसे संड़सी से पकड़ लिया, उफ़!"

बच्चे विचलित हो उठे।

"उसने अपने हाथ ऊपर उठा दिये और ज़मीन पर ऐसे गिर पड़ी... जैसे तालाब में कूद पड़ी हो।"

उसने लकड़ी का एक छोटा-सा टुकड़ा उठाया, उसे बड़े ध्यान से देखा और बच्चों के सिर के ऊपर से उसे दूर फेंक दिया। वे सब निश्चल बैठे रहे, मानो यह राह देख रहे हों कि वह अपना क़िस्सा सुनाना जारी रखे, लेकिन वह सिर झुकाये चुपचाप बैठा रहा।

"क्या उसने उसे जान से मार डाला था?" माशा ने महीन कांपती हुई आवाज़ में पूछा।

"मूरख," पावेल ने सिर उठाये बिना ही कहा।

याकोव ने माशा के गले में बांह डालकर उसे अपनी ओर खींच लिया और इल्या खिसककर पावेल के और पास आ गया।

"क्या तुम्हें उसका अफ़सोस है?" उसने धीरे से पूछा।

"तुमसे मतलब?" पावेल ने चिढ़कर पूछा।

सब बच्चों ने एक साथ और चुपचाप उसे देखा।

"वह बदचलन औरत थी," माशा ने साफ़-साफ़ कहा, लेकिन याकोव ने जल्दी से उसकी बात काट दी:

"ऐसा मरद हो तो कोई भी औरत हो जायेगी! हमेशा मैला-कुचैला और हर दम कोई न कोई शिकायत – इतनी कि डर के मारे जान ही निकल जाये!.. और वह थी हंसमुख और खुशमिज़ाज–पेर्फ़ीश्का की तरह..."

पावेल ने एक नज़र उस पर डाली, और फिर बड़ों की तरह गंभीरता से, खिन्न स्वर में उसने अपना वर्णन शुरू किया:

"मैं उससे कहता रहता था, 'ध्यान रखना, मां, वह तुम्हें मार डालेंगे!' लेकिन उसने मेरी बात पर कोई ध्यान ही नहीं दिया... बस मुझसे इतना कहती थी कि मैं बाप को कुछ न बताऊं... मेरा मुंह बंद रखने के लिए वह मुझे तोहफ़े ख़रीदकर देती रही। और जिस अफ़सर के साथ वह गयी थी वह मुझे पांच कोपेक के सिक्के देता था। जब भी मैं उसके पास पर्ची लेकर जाता था वह मुझे पांच कोपेक का एक सिक्का देता था। बहुत अच्छे स्वभाव का आदमी था!.. और बला का ताक़तवर था!.. और क्या बड़ी-बड़ी मूंछें थीं उसकी..."

"और तलवार?" माशा ने पूछा।

"तुमने देखी होती!" पावेल ने जवाब दिया और फिर बड़े गर्व से यह भी जोड़ दिया: "एक बार मैंने उसे म्यान में से निकाला था। भारी ऐसी भारी थी!"

याकोव विचारमग्न होकर बोला:

"अब तुम भी इल्या की तरह अनाथ हो गये।"

"मैं क्यों होने लगा?" अनाथ ने चिढ़कर जवाब दिया। "तुम समझते हो कि मैं उसकी तरह चीथड़े बटोरूंगा? उमर भर नहीं करूंगा!"

"मेरा यह मतलब नहीं था..."

"अब तो मेरा जो जी चाहेगा करूंगा," पावेल ने डींग मारते हुए कहा, और अपना सिर ऊंचा उठाकर बिजली की तरह चमकती

हुई आंखों से चारों ओर देखा। "मैं अनाथ नहीं हूं, मैं तो बस... बस... मैं तो बस अकेला रहूंगा। पापा मुझे स्कूल नहीं भेजना चाहते थे... अब उन्हें जेल में डाल दिया जायेगा तो मैं स्कूल जाऊंगा और पढ़ाई में तुम सब लोगों से अच्छा निकलूंगा!"

"स्कूल जाने के लिए कपड़े कहां से मिलेंगे तुम्हें?" इल्या ने विजय गर्व के साथ धीरे से हंसकर कहा। "स्कूल में चीथड़े पहननेवालों को भरती नहीं करते।"

"कपड़े? मैं लोहारखाना बेच दूंगा, समझे?"

सभी बच्चों ने सम्मान-भरी दृष्टि उस पर डाली, और इल्या समझ गया कि वह हार गया है। पावेल ने देखा कि उसके अंतिम शब्दों का कितना गहरा प्रभाव पड़ा है, इसलिए वह पहले से भी ज़्यादा डींग मारने लगा।

"और मैं अपने लिए एक घोड़ा ख़रीदूंगा – सचमुच का ज़िंदा घोड़ा! मैं घोड़े पर बैठकर स्कूल जाया करूंगा!.."

इस बात की कल्पना करके वह इतना खुश हुआ कि उसने मुस्कराकर सबकी ओर देखा, अलबत्ता उसकी मुस्कराहट बहुत ही दबी हुई और क्षणिक ही थी।

"अब कोई तुम्हारी पिटाई करनेवाला जो नहीं रहा," माशा ने उसे ईर्ष्या से देखकर कहा।

"वह करने के लिए कोई न कोई मिल जायेगा," इल्या ने पूरे भरोसे के साथ कहा।

पावेल ने उस पर दृष्टि डाली और चुनौती देते हुए ज़मीन पर थूका।

"कौन होगा वह, तुम? ज़रा कोशिश तो करके देखो!"

एक बार फिर याकोव बीच में कूद पड़ा।

"बड़ी अजीब बात है, यारो," वह बोला, "अभी कुछ ही देर पहले तक वह चल-फिर रही थी और बातें कर रही थी और सारा काम-काज कर रही थी – हमारी-तुम्हारी तरह ज़िंदा आदमी थी – और फिर सिर पर संड़सी की चोट पड़ी और – अब कहां वह?"

दूसरे बच्चों ने – तीनों ने – याकोव को बड़े ध्यान से देखा; उसकी आंखें उभरी आ रही थीं और बड़े हास्यास्पद ढंग से बाहर की ओर निकलकर देख रही थीं।

"हां-आं !" इल्या बोला, "मैं भी इसी के बारे में सोच रहा था।"

"लोग कहते हैं – आदमी मर गया है," धीरे से और रहस्यपूर्ण ढंग से याकोव अपनी बात जारी रखी, "लेकिन इसका मतलब क्या होता है?"

"उसकी आत्मा उड़ गयी," पावेल ने बहुत उदास होकर समझाया।

"स्वर्ग की ओर," माशा ने जोड़ दिया और याकोव से और सटकर बैठते हुए आकाश पर नज़रें जमा लीं। वहां सितारे निकल आये थे; उनमें से एक बड़ा-सा चमकदार सितारा, जो झिलमिला नहीं रहा था, दूसरों की अपेक्षा पृथ्वी से अधिक निकट मालूम होता था और वह कभी न झपकनेवाली क्रूर आंख की तरह नीचे घूर रहा था। माशा की तरह बाक़ी तीन लड़कों ने अपनी नज़रें ऊपर उठायीं। पावेल एक सरसरी-सी नज़र डालकर उठ खड़ा हुआ और जल्दी-जल्दी वहां से चला गया; इल्या देर तक नज़रें जमाये देखता रहा, उसकी आंखों में भय समाया था; याकोव की बड़ी-बड़ी आंखें नीले आकाश पर इस तरह भटकती रहीं मानो कुछ खोज रही हों।

"याकोव," उसके दोस्त ने अपना सिर नीचे करके कहा।

"क्या है?"

"मैं सोचता रहता हूं..." इल्या की आवाज़ का सिलसिला बीच में ही टूट गया।

"काहे के बारे में?" याकोव ने धीमे स्वर में पूछा।

"किस तरह... आदमी को मार डाला गया... और वे चारों ओर बातें करते फिरते हैं और दुनिया भर का शोर मचाते हैं... और कोई रोता नहीं... किसी को कोई दुःख नहीं..."

"येरेमेई रोया था।"

"वह तो... ज़रूर... लेकिन पावेल का क्या हाल है? मानो कोई क़िस्सा-कहानी सुना रहा था..."

"वह बनता है... उसे दुःख है, लेकिन इस बात को मानने में उसे शर्म आती है। वह यहां से भाग गया है, और अब शायद रो-रोकर अपनी आंखें अंधी किये ले रहा होगा।"

कुछ देर तक कुछ बोले बिना वे एक-दूसरे से सटे वहां बैठे रहे।

माशा याकोव के घुटनों पर सिर रखकर सो गयी; उसका चेहरा अभी तक आसमान की ओर था।

"तुम्हें डर लगता है?" याकोव ने फुसफुसाते हुए पूछा।

"हां," इल्या ने भी उसी तरह जवाब दिया।

"अब तो उसकी आत्मा यहां घूम-फिर रही होगी..."

"हां-आं... देखो, माशा सो गयी है..."

"उसे घर पहुंचा दिया जाये... लेकिन मुझे कहीं आने-जाने में डर लगता है।"

"मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।"

याकोव ने बच्ची का सिर अपने कंधे पर टिकाया, अपनी बांहें उसके दुबले-पतले शरीर के चारों ओर जकड़ लीं, और ज़ोर लगाकर उठ खड़ा हुआ।

"ठहरो, इल्या, पहले मैं चलता हूं..." उसने फुसफुसाकर कहा।

वह आगे-आगे चला, बोझ से उसके पांव लड़खड़ा रहे थे, और इल्या उसके पीछे-पीछे इतने पास चल रहा था कि उसकी नाक अपने दोस्त के सिर से लगभग सटी हुई थी। इल्या को ऐसा लग रहा था कि कोई अदृश्य प्राणी उसके पीछे चल रहा है और उसकी सांस उसकी गर्दन पर ठंडी-ठंडी लग रही है और वह किसी भी क्षण उसे धर दबोचेगा।

"जल्दी-जल्दी चलो," उसने अपने मित्र की पीठ को धक्का देते हुए दबे स्वर में कहा।

इस घटना के बाद येरेमेई का स्वास्थ्य गिरने लगा। अब तो वह फटी-पुरानी टूटी-फूटी चीज़ें कभी-कभी ही बटोरने जाता था, घर पर ही रहता था और या तो उदास-सा आंगन में टहलता रहता था या अपनी अंधेरी कोठरी में खटिया पर पड़ा रहता था। वसंत आ रहा था, और जब भी आसमान पर सूरज चमकता था बूढ़ा उसकी नर्म धूप में बैठकर अपनी उंगलियों पर कुछ गिनता रहता था और उसके होंट बिना कोई आवाज़ निकाले हिलते रहते थे। अब वह बच्चों को कहानियां भी बहुत कम और पहले के मुक़ाबले अच्छी तरह नहीं सुनाता था। उसकी खांसी की वजह से बीच-बीच में विघ्न पड़ता रहता था।

उसके सीने की गहराई में भर्रायी हुई कराहने जैसी आवाज़ सुनायी देती थी, मानो बाहर निकलने के लिए गिड़गिड़ा रही हो।

"बस, अब रहने दो," माशा कहती, जिसे उसकी कहानियों से दूसरे सभी बच्चों से ज़्यादा प्यार था।

"ज़रा इंतज़ार करो," बूढ़ा फूलती हुई सांस सीने में समाने की कोशिश करते हुए कहता। "अभी ठीक हो जाऊंगा ... एक मिनट में ..."

लेकिन वह ठीक न होता। खांसी बदतर होती जाती, और उसके सूखे-मुरझाये शरीर में से प्राण तक बाहर आ जाने को होते। कभी-कभी तो बच्चे कहानी का अंत सुनने की राह देखे बिना ही चले जाते, और तब बूढ़ा बड़े व्यथित भाव से उन्हें जाते हुए एकटक देखता रहता।

इल्या ने देखा कि आबदार पेत्रूख़ा और उसका अपना चाचा तेरेंती दोनों बूढ़े की बीमारी से बहुत चिंतित थे। दिन में कई बार पेत्रूख़ा शराबख़ाने के पीछेवाले दरवाज़े पर आता और ख़ुशी से चमकती हुई भूरी आंखों से दादा येरेमेई को ढूंढ़कर पूछता:

"कहो, क्या हाल है, दादा? पहले से कुछ तबीयत अच्छी है?"

गठे हुए शरीर पर गुलाबी रंग की सूती कमीज़ पहने, बनात की ढीली-ढाली पतलून की दोनों जेबों में हाथ डाले, जिसके पायंचे चमकदार लंबे बूट जूतों में ठुंसे रहते थे, वह इधर-उधर इतराता फिरता था। उसकी जेबों से हमेशा सिक्कों के खनकने की आवाज़ आती रहती थी। उसकी गोल खोपड़ी सामने से गंजी होती जा रही थी, फिर भी उस पर बहुत-से सुनहरे घुंघराले बाल थे, जिन्हें बड़ी शान से पीछे झटकते रहने की उसकी आदत पड़ गयी थी। इल्या को वह कभी अच्छा नहीं लगता था, लेकिन अब तो और भी बुरा लगने लगा था। वह जानता था कि पेत्रूख़ा को दादा येरेमेई से कोई लगाव नहीं था और एक बार उसने उसे चाचा तेरेंती को समझाते सुना था:

"उस पर नज़र रखना, तेरेंती! वह बड़ा कंजूस है! मैं शर्त बदकर कह सकता हूं कि अपने तकिये में अच्छी ख़ासी रक़म दबा रखी है उसने। देखना, कहीं तुम्हारे हाथ से निकल न जाये। अब वह बूढ़ा कुत्ता ज़्यादा दिन जीने का नहीं; तुम्हारा उससे दोस्ताना है, और इस दुनिया में उसका कोई नहीं है ... अक़्ल से काम लेना, प्यारे! .."

बूढ़ा येरेमेई अब भी अपनी शामें शराबख़ाने में ही तेरेंती के

पास उससे भगवान की और संसार की समस्याओं की चर्चा करने में बिताता था। शहर की ज़िंदगी ने कुबड़े को पहले से भी ज़्यादा बदसूरत बना दिया था। ऐसा लगता था कि बर्तन मांजते-मांजते उसका अंग-अंग सील गया था; उसकी आंखों पर एक झिल्ली-सी आ गयी थी और उनमें हर दम डर समाया रहता था और ऐसा लगता था कि शराबख़ाने की गरमी में उसका शरीर पिघल गया था। उसकी मैली क़मीज़ बार-बार उसके कूबड़ के ऊपर आ जाती, जिसकी वजह से उसकी कमर खुल जाती थी। लोगों से बातें करते वक़्त वह अपने हाथ पीठ के पीछे करके झटके से कमीज़ नीचे खींचता रहता था, जिससे लगता यह था कि वह अपने कूबड़ में कोई चीज़ छिपा रहा है।

जब भी बूढ़ा येरेमेई आंगन में आकर बैठता तो तेरेंती बाहर ओसारे पर निकल आता और आंखें सिकोड़कर और हाथ से आंखों के ऊपर एक छज्जा-सा बनाकर उसे घूरता रहता। उसके नुकीले चेहरे पर छिदरी पीली दाढ़ी हिलती रहती थी।

"कोई चीज़ चाहिये तो नहीं, दादा?" वह दोषी की तरह पूछता।

"कुछ नहीं, शुक्रिया। कुछ नहीं ... कुछ नहीं ..." बूढ़ा जवाब देता।

कुबड़ा धीरे-धीरे अपनी सींक जैसी टांगों पर पीछे मुड़कर शराबख़ाने में वापस चला जाता।

"अब मैं कभी अच्छा नहीं होऊंगा," येरेमेई बार-बार और अकसर कहने लगा था। "साफ़ है कि मेरा वक़्त आ गया है।"

एक दिन जब वह अपने बिल में सोने जा रहा था तो उसे खांसी का बहुत ही ज़ोर का दौरा पड़ा। खांस चुकने के बाद उसने बुदबुदाकर कहा:

"अभी तो वक़्त नहीं आया है, प्रभु, मेरा काम अभी पूरा नहीं हुआ है! .. वह पैसा ... इतने बरसों से मैं बचाता रहा हूं ... एक गिरजाघर बनवाने के लिए ... अपने गांव में। लोगों को भगवान के मंदिरों की ज़रूरत है। वहीं तो हमें शरण मिलती है ... लेकिन अभी तक मैं काफ़ी पैसा नहीं बचा पाया हूं। हे भगवान! कोई मक्खा मंडला रहा है ... शायद अपने शिकार की महक मिल गयी है उसे। इल्या, मेरे पास पैसा है – याद रखना, लेकिन किसी को बताना नहीं, समझे?"

इल्या बूढ़े की बहकी-बहकी बातें सुनकर यह महसूस करने लगा

कि अब तो उसे कोई बहुत बड़ी भेद की बात मालूम हो गयी है ; वह समझ गया था कि वह "मक्खा" कौन था।

कुछ दिन बाद स्कूल से घर वापस आकर जब इल्या कोने में अपने स्कूल के कपड़े उतार रहा था उसने दादा येरेमेई की उखड़ी-उखड़ी सांस की और कराहने की आवाज़ सुनी जैसे कोई गला घोंटकर उसे मारे डाल रहा हो।

"शि: ... शि: ... भाग जा!" बूढ़े ने हांपते हुए कहा।

लड़के ने डरते-डरते दरवाज़े को धक्का दिया। वह अंदर से बंद था। दूसरी ओर से बूढ़े की उतावली-भरी फुसफुसाने की आवाज़ आ रही थी।

"शि: !.. हे परमपिता, दया करो ... दया करो ..."

इल्या ने दरवाज़े की एक दरार में से अंदर झांका तो देखता क्या है कि बूढ़ा अपनी खटिया पर पीठ के बल लेटा हुआ है और दोनों बांहें हिला रहा है।

"दादा!" लड़का घबराकर चिल्लाया।

बूढ़े ने चौंककर अपना सिर उठाया और ज़ोर से बुदबुदाने लगा :

"पेत्रूखा ... खबरदार ... यह भगवान का है! यह उसके लिए है! उसके मंदिर के लिए। शि: ... अरे मक्खे! भगवान ... यह तुम्हारा है!.. बूढ़े की रक्षा करना ... दया करना ... दया करना ..."

इल्या डर के मारे कांप उठा लेकिन वहां से हिल नहीं सका और बूढ़े के उस काले सूखे-सिकुड़े हाथ पर से अपनी नज़र न हटा सका जो बड़ी क्षीणता से हवा में हिल रहा था और एक टेढ़ी उंगली से किसी को धमकी दे रहा था।

"खबरदार! यह भगवान का है!.. खबरदार!.."

बूढ़े का शरीर अचानक सिमटकर एक गठरी बन गया ; फिर वह उठकर खटिया पर बैठ गया और उसकी दाढ़ी हवा में उड़ती हुई फ़ाखता के पंख की तरह हिलने लगी। अपनी बांहें सामने फैलाकर उसने ज़ोर से किसी को झटका दिया और फ़र्श पर ढेर हो गया।

इल्या के मुंह से ज़ोर की चीख निकल गयी और वह वहां से भाग गया ; बूढ़े की "शि: ... शि: ... !" की आवाज़ उसके कानों में गूंज रही थी।

भागकर हांपता हुआ वह शराबखाने में आया और ज़ोर से चिल्लाया :

"वह मर गया ..."

तेरेंती के मुंह से आह निकल गयी, वह अपने पांव पटकने लगा और झटके से अपनी क़मीज़ को नीचे खींचते हुए पेत्रूखा को घूरने लगा, जो कांउटर के पीछे खड़ा था।

"कहा ही क्या जा सकता है," सीने पर सलीब का निशान बनाकर आबदार ने गंभीर स्वर में कहा। "भगवान उसकी आत्मा को शांति दे! बड़ा नेक बूढ़ा था। मैं जाकर देखता हूं। तुम यहीं रहना, इल्या, और अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मुझे बुला लेना। याकोव, तुम यहां का काम संभालना।"

पेत्रूखा बड़े इतमीनान से फ़र्श पर ज़ोर से अपनी एड़ियां पटकता हुआ बाहर निकला ... उसके पीछे दरवाजा बंद होते ही लड़कों ने उसे कुबड़े से कहते सुना :

"चल, जल्दी चल, मूरख!.."

इल्या बेहद सहमा हुआ था, फिर भी उसके चारों ओर जो कुछ हो रहा था उसे देखने से उसकी नज़र नहीं चूकी।

"तुमने उसे मरते देखा था?" याकोव ने काउंटर के पीछे से पूछा।

इल्या ने उसकी ओर देखा।

"ये लोग वहां किसलिए जा रहे हैं?" उसने याकोव के सवाल की ओर कोई ध्यान न देते हुए पूछा।

"देखने के लिए!.. तुम उन्हें बुलाने आये थे न?.."

इल्या ने अपनी आंखें कसकर बंद कर लीं।

"उसने कैसा धक्का दिया था उसे ..."

"किसे धक्का दिया?" याकोव ने जिज्ञासा से अपनी गर्दन आगे की ओर निकालते हुए पूछा।

"शैतान को," इल्या ने कुछ ठहरकर जवाब दिया।

"तुमने शैतान को देखा था?" याकोव ने भागकर उसके पास आते हुए हल्की-सी चीख के साथ पूछा। पर इल्या ने कोई जवाब दिये बिना फिर अपनी आंखें बंद कर लीं।

"तुम्हें डर लग रहा है?" याकोव ने इल्या की आस्तीन को झटका देकर पूछा।

"ज़रा ठहरो," इल्या ने अचानक कहा। "मैं... एक मिनट के लिए बाहर जा रहा हूं... अपने बाप से न कहना, नहीं कहोगे न?"

अपने अनुमान से प्रेरित होकर वह पलक झपकते तहख़ाने में घुस गया और चूहे की तरह चुपचाप रेंगता हुआ फिर दरवाज़े की दरार के पास जा पहुंचा और देखने लगा। बूढ़ा अभी तक ज़िंदा था। वह अभी तक फ़र्श पर पड़ा उखड़ी-उखड़ी सांसें ले रहा था और दो काली आकृति-यां उसके पांवों के पास खड़ी दिखायी दे रही थीं।

धुंधली रोशनी में उन दोनों ने आपस में मिलकर एक बड़ी-सी टेढ़ी-मेढ़ी आकृति का रूप धारण कर लिया था। आखिरकार इल्या ने देखा कि उसका चाचा बूढ़े की चारपाई के पास घुटनों के बल बैठा जल्दी-जल्दी तकिया सी रहा है। उसे कपड़े में से होकर धागा खींचे जाने की आवाज़ साफ़ सुनायी दे रही थी। पेत्रूखा तेरेंती के पीछे खड़ा था और उस पर झुका हुआ था।

"जल्दी करो..." उसने कानाफूसी करते हुए कहा। "मैंने तुमसे पहले ही सुई-धागा तैयार रखने को कह दिया था। कमाल कर दिया, यहां सुई में धागा पिरोने बैठे हो!"

पेत्रूखा की कानाफूसी, मरते हुए आदमी की आहें, सिलाई की आवाज़, और खिड़की के बाहर एक सूराख़ में बहते हुए पानी की करुण कलकल ध्वनि ने मिलकर एक ऐसे विचित्र गुंजन का रूप धारण कर लिया था जिससे लड़के की सारी चेतनाएं मंद पड़ गयी थीं। चुपके से वह दीवार के पास से खिसक आया और सीढ़ियां चढ़कर तहख़ाने के बाहर आ गया। उसकी आंखों के सामने एक बड़ा-सा काला धब्बा शिः-शिः की आवाज़ करता हुआ पहिये की तरह नाच रहा था। सीढ़ियां चढ़ते हुए उसने ज़ीने के जंगले का डंडा कसकर पकड़ रखा था क्योंकि उसके लिए अपने पांव उठाना भी मुश्किल हो रहा था; शराबख़ाने के दरवाज़े पर पहुंचकर वह ठहर गया और चुपके-चुपके रोने लगा। याकोव उसके सामने फुदक-फुदककर चल रहा था और कुछ कह रहा था। फिर अचानक उसने महसूस किया कि किसी ने उसकी पीठ पर धक्का दिया और उसे पेर्फ़ीश्का की आवाज़ सुनायी दी:

"क्या बात है? कौन – कैसे हुआ? मर गया? अरे, शैतान!" और इल्या को एक और धक्का देकर मोची सीढ़ियों पर इतनी तेज़ी से नीचे भागा कि वे हिल उठीं। पर सीढ़ियों के नीचे पहुंचकर वह अत्यंत करुण और ऊंचे स्वर में चीख़ा:

"आ-ह!"

इल्या ने अपने चाचा और पेत्रूखा के सीढ़ियां चढ़ने की आहट सुनी। वह नहीं चाहता था कि वे उसे रोता हुआ देखें लेकिन वह अपने आंसू रोक न सका।

"हाय रे!" पेर्फ़ीश्का ने चिल्लाकर कहा। "तो तुम लोग वहां होकर आये हो न?"

तेरेंती भतीजे की ओर देखे बिना ही उसके पास से होकर गुज़र गया, लेकिन पेत्रूखा ने रुककर इल्या के कंधे पर अपना हाथ रखा।

"रो रहे हो?" वह बोला। "अच्छी बात है... इसका मतलब यह है कि तुम उपकार माननेवाले लड़के हो और तुम्हारे साथ जो उपकार किया जाता है उसे याद रखते हो। बूढ़े ने तुम्हारे साथ बहुत भलाई की!"

फिर इल्या को एक ओर ढकेलते हुए उसने जोड़ दिया "लेकिन अब मैं तुम्हें दरवाज़े पर खड़ा न देखूं।"

इल्या ने क़मीज़ की आस्तीन से अपना मुंह पोंछा और लोगों पर नज़र डाली। पेत्रूखा फिर काउंटर के पीछे खड़ा था और अपने घुंघराले बालों को पीछे की ओर झटक रहा था। उसके सामने पेर्फ़ीश्का खड़ा था, उसके चेहरे पर चालाकी-भरी मुस्कराहट थी। इस चा-लाकी-भरी मुस्कराहट के बावजूद उसके चेहरे पर उस आदमी का सा भाव था जो अभी-अभी जुए में अपना आखिरी कोपेक हार चुका हो।

"क्या चाहते हो,?" पेत्रूखा ने अपनी भवें तानकर रुखाई से पूछा।

"हमें भी कुछ प्यास बुझाने को मिलेगा भला?" पेर्फ़ीश्का ने कहा।

"क्यों?" आबदार ने गंभीरता से टका-सा जवाब दिया।

"हाय रे!" मोची पांव पटकते हुए चिल्ला उठा। "तो मुझे उसकी हवा तक नहीं लगने दी जायेगी, क्यों? अच्छी बात है! तुम ख़ुश रहो और ऐश करो!"

"तुम काहे के बारे में बक-बक किये जा रहे हो," पेत्रूखा ने शांत भाव से पूछा।

"अरे, कोई ख़ास बात नहीं है। मैं तो हूं ही मूरख!"

"मैं समझता हूं कि मुफ़्त की पीने के चक्कर में हो। क्या इसी बात की तरफ़ इशारा था तुम्हारा? हे-हे!"

"हा-हा!" शराबख़ाने में मोची की गूंजती हुई हंसी सुनायी दी।

इल्या ने अपना सिर इस तरह झटका जैसे उसमें से कोई चीज़ बाहर निकाल देना चाहता हो, और वहां से चला गया।

उस रात वह अपनी कोठरी में नहीं बल्कि शराबख़ाने में उस मेज़ के नीचे सोया जिस पर तेरेंती बर्तन धोता था। कुबड़ा उसे सुलाकर मेज़ें पोंछने में लग गया। काउंटर पर रखे हुए लैंप की रोशनी अल्मारी में रखी हुई चायदानियों और बोतलों के फूले हुए पेटों पर पड़ रही थी। शराबख़ाने में अंधेरा था। बाहर हल्की-हल्की फुहार पड़ रही थी और हवा हल्के-हल्के झोंकों के साथ चल रही थी... तेरेंती, जो देखने में एक बड़ी-सी साही जैसा लगता था, मेज़ें इधर-उधर खिसका रहा था, आहें भरता जा रहा था। जब भी वह लैंप के पास आता था तो एक बड़ी-सी काली छाया फ़र्श पर पड़ती थी और इल्या कल्पना करता था कि दादा येरेमेई की आत्मा लौट आयी है और तेरेंती से कह रही है:

"शिः-शिः!"

लड़के को सर्दी लग रही थी और वह डरा हुआ था। सीलन से उसका दम घुटा जा रहा था: सनीचर का दिन था और अभी धोकर साफ़ किये गये फ़र्श में से सड़ांध आ रही थी। वह अपने चाचा से कहना चाहता था कि वह जल्दी से आकर उसके पास लेट जाये, लेकिन पीड़ा और झुंझलाहट की एक भावना उसे उससे बोलने से रोक रही थी। बूढ़े येरेमेई की झुकी हुई सफ़ेद दाढ़ीवाली आकृति उसकी आंखों के आगे घूमती रही और वह उसे अपनी स्नेहपूर्ण भर्रायी हुई आवाज़ में कहते सुनता रहा:

"भगवान के पास सच्ची कसौटी है... चिंता न करो..."

आख़िरकार वह और ज़्यादा बर्दाश्त न कर सका।

"अब आ भी चुको और लेट जाओ!" उसने रुआंसे स्वर में कहा।

कुबड़ा चौंक पड़ा और निस्तब्ध रह गया।

"एक मिनट, बस एक मिनट!" उसने आख़िरकार मंद स्वर में और बड़ी भीरुता से कहा और जल्दी-जल्दी एक मेज़ से दूसरी मेज़ तक छलांग लगाने लगा। इल्या समझ गया कि उसके चाचा को भी डर लग रहा था। "तुम्हारी यही सज़ा है," उसने मन ही मन कहा।

पानी की बूंदें एक ही सुर में खिड़की के कांच से टकरा रही थीं, लैंप की लौ झिलमिला रही थी, लैंप की रोशनी में बोतलें और चायदानियां खीसें निकाले हंस रही थीं। इल्या ने अपने चाचा का भेड़ की खाल का ओवरकोट सिर के ऊपर तक खींच लिया और दम साधे लेटा रहा। अचानक उसे अपनी बग़ल में एक सरसराहट-सी महसूस हुई। उसका शरीर बर्फ़ हो गया। उसने सिर पर से ओवरकोट हटाया तो देखा कि तेरेंती अपने सिर को इस तरह झुकाये घुटनों के बल बैठा है कि उसकी ठोड़ी सीने को छू रही है।

"हे भगवान!" वह अस्फुट स्वर में कह रहा था। "मेरे भगवान..."

उसकी फुसफुसाहट सुनकर इल्या को दादा येरेमेई के सांस लेने की फटी हुई आवाज़ की याद आ गयी। कमरे में अंधेरा मानो हिल रहा था और उसके साथ फ़र्श भी डोल रहा था और चिमनी में तेज़ हवा की हुंकार सुनायी दे रही थी।

"भगवान का नाम मत लो!" इल्या ने ऊंचे स्वर में कहा।

"अरे तोबा!" कुबड़े ने दबी ज़बान में कहा। "सो जाओ, भगवान के लिए सो जाओ!"

"भगवान का नाम मत लो!" लड़के ने एक बार फिर आग्रहपूर्वक कहा।

"अच्छी बात है, नहीं लूंगा!.."

अंधेरे और सीलन का बढ़ता हुआ दबाव इल्या को कुचले दे रहा था। वह सांस नहीं ले पा रहा था। उसके अंदर विभिन्न भावनाओं के बीच द्वंद्व चल रहा था: भय, दादा येरेमेई के प्रति दया, अपने चाचा पर क्रोध। वह कुछ देर तो इधर-उधर करवटें बदलता रहा, फिर उठ बैठा और कराहने लगा।

"क्या बात है?" चाचा ने उसे थामकर डरते-डरते दबे स्वर

में पूछा। इल्या ने उसका हाथ झटक दिया तथा भय और निराशा से विह्वल होकर वह आंसुओं में भीगी हुई सांसें लेने लगा :

"हे भगवान ! काश, मैं कहीं छिप सकता ... हे भगवान !"

आंसुओं से उसका गला रुंध गया था। उसने गंदी हवा में एक लंबी-सी सांस ली और सिसकियां लेता हुआ तकिये पर गिर पड़ा।

उसके बाद से वह लड़का बिल्कुल बदल गया। पहले तो वह सिर्फ़ स्कूल में लड़कों से अलग-थलग रहता था, जिनसे दोस्ती बढ़ाने की उसकी कोई इच्छा नहीं होती थी। लेकिन घर पर वह बड़ा मिलनसार था और जब बड़े लोग उसकी ओर ध्यान देते थे तो उसे अच्छा लगता था। अब वह सबसे अलग-थलग रहने लगा था और उम्र को देखते हुए ज़्यादा गंभीर हो गया था। उसके चेहरे पर रुखाई का भाव रहने लगा था, उसके होंट हर दम भिंचे रहते थे, वह अपने से बड़ों पर बड़े ध्यान से नज़र रखने लगा था और जब वह उनकी बातें सुनता था तो उसकी आंखों में उकसाव भरी भावना आ जाती थी। दादा येरेमेई के मरने के दिन उसने जो कुछ देखा था उसकी याद उसे हर दम सताती रहती थी, और यह ख़याल किसी तरह उसके दिल से निकलता ही नहीं था कि पेत्रूख़ा और अपने चाचा के अपराध में वह भी हिस्सेदार है। मरते वक़्त जब बूढ़े ने अपने आपको लुटते हुए देखा होगा तो शायद उसने यही सोचा होगा कि उसी ने, इल्या ने ही, पेत्रूख़ा को पैसों के बारे में बताया होगा। यह विचार अनजाने ही उसके दिमाग़ पर हावी होता गया, उसके मन में निराशा भरती गयी और अपने चारों ओर के लोगों को वह पहले की तरह ज़्यादा शक की निगाह से देखने लगा। दूसरों की किसी दुष्टता का पता लगाकर उसे संतोष मिलता, मानो उनके अपराध से दादा येरेमेई के प्रति स्वयं उसका अपना अपराध घट जाता हो।

और दुष्टता उसे बहुतेरी दिखायी देती थी। उस घर में रहनेवाला हर आदमी पेत्रूख़ा को धोखेबाज़ और चोरी का माल वसूल करनेवाला कहता था, फिर भी सभी उसके आगे सिर झुकाते थे और उसकी ख़ुशामद करते थे और बहुत सम्मानपूर्वक उसे प्योत्र याकीमिच कहकर संबोधित करते थे। उन लोगों ने मुटल्ली का एक भद्दा-सा नाम रख छोड़ा था और जब भी वह शराब के नशे में होती थी तो लोग उसे

धकियाते थे और पीटते थे ; एक दिन तो जब वह नशे में धुत्त बावर्ची-ख़ाने की खिड़की के नीचे बैठी थी तो बावर्ची ने उस पर गंदा पानी और कूड़ा-करकट तक डाल दिया था ... लेकिन उससे ख़िदमत सब लेते थे, और बदले में उसे घूंसों-लातों और गाली-कोसनों के अलावा कुछ नहीं देते थे। पेर्फ़ीश्का अपनी अपाहिज बीवी को नहलाने-धुलाने को हमेशा उसी से कहता था ; पेत्रूख़ा एक भी पाई दिये बिना हर छुट्टी से पहले उससे शराबख़ाना साफ़ करवाता था ; तेरेंती के लिए वह क़मीज़ें बनाती थी। वह सबका काम करती थी और बहुत अच्छी तरह, कोई शिकायत किये बिना करती थी। उसे बीमारों की देखभाल करने और बच्चों को पालने का शौक़ था ...

इल्या देखता था कि पेर्फ़ीश्का उस घर में सबसे मेहनती आदमी था, पर लोग उसकी खिल्ली उड़ाते थे, वे उसकी ओर तभी ध्यान देते थे, जब वह शराब के नशे में चूर होकर शराबख़ाने में अपना अकार्डियन लेकर बैठ जाता था या अपना अकार्डियन बजाता हुआ और मज़ाकिया गाने गाता हुआ आंगन में लड़खड़ाता फिरता था। पर कोई यह नहीं जानना चाहता था कि कितने प्यार से वह अपनी अपाहिज बीवी को उठाकर तहख़ाने के दरवाज़े तक ले जाता था या अपनी बेटी को चूम-चूमकर और उसका मन बहलाने के लिए तरह-तरह की हंसानेवाली सूरतें बनाकर उसे सुलाता था। कोई उसे नहीं देखता था जब वह बेटी के साथ हंसी-मज़ाक़ करते हुए उसे खाना पकाना या कोठरी साफ़ करना सिखाता था और उसके बाद अपनी कमर दोहरी करके गंदे जूतों पर झुका बैठा रहता था और बहुत रात गये तक उनकी सिलाई करता रहता था।

जब लोहार को गिरफ़्तार करके जेल ले जाया गया था, तो वह मोची अकेला आदमी था जिसे उसके बेटे की चिंता थी। वह फ़ौरन पावेल को अपने यहां रहने के लिए ले गया था। लड़का मोम-लगा धागा बटता था, फ़र्श पर झाड़ू लगाता था, पानी भरकर लाता था, और दुकान से रोटी, क्वास और प्याज़ वग़ैरह ला देता था। इतवार को या छुट्टी के दिन मोची को शराब पिये हुए तो सब देखते थे, लेकिन अगले दिन नशा उतरने पर वह अपनी बीवी से क्या कहता था यह कोई नहीं सुनता था :

"दून्या, मुझे माफ़ कर देना। तू समझती है कि मैं अपने शौक़ के लिए पीता हूं? ऐसा नहीं है कि मैं पैदाइशी शराबी हूं, मैं तो बस उकताहट दूर करने के लिए पीता हूं। पूरे हफ़्ते मैं बैठा जूते ठोंकता रहता हूं। थक जाता हूं। इसलिए मैं – बस दो-चार चुसकियां लगा लेता हूं।"

"कभी इसके लिए दोष दिया है मैंने तुम्हें? भगवान जानता है, मुझे तुम्हारे ऊपर कितना तरस आता है!" उसकी आवाज़ भर्रायी हुई होती थी और उसके गले में से गरगराहट की आवाज़ आती थी। "तुम समझते हो मैं देखती नहीं कि तुम कितना काम करते हो। भगवान ने मुझे तुम्हारे लिए एक बोझ बना दिया है। अच्छा होता जो मैं मर जाती!.. तुम्हें छुटकारा मिल जाता तो मुझे चैन पड़ता!.."

"ख़बरदार, जो फिर कभी ऐसी बात कही! मैं तुम्हारे मुंह से ऐसी बात नहीं सुनना चाहता! तुम्हारे साथ ज्यादती तो मैं करता हूं। मगर इसलिए नहीं कि मैं दिल का बुरा हूं – बस कमज़ोर हूं। एक दिन ऐसा आयेगा कि हम लोग किसी और गली में जाकर रहने लगेंगे और फिर हर चीज़ बदल जायेगी... खिड़कियां, दरवाज़े – सभी चीज़ें दूसरी होंगी... खिड़कियां गली में खुलेंगी। मैं काग़ज़ का एक जूता काटकर खिड़की पर चिपका दूंगा – साइनबोर्ड की तरह। फिर देखना, लोग कैसे टूटकर आयेंगे! काम चमक उठेगा! आग में ईंधन झोंको, धौंकनियों पर ज़ोर लगाओ; हम तो पैसा ढाल रहे हैं, आओ, मेरे यारो,

पेर्फ़ीश्का के जीवन की कोई बात इल्या से छिपी नहीं थी। वह जानता था कि मोची जीते जी मरता था, फिर भी वह मस्त आदमी था, हमेशा हंसता रहता था और अकार्डियन कमाल का बजाता था। इस बात के लिए इल्या उसका आदर करता था।

इसके विपरीत पेत्रूख़ा सुबह से रात तक शराबख़ाने के काउंटर के पीछे बैठा ड्राफ़्ट खेलता रहता था, चाय पीता रहता था और वेटरों को डांटता-फटकारता रहता था। येरेमेई की मौत के कुछ ही दिन बाद उसने तेरेंती को काउंटर पर काम करने के लिए लगा दिया था और खुद आंगन में टहल-टहलकर सीटी बजाने, घर का हर पहलू से मुआ-इना करने और मुक्के मार-मारकर दीवारों की मज़बूती आज़माने के अलावा और कुछ नहीं करता था।

इल्या बहुत-सी बातें देखता था, पर सारी की सारी बुरी और निरा-शाजनक ही होती थीं और उसमें लोगों से अलग-थलग रहने की और ज्यादा इच्छा पैदा करती थीं। कभी-कभी उस पर जो कुछ प्रभाव पड़ता था उसके बारे में वह किसी से बातें करने को तरसता था। लेकिन चाचा से वह बात करना नहीं चाहता था: येरेमेई के मरने के बाद से उनके बीच एक दीवार-सी खड़ी हो गयी थी, जो दिखायी तो नहीं देती थी पर थी बहुत मज़बूत; उसकी वजह से अब इल्या के लिए अपने चाचा के साथ पहले की तरह बेझिझक और घुल-मिलकर बात करना नामुमकिन हो गया था। वह याकोव से भी यह उम्मीद नहीं कर सकता था कि वह उसे कुछ समझायेगा, क्योंकि याकोव की भी अपनी अलग ही ज़िंदगी थी, हालांकि बिल्कुल ही दूसरे ढंग की।

याकोव को भी उस टूटी-फूटी फटी-पुरानी चीज़ें बटोरनेवाले की बहुत कमी महसूस होती थी। वह अकसर उदास स्वर में और मातमी सूरत बनाकर उसकी बातें करता था:

"ज़िंदगी में अब कुछ मज़ा नहीं रह गया है!.. अगर दादा येरेमेई ज़िंदा होते तो हमें कोई कहानी ही सुनाते। अच्छी कहानी से बढ़कर कोई चीज़ नहीं होती।"

एक दिन उसने इल्या से बड़े रहस्यमय ढंग से कहा:

"तुम्हें एक चीज़ दिखाऊं? पहले क़सम खाओ कि किसी को बता-ओगे नहीं। कहो, 'मैं हमेशा के लिए नरक में जाऊं अगर...'"

जब इल्या ने क़सम दोहरा दी तो याकोव उसे आंगन के कोने में लाइम के पुराने पेड़ के पास ले गया और बड़ी सावधानी से उसकी छाल का एक टुकड़ा हटाया जो एक खोखल को ढकने के लिए पेड़ के तने पर बड़ी होशियारी से ठीक जगह पर बिठा दिया गया था। उसने खोखल को छुरी से बड़ा किया था और उसे अंदर से पुराने कपड़े और काग़ज़ के रंग-बिरंगे टुकड़ों, पन्नी और चाय लपेटने के काग़ज़ से बहुत सुंदर ढंग से सजाया गया था। खोखल के बिल्कुल अंदर गहराई में पीतल की एक छोटी-सी देव-प्रतिमा रखी थी जिसके सामने एक मोमबत्ती जल रही थी।

"कैसा लगा?" याकोव ने छाल का टुकड़ा उसकी जगह पर बिठाते हुए पूछा।

"यह है काहे के लिए ?"

"पूजा की जगह है," याकोव ने कहा। "मैं रात को यहां प्रार्थना करने आया करूंगा जब कोई मुझे देख न पाये।"

इल्या को यह विचार तो अच्छा लगा, लेकिन उसने सोचा कि यह बात है ख़तरनाक।

"अगर किसी ने रोशनी देख ली तो? तुम्हारा बाप तुम्हारी अच्छी तरह मरम्मत करेगा!.."

"रात को कौन देखेगा? सब लोग सोते रहते हैं, चारों ओर सन्नाटा रहता है... मैं छोटा हूं न – दिन के वक़्त अगर मैं प्रार्थना करूं तो भगवान मेरी बात सुन नहीं सकता, लेकिन रात को सुन लेगा। ज़रूर सुनेगा, क्यों है न?"

"मालूम नहीं, शायद सुन ही ले!.." इल्या ने अपने दोस्त के बड़ी-बड़ी आंखोंवाले, पीले चेहरे को घूरते हुए विचारमग्न होकर कहा।

"तुम मेरे साथ प्रार्थना करने आओगे?" याकोव ने पूछा।

"तुम किस चीज़ के लिए प्रार्थना करना चाहते हो? मैं भगवान से कहूंगा कि मुझे बुद्धिमान बना दे और मैं जो कुछ चाहूं वह मुझे मिल जाये। और तुम?"

"मैं भी..."

लेकिन एक क्षण सोचने के बाद याकोव बोला:

"मैं किसी ख़ास चीज़ के लिए प्रार्थना नहीं करना चाहता था। ख़ाली प्रार्थना करना चाहता था, बस। बाक़ी उसकी मर्ज़ी की बात है... वह जो चाहे मुझे दे दे..."

उन दोनों ने आपस में तै कर लिया कि उसी रात प्रार्थना करेंगे, और वे आधी रात को जागने का दृढ़ संकल्प लेकर सोये। लेकिन न वे उस रात को जागे, न उससे अगली रात को, न अगली कई रातों को, और इसके बाद इल्या के दिमाग़ पर लगातार इतनी बहुत-सी नयी बातों की छाप पड़ती रही कि वह पूजा की उस जगह के बारे में बिल्कुल भूल गया।

उसी लाइम के पेड़ पर, जिस पर याकोव ने अपनी पूजा की जगह बनायी थी, पावेल ने सिस्किन और टिटमिस चिड़ियां पकड़ने के लिए जाल भी लगाया था। पावेल का नया जीवन बहुत कठिन था। वह दुबला

हो गया था और पीला पड़ गया था। वह पेर्फ़ीश्का के लिए काम करने में इतना फंसा रहता था कि उसे आंगन में आकर खेलने का समय भी नहीं मिलता था; दोस्तों से उसकी मुलाक़ात बस किसी त्योहार के दिन ही होती थी जब मोची शराब के नशे में धुत्त रहता था। पावेल उनसे पूछता कि स्कूल में उन्हें क्या पढ़ाया जा रहा था और जब वह उनके डींग-भरे क़िस्से सुनता तो वह त्योरियों पर बल डालकर ईर्ष्या से उन्हें देखता।

"तुम लोग अकड़ो नहीं। मैं भी पढ़ा करूंगा!.."

"पेर्फ़ीश्का तुम्हें पढ़ने ही नहीं देगा।"

"मैं भाग जाऊंगा।" पावेल ने दृढ़ संकल्प के साथ कहा।

और हुआ भी यही, कुछ दिन बाद मोची कुछ हंसकर कह रहा था:

"वह मेरा शागिर्द भाग गया, शैतान कहीं का!"

उस दिन पानी बरस रहा था। इल्या ने एक नज़र बिखरे हुए बालोंवाले पेर्फ़ीश्का पर डाली और फिर बेरंग और उदास आसमान को देखा और उसके दिल में पावेल के लिए तरस उमड़ आया। इल्या छज्जे के नीचे सायबान की दीवार से टिका हुआ खड़ा था और एकटक उस घर को देखे जा रहा था। ऐसा लगता था कि घर धीरे-धीरे छोटा होता जा रहा है और ज़मीन में धंसता जा रहा है। पुरानी कड़ियां बाहर की ओर पहले से ज़्यादा उभर आयी थीं, मानो दर्जनों साल के दौरान घर में जो कचरा जमा हो गया था वह उन्हें ज़ोर से बाहर की ओर ढकेल रहा था। उस घर ने अपने जीवन-भर जो विपत्तियां, शराब के नशे में डूबी हुई जो चीख़-पुकार और जो कटुता-भरे गीत अपने अंदर सोखे थे वे उसकी नस-नस में इस तरह समा गये थे, उसमें बसनेवाले असंख्य लोगों के पांवों तले उसके लकड़ी के फ़र्श के तख़्ते इतनी बुरी तरह रौंदे गये थे और वह इतनी बुरी तरह हिल गया था, कि अब वह ज़्यादा दिन चलनेवाला नहीं था, और धीरे-धीरे ढहता जा रहा था और अपनी खिड़कियों के बुझे हुए कांचों की उदास नज़रों से दुनिया को तक रहा था।

"हूं-ऊं," मोची ने आह भरी। "कुछ ही दिन की बात और है, यह फली फट जायेगी और सारे बीज बिखर जायेंगे। यहां के हम रहने-

वाले रेंगकर घुस जाने के लिए नयी दरारों की खोज में चारों दिशाओं में भागते फिरेंगे !.. अगली बार हम इस तरह नहीं रहेंगे ... हर चीज़ बिल्कुल दूसरी होगी – खिड़कियां और दरवाज़े, और यहां तक कि हमें काटनेवाले खटमल भी !.. जितनी ही जल्दी यह हो जाये उतना ही अच्छा है ... मैं तो इस महल से तंग आ चुका हूं ..."

लेकिन मोची के सपने व्यर्थ थे। घर की फली फटी नहीं, उसे आबदार पेत्रूखा ने ख़रीद लिया। घर बिकने के बाद दो दिन तक वह काम-काजी ढंग से पुराने खंभों और कड़ियों को ठोंक-बजाकर देखता रहा। फिर ईंटें और तख़्ते लाये गये, पाड़ बांधा गया और अगले दो महीनों तक वह घर हथौड़ों की चोट से कांपता-कराहता रहा। उस पर आरे चलाये गये, कुल्हाड़े चलाये गये, कीलें ठोंकी गयीं, पुराने सड़े हुए तख़्ते चरचराहट के साथ नोच फेंके गये और उनकी जगह नये तख़्ते लगाये गये, और जब उस घर में एक नया हिस्सा जोड़कर उसे बड़ा बना दिया गया तो पूरे मकान की दीवारों पर बाहर से तख़्ते जड़ दिये गये। नीचा-सा और फैला हुआ वह मकान अब सीधा धरती से उभरता हुआ लगता था, मानो उसमें नयी जड़ें निकल आयी हों। पेत्रूखा ने घर के बाहर नीली पृष्ठभूमि पर सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ एक बड़ा-सा नया साइनबोर्ड लगा दिया:

'प० या० फ़िलिमोनोव के मित्रों की प्रमोदशाला'।

"लेकिन अंदर से तो यह जगह अब भी सड़ी हुई है," पेर्फ़ीश्का ने अपनी राय दी।

इल्या उसके समर्थन में मुस्करा दिया। उसे भी ऐसा लगता था कि नये सिरे से बनाया गया यह घर एक ढकोसला था। वह पावेल के बारे में सोचने लगा, जो अब कहीं और रहता था और दूसरी चीज़ें देखता था। मोची की तरह ही इल्या भी नयी खिड़कियों, नये दरवाज़ों और नये लोगों के सपने देखता रहता था ... अब उस घर में जीवन पहले से भी बुरा हो गया था। पुराना लाइम का पेड़ काट डाला गया था और जिस सुखद कोने में वह उगा हुआ था वह जगह घर के नये हिस्से ने घेर ली थी। दूसरी प्रिय जगहें भी, जहां बच्चे बड़े चाव से बैठकर बातें किया करते थे, ग़ायब हो गयी थीं। अब उनके जमा होने के लिए एकमात्र सुविधाजनक जगह पुरानी सड़ी-गली लकड़ियों

और काठ-कबाड़ के उस बड़े-से ढेर के पीछे रह गयी थी, जहां पहले लोहारख़ाना हुआ करता था, लेकिन वहां बैठते दिल डरता था, लगता था कि कचरे के उस ढेर के नीचे अपने फटे हुए सिर के साथ सावेल की घरवाली पड़ी हुई है।

पेत्रूखा ने चाचा तेरेंती को रहने के लिए नयी जगह दे दी – काउंटर के पीछे एक छोटी-सी कोठरी। हरे काग़ज़ से मढ़ी हुई पतली दीवार में से होकर तंबाकू का धुआं, शराबख़ाने की आवाज़ें और वोदका की गंध रिस-रिसकर कोठरी में आती थी। कोठरी साफ़-सुथरी थी और उसमें सीलन नहीं थी, लेकिन वह तहख़ानेवाली कोठरी से बदतर थी। उसकी अकेली खिड़की एक सायबान की सुरमई दीवार की ओर खुलती थी; दीवार की आड़ की वजह से सूरज, सितारे, आसमान कुछ भी दिखायी नहीं देता था, जबकि तहख़ानेवाली कोठरी की खिड़की के पास घुटनों के बल बैठकर ये सारी चीज़ें दिखायी देती थीं ...

चाचा तेरेंती हल्के बैंगनी रंग की क़मीज़ और उसके ऊपर एक जैकेट पहनने लगा था, जो उसके शरीर पर ऐसी झूलती रहती थी जैसे किसी बड़े-से डिब्बे को पहना दी गयी हो, और वह सुबह से रात तक शराबख़ाने के काउंटर के पीछे खड़ा रहता था। वह लोगों को "आप" कहकर संबोधित करने लगा था, रुखाई से और झटके से मानो भूंकते हुए बोलने लगा था और काउंटर के पार उन्हें इस तरह घूरता था जैसे कोई कुत्ता अपने मालिक की जायदाद की रखवाली कर रहा हो। उसने इल्या को स्लेटी रंग की बनात की जैकेट, बूट जूते, एक कोट और टोपी ख़रीद दी थी; इल्या ने जब भी इन्हें पहना, उसे बरबस बूढ़े कबाड़ी की याद आ गयी। वह अपने चाचा से कभी-कभार ही बोलता था और उसके दिन धीरे-धीरे बहुत ही नीरस ढंग से कट रहे थे। उसे अब गांव की याद अकसर आने लगी थी; उसे अब पहले से ज़्यादा यक़ीन हो चला था कि वहां का जीवन बेहतर था – ज़्यादा शांत, ज़्यादा सीधा-सादा और ज़्यादा समझ में आनेवाला। उसे केर्जेनेत्स के घने जंगल और वे कहानियां याद आती थीं जो चाचा तेरेंती ने उसे संन्यासी अंतीपा के बारे में सुनायी थीं। अंतीपा की याद आते ही उसे पावेल याद आता। वह अब कहां होगा? शायद वह भी भागकर जंगल में चला गया होगा और कोई गुफा काटकर उसमें

रहता होगा। जंगल में तेज़ हवाओं का रुदन और भेड़ियों के हौंकने की आवाज़ गूंजती रहती है – ये आवाज़ें कितनी ही डरावनी क्यों न हों पर होती हैं मधुर। जाड़े में, जब मौसम अच्छा होता है, तो चारों ओर पेड़ और ज़मीन चांदी की तरह चमकते हैं और पांवों तले बर्फ़ के चरमर-चरमर बोलने के अलावा कोई दूसरी आवाज़ सुनायी नहीं देती है, और अगर कोई बिल्कुल चुपचाप खड़ा रहे तो उसे अपने दिल की धड़कनों के सिवा कुछ भी सुनायी नहीं देता है।

शहर में हमेशा बहुत शोर और हुल्लड़ रहता है, रात को भी। लोग गाते हैं, चिल्लाते हैं, कराहते हैं; गाड़ियां और बग्घियां सड़कों पर खड़खड़ाती हुई गुज़रती रहती हैं, जिनकी आवाज़ से खिड़कियों के कांच तक हिल उठते हैं। स्कूली लड़के हमेशा कोई न कोई शरारत करते रहते हैं; बड़े लोग हर दम गालियां बकते रहते हैं, आपस में झगड़ते रहते हैं, और शराब पीकर धुत्त हो जाते हैं। किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। वे या तो पेत्रूखा की तरह धोखेबाज़ होते हैं, या सावेल की तरह जंगली, या पेर्फ़ीश्का, चाचा तेरेंती और मुटल्ली की तरह किसी गिनती में न आनेवाले लोग... इल्या सबसे ज़्यादा उस मोची से प्रभावित हुआ था।

एक दिन सवेरे जब इल्या स्कूल जाने को तैयार था तो पेर्फ़ीश्का अस्त-व्यस्त हालत में शराबखाने में आया; उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे रात-भर वह सोया न हो। एक भी शब्द बोले बिना वह आकर काउंटर के पास खड़ा हो गया और तेरेंती को घूरता रहा। उसकी बायीं आंख फड़क रही थी और आधी बंद थी, और उसका निचला होंट बहुत हास्यास्पद ढंग से लटका हुआ था। चाचा तेरेंती ने मोची को एक नज़र देखा, मुस्कराया और उसके लिए वोदका का तीन कोपेकवाला गिलास उंडेल दिया – रोज़ सवेरे वह इतनी ही पीता था। पेर्फ़ीश्का ने कांपते हाथ से गिलास थाम लिया, वोदका अपने मुंह में उंडेल ली, लेकिन हमेशा की तरह वह न तो गुर्राया और न ही उसने गाली दी। एक बार फिर उसने आबदार को अजीब ढंग से फड़कती बायीं आंख से घूरा; उसकी दाहिनी आंख प्रकाशहीन और ठहरी हुई थी, जैसे वह उससे कुछ भी नहीं देख रहा था।

"आपकी आंख को क्या हो गया है?" तेरेंती ने पूछा।

पेर्फ़ीश्का ने आंख मली, अपनी उंगली को ग़ौर से देखा और फिर बहुत ज़ोर से और स्पष्ट स्वर में बोला:

"मेरी बीवी, अव्दोत्या पेत्रोव्ना, चल बसी।"

तेरेंती ने कोने में टंगी हुई देव-प्रतिमा की ओर देखकर अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया।

"भगवान उनकी आत्मा को शांति दे," उसने कहा।

"क्या कहा?" पेर्फ़ीश्का ने उसे एकटक घूरते हुए पूछा।

"मैंने कहा, 'भगवान उनकी आत्मा को शांति दे'।"

"हुंह! मर गयी!" और इतना कहकर मोची तेज़ी से मुड़ा तथा शराबखाने के बाहर चला गया।

"अजीब बंदा है!" तेरेंती ने बड़े उदास भाव से अपना सिर हिलाकर कहा। इल्या भी उससे सहमत था कि मोची सचमुच अजीब बंदा था... स्कूल जाते हुए वह लाश को देखने के लिए तहख़ाने में एक मिनट के लिए गया था। कोठरी में अंधेरा था और बहुत-से लोग जमा थे। अटारी पर की औरतें कोने में बिछी हुई खाट के चारों ओर जमा हो गयी थीं और कानाफूसी में बातें कर रही थीं। मुटल्ली माशा को कोई कपड़ा पहनाकर देख रही थी।

"बग़ल के नीचे कसता है?" उसने पूछा।

"हां-आं-आं," माशा ने अपनी बांहें फैलाकर चिड़चिड़ाते हुए कहा।

मोची बैठा अपनी बेटी को देख रहा था। उसकी बायीं आंख अभी तक फड़क रही थी। मृतात्मा के सूजे हुए सफ़ेद चेहरे को ध्यान से देखते हुए उसे उन काली-काली आंखों की याद हो आयी जो अब हमेशा के लिए बंद हो गयी थीं। वह बाहर चला आया; उसका दिल डूबा जा रहा था और उसे बेहद दुख महसूस हो रहा था।

लेकिन स्कूल से लौटकर जब वह शराबख़ाने में आया तो पेर्फ़ीश्का अकार्डियन बजा रहा था और लहक-लहककर गा रहा था:

दिल क्यों छीना,
गोरी, मेरा?
छीना भी, औ'
फिर फेंक दिया?

"हाय! हाय! उन शाहज़ादियों ने निकाल दिया मुझे। निकल जा!' उन्होंने मुझे फटकारा। 'निकल जा यहां से, पिशाच, शराबी, कलमुंहे!' मैं इसका बुरा नहीं मानता... मैं सब कुछ सह सकता हूं... मुझे गाली दो, मारो – सब मंज़ूर है। मैं तो बस ज़िंदगी का थोड़ा-सा रस लेना चाहता हूं!.. बस थोड़ा-सा रस। भैया, जीवन का थोड़ा-बहुत रस तो सभी लेना चाहते हैं – यह है सारी बात। हम सब एक जैसे हैं – वान्या हो कि मान्या। हम सब एक जैसे हैं!..

काहे को अब रोना-धोना?
आहें भरने से क्या होना?
लब सी ले, फ़रियाद न कर तू,
क्या पायेगा तू रो-रोके लहू!

पेर्फ़ीश्का का चेहरा खिला हुआ था। उसे देखकर इल्या को डर भी लग रहा था और उससे नफ़रत भी हो रही थी। उसे यक़ीन था कि अपनी घरवाली की मौत के दिन ऐसी हरकतें करने पर भगवान मोची को सज़ा ज़रूर देगा। अगले दिन भी पेर्फ़ीश्का नशे में धुत्त था, और जनाज़े के पीछे वह लड़खड़ाता हुआ, अपनी आंखें झपकाता हुआ और यहां तक कि कभी-कभी मुस्कराता हुआ भी चल रहा था। हर आदमी उसे धिक्कार रहा था और किसी ने तो उसकी गर्दन पर एक झापड़ तक मारा।

"अरे वाह! ज़रा सोचो तो!" कफ़न-दफ़न के दिन शाम को इल्या ने याकोव से कहा। "पूरा विधर्मी है यह पेर्फ़ीश्का।"

"मुझे कोई परवाह नहीं कि वह क्या है," याकोव ने भावहीन स्वर में कहा।

इधर कुछ दिन से इल्या को ऐसा लग रहा था कि याकोव बदलता जा रहा है। बाहर आने के बजाय वह घर पर ही बैठा रहता था जैसे इल्या से कतरा रहा हो। शुरू में तो इल्या ने सोचा कि स्कूल में उसकी सफलता पर ईर्ष्या की वजह से वह पढ़ाई में जुटा रहता होगा। लेकिन याकोव का नतीजा बेहतर होने के बजाय दिन-ब-दिन और बुरा होता गया; मास्टर साहब उसे हमेशा डांटते रहते थे कि उसका ध्यान न

जाने कहां रहता था और सीधी से सीधी बात भी उसकी समझ में नहीं आती थी। पेर्फ़ीश्का की ओर याकोव के रवैये पर इल्या को कोई आश्चर्य नहीं हुआ: उसका दोस्त घर में होनेवाली किसी भी बात में दिलचस्पी नहीं लेता था। लेकिन उसे यह जानने की उत्सुकता ज़रूर थी कि आखिर इस परिवर्तन का कारण क्या है।

"तुम्हें क्या हो गया है?" उसने एक दिन पूछा। "क्या तुम अब मुझसे दोस्ती नहीं रखना चाहते?"

"तुमसे दोस्ती नहीं रखना चाहता?" याकोव ने चकित होकर कहा; फिर जल्दी से बोला, "सुनो, घर जाओ! तुम जाओ तो, मैं अभी एक मिनट में आता हूं... मेरा इंतज़ार करना फिर देखना मैं तुम्हें क्या दिखाता हूं!"

याकोव मुड़ा और भाग गया। इल्या अपनी कोठरी में चला गया; कौतूहल से उसका सीना फटा जा रहा था। थोड़ी ही देर में याकोव ने अंदर आकर दरवाज़ा बंद कर लिया और खिड़की के पास जाकर अपनी क़मीज़ के अंदर से एक लाल किताब निकाली।

"यहां आओ," याकोव ने तेरेंती की चारपाई पर बैठकर और इल्या को अपने पास बैठने का इशारा करते हुए धीमे स्वर में कहा। उसने किताब खोलकर अपने घुटनों पर रख ली और उस पर झुक गया।

"'दूर, बहुत दूर, बहादुर सूरमा को एक पहाड़ दिखायी दिया जो इतना ऊंचा था... इतना ऊंचा था जैसे आसमान,'" वह पढ़ रहा था। "'और उसके बीचोंबीच एक लोहे का फाटक था। सूरमा के... निर-भीक हृदय में साहस उमड़ आया। उसने अपना भाला सीधा किया, घोड़े को एड़ लगायी, और ज़ोर से चीख़कर आगे झपटते हुए... अपनी पूरी ताक़त से उसने फाटक को धक्का दिया। बिजली जैसी कड़क के साथ लोहे का फाटक हज़ारों टुकड़ों में चूर-चूर हो गया... और उसी समय पहाड़ के सीने में से धुआं और लपटें... धुआं और लपटें निकलने लगीं और एक ऐसी गरज सुनायी दी जिससे धरती कांप उठी और पहाड़ की चोटियों पर से चट्टानें टूट-टूटकर नीचे सूरमा के घोड़े के पैरों पर गिरने लगीं। "तो आख़िरकार तू आ गया, दीवाने दुस्साहसी! कब से मौत को और मुझे तेरा इंतजार था!.." धुएं

की वजह से कुछ भी दिखायी न देने पर भी वह बहादुर सूरमा ... ' "

"कौन था वह ?" इल्या ने पूछा ; वह आश्चर्यचकित होकर अपने दोस्त की जोश के कारण कांपती आवाज़ सुन रहा था।

"कौन ?" याकोव ने अपना पीला चेहरा ऊपर उठाकर दबी ज़बान में कहा।

"सूरमा कौन होता है ?"

"सूरमा वह होता है ... वह होता है ... जो घोड़े पर सवार होता है ... जिसके हाथ में भाला होता है ... निर्भीक राऊल ... एक ड्रैगन ने उस लड़की को चुरा लिया था जिससे उसे प्यार था ... सुंदरी लुईज़ा को। तुम बस चुपचाप सुनते जाओ, शैतान," याकोव अधीर होकर चिल्लाया।

"अच्छी बात है !.. लेकिन सुनो – ड्रैगन क्या होता है ?"

"सांप होता है जिसके पंख होते हैं ... और फ़ौलाद के पंजे होते हैं ... और तीन सिर होते हैं उसके ... और उसके मुंह से आग निकलती है।"

"बाप रे बाप !" इल्या ने आंखें फाड़कर कहा। "वह अभी उसे ... क्या नाम है उसका ... ख़त्म कर देगा न ?"

कौतूहल के मारे दम साधे और मन में एक अनोखा चमत्कृत कर देनेवाला उल्लास लिये दोनों लड़के उस किताब पर सिर झुकाये एक-दूसरे से सटे बैठे रहे, जिसने उन्हें एक नयी और जादुई दुनिया में पहुंचा दिया था जहां बहादुर सूरमाओं के वार से पापी राक्षस धराशायी हो जाते थे, जहां की हर चीज़ विशाल और अद्भुत थी और जहां की कोई भी चीज़ इस नीरस, बेरंग ज़िंदगी जैसी नहीं थी। उस दुनिया में न शराबी होते थे और न चीथड़े लगाये हुए निकम्मे लोग, और लकड़ी के हिलते हुए मकानों के बजाय सोने की तरह जगमगाते हुए महल और गगनचुंबी मीनारोंवाले फ़ौलादी अभेद्य क़िले होते थे। दोनों बच्चों ने कल्पना की इस शानदार दुनिया में क़दम रखा ; दीवार के दूसरी तरफ़ अकार्डियन बज रहा था और पेर्फ़ीश्का मोची मस्त होकर गा रहा था :

जब मौत हमें ललकारेगी
वह जीती बाज़ी हारेगी।

शैतान कने मैं जाऊंगा,
मैं उससे मेल बढ़ाऊंगा।

"शाबाश है ! हम मस्तानों को भगवान प्यार करता है !"

मोची के पंचम सुर का साथ देने की कोशिश में अकार्डियन बीच-बीच में लड़खड़ा जाता था :

ठंड का मारा, वह बेचारा
क़िस्मत से है अब मरनेवाला।
जब सीधा नरक में जायेगा
तब शायद कुछ गरमायेगा।

हर अंतरे पर ज़ोर का ठहाका लगता और चारों ओर वाह-वाह की आवाज़ गूंज उठती।

शोर के इस तूफ़ान से लकड़ी की पतली-सी दीवार से अलगायी हुई कोठरी में दोनों लड़के किताब पर झुके हुए थे ; उनमें से एक बहुत धीमे स्वर में बोला :

" ' ... फिर सूरमा ने ड्रैगन को अपने फ़ौलादी शिकंजे में जकड़ लिया, और वह पीड़ा और भय से बिजली की कड़क की तरह गरज उठा ... ' "

सूरमा और ड्रैगनवाली किताब के बाद और किताबों की बारी आयी : 'गुआक, या अटल वफ़ादारी' और 'बहादुर राजकुमार फ़्रांत्सील वेनेत्सिआन और सुंदर राजकुमारी रेंत्सिवेना की कहानी'।

इल्या के दिमाग़ में अभी कुछ ही समय पहले तक यथार्थ के चित्रों की छाप रहती थी ; वह जगह अब सूरमाओं और राजकुमारियों से भर गयी। दोनों दोस्त बारी-बारी गल्ले में से दस-दस कोपेक चुराते और उनके पास किताबों की कोई कमी नहीं रह गयी। उन्होंने 'याश्का स्मेर्तेंस्की' के साहसी कारनामों की जानकारी हासिल की, और 'ता-तार घुड़सवार यापांचा' की कहानी से मंत्रमुग्ध हुए। वे अपने चारों ओर की मनहूस ज़िंदगी से दिन-ब-दिन दूर होते गये और एक ऐसी दुनिया में पहुंच गये जहां लोग हमेशा बदनसीबी की ज़ंजीरें तोड़कर सुखी जीवन व्यतीत करते थे।

5-01118

एक दिन पेफ़ींश्का को थाने बुलाया गया। वह परेशान-सा चल पड़ा, लेकिन जब वह लौटा तो बहुत ख़ुश था; वह पावेल ग्राचोव को अपने साथ लाया था, जिसका हाथ उसने मज़बूती से पकड़ रखा था। पावेल की नज़रें अब भी पहले की तरह ही पैनी थीं लेकिन वह बेहद दुबला हो गया था और पीला पड़ गया था और उसके चेहरे में अब वह पहले जैसी ढिठाई नहीं रह गयी थी। मोची उसे घसीटता हुआ शराबख़ाने में लाया।

"तो, भाइयो, यह रहा पावेल ग्राचोव, जो क़ैदियों के एक जत्थे के साथ पेंज़ा शहर से पैदल चलकर अभी यहां पहुंचा है..." वह बोला, उसकी बायीं आंख अभी तक फड़क रही थी। "देखो तो आजकल के लड़के कैसे हो गये हैं। अब वे चूल्हे के पास बैठकर इस बात की बाट नहीं जोहते कि सुख उनके पास आये; जैसे ही पिछले पैरों पर खड़े होने लगते हैं उसकी खोज में निकल खड़े होते हैं!"

पावेल एक हाथ अपनी फटी हुई पतलून की जेब में डाले उसकी बग़ल में खड़ा था और दूसरा हाथ मोची के पंजे से छुड़ाने की कोशिश कर रहा था; वह बहुत नाराज़ होकर मोची को कनखियों से देखता जा रहा था। किसी ने मोची को लौंडे की पिटाई करने की सलाह दी।

"किसलिए?" पेफ़ींश्का ने गंभीर होकर आपत्ति की। "घूमने दो जहां इसका जी चाहे। कौन जाने इसे सचमुच सुख मिल ही जाये।"

"भूखा होगा," तेरेंती ने अनुमान लगाया। "यह लो, पावेल," उसने उसकी तरफ़ रोटी का टुकड़ा बढ़ा दिया।

लड़का उतावलापन दिखाये बिना रोटी का टुकड़ा लेकर दरवाज़े की ओर बढ़ा।

"ह्वी!" मोची ने उसके पीछे ज़ोर से सीटी बजायी। "जाओ, बेटा, ख़ुश रहो!"

इल्या अपनी कोठरी के दरवाज़े से सारा दृश्य देख रहा था; उसने इशारे से पावेल को बुलाया। पावेल उसके पास गया और घुसने से पहले कुछ झिझकता हुआ रुक गया और कोठरी में आकर उसने चारों ओर संदेह-भरी दृष्टि डाली।

"क्या चाहते हो?" उसने रुखाई से पूछा।

"हेल्लो!"

"हेल्लो!"

"बैठ जाओ!.."

"किसलिए?"

"कुछ नहीं!.. बातें करेंगे!.."

पावेल के तीखे सवाल और उसकी भारी आवाज़ सुनकर इल्या कुछ घबरा गया। वह उससे यह पूछने को बेचैन हो रहा था कि वह इतने दिन कहां रहा और उसने क्या-क्या देखा, लेकिन पावेल कुर्सी पर बैठ गया और बड़े इतमीनान से रोटी खाते हुए उसने ख़ुद सवाल पूछना शुरू किया।

"स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली?"

"अभी नहीं, वसंत में!"

"मैंने तो पूरी कर ली!.."

"तुमने कर ली?" इल्या की आवाज़ में संदेह की झलक थी।

"मुझे ज़्यादा वक़्त नहीं लगा!"

"कहां पढ़ा तुमने?"

"जेल में। क़ैदियों ने मुझे सब सिखा दिया!"

इल्या सरककर और भी पास आ गया।

"क्या वह डरावनी जगह है?" उसने अपने साथी के दुबले-पतले चेहरे की ओर आदर से देखते हुए पूछा।

"अरे नहीं! मैं तो बहुत-से शहरों के न जाने कितने जेलों में रहा। वहां मैं सिर्फ़ शरीफ़ों से मेल-जोल रखता था... वहां शरीफ़ औरतें भी थीं। तरह-तरह की भाषाएं बोल लेते थे वे। मैं उनकी कोठरियां झाड़-बुहारकर साफ़ कर देता था। बड़े मस्त लोग थे मानो जेल में रहने में उन्हें कोई तकलीफ़ ही न हो।"

"डाकू?"

"पक्के चोर," पावेल ने बड़े गर्व से कहा।

इल्या की आंखें झपक गयीं और पावेल के प्रति उसकी श्रद्धा बढ़ गयी।

"रूसी थे वे?" उसने पूछा।

"यहूदी भी थे... दुनिया में सबसे अच्छे लोग होते हैं ये क़ैदी!.. कौन-सा करम नहीं किया था उन्होंने! आंख बंद करके दायें-बायें

सबको लूटा था! .. लेकिन पकड़े गये और उसका मतलब था—साइबेरिया!"

"तुमने जेल में पढ़ा कैसे?"

"सीधी-सी बात है... मैंने बस उनसे कहा, 'मुझे सिखाओ', और उन्होंने मुझे सिखा दिया..."

"पढ़ना-लिखना?"

"लिखने में तो मैं कच्चा हूं, लेकिन पढ़ने को जितना कहो पढ़ सकता हूं। मैंने बहुत-सी किताबें पढ़ी हैं! .."

किताबों की बात निकलते ही इल्या का जोश बढ़ गया।

"मैं और याकोव दोनों किताबें पढ़ते हैं," वह बोला।

अपनी पढ़ी हुई किताबों के नाम गिनाने की उत्सुकता में वे बीच-बीच में एक-दूसरे की बात काटते रहे। थोड़ी ही देर में पावेल ने रुककर आह भरी।

"तुम शैतानों ने मुझसे ज़्यादा पढ़ा है," वह बोला। "मैं ज़्यादातर कविता पढ़ता था... वहां हर तरह की किताबें थीं, लेकिन अच्छी किताबें बस कविता की थीं..."

इतने में याकोव अंदर आया, आश्चर्य से उसकी आंखें बाहर उभर आयीं और वह हंसने लगा।

"अरे, दुंबे," पावेल बोला, "तू हंस किस बात पर रहा है?"

"कहां रहा तू?"

"ऐसी जगह जहां तू कभी पहुंच नहीं सकता।"

"तू समझता क्या है?" इल्या ने याकोव से कहा। "इसने भी किताबें पढ़ी हैं।"

"सचमुच?" याकोव ने चिल्लाकर कहा और फ़ौरन उसके स्वर में दोस्ताना कुछ बढ़ गया। तीनों लड़के बैठकर जल्दी-जल्दी बातें करने लगे, उनकी बातों में कोई सिलसिला तो नहीं था लेकिन जो कुछ वे कह रहे थे वह बेहद दिलचस्प था।

"कैसी-कैसी चीज़ें देखी हैं मैंने! कभी उनमें से आधी भी तुम्हें बता नहीं पाऊंगा!" पावेल ने उत्कंठित स्वर में डींग मारते हुए कहा। "एक बार मैंने दो दिन तक कुछ खाया नहीं—एक टुकड़ा तक नहीं... जंगल में रात बितायी—बिल्कुल अकेले।"

"डर नहीं लगा तुम्हें?" याकोव ने पूछा।

"जाकर देखो तो पता चले! एक बार तो कुत्तों ने मुझे कच्चा ही चबा लिया होता... यह काज़ान की बात है... वहां किसी कवि की बड़ी-सी मूर्त्ति है—इसी लिए वहां लगायी गयी है कि वह कवि था... तुम देखते कितना बड़ा था वह! ये बड़े-बड़े पांव! और मुट्ठी इतनी बड़ी जितना बड़ा तुम्हारा सिर है, याकोव! भाई, मैं भी कविता लिखा करूंगा। मैंने थोड़ा-बहुत तो सीख भी लिया है! .."

अचानक उसने सिकुड़कर अपने पांव नीचे खींच लिये, नज़रें एक जगह पर जमायीं, बहुत महत्वपूर्ण आदमी की तरह, भवे चढ़ाकर देखा और धड़ाधड़ सुनाने लगा:

खुली सड़क पर जाते लोग,
पहने-ओढ़े, मोटे लोग,
रोटी भी जो इनसे मांगो,
यही कहेंगे: भागो, भागो! ..
चलो यहां से! ..

कविता पूरी करके उसने एक नज़र लड़कों पर डाली और धीरे-धीरे अपना सिर झुका लिया। थोड़ी देर तक ख़ामोश तनाव रहा।

"तुम इसे कविता कहते हो?" इल्या ने आख़िरकार साहस करके कहा।

"तुम्हें सुनायी नहीं देता?" पावेल ने चिढ़कर जवाब दिया। "'मांगो' और 'भागो'। इसका मतलब है कविता।"

"बिल्कुल कविता है," याकोव जल्दी से बीच में बोला। "इल्या, तुम तो हमेशा ऐब ही निकालते रहते हो।"

"मैंने कुछ और कविताएं बनायी हैं," पावेल ने बड़ी उत्कंठा से कहा, और याकोव की ओर मुड़कर अपनी नयी कविता भी उसी तरह फ़र्राटे से सुना दी:

भूरी-भूरी बदली छायी,
धरती सर्दी से थर्रायी,
चुपके-चुपके, धीरे-धीरे
पतझड़ आया पर्वत तीरे,
खाने को बस लाठी-पत्थर,
तन ढकने को धज्जी-गूदड़।

"वा-ह!" याकोव ने अपनी आंखें फाड़कर प्रशंसा के भाव से कहा।

"यह बात हुई, इसे मैं कविता कहता हूं," इल्या ने भी याकोव जितने ही प्रशंसा के भाव से कहा।

पावेल के गालों पर हल्की-सी लाली दौड़ गयी और उसने अपनी आंखें ऐसे सिकोड़ीं जैसे उनमें धुआं चला गया हो।

"मैं लंबी-लंबी कविताएं बनानेवाला हूं," उसने डींग मारते हुए कहा। "कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है! जंगल दिखायी देता है तो 'मंगल' का ध्यान आता है, आसमान दिखायी देता है तो आदमी 'आन-बान' के बारे में सोचता है। शब्द अपने आप आते जाते हैं!"

"अब तुम क्या करनेवाले हो?" इल्या ने उससे पूछा।

पावेल ने आंखें झपकायीं, अपने चारों ओर देखा, कुछ देर चुप रहा और आखिरकार धीरे से सकुचाते हुए कहा: "अरे, कुछ न कुछ तो!.."

लेकिन क्षण भर बाद उसने बड़े दृढ़ संकल्प के साथ कहा:

"पर जल्दी ही मैं फिर भाग जाऊंगा!.."

वह मोची के यहां रहने लगा था। रोज़ शाम को लड़के उससे मिलने जाते थे। तेरेंती की छोटी-सी कोठरी की अपेक्षा तहख़ाने का वातावरण शांत और सुखद था। पेर्फ़ीश्का शायद ही कभी घर पर होता था। उसके पास अपना जो कुछ भी था उसकी वह शराब पी गया था और अब वह दूसरे मोचियों के लिए फुटकर काम करने में समय बिताता था, या जब काम नहीं होता था तो शराबख़ाने में जा बैठता था। अपना पुराना अकार्डियन बग़ल में दबाये वह नंगे पांव और अधनंगा घूमता रहता था। वह अकार्डियन उसके शरीर का हिस्सा बन चुका था। उसके मस्त व्यक्तित्व का एक हिस्सा उस बाजे में रच-बस गया था, और दोनों एक-दूसरे से बहुत कुछ मिलने-जुलने लगे थे: दोनों की पसलियां निकली हुई थीं, दोनों की सूरतें फटी-पुरानी थीं, और दोनों ही मस्त धुनों और तानों से भरे हुए थे। सभी कारीगरों में पेर्फ़ीश्का हमेशा चटपटी तुकबंदियां जोड़ते रहने के लिए मशहूर था; कोई भी जगह ऐसी नहीं थी जहां उसका स्वागत न किया जाता हो। वे लोग उससे इसलिए प्यार करते थे कि वह मेहनत करनेवालों के नीरस जीवन में अपने गीतों से और अपनी हंसानेवाली कहानियों से रौनक़ पैदा कर देता था।

जब भी वह कुछ कोपेक कमा लेता था उनमें से आधे वह अपनी बेटी को दे देता था, और उसके कल्याण की उसे जो चिंता रहती थी उसका यही आदि होता था और यही अंत। उसकी बेटी पूरी तरह अपनी नियति की मालिक थी। वह बढ़कर काफ़ी लंबी हो गयी थी, उसकी काली-काली घुंघराली लटें उसके कंधों पर पड़ी रहती थीं और उसकी काली-काली आंखें अधिक बड़ी और अधिक गंभीर हो गयी थीं। वह दुबली-पतली फुर्तीली लड़की तहख़ाने की उस छोटी-सी कोठरी में गृहिणी की भूमिका अच्छी तरह अदा करती थी। जलाने के लिए वह निर्माण-स्थलों से लकड़ी की चिपटियां बटोरकर लाती थी, किसी न किसी तरह सूप बनाने की कोशिश करती थी, और दोपहर तक अपनी स्कर्ट ऊपर चढ़ाये इधर-उधर भागती फिरती थी – मैली-कुचैली, पसीने से नहायी, अपने काम में डूबी हुई। खाना तैयार करके वह कोठरी साफ़ करती, हाथ-मुंह धोती, कपड़े बदलती और खिड़की के पास मेज़ पर बैठकर अपने कपड़े मरम्मत करने लगती।

मुटल्ली अकसर चाय, शकर और मीठी डबल रोटी लेकर उससे मिलने आती थी। एक बार उसने माशा को एक नीली पोशाक भी उपहार में दी थी। उसके सामने माशा का आचरण वयस्क गृहिणी जैसा रहता था। वह अपना छोटा-सा टीन का समोवार गरम करती थी और गरम-गरम मज़ेदार चाय पीते वक्त वे दोनों गप लड़ाती थीं और पेर्फ़ीश्का को बुरा-भला कहती थीं। मुटल्ली उसे ख़ूब आड़े हाथों लेती थी, माशा ऊंची महीन आवाज़ में उसकी हां में हां तो मिलाती थी लेकिन बिना किसी उत्साह के – केवल शिष्टता के नाते। वह अपने बाप की चर्चा हमेशा बड़े दया भाव से करती थी।

"उसका पोटा सूखे!" मुटल्ली अपनी भवें सिकोड़कर गूंजती हुई आवाज़ में कहती। "क्या वह भूल गया है, वह शराबी, कि छोटी-सी बच्ची उसकी निगरानी में छोड़ी गयी थी? मुझे उसके थोबड़े से नफ़रत है, उसका मुरदा उठे, उस कुत्ते का!"

"उन्हें मालूम है कि मैं बड़ी हो गयी हूं और अपनी देखभाल ख़ुद कर सकती हूं," माशा कहती।

"हे भगवान, हे भगवान!" मुटल्ली आह भरकर कहती। "दुनिया का क्या हाल होता जा रहा है? इस लड़की का क्या होगा?

मेरी भी तुम्हारी जैसी एक छोटी-सी बच्ची थी... मैं उसे घर छोड़ आयी थी, ख़ोरोल शहर में... इतनी दूर है यहां से कि अगर मुझे वापस जाने भी दिया जाये तो मुझे कभी रास्ता ही ढूंढे न मिले। देखो तो, आदमी का क्या हाल हो सकता है!.. वह जीता रहता है और यह भी भूल जाता है कि उसका घर कहां है!"

माशा को गाय जैसी आखोंवाली इस औरत की आवाज़ सुनना बहुत अच्छा लगता था। उससे हमेशा वोदका की जो बू आती रहती थी वह भी माशा को नहीं रोक पाती थी – वह जाकर उसकी गोद में बैठ जाती थी, उसकी भारी-भरकम छातियों से चिपट जाती थी और उसके सुडौल मुंह के भरे-भरे होंटों को चूम लेती थी। मुटल्ली माशा से मिलने सवेरे आती थी, और लड़के उसके यहां शाम को आते थे। अगर बच्चों के पास किताब न होती थी तो वे ताश खेलते थे, लेकिन ऐसा बहुत कम ही होता था। जब किताब पढ़ी जाती तो उसे सुनना माशा को भी बहुत अच्छा लगता था, और जब पढ़ने के दौरान सबसे भयानक स्थान आते तो वह दबी-दबी चीखें मारती।

याकोव अब माशा का ध्यान पहले से ज्यादा रखने लगा था। वह उसके लिए हमेशा चाय, शकर, रोटी के टुकड़े और गोश्त और बियर की बोतलों में मिट्टी का तेल लाता रहता था। कभी-कभी वह उसे किताबें ख़रीदने से बची हुई रेज़गारी भी दे देता था। यह उसकी आदत-सी बन गयी थी और वह यह काम ऐसे सहज भाव से करता था कि उसकी ओर किसी का ध्यान भी नहीं जाता था, और माशा भी कोई विशेष ध्यान दिये बिना सहज भाव से उसे ले लेती थी।

"याकोव," वह कहती, "कोयला नहीं रह गया है हमारे पास!"

और कुछ ही समय बाद वह उसे या तो कोयला लाकर दे देता या पैसे दे देता, और अगर पैसे देता तो कह देता:

"लो, जाकर ख़रीद लाओ। इस बार मैं चुरा नहीं पाया।"

इल्या भी उनके इस संबंध का आदी हो गया था; सच तो यह था कि अहाते में रहनेवाला कोई भी आदमी इसके बारे में कुछ सोचता नहीं था। कभी-कभी याकोव के कहने पर इल्या ख़ुद रसोई में से या शराबख़ाने में से कोई चीज़ चुराकर मोची के तहख़ाने में पहुंचा देता था। उसे वह दुबली-पतली सांवली छोटी-सी लड़की बहुत अच्छी लगती थी, जो

उसी की तरह अनाथ थी, और वह इस बात के लिए उसे बहुत सराहता था कि वह अकेली रहती थी और अपना सारा काम ख़ुद बड़े लोगों की तरह कर लेती थी। इल्या को उसके हंसने की आवाज़ बहुत अच्छी लगती थी और वह हमेशा उसे हंसाने की कोशिश करता रहता था। जब वह इसमें सफल न होता तो चिढ़ जाता था और उसे चिढ़ाने लगता था।

"कलमुंही कहीं की!" वह कहता।

"नकचपटा शैतान!" वह भी आंखें सिकोड़कर तड़ से जवाब देती।

बात में से बात निकलती जाती, यहां तक कि दोनों सचमुच लड़ने लगते। माशा का ग़ुस्सा बड़ी जल्दी भड़क उठता और वह इल्या पर उसका मुंह नोचने की इच्छा से टूट पड़ती, लेकिन वह हमेशा भाग जाता और बहुत ख़ुश होकर हंसता रहता।

एक बार जब वे लोग ताश खेल रहे थे तब इल्या ने माशा को तिकड़म करते हुए पकड़ लिया और ग़ुस्से से बिफरकर चिल्लाया:

"याकोव की चहेती!"

इसके साथ ही उसने एक ऐसा भद्दा-सा शब्द और जोड़ दिया जिसका अर्थ उसने अभी हाल ही में सीखा था। याकोव उसकी बग़ल में ही बैठा था। पहले तो वह हंस दिया, लेकिन जब उसने देखा कि माशा के चेहरे का रंग बदल गया है और उसकी आंखों में आंसू भर आये हैं तो उसने हंसना बंद किया और उसका चेहरा उतर गया। अचानक वह उछलकर इल्या पर टूट पड़ा, उसकी नाक पर घूंसा मारा, और उसके बाल पकड़कर उसे खींचकर ज़मीन पर पटक दिया। यह सब कुछ इतनी जल्दी हो गया कि इल्या को अपना बचाव करने का भी समय नहीं मिला। अगले ही मिनट पीड़ा और क्रोध से व्याकुल होकर वह उछलकर खड़ा हो गया और सिर नीचा करके सांड़ की तरह याकोव की ओर झपटा और चिल्लाया, "तुझे अभी बताता हूं!" लेकिन उसने देखा कि याकोव मेज़ पर बैठा अपना सिर हाथों पर टिकाये रो रहा है और माशा उसके पास उस पर झुकी खड़ी है।

"उससे छुट्टी कर लो," वह आंखों में आंसू भरे याकोव से कह रही थी। "वह बिल्कुल जानवर है, निकम्मा! वे सब एक जैसे हैं –

बाप सज़ा काट रहा है और चाचा कुबड़ा है! इसके भी कूबड़ निकल आयेगा! मनहूस, कमीने!" वह निडर होकर इल्या की ओर बढ़ते हुए चिल्लायी। "सुअर! डरपोक बिलौटे! कबाड़ी कहीं का! आ, मुझसे लड़! मैं तो तेरी आंखें खुरचकर निकाल लूंगी! आ जा!"

लेकिन इल्या अपनी जगह से नहीं हिला। याकोव को वहां बैठकर रोते देखकर वह दुःखी हो गया, क्योंकि उसका दिल दुखाने का इल्या का कोई इरादा नहीं था, और लड़की से लड़ते उसे शर्म आती थी। माशा उससे लड़ने को बिल्कुल उतारू थी – यह बात वह अच्छी तरह जानता था। कुछ भी कहे बिना वह तहख़ाने के बाहर चला गया, और कुछ देर तक बहुत उदास होकर, दुख में डूबा अहाते में इधर-उधर टहलता रहा। आखिरकार वह पेर्फ़ीश्का की खिड़की के पास गया और चोरी से कमरे में झांककर देखने लगा। याकोव और माशा फिर ताश खेल रहे थे। माशा ने अपने पत्तों से आधा चेहरा ढक रखा था और ऐसा लग रहा था कि वह हंस रही है, याकोव अपने पत्तों को ग़ौर से देख रहा था, और दुविधा में पड़ा हुआ कभी एक पत्ते को छूता था और कभी दूसरे को। यह दृश्य देखकर इल्या बेहद उदासी महसूस करने लगा। उसने अहाते में एक-दो चक्कर और लगाये और फिर दिल कड़ा करके तहख़ाने की सीढ़ियां उतरने लगा।

"मुझे फिर खिला लो!" उसने मेज़ के पास आकर कहा।

उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, उसके गाल तमतमाये हुए थे और वह नज़रें नीची किये खड़ा था। न माशा ने एक शब्द कहा और न याकोव ने।

"मैं कभी भद्दी बात नहीं कहूंगा – सच कहता हूं, बिल्कुल नहीं कहूंगा!" इल्या ने उनकी ओर देखते हुए कहा।

"अच्छी बात है, बैठ जाओ," माशा ने कहा। "हुंह, बड़ा आया!"

"अरे बेवक़ूफ़!" याकोव ने सख़्ती से जोड़ दिया। "अब तुम बच्चे तो हो नहीं – तुम्हें जानना चाहिये कि क्या कह रहे हो।"

"और तुमने मेरे साथ क्या किया?" इल्या ने शिकायत के स्वर में कहा।

"तुमने हरकत ही ऐसी की थी," माशा ने कठोर स्वर में कहा।

"ठीक है! मैं नाराज़ नहीं हूं। ग़लती मेरी ही थी!.." इल्या ने स्वीकार किया और याकोव की ओर देखकर सकपकाकर मुस्करा दिया। "और तुम भी मुझसे नाराज़ न होना, ठीक है न?"

"अच्छी बात है। यह लो पत्ते..."

"तुम भी बिल्कुल शैतान हो," माशा ने कहा और इसके साथ ही सारा झगड़ा निबट गया।

एक मिनट बाद ही इल्या भवें चढ़ाकर अपने पत्तों को ध्यान से देख रहा था। वह हमेशा इस तरह बैठता था कि माशा को उसके बाद पत्ता चलना पड़े। उसे हारता देखकर इल्या को बहुत मज़ा आता था, लेकिन वह बहुत होशियार खिलाड़ी थी। आम तौर पर हारता याकोव था।

"आ-ह, घोंचू कहीं के!" वह बड़े प्यार और अफ़सोस से कहती। "फिर हार गये न!"

"भाड़ में जायें ये पत्ते! मैं इनसे तंग आ गया हूं। आओ, कुछ पढ़ें!"

वे कोई मैली-कुचैली बिखरे हुए पन्नोंवाली किताब निकालते और पढ़ने लगते कि प्यार की ख़ातिर कैसी-कैसी मुसीबतें झेली गयीं और कैसे-कैसे बहादुरी के कारनामे किये गये।

पावेल ग्राचोव उनके ज़िंदगी के ढर्रे से बहुत प्रभावित हुआ।

"तुम शैतानों के भी मज़े हैं," उसने एक बार ऐसे आदमी के अंदाज़ में कहा जो बहुत घूमा-फिरा हो और जिसने बहुत दुनिया देखी हो।

फिर याकोव और माशा की ओर देखकर उसने हल्की-सी मुस्कराहट से लेकिन पूरी गंभीरता के साथ कहा:

"किसी दिन तुम माशा से ब्याह कर लोगे, याकोव।"

"चल, बुद्धू!.." माशा ने हंसते हुए कहा, और वे चारों ठहाका मारकर हंस पड़े।

जब वे कोई किताब पूरी कर लेते या पढ़ते-पढ़ते थक जाते तो पावेल उन्हें अपने कारनामे सुनाता, और उन्हें सुनकर उन लोगों को उतना ही मज़ा आता जितना किताबें पढ़कर आता था।

"जैसे ही मैंने देखा कि पासपोर्ट के बिना मेरा काम नहीं चलने

का तो मैं तिकड़मों का सहारा लेने लगा। अगर मैं किसी पुलिसवाले को देखता तो तेज़ क़दम बढ़ाता हुआ चलने लगता, जैसे मैं किसी ज़रूरी काम से कहीं जा रहा हूं, या मैं किसी आदमी के साथ ऐसा चिपक जाता जैसे वह मेरा मालिक या मेरा बाप या ऐसा ही कोई और है... पुलिसवाला मुझे देखता ज़रूर था लेकिन कभी पकड़ता नहीं था... गांवों में सबसे अच्छा रहता था – वहां पुलिसवाले होते ही नहीं थे – बस बूढ़े-बुढ़ियां और बच्चे होते थे। मर्द तो हमेशा खेतों पर रहते हैं। वे पूछते, 'कौन हो तुम?' – 'भिखारी।' – 'किसके यहां के हो?' – 'किसी के नहीं।' – 'कहां से आये हो?' – 'शहर से।' बस, इतने ही में काम चल जाता था। वे लोग मुझे खाने-पीने को ढेरों देते थे। वहां जो मेरा जी चाहता था करता था – रेंगकर कहीं पहुंच जाना, भागना-दौड़ना – कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। चारों ओर खेतों और जंगलों के अलावा कुछ नहीं होता था... और चंडूल गाते रहते थे... जी चाहता कि उड़कर उन्हीं में जा मिलूं! जब पेट भरा होता तब एक ही इच्छा होती – कि चलते-चलते धरती के छोर तक पहुंच जाऊं। ऐसा लगता था कि कोई मुझे आगे खींचे लिये जा रहा है, या मेरी मां मुझे अपनी गोद में ले जा रही है। लेकिन, उफ़! कभी-कभी कितनी भूख लगती थी मुझे! पेट के अंदर आंतें सूख जाती थीं! जी चाहता था कि धूल-मिट्टी जो भी मिले खा लूं! सिर चकराने लगता था... लेकिन फिर, आख़िरकार जब दांतों से रोटी का टुकड़ा काटना नसीब होता था – ओह, कैसा मज़ा आता था, सच्ची! जी चाहता था दिन-रात खाता ही रहूं। बड़ा मज़ा आता था! फिर भी जब मुझे जेल में डाल दिया गया तो बहुत खुश हुआ! शुरू में तो मुझे डर लगा, लेकिन फिर ख़ुशी हुई... पुलिसवालों से मेरी जान निकलती थी – मैं समझता था कि जब वे मुझे पकड़ लेंगे तो मार-मारकर मेरा कचूमर निकाल देंगे। लेकिन उसी पुलिसवाले ने... बस पीछे से आकर मेरी गरदन पकड़ ली! मैं खड़ा एक दुकान के कांच के पीछे रखी हुई घड़ियां देख रहा था – ढेरों घड़ियां – सोने की और हर तरह की – और अचानक – लो, मैं पकड़ा गया! कैसे ज़ोर से दहाड़ा था मैं! लेकिन उसने बड़ी नरमी से मुझसे पूछा, 'कौन हो तुम? कहां के रहनेवाले हो?' मैंने उसे सच-सच बता दिया – पता

तो वे यों भी लगा ही लेते; वे हर बात का पता लगा लेते हैं... सो वह मुझे थाने ले गया... वहां भांति-भांति के साहब लोग थे... 'कहां जा रहे हो?' उन्होंने मुझसे पूछा। 'तीरथ करने जा रहा हूं', मैंने कहा। क्या हंसे थे वे लोग यह सुनकर! ख़ैर, उन्होंने मुझे जेल में डाल दिया... वहां भी लोग मुझ पर खूब हंसे। फिर उन भलेमानसों ने मुझसे अपना काम कराना शुरू किया। क्या ख़ूब बंदे थे वे लोग भी! वाह-वाह!"

जब भी वह उन "भलेमानसों" की बात करता था तो बड़ी हैरत से। साफ़ लगता था कि वह उनसे बहुत प्रभावित हुआ था, लेकिन अलग-अलग लोगों की जो छापें उसके दिल पर पड़ी थीं वे सब उसकी स्मृति में मिलकर एक बड़ा-सा धब्बा बन गयी थीं जिसकी कोई ख़ास शक्ल नहीं थी। लगभग एक महीने में पावेल फिर ग़ायब हो गया। बाद में पेर्फ़ीश्का को पता चला कि वह किसी छापेख़ाने में काम करता था और शहर में कहीं काफ़ी दूर रहता था। यह सुनकर इल्या ने बड़ी ईर्ष्या से आह भरी।

"लगता है कि हम लोग ज़िंदगी-भर यहीं सड़ते रहेंगे..." उसने याकोव से कहा।

इल्या को कुछ दिन तो पावेल का न होना खला, लेकिन जल्दी ही वह फिर कल्पना की विचित्र और अनोखी दुनिया में खो गया। वह और याकोव फिर किताबें पढ़ने लगे और इल्या ऐसे आदमी की सुखद स्थिति में रहने लगा जो न पूरी तरह जागा हुआ होता है न सोया हुआ।

अचानक जैसे किसी ने उसे बुरी तरह झंझोड़ दिया और वह इस धरती पर लौट आया। एक दिन सवेरे उसके चाचा ने उसे जगाकर कहा:

"उठकर अच्छी तरह नहा-धो लो और जल्दी करो!"

"क्यों? कहां जा रहे हैं हम लोग?" उसने उनींदे स्वर में पूछा।

"काम पर। भगवान की कृपा से आख़िरकार तुम्हें काम मिल गया है... मछली की दुकान में!"

इल्या का मन आशंका से भारी हो उठा। अचानक उसे लगा कि इस घर से जाने की उसे कोई इच्छा नहीं रह गयी थी, जिसे वह इतनी

अच्छी तरह जानता था और जिसकी उसे आदत पड़ गयी थी; और यह कोठरी, जिससे उसे इतनी नफ़रत थी, अब उसे बेहद रोशन और साफ़ लगने लगी थी। वह चारपाई के कगर पर बैठा फ़र्श को घूरता रहा; वह कपड़े पहनना नहीं चाहता था... याकोव मुंह बिसूरता हुआ और बाल बिखेरे अंदर आया; उसका सिर एक कंधे की ओर झुका हुआ था।

"जल्दी करो, पापा तुम्हारी राह देख रहे हैं..." उसने जल्दी से एक नज़र अपने दोस्त पर डालते हुए कहा। "कभी-कभी आया तो करोगे न?"

"हां-हां।"

"अच्छी बात है... जाने से पहले माशा से मिलकर जाना।"

"क्यों? मैं हमेशा के लिए तो नहीं जा रहा हूं," इल्या ने चिढ़कर कहा।

माशा खुद आयी। दरवाज़े पर पहुंचकर वह रुक गयी और इल्या को घूरती रही।

"देखो, विदा करने का समय आ गया!" माशा ने उदास होकर कहा।

इल्या ने बहुत झल्लाकर अपनी जैकेट पहनी और गाली दी। माशा और याकोव दोनों ने आह भरी।

"तो आना ज़रूर!" याकोव बोला।

"कहा न मैंने – आऊंगा," इल्या ने गुर्राकर कहा।

"अपने को बहुत समझने लगे हो, क्या? कारिंदे बन गये हो न," माशा बोली।

"बेवक़ूफ़ छोकरी!" इल्या ने धीमे स्वर में झिड़कते हुए कहा।

कुछ ही मिनट बाद वह पेत्रूखा के साथ सड़क पर चला जा रहा था, जो लंबा कोट और चर्र-मर्र करते हुए जूते पहने बुहत बना-संवरा लग रहा था।

"मैं तुम्हें किरील इवानोविच स्त्रोगानी के यहां काम करने के लिए ले जा रहा हूं, जिसकी शहर के सब लोग बड़ी इज़्ज़त करते हैं," उसने उसे समझाते हुए कहा। "उसे अपने दान-पुण्य और अच्छे कामों के लिए मेडल तक मिल चुके हैं! वह शहर की काउंसिल का मेंबर

है और कौन जाने मेयर भी चुन लिया जाये। अगर तुम उसके यहां जी लगाकर और वफ़ादारी से काम करोगे तो तुम्हें उससे दुनिया में तरक़्क़ी करने में बड़ी मदद मिलेगी... तुम तो समझदार लड़के हो, शरारती नहीं... और किसी के साथ भलाई करना तो उसके लिए बायें हाथ का खेल है..."

ये बातें सुनते हुए इल्या ने अपने दिमाग़ में स्त्रोगानी का चित्र बनाने की कोशिश की। न जाने क्यों उसे ऐसा लग रहा था कि वह दादा येरेमेई जैसा होगा – दुबला-पतला, मिलनसार और नेक। लेकिन मछली की दुकान में घुसने पर उसने देखा कि बड़ी-सी तोंदवाला एक लंबा आदमी गल्ले के पीछे खड़ा है। उसके सिर पर एक भी बाल नहीं था, लेकिन आंखों से ठोड़ी तक उसका पूरा चेहरा घनी लाल दाढ़ी से ढका हुआ था। उसकी भवें भी घनी और लाल थीं और भवों के नीचे छोटी-छोटी कंजी गुस्सैल आंखें तेज़ी से इधर-उधर चलती रहती थीं।

"झुककर सलाम करो," पेत्रूखा ने लाल बालोंवाले आदमी की ओर आंखों से इशारा करके इल्या के कान में कहा। इल्या ने निराश होकर अपना सिर झुका लिया।

"नाम क्या है तुम्हारा?" दुकान में गूंजती हुई आवाज़ सुनायी दी। "अच्छा, इल्या, अच्छी तरह आंखें खोलकर देख लो। अब इस दुनिया में तुम्हारे मालिक के अलावा तुम्हारा कोई नहीं है। न कोई दोस्त, न कोई रिश्तेदार – समझ में आया? आज से मैं ही तुम्हारी मां हूं और मैं ही तुम्हारा बाप – बस, मैंने सब कुछ कह दिया।"

इल्या ने आंख बचाकर दुकान पर नज़र डाली। बड़े-बड़े टोकरों में बड़ी-बड़ी शीट और स्टर्जन मछलियां बर्फ़ पर रखी थीं, अल्मारियों के पटरों पर सूखी हुई पाइक और कार्प मछलियां रखी थीं, और हर तरफ़ चमकदार डिब्बे दिखायी दे रहे थे। दुकान ठसाठस-भरी थी; उसमें घुटन थी और मछली के खारे पानी की बू बसी हुई थी। फ़र्श पर बड़े-बड़े पीपों में ज़िंदा मछलियां – स्टर्जन, बुर्बोट, पर्च और कार्प – तैर रही थीं। एक छोटी पाइक मछली बड़ी ढिठाई से दूसरी मछलियों से टकराकर अपनी दुम से छपछप करते हुए और पानी फ़र्श पर बिखेरते हुए इधर-उधर तेज़ी से तैर रही थी। इल्या को उस पर बड़ा तरस आ रहा था।

दुकान के एक कारिंदे ने – जो एक छोटे क़द का मोटा-सा गोल-गोल आंखोंवाला आदमी था, जिसकी नाक आगे से मुड़ी हुई कंटिया जैसी थी और जो बिल्कुल उल्लू की शक्ल का लगता था – इल्या से पीपों में से मरी हुई मछलियां निकाल देने को कहा। लड़के ने अपनी आस्तीनें चढ़ायीं और अंधाधुंध उन पर झपटने लगा।

"सिर की तरफ़ से पकड़, बेवक़ूफ़!" कारिंदे ने दबी आवाज़ में कहा।

कभी-कभी इल्या ग़लती से कोई ठहरी हुई जिंदा मछली पकड़ लेता था, जो उसकी उंगलियों में से फिसल जाती थी और छटपटाकर पीपे की दीवार पर अपना सिर पटकने लगती थी।

एक बार मछली का पंख इल्या की उंगली में चुभ गया और वह अपने घाव को चूसने लगा।

"उंगली मुंह के बाहर निकाल!" मालिक ने गरजकर कहा।

इसके बाद इल्या को एक बड़ा-सा कुल्हाड़ा दे दिया गया और उसे बर्फ़ तोड़ने के लिए तहख़ाने में भेज दिया गया, कि बर्फ़ को तोड़-तोड़कर ऐसा चूर-चूर कर दे कि वह पीपों में ठूंस-ठूंसकर भरी जा सके। बर्फ़ की छोटी-छोटी कंकरियां उछलकर उसके चेहरे पर आकर लगतीं या उसके कॉलर के अंदर चली जातीं; तहख़ाना ठंडा और अंधेरा था और अगर इल्या सावधान न रहता तो कुल्हाड़ा ऊपर उठाते वक़्त वह ज़रूर छत से टकरा जाता। कुछ मिनट काम करने के बाद वह पसीने में नहाया हुआ सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आ गया।

"मुझसे एक मर्तबान टूट गया है," उसने मालिक से कहा।

स्त्रोगानी एक क्षण उसे चुपचाप देखता रहा, फिर बोला:

"इस बार मैं तुम्हें माफ़ किये देता हूं। इसलिए माफ़ किये देता हूं कि तुमने ख़ुद बता दिया। लेकिन अगली बार तुम्हारे कान ऐंठूंगा।"

इल्या का घटनाहीन जीवन घूम-फिरकर एक नीरस चक्कर में चलता रहा, वैसे ही घटनाहीन ढंग से जैसे कोई पेंच किसी बड़ी-सी शोर करनेवाली मशीन में घूमता रहता है। वह सवेरे पांच बजे उठता, सारे घर के जूतों पर पालिश करता, जिनमें उसके मालिक के परिवार-वालों और दुकान के कारिंदों – सभी के जूते शामिल रहते थे। इसके बाद वह दुकान में जाता, फ़र्श पर झाड़ू लगाता और मेज़ों और तराज़ुओं

को धोता। जब दुकान खुलती तो वह गाहकों की सेवा में लग जाता और उनका माल उनकी गाड़ियों तक पहुंचाता। दोपहर को वह खाना खाने घर जाता। खाना खाने के बाद उसके पास करने को कुछ न होता, इसलिए अगर उसे किसी काम से कहीं भेजा न जाता तो वह दरवाज़े पर खड़ा बाज़ार की चहल-पहल देखता रहता और सोचता रहता कि इस दुनिया में कितने बहुत-से लोग थे और वे कितनी मछलियां, कितना मांस और कितनी सब्ज़ियां खा जाते थे।

"मिख़ाईल इग्नात्यिच!" एक बार उसने उल्लू की सूरतवाले कारिंदे से कहा।

"क्या बात है?"

"जब लोग सारी मछलियां पकड़ लेंगे और सारे मवेशी मार डालेंगे तब वे खायेंगे क्या?"

"बुद्धू!" कारिंदे ने जवाब दिया।

दूसरी बार उसने काउंटर पर पड़ा हुआ एक अख़बार उठा लिया और दरवाज़े पर खड़ा होकर उसे पढ़ने लगा। कारिंदे ने अख़बार उसके हाथ से छीन लिया और उसकी नाक पर टहोका दिया।

"किसने इजाज़त दी तुझे?" उसने धमकाते हुए पूछा। "गधा!"

इल्या इस कारिंदे से दिली नफ़रत करता था। मालिक से बात करते वक़्त वह उसके सामने बहुत झुक-झुककर बातें करता था लेकिन पीठ पीछे उसे धोखेबाज़ और लाल बालोंवाला शैतान कहता था। हर सनीचर को और हर छुट्टी से पहलेवाले दिन मालिक गिरजाघर में प्रार्थना करने जाता था, और तब इस कारिंदे की बीवी या उसकी बहन दुकान में आती थी और वह उन्हें घर ले जाने के लिए ताज़ा और डिब्बों में बंद मछलियां और मछलियों के अंडे बंडल के बंडल बांधकर देता था। उसे भिखारियों को दुतकारने में बहुत मज़ा आता था, जिनमें से बहुत-से बूढ़े होते थे और उन्हें देखकर इल्या को दादा येरेमेई की याद आती थी। जब कभी कोई बूढ़ा दरवाज़े पर आकर खड़ा हो जाता और सिर झुकाकर भीख मांगता तो यह कारिंदा एक छोटी-सी मछली सिर पकड़कर उठाता और भिखारी के फैले हुए हाथ पर उसकी पूंछ इतने ज़ोर से दे मारता कि मछली के पंख के कांटे उसकी हथेली में चुभ जाते। जब भिखारी पीड़ा से तिलमिलाकर अपना हाथ

पीछे खींच लेता तो यह कारिंदा बड़ी क्रूरता से उसे चिढ़ाते हुए चिल्लाकर कहता :

"नहीं चाहिये? काफ़ी नहीं है तेरे लिए? भाग जा!"

एक दिन एक बुढ़िया भिखारिन ने एक सूखी हुई पाइक मछली उठाकर अपने चीथड़ों में छिपा ली; कारिंदे ने उसे देख लिया; उसने उसकी गर्दन पकड़ ली, मछली उससे छीन ली और बायें हाथ से उसका सिर नीचे झुकाकर दाहिने हाथ से उसके एक घूंसा जड़ दिया। वह न चिल्लायी, न उसने कुछ कहा; बस, सिर झुकाये चुपचाप वहां से चली गयी और इल्या ने उसकी नाक से गहरे रंग के खून की दो धाराएं बहती हुई देखीं।

"जो चाहती थी वह मिल गया!" कारिंदे ने भिखारिन के पीछे से चिल्लाकर कहा।

और दूसरे कारिंदे कार्प से बोला :

"मैं भिखारियों को बर्दाश्त नहीं कर सकता! दूसरों के बल पर जीते हैं, बस और कुछ नहीं! भीख मांगते फिरते हैं और – ऊपर तक पेट भरा होता है। चैन की ज़िंदगी बसर करते हैं... लोग कहते हैं कि वे ईसा मसीह के छोटे भाई होते हैं। तो मैं पूछता हूं कि मैं ईसा मसीह का क्या लगता हूं – कोई नहीं? ज़िंदगी-भर मैं धूप में कीड़े की तरह बिलबिलाता रहा हूं, और उसके बदले मुझे क्या मिला है? न आराम, न चैन, न इज़्ज़त।"

दूसरा कारिंदा कार्प बहुत धर्मात्मा आदमी था। वह हमेशा गिरजाघर की, वहां वंदना गानेवालों की और पादरी के प्रवचन की बातें करता रहता था, और हर सनीचर को उसे यह डर लगा रहता था कि कहीं उसे गिरजाघर पहुंचने में देर न हो जाये। उसे हाथ की सफ़ाई में भी बड़ी दिलचस्पी थी और जब भी कोई "जादूगर" शहर में आता था तो वह उसका तमाशा देखने ज़रूर जाता था... कार्प लंबा, दुबला और बहुत चतुर था; जब दुकान में गाहकों की भीड़ होती थी तो वह उनके बीच से सांप की तरह रेंगता हुआ भाग-दौड़ करता रहता था, हर एक की तरफ़ देखकर मुस्कराता था और सब से बातें करता था और बीच-बीच में मालिक के लंबे-चौड़े डीलडौल पर भी एक नज़र डाल लेता था, मानो अपने व्यापार के गुणों के लिए उसकी प्रशंसा प्राप्त

करना चाहता हो। वह इल्या को बड़े तिरस्कार और उपहास से देखता था, और वह भी उसे पसंद नहीं करता था। लेकिन इल्या मालिक को बहुत पसंद करता था। सवेरे से रात तक स्त्रोगानी गल्ले पर खड़ा उसमें पैसा डालता रहता था। इल्या देखता था कि वह यह काम बिना किसी लालच के बड़े शांत भाव से करता था, और इस बात से इल्या बहुत खुश होता था। उसे यह देखकर भी खुशी होती थी कि स्त्रोगानी दूसरे कारिंदों की अपेक्षा उससे ज़्यादा बातें करता था और ज़्यादा स्नेह से बोलता था। कभी-कभी उस वक़्त जब व्यापार कुछ मंदा होता था और इल्या मुंह लटकाये दरवाज़े पर उदास खड़ा होता था तो स्त्रोगानी पुकारकर उससे कहता था :

"ऐ इल्या, सो गया क्या?"

"नहीं तो..."

"हर वक़्त इतना गंभीर क्यों रहता है?"

"मालूम नहीं..."

"ऊब गया है?"

"कुछ-कुछ।"

"कोई बात नहीं है। अपने ज़माने में मैं भी ऊब जाता था। नौ बरस की उम्र से बत्तीस बरस की उम्र तक दूसरों के लिए काम करते-करते... ऊब जाता था... लेकिन पिछले तेईस साल से मैं दूसरे लोगों को ऊबते देखता रहता हूं।" और वह अपना सिर इस तरह हिलाता था मानो कह रहा हो कि कोई चारा नहीं है – ऐसा तो होता ही रहता है।

जब स्त्रोगानी ने दो-तीन बार इल्या से इस तरह की बातें कीं तो इल्या के मन में यह प्रश्न उठा कि इतना धनी-मानी आदमी अपना सारा वक़्त नमक-लगी मछली की तेज़ बदबू से भरी हुई उस गंदी दुकान में क्यों बिताता है जबकि उसके पास रहने को इतना बड़ा साफ़-सुथरा मकान है? वह अजीब घर था : बहुत कठोर और निःशब्द और सारा जीवन एक अटल व्यवस्था के अधीन। हालांकि उसकी दो मंज़िलों पर मालिक, उसकी बीवी, उसकी तीन बेटियों, एक खाना पकानेवाली, एक नौकरानी और एक चौकीदार के अलावा, जो कोचवान का भी काम करता था, कोई और नहीं रहता था, फिर भी

वहां हर वक़्त दम घुटता था। उस घर में रहनेवाले सभी लोग बहुत धीमी आवाज़ में बोलते थे और जब वे उसके बड़े-से साफ़-सुथरे अहाते में से होकर गुज़रते थे तो चारदीवारी से सटकर चलते थे, मानो डरते हों कि कहीं कोई उन्हें खुले में देख न ले। इस आलीशान और शांत मकान की तुलना पेत्रूख़ा के मकान से करने पर इल्या को ख़ुद अपने इस फ़ैसले पर ताज्जुब हुआ कि पेत्रूख़ा का मकान उसे ज़्यादा अच्छा लगता था, हालांकि वह गंदा था और उससे ग़रीबी टपकती थी और वहां शोर बहुत होता था। लड़के का बहुत जी चाहता था कि वह उस व्यापारी से पूछे कि वह अपना सारा वक़्त बाज़ार के शोर-गुल और हंगामे में क्यों बिताता था जबकि वह अपने घर के शांत वातावरण में चैन से रह सकता था।

एक बार जब कार्प कहीं बाहर गया हुआ था और मिख़ाईल ख़ैरातख़ाने को देने के लिए सड़ी-गली मछलियां चुनने नीचे तहख़ाने में गया हुआ था, स्त्रोगानी इल्या से बातें करने लगा, और तब लड़के ने उससे पूछा :

"आप इस दुकान को छोड़ क्यों नहीं देते, किरील इवानोविच? आपके पास इतना पैसा है और रहने को इतना अच्छा घर है... आप इस बेरंग बदबूदार जगह और उदास वातावरण में क्यों रहते हैं?"

स्त्रोगानी की लाल भवें फड़कने लगीं; वह गल्ले पर टिककर लड़के को नज़रें गड़ाकर घूरने लगा।

"तो?" इल्या के अपनी बात पूरी कर लेने पर उसने कहा। "तुम जो कुछ कहना चाहते थे वह कह चुके?"

"जी हां..." लड़के ने घबराकर कहा।

"इधर आओ!"

इल्या उसके पास चला गया। व्यापारी ने उसकी ठोड़ी पकड़कर उसका सिर पीछे की ओर झुका दिया, और आंखें सिकोड़कर उसे देखने लगा।

"यह बात कहने को किसी ने तुमसे कहा था या यह बात ख़ुद तुमने सोची है?"

"मैंने ख़ुद, सचमुच..."

"अच्छी बात है, अगर तुम सच कह रहे हो! लेकिन मुझे तुमसे

बस इतना कहना है: फिर कभी मुझसे – अपने मालिक से, समझ गये न – इस तरह की बात कहने की हिम्मत न करना! याद रखना! अब जाओ अपनी जगह..."

और जब कार्प वापस आया तो मालिक ने बिना किसी ख़ास वजह के उससे कहा, और हालांकि वह संबोधित उसे कर रहा था लेकिन कनखियों से इल्या की ओर देख रहा था :

"आदमी को मरते दम तक कुछ न कुछ करते रहना चाहिये! बेवक़ूफ़ होता है जो यह बात भी नहीं समझता। काम किये बिना कोई आदमी ज़िंदा नहीं रह सकता। अगर वह किसी काम में लगा न रहे तो उसकी कोई साख नहीं रह जाती।"

"बिल्कुल ठीक बात है, किरील इवानोविच," कारिंदे ने कहा और फ़ौरन चिंतित होकर दुकान में चारों ओर नज़र दौड़ाकर देखा कि कोई काम दिखायी दे जिसमें वह जुट जाये। स्त्रोगानी को एकटक देखते हुए इल्या विचारों में डूब गया। इन लोगों के साथ ज़िंदगी दिन-ब-दिन ज़्यादा नीरस होती जा रही थी। एक के बाद दूसरा दिन इस तरह खिंचता हुआ बीत रहा था जैसे किसी अदृश्य गोले में से लंबे-लंबे सुरमई धागे खुलकर निकलते आ रहे हों, और लड़के को ऐसा लगने लगा कि इन दिनों का कभी अंत नहीं होगा, कि जब तक वह ज़िंदा रहेगा तब तक वह इसी तरह दरवाज़े पर खड़ा-खड़ा बाज़ार की चहल-पहल का शोर सुनता रहेगा। लेकिन उसका दिमाग़, जो उन सब बातों से, जो उसने पढ़ी थीं और देखी थीं, उद्दीप्त हो चुका था, उसके जीवन की एकरसता से निःसंज्ञ नहीं हुआ; वह लगातार काम करता रहा। कभी-कभी इस गंभीर शांत बच्चे के लिए अपने चारों ओर के लोगों को देखते रहना इतना असह्य हो जाता कि उसका जी चाहता कि वह अपनी आंखें मूंद ले और कहीं दूर पहुंच जाये – उन जगहों से भी दूर जहां तक पावेल ग्राचोव अपने घुमक्कड़ जीवन में पहुंच पाया था; बहुत दूर चला जाये और फिर कभी इस नीरस उकताहट और समझ में न आनेवाले इस कोलाहल के बीच लौटकर न आये।

हर त्योहार के दिन उसे गिरजाघर भेजा जाता था। हमेशा घर लौटने पर उसे ऐसा लगता जैसे उसकी आत्मा को हल्के गरम और सुगंधित

जल से धोया गया हो। छः महीनों में केवल दो बार उसे अपने चाचा से मिलने जाने की इजाज़त दी गयी थी। वहां उसे हर चीज़ कमोबेश हमेशा जैसी ही लगी। कुबड़ा दुबला होता जा रहा था, पेत्रूखा पहले से ज़्यादा ज़ोर से सीटी बजाने लगा था और उसका चेहरा गुलाबी से लाल होता जा रहा था। याकोव शिकायत करता था कि उसका बाप उसे चैन नहीं लेने देता था।

"वह हमेशा डांटते-फटकारते हैं: 'कारोबार में लग जाओ, मुझे अपने घर में किताबी कीड़े नहीं चाहिये।' लेकिन अगर मैं काउंटर के पीछे खड़े रहना बर्दाश्त नहीं कर सकता तो क्या यह मेरा क़सूर है? शोर-गुल, चीख़-पुकार – आदमी यह भी नहीं सुन सकता कि वह खुद क्या कह रहा है!.. मैंने उनसे कहा कि मुझे देव-प्रतिमाओं की किसी दुकान में नौकरी दिलवा दें – वहां गाहक कम होते हैं और मुझे देव-प्रतिमाओं से बड़ा लगाव है..."

याकोव उदास होकर पलकें झपका रहा था और उसके माथे की खाल जाने क्यों पीली पड़ गयी थी और उसी तरह चमकने लगी थी जैसे उसके बाप की गंजी चांद चमकती थी।

"अब भी किताबें पढ़ते हो?" इल्या ने पूछा।

"बिल्कुल पढ़ता हूं। ज़िंदगी में वही तो एक मज़ा रह गया है... किताब पढ़ते वक़्त ऐसा लगता है कि जैसे किसी दूसरी दुनिया में पहुंच गये हों और जब किताब ख़त्म हो जाती है तो ऐसा लगता है जैसे अचानक आसमान से नीचे गिर पड़े हों..."

इल्या ने अपने दोस्त की ओर देखकर कहा:

"कितने बूढ़े लगने लगे हो... माशा कहां है?"

"भीख मांगने ख़ैरातख़ाने गयी है। अब मैं उसे बहुत मदद नहीं दे पाता – बाप मेरे ऊपर कड़ी नज़र रखते हैं... पेर्फ़ीश्का हमेशा बीमार रहता है... इसलिए माशा ख़ैरातख़ाने जाने लगी है। वहां वे लोग उसे सूप वग़ैरह दे देते हैं... मुटल्ली भी उसकी मदद करती है... माशा को बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ रहा है..."

"मैं देखता हूं कि तुम लोगों की ज़िंदगी भी काफ़ी नीरस क़िस्म की है," इल्या ने विचारमग्न होकर कहा।

"क्या तुम्हारी ज़िंदगी भी बहुत नीरस है?"

"बिलकुल नीरस। तुम्हारे पास कम से कम किताबें तो हैं... हमारे यहां जो अकेली किताब है वह है 'बाज़ीगरी के सबसे नये तमाशे और हाथ की सफ़ाई'। एक कारिंदा उसे अपने संदूक़ में ताला लगाकर रखता है। मुझे यह किताब पढ़ने का मौक़ा कभी नहीं मिलेगा – वह मुझे देता ही नहीं, कंजूस-मक्खीचूस। ज़िंदगी तुम्हारे साथ और मेरे साथ बेहूदा मज़ाक करती रहती है, याकोव।"

"सो तो करती है, भाई।"

वे थोड़ी देर तक और बातें करते रहे और एक-दूसरे से विदा हुए तो दोनों निराशा में डूबे हुए थे।

अगले कुछ हफ़्ते किसी परिवर्तन के बिना बीत गये, और फिर अचानक इल्या का भाग्य उस पर तरस खाकर मुस्कराया, हालांकि बड़ी क्रूर थी यह मुस्कराहट। एक दिन सवेरे जब कारोबार तेज़ी पर था, मालिक घबराया हुआ गल्ले की मेज़ पर रखी हुई चीज़ें जल्दी-जल्दी उलट-पुलटकर देखने लगा। उसका चेहरा लाल हो गया और उसकी गर्दन की नसें फूल गयीं।

"इल्या!" उसने पुकारकर कहा। "फ़र्श पर देखो तो, – कहीं दस रूबल का नोट तो नहीं पड़ा है?"

इल्या ने मालिक की ओर देखा, फिर अपनी तीर जैसी तेज़ नज़र फ़र्श पर दौड़ायी।

"नहीं तो," उसने शांत भाव से कहा।

"मैं कहता हूं अच्छी तरह देखो!" स्त्रोगानी ने अपनी कड़कती हुई आवाज़ में गरजकर कहा।

"देखा मैंने..."

"तुझे अभी दिखाता हूं, ज़िद्दी बदमाश!" मालिक ने धमकाते हुए कहा।

और जब सारे गाहक दुकान से चले गये तो उसने इल्या को अपने पास बुलाया, अपनी मोटी-मोटी मज़बूत उंगलियों से उसका कान पकड़ा और उसे झंझोड़ने लगा।

"जब तुझसे देखने को कहा जाये, तो देखा कर! जब तुझसे देखने को कहा जाये,, तो देखा कर!" वह अपनी गरजती आवाज़ में दोहराता रहा।

इल्या ने अपने दोनों हाथ उसकी तोंद पर रख दिये और ज़ोर लगाकर अपने आपको छुड़ा लिया।

"मुझे झंझोड़ क्यों रहे हैं?" वह झुंझलाकर चिल्लाया, उसका सारा बदन पीड़ा से कांप रहा था। "पैसा मिख़ाईल इग्नात्यिच ने चुराया है... वह उसकी वास्कट की बायीं जेब में है।"

कारिंदे का उल्लू जैसा चेहरा पहले तो आश्चर्य से नीचे लटक गया, फिर झटके के साथ फड़क उठा और अचानक उसने इल्या के सिर पर इतने ज़ोर से अपना दाहिना हाथ मारा कि लड़का ज़मीन पर गिर पड़ा और पेट के बल रेंगता हुआ दुकान के कोने में जा पहुंचा; उसके गालों पर आंसू बह रहे थे।

"ठहर! चला कहां!" व्यापारी की आवाज़ ऐसे सुनायी दी जैसे वह सपने में बोल रहा हो। "पैसा इधर ला!"

"वह झूठ बोलता है..." मिख़ाईल ने महीन आवाज़ में कहा।

"यही बट्टा अभी तेरे सिर पर लगेगा!"

"यह मेरा पैसा है, किरील इवानोविच! क़सम खाकर कहता हूं!"

"चुप रह!"

हर तरफ़ ख़ामोशी छा गयी। मालिक अपने दफ़्तर में चला गया और थोड़ी ही देर बाद उन्हें गिनतारे पर गोलियां खड़कने की आवाज़ सुनायी दी। इल्या अपना सिर दोनों हाथों में थामे फ़र्श पर बैठा था और मिख़ाईल को नफ़रत से घूर रहा था; वह भी सामनेवाले कोने में खड़ा उसे ग़ुस्सैल आंखों से घूर रहा था।

"क्यों, बदमाश, मज़ा मिल गया?" उसने धीमे स्वर में दांत निकालकर पूछा।

इल्या ने अपने कंधे झुका लिये और कुछ नहीं बोला।

"पूरा मज़ा तो तब आयेगा जब अभी एक और दूंगा!"

और वह अपनी गोल-गोल दुष्टता-भरी आंखें इल्या के चेहरे पर जमाये हुए किसी उतावली के बिना उसकी ओर बढ़ा। इल्या उछलकर खड़ा हो गया और उसने काउंटर पर पड़ा हुआ पतला-सा लंबा चाक़ू किसी संकोच के बिना उठा लिया।

"आ जाओ!" वह बोला।

मिख़ाईल रुक गया और हाथ में चाक़ू लिये हुए मज़बूत गठीले

शरीरवाले उस लड़के के सिर से पांव तक नज़र दौड़ाकर उसकी थाह लेता रहा।

"हुंह, क़ैदी की औलाद!.." उसने तिरस्कार से कहा।

"आ जाओ, आ जाओ!" लड़के ने एक क़दम उसकी ओर बढ़ते हुए दोहराया। उसकी आंखों के सामने हर चीज़ नाच रही थी और उछल रही थी पर उसे इस बात का आभास हो रहा था कि कोई अदम्य शक्ति उसके अंदर उभर रही थी और उसे आगे बढ़ने के लिए उकसा रही थी।

"चाक़ू फेंक दो," स्त्रोगानी की आवाज़ सुनायी दी।

इल्या चौंक पड़ा, उसकी लाल दाढ़ी और तमतमाये हुए चेहरे को एक नज़र देखा, लेकिन अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ।

"चाक़ू रख दो, मैं कहता हूं," मालिक ने ज़्यादा नरमी से कहा।

इल्या ने चाक़ू काउंटर पर रख दिया और ज़ोर-ज़ोर से रोता हुआ फिर फ़र्श पर बैठ गया। उसका सिर चकरा रहा था, कान दुख रहा था और सीने पर एक बोझ-सा था जिसकी वजह से उसके लिए सांस लेना भी मुश्किल हो रहा था। वह बोझ ऊपर चढ़कर उसके गले में आकर ऐसा अटक गया था कि उसके लिए बोलना नामुमकिन हो गया था। उसे मालिक की आवाज़ मानो कहीं दूर से सुनायी दी:

"यह रही तुम्हारी तनख़्वाह; तुम नौकरी से अलग किये जाते हो, मिख़ाईल।"

"लेकिन..."

"चले जाओ, या मैं पुलिस को बुलवाऊं..."

"अच्छी बात है, मैं तो चला जाऊंगा, लेकिन इस छोकरे पर कड़ी नज़र रखियेगा – और चाक़ू पर भी – ही-ही!"

"निकल जाओ यहां से!"

एक बार फिर दुकान में ख़ामोशी छा गयी। इल्या एक अरुचिकर संवेदना से कांप उठा कि जैसे कोई चीज़ उसके चेहरे पर रेंग रही हो। उसने अपने गाल पर हाथ फेरकर आंसू पोंछ डाले और देखा कि गल्ले के पीछे से मालिक उसे तीखी नज़रों से घूर रहा था। तभी वह उठा और लड़खड़ाता हुआ दरवाज़े के पास अपनी जगह वापस चला गया।

"ठहरो, सुनो," स्त्रोगानी ने कहा। "क्या तुम सचमुच उसे चाक़ू मार देते?"

"मार देता!" लड़के ने धीमे, लेकिन दृढ़ स्वर में कहा।

"हुंह... तुम्हारा बाप काहे के लिए पकड़ा गया था? क़त्ल के लिए?"

"आग लगाने के लिए..."

"वह भी कोई बुरी बात नहीं थी।"

कार्प लौटकर अंदर आया, चुपचाप दरवाज़े के पास स्टूल पर बैठ गया और सड़क की ओर नज़रें जमाये देखता रहा।

"कार्प!" स्त्रोगानी ने हंसी से कहा, "मैंने मिख़ाईल की छुट्टी कर दी है।"

"आपको हक़ है, किरील इवानोविच!"

"चोरी करने लगा था वह, है न?"

"चि:, चि:! सच?" कार्प ने धीमे स्वर में और डरते हुए कहा।

हंसी से स्त्रोगानी की लाल दाढ़ी हिलने लगी और गल्ले के पीछे खड़ा वह एक ओर से दूसरी ओर झोंके खाते हुए ठहाके मारने लगा।

"अरे, कार्प, कार्प... तू भी बड़ा बाज़ीगर है..."

अचानक उसने हंसना बंद कर दिया, एक लंबी सांस ली और विचार-मग्न होकर रुखाई से बोला:

"इंसान ही तो है – आख़िर इंसान ही तो है। तुम सभी जीना चाहते हो, खाना तो तुम सभी को चाहिये। यह बताओ, इल्या, क्या तुम्हें यह बात बहुत दिन से मालूम थी कि मिख़ाईल चोरी करता है?"

"हां..."

"तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? उससे डरते थे न?"

"नहीं, मैं डरता नहीं था..."

"मतलब यह कि इस बार तुमने मुझे बस इसलिए बता दिया कि तुम्हें गुस्सा आ गया था?"

"हां," इल्या ने निश्चयपूर्वक कहा।

"तो ऐसे हो तुम!" मालिक ने हैरत से कहा। कुछ देर तक वह खड़ा अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता रहा और एक शब्द भी कहे बिना इल्या को घूरता रहा।

"और तुम ख़ुद, इल्या – तुम चोरी करते हो?"

"नहीं..."

"मुझे तुम्हारा विश्वास है। तुम चोरी नहीं करते। और कार्प के बारे में – वही कार्प – क्या ख़्याल है? वह चोरी करता है?"

"करता है।" लड़के ने पुष्टि की।

कार्प एक क्षण तक आश्चर्य से लड़के की ओर देखकर आंखें झपकाता रहा और फिर उसने मुंह फेर लिया। मालिक की भवें तन गयीं और वह फिर अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा। इल्या को इस बात का आभास था कि कोई असाधारण बात होनेवाली है और वह बड़ी उत्सुकता से यह देखने की प्रतीक्षा कर रहा था कि यह मामला ख़त्म कैसे होता है। बदबूदार हवा में मक्खियां भिनभिना रही थीं और ज़िंदा मछलियां पीपों में उछल-कूद मचा रही थीं।

"कार्प!" मालिक ने दुकान के नौकर से कहा, जो निश्चल बैठा सड़क की ओर घूर रहा था।

"हुकुम, मालिक?" कार्प ने जल्दी से मालिक के पास आकर अपनी ख़ुशामद-भरी आंखों से उसके चेहरे की ओर देखते हुए कहा।

"इसने जो कुछ कहा वह सुना तुमने?" स्त्रोगानी ने थोड़ा-सा हंसकर पूछा।

"जी हां।"

"तो?"

"मैं क्या कह सकता हूं," कार्प ने कंधे बिचकाते हुए कहा।

"क्या मतलब तुम्हारा, 'मैं क्या कह सकता हूं'?"

"यही बात है, किरील इवानोविच। मैं तो ऐसा आदमी हूं जो अपनी हैसियत जानता है, किरील इवानोविच, इसलिए मैं लौंडे के मुंह लगकर अपने आपको गिराना नहीं चाहता। आप ख़ुद देख सकते हैं, किरील इवानोविच, यह लड़का बिल्कुल बुद्धू है – कुछ भी समझ नहीं पाता। यह है ही ऐसा..."

"बात बदलने की कोशिश न करो! जो कुछ इसने कहा क्या वह सच है?"

"सच क्या होता है, किरील इवानोविच?" कार्प ने एक बार फिर अपने कंधे बिचकाकर और अपना सिर एक ओर को झुकाकर कहा। "ज़ाहिर है, अगर आप चाहें तो इसकी बात को सच मान सकते हैं – आपको अख़्तियार है!.."

कार्प ने आह भरी और ऐसा जताया जैसे उसके दिल को बहुत ठेस लगी हो।

"ठीक है, यहां की हर चीज़ पर मेरा अख्तियार है..." मालिक ने सहमति प्रकट की। "तो तुम समझते हो कि लड़का नासमझ है, क्यों?"

"एकदम नासमझ।" पूरे विश्वास के साथ कार्प ने कहा।

"लगता है, तुम सच नहीं कह रहे हो..." स्त्रोगानी ने गोलमोल तरीक़े से कहा। अचानक वह ठहाका मारकर हंस पड़ा। "सोचो तो कि उसने यह बात बतायी कैसे – सीधे तुम्हारे मुंह पर फेंककर मारी, ही-ही! 'कार्प चोरी करता है?' – 'करता है।' ही-ही!"

मालिक की हंसी सुनकर इल्या का हृदय प्रतिशोध के उल्लास से भर उठा; उसने मन ही मन खुश होते हुए कार्प की ओर और कृतज्ञता के भाव से स्त्रोगानी की ओर देखा। कार्प मालिक के जवाब में खुद हंसने लगा।

"हि-हि-हि!" वह बड़ी सतर्कता से आवाज़ भींचकर चिचियाया। पर स्त्रोगानी ने उसकी महीन आवाज़ सुनकर रुखाई से कहा: "दुकान बंद कर दो!"

जब इल्या घर जा रहा था तो कार्प ने अपना सिर हिलाते हुए उससे कहा:

"अरे, तुम भी निरे बेवक़ूफ़ हो! बिल्कुल घामड़! तुमने आखिर ऐसा किया क्यों? तुम समझते हो कि मालिक को खुश करने और उसे पसंद आने का यह तरीक़ा है! बुद्धू कहीं के! तुम समझते हो कि उन्हें मालूम नहीं है कि मिखाईल और मैं चोरी करते रहे हैं। उन्होंने भी इसी तरह शुरू किया था... जहां तक मिखाईल के निकाले जाने का सवाल है – तो मैं उसके लिए दिल से तुम्हारा उपकार मानता हूं। लेकिन जो कुछ तुमने मेरे बारे में कहा है उसके लिए मैं तुम्हें कभी माफ़ नहीं करूंगा। नादानी की ढिठाई – बस और कुछ नहीं! मेरे ही मुंह पर मेरे बारे में ऐसी बात कहना! अरे नहीं, मैं अच्छी तरह कभी ख़बर लूंगा तुम्हारी! इससे पता चलता है कि तुम मेरी बिल्कुल इज़्ज़त नहीं करते..."

इल्या सिटपिटा गया। वह जानता था कि कार्प बहुत नाराज़ था,

पर उसके विचार में उसे अपना ग़ुस्सा बिल्कुल ही दूसरे तरीक़े से निकालना चाहिये था। इल्या को पूरा यक़ीन था कि घर जाते समय कार्प उसकी अच्छी तरह मरम्मत करेगा। इसी वजह से वह घर जाने से डर रहा था... लेकिन कार्प के शब्दों में क्रोध से अधिक व्यंग था, और उसकी धमकियों से इल्या बिल्कुल नहीं डरा। उस दिन शाम को मालिक ने इल्या को अपने यहां ऊपर बुलवाया।

"अहा!" कार्प ने ज़हर में बुझे स्वर में कहा। "जाओ, तुम देखना अभी..."

इल्या ऊपर जाकर एक बड़े-से कमरे के दरवाज़े पर खड़ा हो गया जिसके बीच में एक गोल मेज़ के ऊपर बहुत भारी लैंप लटक रहा था और मेज़ पर एक बड़ा-सा समोवार रखा था। मेज़ के चारों ओर मालिक, उसकी बीवी और उसकी तीनों बेटियां बैठी थीं। हर लड़की अपने से बड़ीवाली बहन के कंधे तक आती थी और उन सबके बाल लाल रंग के थे, चेहरे लंबे थे और उनकी फीकी पीली खाल पर जगह-जगह चित्तियां पड़ी हुई थीं। जब इल्या कमरे में आया तो वे एक-दूसरे से सटकर बैठ गयीं और भयभीत नीली आंखों के तीन जोड़े उसके चेहरे पर जम गये।

"यही है वह," स्त्रोगानी ने कहा।

"देखो, सूरमा आया है!" उसकी बीवी ने सहमकर ऊंचे स्वर में कहा और इल्या को ऐसे देखने लगी जैसे उसने उसे पहले कभी न देखा हो। स्त्रोगानी धीरे से हंसा, दाढ़ी पर हाथ फेरा और उंगलियों से मेज़ पर तबला बजाने लगा।

"तो इल्या," उसने बड़े रोब से कहना शुरू किया, "मैंने तुम्हें यह कहने के लिए बुलाया है कि अब मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है; मतलब यह कि तुम अपना ताम-झाम समेटो और चलते बनो।"

इल्या चौंक पड़ा और उसका मुंह खुला का खुला रह गया; फिर वह पीछे मुड़ा और दरवाज़े की ओर चल दिया।

"ठहरो!" व्यापारी ने अपना हाथ इल्या की ओर बढ़ाकर कहा। "ठहरो," उसने अपना हाथ मेज़ पर मारकर पहले से धीमी आवाज़ में दोहराया। "सिर्फ़ इतना ही बताने के लिए मैंने तुम्हें यहां नहीं बुलाया था।" वह उंगली उठाकर गरिमा के साथ धीरे-धीरे बोल रहा था।

"अरे, नहीं! मैं तुम्हें एक नसीहत देना चाहता हूं। मैं तुम्हें समझाना चाहता हूं कि अब तुम क्यों मेरे लिए किसी काम के नहीं रहे। तुमने मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुंचाया है – तुम पढ़े-लिखे लड़के हो, तुम आलसी भी नहीं हो, और तुम ईमानदार हो और हट्टे-कट्टे हो ... तुम्हारे हाथ में ये सब तुरुप के पत्ते हैं। लेकिन इन तुरुप के पत्तों के साथ भी मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। तुम यहां खपते नहीं ... क्यों नहीं – यही तो सवाल है।"

इल्या की समझ में कुछ नहीं आ रहा था: एक तरफ़ तो मालिक उसकी तारीफ़ कर रहा था और साथ ही वह उसे अपने यहां से निकाले भी दे रहा था। वह इन दोनों बातों का मेल नहीं बिठा पा रहा था, और उसके अंदर स्वाभिमान और क्षोभ की भावनाओं में द्वंद्व चल रहा था। उसे लग रहा था कि मालिक को ख़ुद नहीं मालूम था कि वह क्या कह रहा था ... लड़का एक क़दम आगे बढ़ा और बड़े आदर के भाव से पूछा:

"आप मुझे इसलिए निकाल रहे हैं कि मैं – उस चाकू की वजह से?"

"दुहाई है!" मालिक की बीवी डरकर चिल्लायी। "कैसा ढीठ लड़का है! मेरी तोबा!"

"यही बात है!" मालिक ने मुस्कराते हुए और इल्या की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा। "तुम ढीठ हो! बस इतनी बात है! तुम ढीठ हो ... दुकान के छोकरे को विनयपूर्ण होना चाहिये – विनयपूर्ण और आज्ञाकारी, जैसा कि धर्मग्रंथों में लिखा है। वह अपने मालिक के आसरे ज़िंदा रहता है: अपने मालिक का खाना, अपने मालिक का दिमाग़, अपने मालिक की ईमानदारी ... लेकिन तुम्हारे पास यह सब कुछ अपना है ... मिसाल के लिए, तुम आदमी को उसके मुंह पर चोर कह देते हो! यह बुरी बात है, यह ढिठाई है ... अगर तुम ईमानदार हो तो तुम्हें अपने सारे क़िस्से मुझे चुपके से बताने चाहिये। हर बात का फ़ैसला मुझे करना है – मालिक मैं हूं!.. लेकिन तुम धड़ से कह देते हो, 'चोर हो!' इतनी जल्दबाज़ी से काम नहीं लेना चाहिये। मुझे इससे क्या मतलब कि तीन में से एक आदमी ईमानदार है? मेरे लिए तो एक ही बात है। हमें एक खास क़िस्म की कसौटी चाहिये!

अगर एक ईमानदार है और नौ बदमाश हैं, तो उससे किसी का कोई भला नहीं होने का और जो ईमानदार है उसका अंजाम बुरा होगा ... लेकिन अगर सात ईमानदार हैं और तीन बदमाश हैं, तो तुम्हारे पक्ष की जीत होगी। समझे? जो गिनती में ज़्यादा होते हैं वही ठीक होते हैं ... ईमानदारी को तुम्हें इसी तरह देखना चाहिये ..."

स्त्रोगानी ने हथेली से अपने माथे का पसीना पोंछा और कहना जारी रखा:

"और फिर वह चाकूवाली बात भी है ..."

"हे भगवान!" उसकी बीवी सहमकर चीख़ी और लड़कियां एक-दूसरे से पहले से भी ज़्यादा सट गयीं।

"धर्मग्रंथों में लिखा है: जो चाकू उठायेगा वह चाकू से मारा जायेगा ... इसीलिए मुझे अब तुम्हारी ज़रूरत नहीं रही ... यह है दो-टूक बात ... यह लो आधा रूबल, और हम-तुम अदा-बिदा ... अपना रास्ता लो ... इतना याद रखना – तुमने मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुंचाया है, न मैंने तुम्हें ... इतना ही नहीं, मैंने तो आधा रूबल तुम्हें अपनी तरफ़ से भेंट दिया है ... और हालांकि तुम लड़के हो, मैंने तुमसे बड़ी संजीदगी से बात की है, तुम्हें समझाया है कि कैसे रहना चाहिये, वग़ैरह-वग़ैरह ... हो सकता है कि मुझे तुम्हारे लिए दुःख भी हो, लेकिन तुम यहां खपते नहीं! अगर धुरे की कील उसमें ठीक से न बैठे तो उसे फेंक देने के अलावा कोई और चारा नहीं होता ... इसलिए हमारा-तुम्हारा साथ ख़तम!"

अब मामला इल्या को ज़्यादा सीधा-सादा नज़र आ रहा था: उसका मालिक उसे इसलिए निकाल रहा था कि उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि कार्प को निकाल दे और दुकान में उसके पास कोई कारिंदा न रह जाये। यह सोचकर उसका मन कुछ हल्का हुआ और वह ख़ुश हो गया ; उसने सोचा कि उसका मालिक बहुत अच्छे स्वभाव का और खरा आदमी है।

"सलाम!", इल्या ने चांदी का सिक्का कसकर अपनी मुट्ठी में पकड़ते हुए कहा। "आपका बहुत-बहुत शुक्रिया!"

"ठीक है," स्त्रोगानी ने सिर हिलाकर जवाब दिया।

"हाय, हाय! एक आंसू तक नहीं बहाया," कमरे से बाहर

निकलकर इल्या ने मालिक की बीवी की झिड़की-भरी आवाज़ सुनी।

जब इल्या पीठ पर गठरी लादे व्यापारी के मकान के मज़बूत फाटक से बाहर निकला तो उसे लगा कि वह एक ऐसे निर्जन देश को छोड़कर जा रहा है जिसके बारे में उसने किसी किताब में पढ़ा था। उस देश में न आदमी थे न पेड़ – बस पत्थर ही पत्थर, और उन पत्थरों के बीच एक नेक जादूगर बैठा उस देश में भटककर आ जानेवाले सभी लोगों को रास्ता बताता रहता था।

वसंत के सुहाने दिन की शाम थी। सूरज डूब रहा था और घरों की खिड़कियों में आग जैसी लग रहा थी। इसे देखकर इल्या को उस दिन की याद आयी जब उसने पहले-पहल इस शहर को देखा था। पीठ पर लदी गठरी के बोझ की वजह से वह धीरे-धीरे चल रहा था। राह चलनेवाले उसकी गठरी से टकरा जाते थे ; गाड़ियां घड़घड़ाती हुई पास से निकल जाती थीं ; सूरज की तिरछी किरनों में धूल के कण नाच रहे थे और तेज़ी से चक्कर काट रहे थे ; हर तरफ़ चहल-पहल थी और शोर था और मस्ती थी। लड़का अपने दिमाग़ में उन सब बातों के बारे में सोचता रहा जो कुछ साल इस शहर में रहने के दौरान उस पर बीती थीं, और यह सोचकर वह महसूस करने लगा कि वह बड़ा हो गया है। उसका दिल गर्व और साहस से धड़क रहा था और उसके कानों में व्यापारी के ये शब्द गूंज रहे थे :

"... तुम पढ़े-लिखे लड़के हो, तुम होनहार और हट्टे-कट्टे हो और आलसी भी नहीं हो ... तुम्हारे हाथ में ये सब तुरुप के पत्ते हैं ..."

इल्या ने अपने क़दम तेज़ कर दिये ; वह ख़ुशी से फूल उठा और यह याद करके कि सबेरे उसे मछलीवाले की दुकान पर नहीं जाना है उससे मुस्कराये बिना न रहा गया।

पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव के घर में वापस पहुंचकर इल्या ने बड़े गर्व से अनुभव किया कि मछली की दुकान में काम करने के दौरान वह सचमुच बड़ा हो गया है। हर आदमी उसकी ओर जिस तरह ध्यान दे रहा था और उसके बारे में पूछ रहा था उससे वह ख़ुशी के मारे फूला नहीं समा रहा था। पेर्फ़ीश्का ने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया।

"सलाम, कारिंदा साहब ! जी भर गया, क्यों ? मैंने सुना कि

तुम वहां कैसे हीरो साबित हुए – हि-हि ! वे लोग चाहते हैं कि तुम्हारी ज़बान उनके जूते चाटे, न कि सच्चाई उनके मुंह पर फेंककर मारे ..."

"अरे, तुम कितने बड़े हो गये हो !" माशा उसे देखकर ख़ुश होकर चिल्लायी।

याकोव भी बहुत ख़ुश हुआ।

"अब हम सब फिर एक साथ रहेंगे ... मेरे पास एक किताब है 'द एल्बिजेंसीज़'। तुमने सुनी होती ! उसमें एक आदमी है – उसका नाम है साइमन मोनफ़ोर्ट – पूरा दैत्य है !"

और याकोव घबराकर जल्दी-जल्दी इल्या को उस कहानी का सार बताने लगा। उसे देखते हुए इल्या ने बड़े संतोष के साथ सोचा कि उसका बड़े सिरवाला दोस्त बिल्कुल नहीं बदला है। मछली की दुकान में इल्या ने जो किया था उसमें याकोव को कोई असाधारण बात दिखायी नहीं दी।

"तुम्हें यही करना चाहिये था ..." उसने सीधे-सादे ढंग से कहा।

इसके विपरीत पेत्रूख़ा अपनी आश्चर्य की भावना को न छिपा सका।

"तुमने उनको अच्छा मज़ा चखाया, बेटा !" उसने सराहना करते हुए कहा। "ज़ाहिर है किरील इवानोविच यह तो कर नहीं सकता था कि कार्प को निकाल दे और तुम्हें रख ले। कार्प कारोबार जानता है, वह बहुत काम का आदमी है। तुम ईमानदार बनना और खुले आम विरोध करना चाहते थे ... इसीलिए कार्प का पलड़ा तुमसे भारी हो गया ..."

लेकिन अगले दिन तेरेंती अपने भतीजे को अलग ले गया और उससे चुपके से बोला :

"देखो, बहुत ज़्यादा खुलकर ... मेरा मतलब है ... पेत्रूख़ा से बातें न करना। उसके साथ ज़रा सावधान रहना ... वह तुम्हारी निंदा कर रहा था। 'बड़ा संत आया कहीं का !' वह कह रहा था।"

"और कल रात तो वह मेरी तारीफ़ कर रहा था !" इल्या हंसकर बोला।

इल्या ने अपने बारे में जो अच्छी राय बनायी थी उसमें पेत्रूख़ा के रवैये से कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह महसूस करता था कि वह हीरो है ; वह जानता था कि उसकी जगह होनेवाले किसी दूसरे आदमी के मुक़ाबले उसका आचरण बेहतर था।

दो महीने तक किसी नयी नौकरी की खोज में बेकार की बहुत दौड़-धूप करने के बाद इल्या और उसके चाचा के बीच यह बातचीत हुई:

"हाय! हाय!" कुबड़े ने बड़े उदास भाव से शब्दों को खींच-खींचकर कहा, "तुम्हारे लिए कोई काम नहीं मिला... बहुत बड़े हो गये हो, किसी को तुम्हारी जरूरत नहीं है... तो, अब हमारी गाडी कैसे चलेगी, बेटा?"

"मैं पंद्रह साल का हूं और पढ़ना-लिखना जानता हूं," इल्या ने बड़ी गरिमा और विश्वास के साथ कहा। "लेकिन मैं क्या इतना ढीठ हूं कि कोई भी नौकरी हो मैं उससे निकाल दिया जाऊंगा!"

"तो अब हमें करना क्या चाहिये?" तेरेंती ने चारपाई पर बैठते हुए उस की पट्टी पकड़कर झिझकते हुए पूछा।

"सुनो, मैं कहता हूं: मुझे लकड़ी का एक बक्सा बनवा दो और बेचने के लिए कुछ चीज़ें खरीदकर दे दो – साबुन, इत्र, सुई, किताब – हर तरह की चीजें, और मैं उन्हें घूम-घूमकर बेचा करूंगा।"

"तुम्हारी बात ठीक से मेरी समझ में नहीं आयी, इल्या, – मेरे अंदर शराबखाने का शोर गूंज रहा है. भड़-भड़, खट-खट! अब मुझसे साफ़-साफ़ सोचा भी नहीं जाता... और मेरे दिल और दिमाग में तो एक ही बात रहती है... बस एक बात... हर वक्त..."

सचमुच कुबड़े की आंखों में मानो तनाव जमकर रह गया था, जैसे वह कोई ऐसी चीज़ें गिन रहा हो जिनका सिलसिला किसी तरह खत्म होने ही न आता हो।

"कोशिश तो करें। मुझे करके देखने तो दो," इल्या ने गिड़-गिड़ाकर कहा; वह अपनी उस योजना की प्रेरणा से विभोर हो उठा जिसकी बदौलत उसे आज़ादी मिलने की उम्मीद थी।

"भगवान तुम्हारा भला करे। चलो, कोशिश करते हैं।"

"देख लेना! सब कुछ ठीक ही रहेगा!" इल्या खुशी से चिल्ला पड़ा।

कुबड़े ने गहरी आह भरी।

"बस, तुम किसी तरह जल्दी से बड़े हो जाओ!" उसने बड़ी हसरत से कहा। "अगर तुम थोड़े और बड़े होते तो मैं इस जगह को छोड़ देता... तुम तो उस लंगर की तरह हो जिसने मुझे इस दलदल में

बांध रखा है... मैं संन्यासियों के बीच चला गया होता... 'धन्य संतो!' मैं उनसे कहता। 'दयालु, रक्षा करनेवाले संतो! मुझ अधम नीच ने घोर पाप बटोरा है!'"

कुबड़ा चुपके-चुपके रोने लगा। इल्या जानता था कि चाचा किस पाप के बारे में कह रहा था; उसे वह बात बहुत अच्छी तरह याद थी। तेरेंती के लिए तरस की भावना से उसका हृदय मसोस उठा; तेरेंती के आंसुओं की धारा और तेज़ होती गयी।

"रोओ नहीं..." इल्या ने कहा, फिर चुप होकर कुछ देर सोचा और दिलासा देते हुए इतना और जोड़ दिया, "तुम्हें क्षमा कर दिया जायेगा।"

और इस तरह इल्या ने फेरीवाले का जीवन आरंभ किया। सवेरे से रात तक वह अपने सीने पर एक बक्सा लटकाये, नाक ऊपर उठाये और बड़े गर्व से अपने चारों ओर लोगों को घूरता हुआ शहर की सड़कों पर इधर से उधर घूमता रहता। टोपी अपने कानों तक खींचकर और अपना टेंटुआ बाहर को उभारकर वह फटी हुई आवाज़ में पुकार-पुकारकर चिल्लाता:

"साबुन ले लो! मोम ले लो! पिन ले लो! बालों के क्लिप ले लो! सुई-धागा ले लो!"

उसके चारों ओर की चहल-पहल की ज़िंदगी एक चमकदार और तेज़ी से बहती हुई धारा की तरह थी जिसमें वह बिना किसी रोक-टोक के और आसानी से तैरता रहता था। बाज़ारों में घूमता-फिरता वह कभी किसी शराबखाने में जाकर अपने लिए दो गिलास चाय और गेहूं की रोटी मंगाता जिसे वह ऐसे आदमी की गरिमा के साथ धीरे-धीरे खाता जो अपनी हैसियत पहचानता हो। ज़िंदगी उसे सीधी-सादी, आसान और खुशियों से भरी हुई लगती थी। और उसके सपने स्पष्ट और सुलझे हुए हो गये थे। वह कल्पना करता कि कुछ ही बरसों में किसी इज़्ज़तदार शांत सड़क पर उसकी अपनी एक छोटी-सी साफ़-सुथरी दुकान होगी। उसकी दुकान में बिसातखाने का ऐसा साफ़-सुथरा माल होगा जिससे हाथ गंदे न हों और कपड़े खराब न हों। वह खुद भी साफ़-सुथरा और तनदुरुस्त और खूबसूरत हो जायेगा। पड़ोसी उसकी इज़्ज़त करेंगे और लड़कियां उसे स्नेह-भरी नज़रों से देखा करेंगी।

शाम को दुकान बंद हो जाने के बाद वह एक साफ़-सुथरे रोशन कमरे में बैठकर चाय पिया करेगा और किताबें पढ़ा करेगा। हर चीज़ में सफ़ाई को वह इज़्ज़त की ज़िंदगी का मुख्य और अनिवार्य लक्षण मानता था। जब लोग उसके साथ अच्छा व्यवहार करते थे और उसकी भावना-ओं को ठेस नहीं पहुंचाते थे तब वह यह सपना देखा करता था ; जब से उसने अपना यह स्वतंत्र जीवन आरंभ किया था तब से ज़रा-सा भी अपमान उसे ख़ास तौर पर बुरा लगने लगा था।

लेकिन जब किसी दिन उसका माल नहीं बिकता था और वह थका-हारा शराबख़ाने में या सड़क की पटरी के किनारे जाकर बैठता था तो उसे पुलिसवालों की घुड़कियां, अपने गाहकों का शक व अपमान का रवैया, होड़ करनेवाले दूसरे फेरीवालों की गालियां और ताने याद आते थे ; और तब उसके अंदर कहीं बहुत गहराई में बहुत चिंता पैदा हो जाती थी। उसकी आंखें खुल जातीं, वह जीवन की गहराई में देखने लगता, और उसकी स्मरण-शक्ति, जिसमें असंख्य स्मृतियों की भीड़ थी, उसके विवेक की व्यूह-रचना में उन स्मृतियों को सुव्यवस्थित पांतों में सजा देती। और उसे साफ़ दिखायी देता कि सभी लोग एक ही लक्ष्य तक पहुंचने की कोशिश कर रहे थे: वे सभी साफ़-सुथरे, आरामदेह और चिंताओं से मुक्त जीवन की खोज में थे जिसकी कामना स्वयं वह करता था। और उनमें से किसी को भी अपने रास्ते में आनेवाले किसी भी आदमी को परे ढकेल देने में कोई संकोच नहीं होता था ; वे सभी लालची और क्रूर थे और अकसर वे एक-दूसरे को अकारण ही, निजी स्वार्थ के लिए नहीं, केवल पीड़ा पहुंचाने का संतोष प्राप्त करने के लिए नुक़सान पहुंचाते रहते थे। कभी-कभी दूसरे का अपमान करते समय वे हंसते थे और शायद ही कभी ऐसा देखने में आता था कि उनमें से कोई भी किसी के प्रति दया दिखाता हो...

इस तरह के विचारों की वजह से फेरीवाले के काम के प्रति उसकी रुचि ख़त्म होती जाती ; इन विचारों के प्रभाव की वजह से एक छोटी-सी साफ़-सुथरी दुकान का उसका सपना धूमिल पड़ता जाता और वह अपनी आत्मा में बेहद खोखलापन और शरीर में बेहद थकन और आलस महसूस करता। उसे लगता था कि वह कभी खुद अपनी दुकान जमाने भर को पैसा नहीं जुटा पायेगा, कि जीवन के अंत

तक वह अपने सीने पर बक्सा लटकाये तपती हुई धूल-भरी सड़कों पर मारा-मारा फिरता रहेगा, और तसमे के तनाव से उसकी पीठ और उसके कंधे दुखते रहेंगे। लेकिन एक दिन भी अगर बिक्री अच्छी हो जाती तो उसका उत्साह फिर बढ़ जाता और उसका सपना ज़िंदा हो जाता।

एक दिन इल्या को शहर की एक भीड़भाड़वाली सड़क पर पावेल ग्राचोव दिखायी दिया। लोहार का बेटा अपनी फटी हुई पतलून की जेबों में हाथ डाले बड़े आराम से पटरी पर मटरगश्ती कर रहा था ; उसके कंधों पर एक लंबी नीली क़मीज़ झूल रही थी जो उसके डीलडौल के हिसाब से बहुत बड़ी थी और उसकी पतलून जैसी ही गंदी और फटी हुई थी, उसके घिसे हुए जूते सड़क के किनारे जड़े हुए पत्थरों पर खट-खट की आवाज़ पैदा कर रहे थे। टूटे हुए छज्जेवाली टोपी उसने अपने बायें कान की ओर तिरछी झुकाकर सिर पर लगा रखी थी, जिसकी वजह से उसका आधा सिर नंगा था और उस पर तपते हुए सूरज की धूप पड़ रही थी। उसके चेहरे और गर्दन पर मैल की चिकनी तह जमी हुई थी। उसने इल्या को दूर से ही पहचान लिया, खुश होकर उसका स्वागत करते हुए सिर हिलाया, पर अपनी रफ़्तार तेज़ नहीं की।

"क्या खूब छैला बना रखा है अपने को..." इल्या ने कहा।

पावेल ने अपने दोस्त का हाथ पकड़ लिया और हंस पड़ा। मैल की परत के नीचे उसकी आंखें और उसके दांत खुशी से चमक रहे थे।

"कैसा चल रहा है?" इल्या ने पूछा।

"जैसी बन पड़ती है काट रहे हैं। कुछ खाने को होता है तो खा लेते हैं ; अगर नहीं होता तो मन मारकर सो जाते हैं!.. तुमसे मिलकर बड़ी खुशी हुई, मेरे यार!"

"कभी हम लोगों से मिलने क्यों नहीं आते?" इल्या ने मुस्कराकर पूछा। उसे भी अपने पुराने दोस्त को ऐसी मस्त और मैली-कुचैली हालत में देखकर बहुत खुशी हुई थी। उसने पावेल के फटे हुए जूतों की ओर देखा और फिर खुद अपने नये जूतों पर नज़र डाली, जो उसने नौ रूबल में ख़रीदे थे, और बड़े आत्म-संतोष से मुस्करा दिया।

"मुझे क्या मालूम कि तुम रहते कहां हो!.." पावेल ने कहा।

"उसी पुरानी जगह – पेत्रूखा के यहां ..."

"याकोव ने तो मुझे बताया था कि तुम कहीं मछली बेचते हो ..."

इल्या ने बड़े गर्व के साथ उसे स्त्रोगानी के यहां का अपना अनुभव सुनाया।

"शाबाश!" पावेल ने सहमति के भाव से कहा। "मेरा भी यही हुआ – जब मुझे शरारत करने पर छापेखाने से निकाल दिया गया तो मैं साइनबोर्ड बनानेवालों के यहां काम करने लगा – यहीं रंग मिलाने वग़ैरह का काम था। मेरी क़िस्मत फूटी, एक दिन मैं गीले साइनबोर्ड पर बैठ गया ... क्या मारा है मुझे उन लोगों ने! मालिक ने और उसकी घरवाली ने और उस्ताद ने! इतनी पिटाई की, इतनी पिटाई की कि उनके भी हाथ थक गये ... अब मैं एक नल मरम्मत करनेवाले के यहां काम करता हूं ... महीने में छः रूबल मिलते हैं ... अभी खाना खाया है, अब वापस काम पर जा रहा हूं ..."

"मगर लगता तो नहीं है कि तुम्हें जाने की कोई जल्दी है।"

"भाड़ में जाये यह काम! सारा काम तो यों भी कभी पूरा नहीं होगा। किसी दिन आकर तुम लोगों से मिलना चाहिये ..."

"ज़रूर आना," इल्या ने बड़े तपाक से कहा।

"किताबें अब भी पढ़ते हो?"

"क्यों नहीं! और तुम?"

"मैं भी कभी-कभार पन्ने उलट लेता हूं ..."

"और कविताएं लिखते हो?"

"हां ..."

पावेल खुश होकर हंसने लगा।

"तो, आकर मिलना ज़रूर। और अपनी कविताएं लेते आना ..."

"आऊंगा ... और थोड़ी-सी वोदका भी लेता आऊंगा ..."

"क्या तुम पीते हो?"

"छककर ... अच्छा, अब चलूं।"

"फिर मिलेंगे," इल्या ने कहा।

और वह पावेल के बारे में सोचता हुआ अपने रास्ते चल दिया। यह बात उसकी समझ में नहीं आयी कि इस छोकरे ने, खुद फटेहाल होने के बावजूद, उसके मज़बूत जूतों और साफ़-सुथरे कपड़ों को देखकर

किसी तरह की ईर्ष्या का परिचय नहीं दिया था – सच तो यह है कि उसने उनकी ओर शायद ध्यान तक नहीं दिया था। और जब इल्या ने उसे अपने स्वतंत्र जीवन के बारे में बताया था तो ऐसा लगा था कि पावेल को सचमुच खुशी हुई थी। क्या यह मुमकिन था कि पावेल को इस बात में कोई दिलचस्पी ही न हो कि दूसरे लोग किस चीज़ की तलाश में थे: शांत, साफ़-सुथरा और स्वतंत्र जीवन? इस विचार ने उसे विचलित कर दिया।

गिरजाघर जाने के बाद इल्या हमेशा खास तौर पर बहुत उदास और परेशान हो जाता था। शायद ही कभी ऐसा होता था कि वह सुबह की या शाम की प्रार्थना में न जाता हो। वह खुद प्रार्थना नहीं करता था; वह बस कोने में खड़ा स्तुति-माला का गायन सुनता रहता था; उसका दिमाग़ बिल्कुल खाली रहता था। उपासना करनेवाले उसके चारों ओर चुपचाप निश्चल खड़े रहते थे और अपनी इस मूकता के सूत्र में एक-दूसरे से बंधे रहते थे। गीत की लहरें और अगरबत्तियों का धुआं गिरजाघर में तैरता रहता था, और कभी-कभी इल्या कल्पना करता था कि वह भी ऊपर जा रहा है और उस ऊष्ण तथा सुखद शून्य में तैर रहा है और उसमें पूरी तरह खता जा रहा है। उसका हृदय उमंग में भर उठता और वह ऐसी शांति अनुभव करता जिसका इस दुनिया की भागदौड़ से कोई सामंजस्य नहीं था और जो इस दुनिया की आकांक्षाओं से बिल्कुल मेल नहीं खाती थी। पहले उसने इस भावना को अपनी आत्मा के एक अलग कोने में रख दिया जहां उसका उन प्रभावों से कोई टकराव नहीं होता था जो प्रतिदिन उसके मन में अंकित होते रहते थे और इसलिए उसे कोई परेशानी नहीं होती थी। लेकिन धीरे-धीरे उसे अपने दिल में किसी ऐसी शक्ति की मौजूदगी का आभास होने लगा जो लगातार उस पर नज़र रख रही थी। सहमी हुई वह उसकी आत्मा की गहराइयों में दुबकी रहती थी और जब इल्या इस दुनिया की समस्याओं में उलझा होता था उस समय वह अपनी आवाज़ तक नहीं उठाती थी, लेकिन जब वह गिरजाघर में होता था तो वह फैलकर बड़ी हो जाती थी और उसके मन में एक खास विचलित करनेवाली भावना पैदा करती थी जिसका साफ़-सुथरे तथा आरामदेह जीवन के उसके सपनों से कोई मेल नहीं होता था। ऐसे क्षणों में उसे हमेशा अंतीपा संन्यासी

के बारे में सुनी हुई कहानियां याद आने लगती थीं और वह चीथड़े जमा करनेवाले बूढ़े को प्यार-भरी आवाज़ में कहते हुए सुनता था:

"भगवान सब कुछ देखता है, उसके पास सच्ची कसौटी है। भगवान के अलावा किसी की कोई हैसियत नहीं है!"

इल्या घर लौटता तो बहुत परेशान हालत में होता: उसे आभास रहता कि भविष्य के बारे में उसके सपनों में कोई चमक-दमक बाक़ी नहीं रह गयी थी और यह कि उसके अंदर एक दूसरा व्यक्ति भी था जो बिसातख़ाने की दुकान नहीं खोलना चाहता था। लेकिन ज़िंदगी उस पर हावी हो गयी और यह दूसरा व्यक्ति उसकी आत्मा की गहराइयों में छिपा रहा।

इल्या याकोव से अपने इस दोहरे व्यक्तित्व के बारे में बाला नहीं करता था। वह खुद इसके बारे में सोचने से कतराता था, वह अपनी इच्छा से कभी इस अस्पष्ट भावना के बारे में नहीं सोचता था।

वह हमेशा शाम का वक़्त अच्छी तरह बिताता था। शहर से घर लौटकर वह सीधा माशा के तहख़ानेवाले कमरे में जाता था।

"अच्छा, समोवार के बारे में क्या ख़्याल है, माशा?" वह मालिकाना ढंग से कहता।

समोवार मेज़ पर पहले से ही गरम रहता था और उसमें से पानी उबलने की और भाप की सी-सी की आवाज़ आती रहती थी। इल्या अपने साथ हमेशा कोई न कोई पकवान लेकर आता था – डूनट, पेपरमिंट के केक, शहद के केक या कभी-कभार मुरब्बा भी। इसलिए माशा को चाय बनाकर उसे पिलाना बहुत अच्छा लगता था। वह ख़ुद भी पैसा कमाने लगी थी। मुटल्ली ने उसे काग़ज़ के फूल बनाना सिखा दिया था, और उसे पतले काग़ज़ से चटकीले रंग के गुलाब के फूल बनाने में बहुत मज़ा आता था, जिनमें से बड़ी उल्लासमय आवाज़ निकलती थी। कभी-कभी वह दिन में दस कोपेक तक कमा लेती थी। उसके बाप को टाइफ़स हो गया था; वह दो महीने से ज़्यादा अस्पताल में रहा था और जब घर लौटा था तो बहुत दुबला हो गया था और पीला पड़ गया था और उसका सिर महीन काले-काले बालों के छल्लों से ढका हुआ था। झबरी उलझी हुई दाढ़ी मूंड दिये जाने की वजह से वह

अपने पीले और पिचके हुए गालों के बावजूद ज़्यादा जवान लगने लगा था। वह पहले की तरह ही दूसरे मोचियों के लिए काम करता था और कभी-कभार ही घर पर रात बिताने के लिए आता था, इसलिए उसकी बेटी उनकी छोटी-सी गृहस्थी की पूरी मालकिन बन बैठी थी। वह भी बाप को बाक़ी सब लोगों की तरह पेर्फ़ीश्का कहने लगी थी। अपनी तरफ़ बेटी का यह रवैया मोची को बहुत दिलचस्प लगता था और घुंघराले बालोंवाली वह लड़की, जो उसी की तरह खिलखिलाकर हंसती थी, शायद उसमें आदर की भावना पैदा करती थी।

माशा के साथ चाय पीना याकोव और इल्या का दस्तूर बन गया था। रोज़ शाम को वे बहुत देर तक ढेरों चाय पीते रहते, उनके पसीना बहता रहता और वे अपनी दिलचस्पी की हर चीज़ के बारे में बातें करते रहते। इल्या उन्हें बताता कि उसने शहर की सड़कों पर क्या देखा था: याकोव, जो अपना ज़्यादातर वक़्त पढ़ने में बिताता था, उन्हें किताबों के बारे में और शराबख़ाने में होनेवाले झगड़ों के बारे में बताता, अपने बाप की शिकायत करता, और कभी-कभी, इधर यह अकसर होने लगा था, ऐसे विचारों की व्याख्या करता जो इल्या और माशा की समझ में नहीं आते थे और उन्हें बेतुके लगते थे। चाय का स्वाद बेहद अच्छा होता था और वह धब्बेदार समोवार की चमक ऐसी लगती जैसे कोई चालाक और स्नेहमयी बुढ़िया उन्हें देखकर मुस्करा रही हो। लगभग हमेशा जब उनके चाय के दौर पूरे ज़ोर पर होते उसी वक़्त वह समोवार, मानो उनको चिढ़ाने के लिए, गुर्राने और बड़बड़ाने लगता था क्योंकि उसमें पानी बहुत कम रह जाता था। माशा उसे फिर से भर लाने के लिए उठा ले जाती; यह एक ऐसा सिलसिला था जो शाम को कई बार दोहराया जाता था।

अगर आसमान पर चांद निकला होता तो उसकी किरनें भी खिड़की में से होकर बच्चों का साथ देने के लिए आ जातीं।

सीली हुई और बोसीदा दीवारों से घिरे हुए और नीची-सी भारी छत से ढके हुए उस बिल में कभी काफ़ी हवा और रोशनी नहीं होती थी, लेकिन हंसी-ख़ुशी की कभी कोई कमी नहीं रहती थी, और रोज़ शाम को वहां अच्छी-अच्छी भावनाएं और मासूम युवा विचार जन्म लेते रहते थे।

कभी-कभी पेफ़ीश्का भी उनके साथ आ बैठता था। वह आम तौर पर एक अंधेरे कोने में बेढंगे भारी-भरकम चूल्हे के पास बेंच पर बैठता था, या चूल्हे के चबूतरे पर चढ़ जाता था और वहां सिर नीचे की ओर लटकाये लेटा रहता था; उसके छोटे-छोटे सफ़ेद दांत अंधेरे में चमकते रहते थे। उसकी बेटी उसे मीठी चाय का बड़ा-सा प्याला, शकर और रोटी का एक टुकड़ा दे देती थी।

"बहुत-बहुत शुक्रिया तुम्हारा, मारीया पेफ़ींल्येव्ना। मैं तो एहसान के बोझ से दबा जा रहा हूं!" वह मज़ाक करते हुए कहता और फिर बड़ी ईर्ष्या से इतना और जोड़ देता, "ऐश करो, बच्चो! तुम्हारी ज़िंदगी भी बड़े ठाठ की है। जैसे बिल्कुल सचमुच के इंसान हो तुम।"

फिर मुस्कराते और आह भरते हुए वह बयान करता रहता:

"ज़िंदगी? बेहतर होती जा रही है। हर साल बेहतर होती जा रही है। जब मैं तुम लोगों की उम्र का था तो बात करने के लिए मेरा एक ही दोस्त था – चमड़े का पट्टा। जब वह मेरी पीठ को थपथपाता था तो मैं ख़ुशी से गला फाड़कर चीख पड़ता था। जब वह थपथपाना बंद कर देता था तो अपने दोस्त के बिना मेरी पीठ को ऐसा अकेलापन महसूस होता था कि वह फूलकर कुप्पा हो जाती थी और हांपने लगती थी और मेरी आंखों को कुतरने लगती थी। लेकिन वह दोस्त बहुत देर उससे अलग नहीं रहता था – मित्रों का बहुत ध्यान रखनेवाला था वह पट्टा! तो, अपनी ज़िंदगी में मुझे इसके अलावा कभी कोई और सुख नहीं मिला! जब तुम बड़े हो जाओगे तो तुम्हारे पास याद करने को बहुत-कुछ होगा – ये बातें और बहुत-सी दूसरी घटनाएं और तुम्हारी यह शानदार ज़िंदगी। लेकिन मैं? मुझे देखो, पैंतालीस बरस का हो गया, और मेरे पास याद करने को कुछ भी नहीं है! एक छोटा-सा टुकड़ा भी नहीं! कुछ भी नहीं – बिल्कुल कुछ नहीं। ऐसा लगता है कि मैं जनम का बहरा और अंधा हूं। मुझे बस एक बात याद है कि मेरे दांत हमेशा सर्दी और भूख से बजते रहते थे और मेरे मुंह पर हमेशा मार का निशान रहता था। मेरे बाल और कान और मेरी हड्डियां कैसे सही-सलामत बच गयीं यह तो मैं समझ ही नहीं पाता। अगर कोई चीज़ मुझे फेंककर नहीं मारी गयी तो वह थी चूल्हा, लेकिन इससे भी मुझे इतनी बार टकराया गया है कि मुझे गिनती भी नहीं याद।

रस्सी की तरह ऐंठ-ऐंठकर मेरी यह शक्ल बना दी गयी है। मुझे पीटा जाता था, मेरी धुनाई होती थी और पानी में डुबो दिया जाता था, लेकिन मैं हर बार ज़िंदा बचकर निकल आता था। रूसी आदमी बड़े जीवट का होता है! कुछ भी कर लो मगर उससे पार पाना मुश्किल होता है। चट्टान जैसा मज़बूत होता है... मिसाल के लिए, मुझी को ले लो: उन लोगों ने मुझे पीस-पीसकर चूरा बना दिया, काटकर मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दिये, लेकिन मैं जैसे का तैसा हूं, बिल्कुल मस्त-मौला, एक शराबख़ाने से दूसरे शराबख़ाने का चक्कर काटता रहता हूं, सारी दुनिया से संतुष्ट हूं। भगवान को मुझसे प्यार है। एक बार उस ऊपरवाले ने मुझे अच्छी तरह देखा, हंसा और अपना सिर हिलाकर बोला: 'इसका कुछ नहीं किया जा सकता!'"

उसकी लच्छेदार बातें सुनकर याकोव और माशा हंस पड़ते। और इल्या भी हंस देता, लेकिन उसके मन में एक ही विचार उठता जिससे वह किसी तरह छुटकारा न पाता।

एक बार उसने उस मोची से शंकापूर्ण मुस्कराहट से पूछा, "तुम तो ऐसे बातें करते हो जैसे इस दुनिया में तुम्हें कुछ चाहिये ही नहीं..."

"कौन कहता है? मिसाल के लिए, शराब मुझे हर वक़्त चाहिये।"

"लेकिन सच बताओ – क्या तुम्हें सचमुच कुछ चाहिये भी," इल्या ने आग्रह करते हुए पूछा।

"सच बताऊं? अच्छा, तो – मुझे एक नया अकार्डियन चाहिये! अव्वल दर्जे का – वहवाला जो बीस-पच्चीस रूबल का मिलता है! मुझे तो बस वही चाहिये।"

वह चुपके से थोड़ा-सा हंस दिया, लेकिन अगले ही क्षण वह गंभीर हो गया।

"नहीं, बेटा, मुझे तो नया अकार्डियन भी नहीं चाहिये," उसने एक क्षण सोचकर पूरे विश्वास के साथ कहा। "कोई फ़ायदा नहीं है। पहली बात तो यह है कि अगर उसका कुछ भी मोल होगा तो मैं उसे बेचकर शराब पी जाऊंगा! दूसरे, जो अब मेरे पास है अगर वह इससे बुरा हुआ तो? जो मेरे पास है, वह कैसा है? अनमोल, इसमें मेरी आत्मा बसी हुई है। नायाब बाजा है – सारी दुनिया में शायद अपनी क़िस्म का अकेला है। अकार्डियन तो तुम्हारी घरवाली की तरह होता

है ... मेरी भी घरवाली थी – बिल्कुल फ़रिश्ता थी वह! मैं दूसरी शादी कैसे कर सकता हूं? अब उसकी जैसी दूसरी मिलेगी कहां, और मैं हमेशा नयीवाली का मुक़ाबला पुरानीवाली से करता रहूंगा। और यह नयी वाली उसके बराबर नहीं होगी ... यह हम दोनों में से किसी के लिए अच्छा नहीं होगा! अरे, बेटा, कोई चीज़ अच्छी इसलिए नहीं होती है कि वह अच्छी होती है, बल्कि इसलिए कि उससे प्यार होता है!"

अपने बाजे के बारे में मोची की राय से इल्या पूरी तरह सहमत था: जिन लोगों ने भी उसे सुना था वे सभी उसकी सुरीली आवाज़ से दंग थे। लेकिन उसे इस बात पर विश्वास नहीं होता था कि उसे सचमुच कुछ नहीं चाहिये था। यह प्रश्न उसके दिमाग़ में निश्चित रूप से ढल चुका था: क्या ऐसा हो सकता है कि एक ऐसे आदमी को जो ज़िंदगी भर चीथड़े लगाये गंदगी में रहा हो, जो ज़्यादातर वक़्त शराब के नशे में धुत्त रहता हो और अकार्डियन बजाना जानता हो, उसे इससे बेहतर किसी चीज़ की इच्छा न हो। इस विचार की वजह से वह पेर्फ़ीश्का को एक तरह का ख़ब्ती समझने लगा था और इसके साथ ही वह बड़ी जिज्ञासा और अविश्वास से उस मस्त फक्कड़ आदमी को टकटकी बांधकर देखता था और महसूस करता था कि वहां जितने लोग रहते थे उनमें वह, निकम्मा शराबी होने के बावजूद, सबसे अच्छा आदमी था।

कभी-कभी वे अल्पवयस्क लोग उन गहरी और विशाल समस्याओं में उलझ जाते थे जो मनुष्य के मस्तिष्क के सामने सहसा अथाह गर्त्त की तरह खुल जाती हैं और जिज्ञासु लोगों को अपनी रहस्यमयी गहराइयों में पैठने का प्रलोभन देती हैं। याकोव ऐसी समस्याओं को उठाता था। उसकी एक अजीब आदत यह पड़ गयी थी कि वह हमेशा ठोस चीज़ों से चिपका रहता था मानो उसे अपनी मांस-पेशियों पर भरोसा न हो। वह या अपना कंधा किसी चीज़ से टिकाकर बैठता था या उस पर सहारे के लिए अपना हाथ रख लेता था। जब वह अपने तेज़ और डगमगाते हुए क़दमों से सड़क पर चलता था तो वह जाने क्यों खंभों को छूता हुआ चलता था जैसे उन्हें गिन रहा हो या चारदीवारियों को इस तरह ढकेलता रहता था जैसे उनकी मज़बूती को परख रहा हो।

शाम को माशा के यहां वह हमेशा खिड़की के पास दीवार का सहारा लेकर बैठता था और अपनी लंबी-लंबी उंगलियों से मेज़ या कुर्सी को पकड़े रहता था; उसका बड़ा-सा चिकने और मुलायम सन के रंग के बालोंवाला सिर उसके एक कंधे पर झुका रहता था, उसकी नीली आंखें अपने दोस्तों को नज़र जमाकर देखते समय उसके पीले चेहरे में कभी सिकुड़ जाती थीं और कभी फैल जाती थीं। उसे अब भी अपने सपने बयान करने का बड़ा शौक़ था और जब वह अपनी पढ़ी हुई किताबों की कहानियां सुनाता था तो वह उनमें अपने मन से सोची हुई विचित्र बातों को जोड़ने का लोभ संवरण नहीं कर पाता था। इल्या उसे ऐसा करते हुए पकड़ लेता, लेकिन वह इस पर शर्मिंदा न होता।

"जिस तरह मैंने सुनाया है वह बेहतर है," वह बड़ी सादगी से कहता। "बस धर्म की किताबों में कोई हेर-फेर करने की मनाही है, आम किताबों के साथ जो चाहो करो। वे मामूली लोगों की ही लिखी हुई होती हैं। मैं भी आदमी हूं। जो भी चीज़ मुझे अच्छी न लगे उसे मैं बदल सकता हूं ... लेकिन एक बात बताओ मुझे: जब आदमी सो जाता है तो उसकी आत्मा का क्या होता है?"

"मैं क्या जानूं?" इल्या ने कहा, उसे इस तरह के सवालों से चिढ़ थी, वे उसकी आत्मा में गड़बड़ी पैदा करते थे।

"मैं समझता हूं कि यह ठीक है कि वह उड़ जाती है," याकोव ने अपनी राय दी।

"ज़रूर उड़ जाती है," माशा ने विश्वास के साथ कहा।

"तुम्हें कैसे मालूम?" इल्या ने कठोर स्वर में पूछा।

"बस मालूम है ..."

"उड़ जाती है," याकोव मुस्कराकर विचारों में खोया-खोया-सा बोला। "उसे भी आराम चाहिये; इसीलिए तो हमें सपने दिखायी देते हैं।"

इल्या इस बात का खंडन नहीं कर पाया इसलिए वह चुप रहा, हालांकि अपने दोस्त की बात का खंडन करने को उसका हमेशा बहुत जी चाहता था। इसके बाद कई मिनट तक ख़ामोशी रही, जिसके दौरान ऐसा लगा कि तहख़ाने का अंधेरा और गहरा हो गया है। लैंप से धुंआ निकल रहा था, समोवार से कोयले की बू आ रही थी और

बच्चों के कानों में दबी-दबी आवाज़ें आ रही थीं – ऊपर शराबखाने में लोगों के गरजने और चीखने-चिल्लाने की आवाजें। याकोव ने फिर धीमे स्वर में कहना शुरू किया :

"आदमी शोर-गुल मचाता है... काम करता है, वग़ैरह-वग़ैरह। मतलब है – जीता है। और फिर, अचानक – धांय! – वह मर जाता है... क्या मतलब है इसका? तुम्हारा क्या ख़्याल है, इल्या?"

"कुछ भी मतलब नहीं है। बस वह बूढ़ा हो गया, मर जाने का समय आ गया।"

"लेकिन नौजवान लोग भी मर जाते हैं... बच्चे भी मर जाते हैं। और तनदुरुस्त लोग भी।"

"अगर वे मर जाते हैं तो वे तनदुरुस्त नहीं हो सकते..."

"लोग जिंदा किसलिए रहते हैं?"

"फिर चलने लगा तुम्हारा चर्खा!" इल्या ने बड़े व्यंग से चिल्ला-कर कहा। "वे बस इसलिए ज़िंदा रहते हैं कि ज़िंदा रहें। वे काम करते हैं और कामयाब होने की कोशिश करते हैं। हर आदमी अच्छी तरह रहना चाहता है। हर आदमी अमीर बन जाने और साफ़-सुथरा रहने का मौक़ा खोजता रहता है।"

"यह तो ग़रीब लोगों की बात हुई। लेकिन जो अमीर हैं? उनके पास तो सब कुछ होता है... उन्हें किस चीज़ की ज़रूरत रह जाती है?"

"क्या कहा! बड़ा आया समझदार कहीं का! अमीर? अगर अमीर न हों तो ग़रीब लोग काम किसके लिए करें?"

याकोव ने एक क्षण इस पर विचार किया और फिर पूछा :

"तो तुम समझते हो कि हर आदमी काम करने के लिए ज़िंदा रहता है?"

"ज़रूर... मतलब है कि सब नहीं... कुछ लोग काम करते हैं, और दूसरे लोग ... वे अपना सारा काम कर चुके होते हैं और वे अपना पैसा बचा लेते हैं और बस ... बस ... ज़िंदा रहते हैं।"

"किसलिए?"

"अरे, तुम्हारा क्या ख़्याल है? क्या तुम समझते हो कि वे ज़िंदा नहीं रहना चाहते? क्या तुम नहीं चाहते ज़िंदा रहना?" इल्या अधीर होकर चिल्लाया। उसे ग़ुस्सा आ रहा था, लेकिन वह यह नहीं बता सकता

था कि ग़ुस्सा इसलिए आ रहा था कि याकोव ऐसे सवाल पूछता था या इसलिए कि वह उन्हें बेवक़ूफ़ी से पूछता था।

"तुम किसलिए ज़िंदा रहते हो?" उसने चिल्लाकर याकोव से पूछा।

"बात तो यही है कि मुझे नहीं मालूम," याकोव ने बड़ी भीरुता से कहा। "मुझे तो मर जाने में भी कोई एतराज़ नहीं है। "अलबत्ता, मुझे डर लगता है लेकिन जिज्ञासा भी है..."

अचानक उसके स्वर में स्नेह और साथ ही झिड़की का एक हल्का-सा पुट आ गया :

"तुम्हें इतना झुंझलाने की कोई ज़रूरत नहीं है। देखो, लोग काम करने के लिए ज़िंदा रहते हैं, और काम लोगों के लिए बनाया गया है, और... और फिर होता क्या है? यह सिलसिला एक पहिये की तरह है – जो घूमता रहता है, घूमता रहता है, और कहीं पहुंचता नहीं। और यह समझ में नहीं आता – किसलिए? और इसके बीच में भगवान की जगह कहां है? वह धुरा है, भगवान धुरा है! उसने आदम और हव्वा से कहा था, अपने जैसे लोगों को पैदा करो और इस धरती को बसा दो। लेकिन किसलिए?"

फिर याकोव अपने दोस्त की ओर झुका और जब वह रहस्यमय ढंग से धीमे स्वर में बोला तो उसकी आंखों में भय दिखायी दे रहा था :

"मुझे यक़ीन है कि भगवान ने इस सवाल का जवाब दिया होगा, लेकिन किसी ने यह स्पष्टीकरण चुरा लिया होगा। यह शैतान का काम है! और कौन चुरायेगा? शैतान! और इसीलिए किसी को यह नहीं मालूम है कि किसलिए?"

इल्या अपने दोस्त के इस चक्करदार भाषण को सुन रहा था और उसके प्रति आकर्षण महसूस करके ख़ामोश था।

और याकोव जैसे-जैसे बोलता गया उसकी रफ़्तार तेज़ और उसकी आवाज़ ज़्यादा शांत होती गयी। उसकी आंखें बाहर की ओर निकल आयीं, उसके चेहरे पर डर दिखायी दे रहा था, और वह जितना ही बोलता गया उसकी बातें उतनी ही बेतुकी होती गयीं :

"भगवान तुमसे क्या चाहता है – जानते हो? अहा!" उसके मुंह से जो बिखरे हुए शब्द धाराप्रवाह निकल रहे थे उनके बीच में

यह विजयोल्लासपूर्ण विस्मयबोधक शब्द अचानक बड़े ज़ोर से उभरकर सामने आ गया। माशा मुंह खोले आश्चर्य से अपने दोस्त और उपकारी को देखती रही। इल्या झुंझलाया हुआ त्योरियां चढ़ाये बैठा रहा। उसके स्वाभिमान को इस बात से ठेस लगती थी कि वह इन बातों को समझ नहीं पा रहा था। वह अपने आपको याकोव से ज़्यादा तेज़ समझता था, लेकिन वह याकोव की स्मरण-शक्ति से और जटिल विषयों पर बोलने की उसकी क्षमता से प्रभावित था। आख़िरकार वह सुनते-सुनते और ख़ामोश रहते-रहते थक गया; उसे ऐसा लग रहा था कि उसके सिर में जैसे कुहरा भरा हुआ है।

"जहन्नुम में जाओ!" उसने चिढ़कर बीच में टोका। "तुमने बहुत-सी ऐसी चीज़ें पढ़ रखी हैं जो तुम्हारी समझ में नहीं आतीं..."

"यही तो मैं कह रहा हूं कि मेरी समझ में कुछ नहीं आता!" याकोव ने आश्चर्य से कहा।

"तो फिर साफ़-साफ़ कहो कि मेरी समझ में नहीं आता! तुम तो पागलों की तरह बके जा रहे हो और मुझे बैठकर तुम्हारी बातें सुननी पड़ रही हैं।"

"लेकिन ठहरो," याकोव ने हठपूर्वक कहा। "कुछ भी नहीं समझा जा सकता है... मिसाल के लिए, इस लैंप को ले लो। इसमें जो आग है, वह कहां से आती है? अभी है, अभी नहीं है! माचिस रगड़ो: आग पैदा हो जाती है... इसका मतलब है कि वह हमेशा रही होगी। कहां? हवा में अनदेखी उड़ रही थी?"

इस सवाल ने फिर इल्या को आकर्षित किया। उसके चेहरे से उपेक्षा का भाव ग़ायब हो गया।

"अगर वह हवा में होती तो हवा को हमेशा गर्म रहना चाहिये," उसने लैंप को घूरते हुए कहा। "लेकिन तुम बाहर सर्दी में भी माचिस जला सकते हो, इसलिए वह हवा में नहीं हो सकती..."

"फिर कहां?" याकोव ने आशा-भरी दृष्टि से अपने दोस्त को एकटक देखते हुए कहा।

"माचिस में," माशा ने अपनी राय दी।

लेकिन जब लड़के ज़िंदगी की अधिक गंभीर समस्याओं पर बातचीत कर रहे होते थे उस समय माशा की राय की ओर कभी कोई ध्यान नहीं

दिया जाता था। वह इसकी आदी हो गयी थी और इसका बुरा नहीं मानती थी।

"कहां?" इल्या ने फिर नये सिरे से चिढ़कर कहा। "न मैं यह जानता हूं और न मुझे इसकी परवाह है। मैं तो बस इतना जानता हूं कि तुम्हें उससे गर्मी मिल सकती है लेकिन तुम्हें उसमें अपनी उंगली नहीं घुसेड़नी चाहिये।"

"बड़ा सयाना आया!" याकोव उत्साह से और गुस्से से बीच में बोला। "'न जानता हूं, न परवाह है!' यह बात तो मैं भी कह सकता हूं, और कोई बेवक़ूफ़ भी कह सकता है... तुम तो यह समझाने की कोशिश करो कि आग आती कहां से है? मैं तुमसे रोटी के बारे में नहीं पूछता – कोई भी देख सकता है कि रोटी कहां से आती है: पौधे से हमें अनाज मिलता है, अनाज से आटा मिलता है, आटे से रोटी मिलती है। सीधी-सी बात है। पर यह बताओ आदमी कहां से आता है?"

इल्या ने आश्चर्य और ईर्ष्या से अपने दोस्त के बड़े-से सिर पर एक नज़र डाली। कभी-कभी जब वह याकोव के सवालों का जवाब देने में अपने को असमर्थ पाता तो उछलकर खड़ा हो जाता और याकोव से कड़ी बातें करने लगता। किसी वजह से ऐसे मौक़ों पर वह हमेशा जाकर चूल्हे की ओर पीठ करके उससे टिककर खड़ा हो जाता था – चौड़े कंधोंवाला हट्टा-कट्टा लड़का, जो एक-एक शब्द का साफ़ उच्चारण करते हुए अपने विचारों को व्यक्त करते समय अपने घुंघराले बालोंवाले सिर को झटका देता रहता था।

"तुम्हारा दिमाग़ बिल्कुल उलझा हुआ है, बस और कुछ नहीं! और यह सब इसका नतीजा है कि तुम्हारे पास करने को कुछ नहीं है। तुम अपना वक़्त कैसे बिताते हो? शराबख़ाने के काउंटर पर खड़े रहकर। वह भी कोई काम है! और शायद तुम ज़िंदगी भर खूंटे की तरह वहीं गड़े रहोगे। अगर तुम्हें कुछ कामयाबी हासिल करने के चक्कर में रोज़ सवेरे से शाम तक मेरी तरह सड़कों पर घूमना पड़े तो तुम्हें इन सब बकवास बातों के बारे में सोचने का वक़्त न मिले। तुम सिर्फ़ इस बात के बारे में सोचते रहो कि दुनिया में अपने लिए रास्ता कैसे निकालो, कैसे अपने लिए कोई मौक़ा झपटकर पकड़ लो।

8-01118

इसीलिए तो तुम्हारा सिर इतना बड़ा है – उसमें सारी बेवक़ूफ़ी की बातें भरी हैं। समझदारी के विचार छोटे होते हैं – उनसे सिर फूलकर बड़ा नहीं हो जाता ..."

याकोव कुर्सी पर बैठा बिल्कुल आगे झुका हुआ और हाथ किसी चीज़ पर टिकाकर चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा। कभी-कभी उसके होंट कोई आवाज़ निकाले बिना हिलने लगते थे और वह अपनी आंखें जल्दी-जल्दी झपकाने लगता था।

लेकिन जैसे ही भाषण ख़त्म हो जाता था और इल्या फिर आकर मेज़ पर बैठ जाता था, याकोव फिर फ़लसफ़ा बघारने लगता था।

"लोग कहते हैं कि कोई किताब है – विज्ञान की – जादू के बारे में – जिसमें हर चीज़ की वजह समझायी गयी है। काश वह मेरे हाथ लग पाती और मैं उसे पढ़ पाता ... मैं सोचता हूं – डर लगेगा!"

माशा उठकर अपने पलंग पर जा बैठती, जहां से उसकी काली-काली आंखें एक दोस्त के चेहरे से दूसरे दोस्त के चेहरे तक चक्कर लगाती रहतीं। कुछ ही देर में वह जम्हाई लेने लगती, फिर वह ऊंघने लगती, और आखिरकार उसका सिर तकिये पर लुढ़क जाता।

"सोने का वक़्त हो गया," इल्या कहता।

"ठहरो, ज़रा मैं माशा को कुछ उढ़ा दूं और बत्ती बुझा दूं।"

इल्या उसकी राह देखे बिना दरवाज़े की मूठ पकड़ लेता, और तब याकोव रुआंसी आवाज़ में कहता:

"मेरा इंतज़ार करना। मुझे अकेले जाते डर लगता है – अंधेरा है!.."

"उफ़!" लुन्योव तिरस्कार के भाव से कहता। "सोलह साल का हो गया है, और अभी तक बच्चा है। मुझे देखो, मुझे डर किसी से नहीं लगता! अगर शैतान भी सामने आ जाये तो मैं पलक न झपकाऊं।"

कोई जवाब दिये बिना याकोव माशा को सुलाकर जल्दी से बत्ती बुझा देता। रोशनी भक-भक करके बुझ जाती और कमरे में चुपके-चुपके चारों ओर से अंधेरा सिमट आता। लेकिन कभी-कभी चांदनी की कोई किरन दबे पांव चुपके से खिड़की में से आती और फ़र्श पर बिखर जाती।

एक छुट्टी के दिन लुन्योव उतरा हुआ चेहरा लिये और दांत भींचे

हुए घर लौटा और कपड़े उतारे बिना ही चारपाई पर लेट गया। गुस्सा उसके दिल पर एक ठंडे बोझ की तरह लदा हुआ था। गर्दन में दबा-दबा-सा दर्द होने की वजह से वह अपना सिर नहीं घुमा पा रहा था, और लगता था कि जो चोट उसे लगी थी उसकी वजह से उसका सारा बदन दुख रहा था।

उस दिन सवेरे एक पुलिसवाले ने एक बट्टी साबुन और एक दर्जन कंटियां लेकर उसे सर्कस के बाहर अपना माल बेचने की इजाज़त दे दी थी, जहां उस वक़्त मैटिनी शो हो रहा था। इल्या ने बेखटके सर्कस के फाटक पर अपना अड्डा जमाया था। लेकिन अचानक थानेदार का सहायक वहां आया, उसके सिर पर ज़ोर से मारा और जिस ठीहे पर उसका बक्सा रखा था, उसे ऐसी ठोकर मारी कि उसका सारा सामान ज़मीन पर बिखर गया। कुछ चीज़ें मिट्टी में गिरकर ख़राब हो गयीं और कुछ ग़ायब हो गयीं।

"आपको कोई हक़ नहीं है, साहब ..." इल्या ने अपना सामान बटोरते हुए कहा।

"क्-या?" पुलिसवाले ने अपनी लाल मूंछों पर ताव देते हुए कहा।

"आपको मुझे हाथ लगाने का कोई हक़ नहीं है ..."

"अच्छा, मुझे हक़ नहीं है? मिगुनोव! इसे थाने ले जाओ!" थानेदार के सहायक ने पुलिसवाले से कहा।

और वही पुलिसवाला जिसने इल्या को अपना ठीहा सर्कस के सामने लगाने की इजाज़त दी थी, उसे पकड़कर थाने ले गया जहां उसे शाम तक बंद रखा गया।

इससे पहले भी पुलिस से लुन्योव की झड़पें हो चुकी थीं, लेकिन इससे पहले न तो कभी वह थाने गया था और न ही कभी उसके मन में ऐसा क्रोध और ऐसी झुंझलाहट पैदा हुई थी।

चारपाई पर लेटे-लेटे उसने अपनी आंखें मूंद लीं और अपना सारा ध्यान व्यथा के उस बोझ पर केंद्रित किया जिसने पत्थर की सिल की तरह उसके सीने को दबा रखा था। दीवार के पार शराबख़ाने से ऐसी गड़गड़ाहट की आवाज़ आ रही थी जैसे पतझड़ के मौसम में जब बादल छाये हों गंदले पानी के तेज़ झरने पहाड़ की ढलान से नीचे गिर रहे

हों : टीन की ट्रे की टनटनाहट, तश्तरियों की खड़खड़ाहट, वोदका, चाय और बीयर मांगती हुई अलग-अलग आवाज़ें।

"अभी लाया!" वेटर जवाब देते।

किसी के गाने की ऊंची और उदास आवाज़ इस शोर को फ़ौलाद के झनझनाते हुए तार की तरह काट गयी :

किसने जाना पहले से
विरह-व्यथा की लीला को...

एक दूसरी भारी और गूंजती हुई आवाज़ धीमे और मधुर स्वर में उसमें आकर मिल गयी ; उसकी मधुर तानें शराबखाने के कोलाहल में खो गयीं :

यौवन की इस पीड़ा को...

"तुम झूठे हो!" कोई ऐसी आवाज़ में चिल्लाया जो सूखे फटे हुए बांस जैसे गले से निकलती हुई मालूम हो रही थी। "लिखा है : 'अगर तू सहन करने के मेरे आदेश का पालन करेगा, तो मैं तेरी परीक्षा के क्षण में तुझे नहीं भूलूंगा।'"

"तू खुद झूठा है!" शब्दों का साफ़-साफ़ उच्चारण करते हुए और ताव में आकर किसी आवाज़ ने आपत्ति उठायी। "उसी किताब में लिखा है : 'क्योंकि तू कुनकुना है, न बहुत गर्म है न बहुत ठंडा, इसलिए मैं तुझे अपने मुंह से थूक दूंगा।' सुना यह? कौन ठीक है?.."

इस पर ज़ोर का ठहाका पड़ा और इसके बाद किसी ने चिंचियाती हुई आवाज़ में कहा :

"मैंने उसके मुंह पर एक दिया! उसके मखमल जैसे मुंह पर एक दिया, फिर उसके कान पर! फिर उसकी बत्तीसी पर! धड़! धड़! धड़!"

एक और ठहाका पड़ा।

"वह ज़मीन चाटने लगी!" वह चिंचियाती हुई आवाज़ कहती रही। "तो मैंने उसके छोटे-से थोबड़े पर एक और जड़ दिया! लो! सबसे पहले मैंने ही चूमा था, मैंने ही उसकी मरम्मत की..."

"ऐसी हठधर्मी अच्छी नहीं," किसी ने डंक मारते हुए कहा।

"अरे नहीं, अब मेरा ग़ुस्सा भड़क उठा है!"

"'मैं प्यार करता हूं, मैं दोष लगाता हूं और दंड देता हूं...' यह भूल गये तुम?.. और फिर, 'किसी के बारे में फ़ैसला न दो, कि कहीं तुम्हारे बारे में भी फ़ैसला न दे दिया जाये...' बादशाह डेविड ने क्या कहा था – वह भी भूल गये तुम?"

इल्या इस बहस को, गीत को और हंसी को सुन रहा था, लेकिन वे सब उसकी पहुंच के बाहर रहे और इनसे उसके मन में कोई विचार नहीं उठ रहे थे। थानेदार के सहायक का दुबला-पतला, चोंच की तरह मुड़ी हुई नाकवाला चेहरा उसके सामने कमरे के अंधेरे में तैर रहा था, उस चेहरे पर क्रूर आंखें चमक रही थीं और लाल मूंछें हिल रही थीं। उस चेहरे को देखते समय इल्या ने अपने दांत और कसकर भींच लिये। लेकिन दीवार के उस पार से आती हुई गीत की आवाज़ और तेज़ होती गयी, गानेवालों का जोश बढ़ता जा रहा था, उनकी आवाज़ें ऊंची होती जा रही थीं और खुलती जा रही थीं और गीत की दर्द-भरी धुन इल्या के दिल में घर करती जा रही थी और उसके क्रोध और झुंझलाहट की बर्फ़ को छू रही थी।

सारे देश में घूमा मैं...
इस कोने से उस कोने तक...

दोनों आवाज़ें एक-दूसरे में घुल-मिलकर अपना दुखड़ा रोने लगीं :

साइबेरिया के निर्जन उन विस्तारों में
घर जाने की खोज-खोज राह मैं हारा...

इन उदास शब्दों को सुनते हुए इल्या ने एक लंबी आह भरी। शराबखाने के शोर में वे शब्द उसी तरह झिलमिला रहे थे जैसे बादलों में सितारे टिमटिमाते हैं, आसमान पर तेज़ी से भागते हुए बादलों में वे कभी चमक उठते हैं और कभी छिप जाते हैं...

भूख से अपनी जीभ चबायी मैंने, जब
कुतर रही थी सर्दी मेरी हड्डी-हड्डी को...

इल्या ने मन ही मन सोचा कि अब ये लोग गा रहे हैं, बहुत अच्छा गा रहे हैं – इतना अच्छा कि गीत उसकी आत्मा पर छा गया था।

लेकिन एक ही मिनट में उन्हें नशा चढ़ जायेगा और वे शायद लड़ना शुरू कर दें... आदमी में जो कुछ अच्छा होता है वह ज़्यादा देर तक नहीं रह सकता...

केसा मैं मनहूस अभागा!

ऊंची आवाज़वाले ने रुदन किया।

क़िस्मत – जैसे पांव की बेड़ी...

भारी आवाज़ ने गाया।

अतीत के चित्रों में से इल्या की स्मरण-शक्ति ने दादा येरेमेई की आकृति खोज निकाली। बूढ़े ने बड़े उदास भाव से सिर हिलाते हुए और अपने गालों पर आंसू बहाते हुए कहा था:

"कितने बरस मैंने इस दुनिया में बिताये हैं और कितना अन्याय मैंने देखा है!"

इल्या सोचने लगा कि दादा येरेमेई को भगवान से प्यार था, और उसने चुपके-चुपके पैसा बचाया था। उसका चाचा तेरेंती भगवान से डरता था, फिर भी उसने यह पैसा चुरा लिया था। हर आदमी के हमेशा दो पहलू होते हैं। ऐसा लगता है कि उसके सीने में कोई तराज़ू लगा होता है, और उसका दिल तराज़ू के कांटे की तरह कभी बायीं तो कभी दाहिनी ओर झुकता है, और इस तरह भले और बुरे को तोलता रहता है।

"अहा!" शराबख़ाने में कोई गरजा। इसके बाद कोई चीज़ ऐसे ज़ोर के धमाके के साथ फ़र्श पर गिरी कि इल्या के नीचे चारपाई तक कांप उठी।

"रोको! हे भगवान..."

"पकड़ो..."

"बचाओ!"

फ़ौरन शोर बढ़ गया। हर तरफ़ कुहराम मचा हुआ था; वातावरण में नयी आवाज़ों के बगूले उठ रहे थे, वे गूंज रही थीं और बिफरे हुए भूखे कुत्तों के झुंड की तरह एक-दूसरे को फाड़े खा रही थीं।

इल्या संतोष से सुनता रहा; वह इसी की उम्मीद कर रहा था और इससे मानव स्वभाव के बारे में उसकी राय की पुष्टि हो गयी थी। दोनों हाथ सिर के नीचे रखकर वह अपने विचारों की धारा में बहता रहा:

"...अंतीपा ने बहुत बड़ा पाप किया होगा अगर उसका प्रायश्चित करने के लिए उसे आठ साल तक मौन रखना पड़ा और प्रार्थना करनी पड़ी... फिर भी लोगों ने उसे माफ़ कर दिया और वे उसकी चर्चा बड़ी श्रद्धा से करते थे – उसे संत तक कहते थे... लेकिन उन्होंने उसकी संतान को नष्ट कर दिया। एक को उन्होंने साइबेरिया भेज दिया और दूसरे को गांव से निकाल दिया...

"हमें एक ख़ास क़िस्म की कसौटी चाहिये!" यही कहा था व्यापारी स्त्रोगानी ने। "अगर एक ईमानदार है और नौ बदमाश हैं, तो उससे किसी का कोई भला नहीं होने का और जो ईमानदार है उसका अंजाम बुरा होगा... जो गिनती में ज़्यादा होते हैं वही ठीक होते हैं..."

इल्या धीरे से हंसा। उसके दिल में लोगों के प्रति नफ़रत की भावना एक ठंडे सांप की तरह लहरा रही थी। उसकी स्मृति में जानी-पहचानी आकृतियां उभर रही थीं। मिसाल के लिए, भारी-भरकम बेडौल मुटल्ली आंगन में कीचड़ में लोट रही थी।

"मां, मेरी प्यारी मां!" उसने कराहते हुए ज़ोर से कहा। "तुम मुझे इस वक़्त आकर देखतीं!"

पेर्फ़ीश्का खड़ा नशे में डूबा हुआ उसे एकटक देख रहा था।

"धुत्त है!" उसने उसे डांटते हुए कहा। "सुअर कहीं की..."

और तनदुरुस्त, लाल चेहरेवाला पेत्रूख़ा ओसारे से उन्हें देख रहा था; उसके होंटों पर तिरस्कार-भरी मुस्कराहट थी।

शराबख़ाने में हंगामा ठंडा पड़ गया था। तीन आवाज़ों ने – दो औरतों की और एक मर्द की – एक गीत छेड़ दिया था, लेकिन जल्दी ही वह ख़त्म हो गया। कोई अकार्डियन ले आया, उसे थोड़ी देर और बहुत बुरी तरह बजाया, और फिर बजाना बंद कर दिया।

अचानक पेर्फ़ीश्का की आवाज़ बाक़ी सब आवाज़ों पर छा गयी:

"प्याला भर दो, भर दो प्याला, मालिक हो तुम, कौन है हाथ पकड़नेवाला, मुंह तक भर दो इसमें हाला!" वह लहक-लहककर तुकबंदी करने लगा। "हम पीकर धूम मचायेंगे, प्यार करेंगे, नैन लड़ायेंगे, छेड़ेंगे और छेड़के भागेंगे, बाहर जाकर भीख सड़क पर मांगेंगे। मांगके रस्सी लायेंगे, फंदा एक बनायेंगे! अगर किसी ने फंदा काटा, उसका

अपना होगा घाटा ; आंतें काट छिनालों की, दर्जन भर हम लायेंगे, फंदा नया बनायेंगे ..."

इस पर ज़ोर का ठहाका पड़ा और चारों ओर से वाह-वाह होने लगी ...

इल्या उठकर बाहर चला गया और ओसारे में जाकर खड़ा हो गया। उसका जी चाह रहा था कि कहीं चला जाये लेकिन उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि जाये कहां। बहुत देर हो गयी थी ; माशा सो रही थी और याकोव सिर में दर्द होने की वजह से बिस्तर पर लेटा था। याकोव से मिलने जाने से इल्या कतराता भी था क्योंकि उसे देखते ही पेत्रूखा की त्योरियां चढ़ जाती थीं। पतझड़ की ठंडी हवा चल रही थी। अंधेरा इतना घना था कि आसमान बिल्कुल दिखायी नहीं देता था। अहाते में सभी मकान अंधेरे के काले-काले धब्बों जैसे दिखायी दे रहे थे जिन्हें हवा ने जमा दिया था। सीली हुई हवा में कोई चीज़ ज़ोर से टकरायी और चाबुक फटकारने जैसी आवाज़ हुई और एक विचित्र-सी मंद-मंद मरमर ध्वनि भर गयी, लोगों की शिकायतों जैसी दबी-दबी आवाज़ की तरह। हवा के झोंके इल्या के सीने पर लग रहे थे, उसके चेहरे पर थपेड़े मार रहे थे, और उसके कालर में घुसकर फूंक मार रहे थे ... इल्या सिहर उठा और उसने मन ही मन कहा कि वह अब और ज़्यादा दिन तक इस तरह अपनी ज़िंदगी नहीं बिताता रह सकता। उसे इस गंदगी और गड़बड़ी से दूर चला जाना चाहिये और अकेले रहना चाहिये – बिल्कुल अकेले एक साफ़-सुथरी और शांत ज़िंदगी बितानी चाहिये ...

"कौन है ?" किसी की भर्रायी हुई आवाज़ आयी।

"कौन जानना चाहता है ?"

"मैं हूं ... मुटल्ली ..."

"कहां हो तुम ?"

"यहां लकड़ी के ढेर पर बैठी हूं ..."

"किसलिए ?"

"कुछ नहीं, यों ही ..."

थोड़ी देर ख़ामोशी रही ...

"आज के दिन मेरी मां मरी थी," अंधेरे में से आवाज़ आयी।

"उसे मरे बहुत दिन हो गये ?" इल्या ने बस कुछ कहने की ख़ातिर पूछा।

"बहुत दिन हो गये ... लगभग पंद्रह बरस ... शायद ज़्यादा ही हो गये हों ... तुम्हारी मां ज़िंदा है ?"

"नहीं, वह भी मर गयी ... तुम्हारी उम्र कितनी है ?"

मुटल्ली ने फ़ौरन जवाब नहीं दिया।

"लगभग यही कोई तीस साल ...", उसने सीटी जैसी आवाज़ निकालते हुए कहा। "मेरी टांग में कुछ हो गया है। तरबूज़ की तरह फूल गयी है और बहुत दुखती है। मैंने उसकी मालिश की। हर तरह की चीज़ों से मालिश की लेकिन कोई फ़ायदा नहीं होता।"

किसी ने शराबख़ाने का दरवाज़ा खोला। ऊंची आवाज़ों का एक झुंड तेज़ी से बाहर निकला ; हवा ने उन्हें झपट लिया और अंधेरे में बिखेर दिया।

"तुम यहां किसलिए खड़े हो ?" मुटल्ली ने पूछा।

"बस, यों ही ... उदासी के मारे ..."

"मेरी तरह ... मेरा कमरा तो ताबूत जैसा है।"

इल्या ने उसे एक लंबी सांस लेते हुए सुना।

"मेरे साथ ऊपर आओ," वह बोली।

इल्या ने उस तरफ़ नज़र डाली जिधर से आवाज़ आ रही थी।

"अच्छी बात है," उसने अनमनेपन से कहा।

मुटल्ली उसके आगे-आगे सीढ़ियां चढ़ने लगी। पहले वह अपना दाहिना पांव ज़ीने पर रखती, फिर कराहते हुए धीरे-धीरे बायां पांव उठाती। उतने ही धीरे-धीरे उसके पीछे-पीछे चलते समय इल्या का दिमाग़ ख़ाली था, मानो उदासी के बोझ ने उसकी रफ़्तार धीमी कर दी हो, जिस तरह दर्द की वजह से मुटल्ली की रफ़्तार धीमी हो गयी थी।

मुटल्ली का कमरा लंबा और पतला था और उसकी छत सचमुच ताबूत के ढक्कन जैसी लगती थी। दीवार में दरवाज़े के पास एक बड़ा-सा चूल्हा बना हुआ था, दीवार के किनारे एक चौड़ा-सा पलंग बिछा था जिसका सिरहाना चूल्हे की ओर था ; पलंग के सामने एक मेज़ थी जिसके दोनों ओर एक-एक कुर्सी पड़ी थी। खिड़की के पास, जो सुरमई दीवार में एक काले चौखटे की तरह थी, एक और कुर्सी रखी थी।

शराबखाने का शोर और हवा की रोने जैसी आवाज़ यहां ज्यादा साफ़ सुनायी देती थी। इल्या खिड़की के पासवाली कुर्सी पर बैठ गया और उसने अपने चारों ओर नज़र डाली।

"वह किसकी प्रतिमा है?" एक कोने में लटकी हुई छोटी-सी प्रतिमा पर नज़र पड़ने पर उसने पूछा।

"संत आन्ना की," मुटल्ली ने श्रद्धा से धीमी आवाज़ में जवाब दिया।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम भी आन्ना है... तुम्हें मालूम नहीं था?"

"नहीं।"

"किसी को भी नहीं मालूम," और यह कहकर वह धम से पलंग पर बैठ गयी। इल्या उसे देखता रहा; उसे बात करने की कोई इच्छा नहीं हो रही थी। वह भी चुप थी। और इस तरह बहुत देर तक, लगभग तीन मिनट तक, वे कुछ भी बोले बिना बैठे रहे, जैसे दोनों को दूसरे की मौजूदगी का पता ही न हो।

"तो अब क्या करना है?" आखिरकार उस औरत ने पूछा।

"मालूम नहीं...", इल्या बोला।

"अरे, यह भी नहीं मालूम?" उस औरत ने शंकित स्वर में हंसकर कहा। "मुझे कुछ खिलाने-पिलाने के बारे में क्या ख़्याल है। एक-दो बोतल बियर ख़रीद लाओ – या, रहने दो, जाकर मेरे लिए कुछ खाने को ख़रीद लाओ! खाने के अलावा और कुछ न ख़रीदना!.."

उसकी आवाज उखड़ गयी और वह खांसने लगी।

"देखो...", उसने बहुत सकुचाते हुए कहा, "जब से मेरी टांग में यह तकलीफ़ हुई है तब से मेरी कोई कमाई नहीं हुई। बाहर निकल ही नहीं पायी... घर में जो कुछ था वह मैंने खा-पीकर ख़त्म कर दिया... पांच दिन से यहां टापे में बंद हूं। कल मैंने लगभग कुछ नहीं खाया, और आज – आज तो कुछ भी नहीं खाया... भगवान की क़सम खाकर कहती हूं।"

और अब इल्या को पहली बार याद आया कि मुटल्ली रंडी थी। वह उसके बड़े-से चेहरे को घूरने लगा और उसने देखा कि उसकी काली आखों में हल्की-सी मुस्कराहट थी और उसके होंट इस तरह हिल

रहे थे जैसे वह कोई चीज़ चूस रही हो... अचानक उसके सामने इल्या कुछ सकुचाने लगा, फिर भी उसे उसके प्रति एक अस्पष्ट-सी रुचि पैदा हुई।

"मैं कुछ लिये आता हूं..."

वह झट से उठ खड़ा हुआ और तेज़ी से सीढ़ियां उतरता हुआ शराबखाने में जाकर बावर्चीख़ाने के दरवाज़े पर खड़ा हो गया। अचानक उसके दिल में अटारी में वापस जाने की कोई इच्छा बाक़ी नहीं रह गयी। लेकिन यह भावना क्षणिक थी जो उसकी आत्मा के उदास अंधेरे में चिंगारी की तरह चमककर फ़ौरन बुझ गयी। वह बावर्चीख़ाने में घुसा और उसने दस कोपेक का बचा-खुचा गोश्त, रोटी और खाने की कुछ दूसरी चीज़ें ख़रीदीं। बावर्ची ने सारी चीज़ें चिकनाई से मैली एक छलनी में रख दी जिसे इल्या ने अपने दोनों हाथों में इस तरह पकड़ लिया जैसे वह कोई तश्तरी हो। दरवाज़े से बाहर निकलकर वह एक बार फिर रुका और सोचने लगा कि बियर कैसे ले। वह ख़ुद काउंटर पर जाकर ख़रीद नहीं सकता था क्योंकि तेरेंती उससे ज़रूर ढेरों सवाल करता। इसलिए उसने बर्तन मांजनेवाले को बुलाया और उससे बियर ख़रीद लाने को कहा। वह आदमी भागकर शराबख़ाने में गया और वापस आकर उसने एक भी शब्द कहे बिना बोतलें उसकी बग़लों में घुसेड़ दीं और बावर्चीख़ाने में वापस जाने लगा।

"सुनो!" इल्या ने कहा, "यह मेरे लिए नहीं है... मेरे यहां एक दोस्त आया है..."

"क्या कहा?" बर्तन मांजनेवाले ने पूछा।

"एक आदमी मुझसे मिलने आया है..."

"अच्छा... तो क्या हुआ?"

इल्या ने महसूस किया कि झूठ बोलने की ज़रूरत नहीं थी, और इस बात से उसे अपने ऊपर झुंझलाहट-सी होने लगी। वह बिना कोई जल्दी किये ध्यान से सुनता हुआ सीढ़ियां चढ़ने लगा, जैसे वह उम्मीद कर रहा हो कि कोई उसे रोकेगा। लेकिन उसे हवा की हुंकार के अलावा कुछ भी सुनायी नहीं दिया; किसी ने उसे नहीं रोका, और वह औरत के पास वापस पहुंच गया; उसके मन में डरी-डरी वासना भरी हुई थी, जो फिर भी स्पष्ट रूप से अपने अस्तित्व को मनवाने का आग्रह कर रही थी।

मुटल्ली ने छलनी अपनी गोद में रख ली और खाने के सुरमई टुकड़े मोटी-मोटी उंगलियों से निकालकर अपने खुले हुए चौड़े मुंह में ठूंसने लगी और चप-चप की आवाज़ करके उन्हें चबाने लगी। उसके दांत बड़े-बड़े और पैने थे और हर कौर को उनके बीच ढकेलने से पहले वह उसे चारों ओर से उलट-पलटकर देखती थी मानो यह पता लगा रही हो कि उसका कौन-सा हिस्सा सबसे रसीला है जिसे चबाया जाये।

इल्या नज़रें जमाये उसे घूर रहा था और सोच रहा था कि वह किस तरह उसका आलिंगन करेगा। इस डर की वजह से कि वह ऐसा कर नहीं पायेगा और वह उस पर हंसेगी, वह बारी-बारी से कभी गरम हो जाता और कभी ठंडा पड़ जाता।

खिड़की से आती हुई तेज़ हवा कमरे के दरवाज़े पर सिर पटक रही थी, और हर बार जब दरवाज़ा हिलता था तो इल्या चौंक पड़ता था, वह सहम जाता था कि कहीं कोई अंदर आकर उसे वहां पकड़ न ले...

"दरवाज़ा बंद न कर दूं?" वह बोला।

मुटल्ली ने सहमति प्रकट करते हुए सिर हिलाया। फिर उसने छलनी चारपाई पर रख दी और उंगलियों से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया।

"भगवान की कृपा है – मेरा पेट भर गया। आदमी को खुश रहने के लिए चाहिये ही कितना!"

इल्या कुछ नहीं बोला। मुटल्ली ने उस पर एक नज़र डालकर आह भरी और फिर इतना और जोड़ दिया:

"जिसे ज़्यादा दिया जायेगा, उससे ज़्यादा मांगा भी जायेगा!" वह बोली।

"कौन मांगेगा?"

"भगवान..."

इल्या फिर कुछ नहीं बोला। इस औरत के मुंह से भगवान का नाम सुनकर उसके मन में एक बहुत प्रबल भावना उठ रही थी जिसे शब्दों में व्यक्त करना असंभव था पर जो उसको अपनी बांहों में समेट लेने की उसकी इच्छा से टकरा रही थी। मुटल्ली बिस्तर पर हाथ टेककर पलंग पर चढ़ गयी और उसने अपने स्थूल शरीर को दीवार के सहारे टिका दिया।

"जितनी देर मैं खा रही थी, मैं बराबर पेर्फ़ीश्का की बेटी के बारे में सोच रही थी...", उसने खोखले निरीह स्वर में कहना शुरू किया। "बहुत देर उसके बारे में सोचती रही... तुम लोगों के साथ रहती है वह – तुम्हारे और याकोव के साथ – और मैं समझती हूं कि इससे कोई अच्छा नतीजा नहीं निकलनेवाला है... तुम लोग उस लड़की को ख़राब कर दोगे, और उसे भी उसी रास्ते चलना पड़ेगा, जो मैंने पकड़ा है... बहुत ही गंदा और मनहूस रास्ता है यह... लड़कियां और औरतें इस रास्ते पर चलती नहीं हैं – अपने पेट के बल इस पर रेंगती हैं..."

वह कुछ देर चुप रही और फिर गोद में रखे हुए अपने हाथों को एकटक देखते हुए उसने कहना जारी रखा:

"कुछ ही दिन में वह जवान हो जायेगी। मैंने एक जान-पहचान के बावर्ची से और कुछ दूसरी औरतों से पूछा था कि उसकी जैसी लड़की के लिए कहीं कोई नौकरी तो नहीं है? कोई नौकरी नहीं है, वे कहते हैं... कहते हैं उसे बेच दो... उसके लिए सबसे अच्छा यही होगा – उसे कपड़े और पैसा मिलेगा... और रहने को घर मिलेगा... ऐसा होता है, मैं जानती हूं, ऐसा होता है... कभी-कभी जब कोई बूढ़ा आदमी कमज़ोर और बेकार हो जाता है और किसी औरत के काम का नहीं रह जाता, तो वह खूसट बूढ़ा घोंघा जाकर अपने लिए कोई लड़की ख़रीद लाता है... शायद उसके लिए यही ज़्यादा अच्छा हो... लेकिन शुरू-शुरू में बहुत घिनौना लगेगा ...अच्छा तो यही होगा कि इसके बिना ही काम चल जाये... कहीं अच्छा होगा कि वह भूखी रहे, पर साफ़, बजाय इसके कि..."

वह इस तरह खांसने लगी जैसे कोई शब्द उसके गले में अटक गया हो। लेकिन जल्दी ही उसने फिर उसी निरीह स्वर में अपना वाक्य पूरा किया:

"...बजाय इसके कि वह भूखी भी रहे और... गंदी भी रहे..."

हवा अटारी में से होकर तेज़ी से चलती रही और दरवाज़े को बड़ी ढिठाई से थपथपाती रही।

उस औरत के सपाट स्वर और उसके भारी और निश्चल शरीर की वजह से लड़के की भावनाओं पर ओस-सी पड़ती जा रही थी और

अपनी वासना को संतुष्ट करने के लिए आवश्यक साहस से वह वंचित होता जा रहा था। ऐसा लग रहा था कि मुटल्ली उसे लगातार अपने से दूर ढकेलती जा रही है, और इस बात से उसे झुंझलाहट हो रही थी।

"हे भगवान, भगवान!" मुटल्ली ने धीरे से आह भरकर कहा। "हे पवित्र देवी-मां मरियम!.."

इल्या झल्लाकर अपनी कुर्सी पर कसमसाया।

"खुद कहती हो कि तुम गंदी हो, और फिर भी भगवान की दुहाई देती रहती हो!" उसने कठोर स्वर में कहा। "क्या तुम समझती हो कि भगवान को उसकी ज़रूरत है?"

मुटल्ली ने कुछ कहे बिना उसकी ओर देखा।

"तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आती..." आखिरकार उसने सिर हिलाकर कहा।

"काफ़ी आसानी से समझ में आ जानेवाली बात है मेरी!" इल्या ने उठते हुए कहा। "तुम रंडी हो, पहले पाप करती हो फिर भगवान को याद करती हो। अगर भगवान पर विश्वास करती हो तो रंडी का धंधा छोड़ दो..."

"अरे, अरे!" औरत बेचैन होकर चिल्लायी। "क्या कह रहे हो तुम? हम पापी नहीं देंगे तो फिर कौन दुहाई देगा भगवान की?"

"यह तो मैं नहीं जानता कौन देगा!" इल्या ने बुदबुदाकर कहा, उसका हृदय इस औरत का और पूरी मानवजाति का अपमान करने की अदम्य इच्छा से भर उठा था। "लेकिन इतना मैं जानता हूं कि उसका नाम लेने का अधिकार तुम लोगों को नहीं है! हां, तुम्हें नहीं है! तुम तो बस एक-दूसरे की आंख में धूल झोंकने के लिए उसके नाम की आड़ लेती हो। अब मैं बच्चा नहीं रहा... मैं खुद हर बात को समझता हूं। हर आदमी रोता है और शिकायत करता है, लेकिन सभी अपना गंदा धंधा चलाते रहते हैं। वे एक-दूसरे को बेवक़ूफ़ क्यों बनाते है! एक-दूसरे को लूटते क्यों हैं? वे पहले पाप करते हैं, फिर भगवान के सामने घुटने टेककर दया की भीख मांगने लगते हैं। मैं सब समझता हूं... मक्कार, ढोंगी हो तुम लोग... तुम अपने आपको भी धोखा देते हो और भगवान को भी..."

मुटल्ली चुपचाप मुंह खोले, अपना सिर आगे की ओर बढ़ाये और अपनी आंखों में आश्चर्य भरे उसे देखती रही। इल्या दरवाज़े के पास गया, झटके से कुंडा खोला, और बाहर निकलकर धड़ से दरवाजा बंद कर दिया। वह जानता था कि उसने मुटल्ली का दिल बहुत दुखाया था, और उसे इस बात की ख़ुशी थी; उसका जी हल्का हो गया था और उसका दिमाग़ कुछ सुलझा हुआ था। धीरे-धीरे सीढ़ियां उतरते हुए वह किसी धुन पर सीटी बजा रहा था, और उसके दिल में भरा हुआ ज़हर उसे तरह-तरह के फ़ौलाद जैसे कठोर और कष्टदायक शब्द कहने पर मजबूर कर रहा था। उसे लग रहा था कि उन शब्दों की आंच में ऐसी चमक थी जो उसके हृदय में अंधकार को आलोकित कर रही थी, और उसे एक ऐसा मार्ग दिखा रही थी जो उसे लोगों से दूर ले जाता था। इन शब्दों से वह मुटल्ली को ही नहीं बल्कि चाचा तेरेंती और पेत्रूखा और व्यापारी स्त्रोगानी और सभी दूसरे लोगों को संबोधित कर रहा था।

बाहर आंगन में निकलते हुए उसने अपने आपसे कहा: "मुझे कोई परवाह नहीं है। अगर मैं तुम्हारी भावनाओं को ठेस पहुंचाता भी हूं तो क्या हुआ? कचरा ही तो हो तुम – तुम सब के सब!"

इसके शीघ्र ही बाद वह औरतों के पास जाने लगा। उसका पहला अनुभव इस प्रकार हुआ: एक दिन शाम को जब वह घर लौट रहा था तो एक औरत ने उससे कहा:

"चलते हो, राजा?"

उसने उसकी ओर देखा और एक शब्द भी कहे बिना साथ हो लिया। लेकिन जाते-जाते वह सिर झुकाये चारों ओर देखता जा रहा था; वह डर रहा था कि उसकी जान-पहचान का कोई आदमी उसे कहीं देख न ले।

"एक रूबल की चोट होगी," कुछ दूर चलने के बाद उस औरत ने चेतावनी दी।

"कोई बात नहीं," इल्या बोला। "जल्दी करो..."

और चुपचाप चलते हुए वे उस औरत के दरवाज़े तक पहुंच गये थे। बस इतना ही हुआ था...

इस नये शौक़ में उसका बहुत पैसा ख़र्च होने लगा; वह यही

सोचता रहता था कि उसका फेरी लगाकर चीज़ें बेचना वक़्त की ख़राबी थी और उससे उसे कभी इज़्ज़त की साफ़-सुथरी ज़िंदगी बसर करने का मौक़ा नहीं मिल पायेगा। एक बार तो उसे यह लालच भी हुआ कि दूसरे फेरीवालों की तरह वह भी अपना माल लॉटरी से बेचकर गाहकों को बेवक़ूफ़ बनाये। लेकिन उसने फ़ैसला किया कि यह घटिया और झंझट में फंसानेवाला धंधा है। उसे पुलिस से छिपना पड़ेगा, या उनके तलुवे सहलाना पड़ेगा और घूस देनी पड़ेगी। इसे वह अपने लिए बहुत गिरी हुई बात समझता था। वह लोगों से आंख मिलाकर रहने का आदी था, और उसे यह जानकर ख़ुशी होती थी कि वह दूसरे फेरीवालों से बेहतर कपड़े पहनता था और शराब नहीं पीता था और किसी को धोखा नहीं देता था। वह सड़क पर धीरे-धीरे बड़ी गरिमा के साथ चलता था; गालों की उभरी हुई हड्डियोंवाले उसके दुबले-पतले चेहरे की मुद्रा कठोर और गंभीर रहती थी; वह शब्दों को तोल-तोलकर बहुत कम बोलता था और उसकी आदत थी कि किसी से बातें करते वक़्त वह अपनी काली आंखें सिकोड़ लेता था। वह अकसर सोचा करता था कि अगर कोई बहुत बड़ी रक़म उसके हाथ लग जाती तो कितना अच्छा होता – यही कोई हज़ार रूबल या उससे भी ज़्यादा। डकैती की चर्चाओं में वह बहुत दिलचस्पी लेता था; वह अख़बार ख़रीदकर हर नयी डकैती का पूरा ब्यौरा पढ़ जाता था, फिर उस वारदात की अगली ख़बरों पर नज़र रखता था कि चोर पकड़े गये कि नहीं। अगर वे पकड़े जाते थे तो उसे ग़ुस्सा आता था और वह उन्हें धिक्कारता था।

"पकड़वा दिया न अपने आपको, काठ के उल्लू कहीं के!" वह याकोव से कहता। "ऐसा काम करने की कोशिश ही क्यों करते हैं जो उनके बस के बाहर हो?"

एक दिन शाम को उसने अपने दोस्त से कहा:

"ईमानदार लोगों के मुक़ाबले चोर ज़्यादा अच्छी तरह रहते हैं।"

याकोव के चेहरे पर तनाव पैदा हो गया, उसकी आंखें सिकुड़ गयीं।

"परसों तुम्हारा चाचा शराबख़ाने में एक बूढ़े के साथ चाय पी रहा था – कोई बहुत ज्ञानी आदमी मालूम होता था," उसने बहुत

धीमी रहस्य-भरी आवाज़ में कहा, जैसी आवाज़ वह कोई भी गूढ़ बात कहते वक़्त अपना लेता था। "वह बूढ़ा कह रहा था कि बाइबिल में लिखा है: 'डाकुओं के डेरों में ख़ुशहाली रहती है, और जो लोग भगवान को चुनौती देते हैं, उन पर कभी कोई आंच नहीं आती, उनके हाथों में भगवान बहुत देता है...'"

"सच कह रहे हो न?" अपने दोस्त की बात बड़े ध्यान से सुनकर इल्या ने पूछा।

"ये शब्द मेरे नहीं हैं," याकोव ने दोनों हाथ फैलाकर मानो हवा में किसी चीज़ को टटोलते हुए कहा। "ये शब्द बाइबिल में लिखे हैं... हो सकता है कि बूढ़े ने ख़ुद गढ़ लिये हों, लेकिन मैंने उससे फिर पूछा था और उसने एक-एक शब्द फिर दोहरा दिया था..."

फिर इल्या की ओर झुककर उसने दबी ज़बान से कहा:

"मेरे बाप को ही ले लो – वह दिन-ब-दिन पनप रहा है! और वह भगवान को चुनौती देता है।"

"सो तो करता है!" इल्या ने चिल्लाकर कहा।

"और अब तो वह नगर परिषद में भी चुन लिया गया है..."

याकोव ने सिर झुकाकर आह भरी और इतना और जोड़ दिया:

"आदमी जो कुछ भी करता है वह उसके अंतःकरण के सामने बिल्कुल साफ़-साफ़ आना चाहिये, बिल्कुल अंडे की तरह गोल और सफ़ेद, लेकिन यहां तो... मैं तो तंग आ चुका हूं इन सब बातों से! मेरी तो समझ में कुछ नहीं आता... मैं इस ज़िंदगी के लिए नहीं बनाया गया था, मुझे शराबख़ाने से नफ़रत है... पर बाप हर वक़्त मेरी जान खाता रहता है। कहता है, 'कारोबार में लग जाओ! बहुत दिन ऊंघ चुके; काम करना शुरू करो अब!' क्या काम करूं? जब तेरेंती नहीं होता तो मैं काउंटर पर खड़े होकर शराब बेचता हूं... मुझे इस काम से नफ़रत है, लेकिन मन मारकर करता हूं... सचमुच कोई भी काम करने को मेरा जी नहीं चाहता..."

"सीखा करो!" इल्या ने गंभीर होकर कहा।

"ज़िंदगी बहुत कठिन है," याकोव ने धीमी आवाज़ में कहा।

"कठिन? तुम्हारे लिए? झूठ बोल रहे हो तुम!" इल्या पलंग से उछलकर खिड़की के पास जाकर, जहां याकोव बैठा था, चिल्लाया।

"मेरे लिए कठिन है, यह तो सच है। लेकिन तुम्हारे लिए? जब तुम्हारा बाप बूढ़ा हो जायेगा तब तुम यहां के मालिक हो जाओगे। लेकिन मैं? मैं दुकानों की खिड़कियों के सामने से गुज़रता हूं – पतलून और वास्कटें... और घड़ियां और तरह-तरह की दूसरी चीज़ें देखता हूं... मैं कभी वैसे पतलून नहीं ख़रीद सकूंगा... मेरे पास कभी वैसी घड़ियां नहीं होंगी, समझे? और मैं चाहता हूं कि वे मेरे पास हों... मैं चाहता हूं कि लोग मेरा आदर करें... मैं किस बात में दूसरों से कम हूं? मैं उनसे बेहतर हूं! पर चोर मेरे सामने डींग मारते हैं, वे नगर परिषद के सदस्य चुन लिये जाते हैं! वे मकानों के और शराब-खानों के मालिक हैं। ऐसा क्यों है कि सब कुछ चोरों के ही नसीब में है, और मेरे नसीब में कुछ भी नहीं है? मैं चाहता हूं कि कुछ मेरे नसीब में भी हो..."

याकोव ने अपने दोस्त को एक नज़र देखा और फिर बहुत धीरे से साफ़-साफ़ कहा:

"भगवान न करे कि तुम्हारे पास हो।"

"क्यों नहीं?" इल्या ने कमरे के बीच में रुककर और उत्तेजित होकर अपने दोस्त को देखते हुए चिल्लाकर पूछा।

"क्योंकि तुम लालची हो। तुम्हें किसी चीज़ से संतोष नहीं होगा।"

इल्या सूखी द्वेषपूर्ण हंसी हंस दिया।

"मुझे किसी चीज़ से संतोष नहीं होगा? अपने बाप से कह दो कि उसने और मेरे चाचा तेरेंती ने दादा येरेमेई का जो पैसा चुराया था उसमें से चाहे तो आधा ही मुझे दे दे, बस मैं संतुष्ट हो जाऊंगा।"

उसी क्षण याकोव उठ खड़ा हुआ और चुपचाप दरवाज़े की ओर चल दिया। इल्या ने देखा कि उसके कंधे हिल रहे थे और उसकी गर्दन इस तरह झुकी हुई थी, मानो उसे कोई आघात पहुंचा हो।

"ठहरो," इल्या ने झिझकते हुए अपने दोस्त की बांह पकड़कर कहा। "जा कहां रहे हो?"

"मुझे छोड़ दो, भाई," याकोव ने दबी आवाज़ से कहा, लेकिन रुककर इल्या की तरफ़ देखा। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था, उसके होंट भिंचे हुए थे, और उसका पूरा शरीर ढीला पड़ गया था मानो उसे कुचला गया हो...

"रुको, जाओ नहीं!" इल्या ने बड़ी नरमी से उसे दरवाज़े के पास से खींचकर लाते हुए खिन्न होकर कहा। "नाराज़ न हो। बहरहाल, बात तो सच है ही..."

"मैं जानता हूं," याकोव बोला।

"जानते हो? किसने बताया तुम्हें?"

"सभी लोग चर्चा करते हैं इसकी..."

"हुंह... ख़ैर, जो लोग चर्चा करते हैं वे कोई बेहतर नहीं हैं!"

याकोव ने उसे बड़े विनीत भाव से देखा और गहरी सांस ली।

"मुझे यक़ीन नहीं होता था। मैं सोचता था कि लोग बस जलन के मारे कहते हैं। लेकिन फिर मुझे यक़ीन होने लगा। और अगर तुम भी ऐसा ही कहते हो..."

उसने घोर निराशा से अपना हाथ थोड़ा-सा हवा में घुमाया और अपने दोस्त की ओर से मुंह मोड़कर एक कुर्सी पर निश्चल बैठ गया; उसकी ठोड़ी सीने की ओर झुकी हुई थी और उसकी उंगलियों ने कुर्सी को जकड़ रखा था। इल्या भी याकोव से दूर जाकर उसकी ही जैसी मुद्रा में पलंग पर बैठ गया, उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि अपने दोस्त को तसल्ली देने के लिए क्या कहे।

"तो तुम समझते हो कि मेरी ज़िंदगी अच्छी है?" याकोव ने धीरे से कहा।

"भाई," इल्या ने उतने ही धीरे से कहा। "मैं समझता हूं, वह अच्छी तो नहीं है। बस यही तसल्ली है: जिधर देखो वही हाल है..."

"क्या तुम्हें वह बात पक्के तौर पर मालूम है?" याकोव ने अपनी नज़रें उठाये बिना भीरुता के साथ कहा।

"हां। याद है उस दिन जब में भागकर गया था? मैंने दरवाज़े की एक दरार में से झांककर देखा था कि वे लोग तकिये को सी रहे थे। उस वक़्त तक उसकी सांस चल रही थी..."

याकोव अपने कंधे बिचकाकर उठा और दरवाज़े की ओर चल दिया।

"अच्छा, मैं चलता हूं," वह बोला।

"अच्छी बात है। इतने दुःखी न हो... क्या किया जाये?"

"ठीक है," याकोव ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा।

इल्या उसे जाता हुआ देखता रहा और फिर पलंग पर गिर पड़ा। उसे याकोव का बड़ा दुःख था, और एक बार फिर उसे अपने चाचा से, पेत्रूखा से और आम तौर पर सभी लोगों से बेहद झुंझलाहट हो रही थी। याकोव जैसा आदमी उन जैसे लोगों के बीच नहीं रह सकता था। वह अच्छा था। वह निष्कलंक था और नेक था। इल्या लोगों के बारे में सोच रहा था और उसकी स्मरण-शक्ति ने उसे कितने ही ऐसे उदाहरण दिये जिनसे यह साबित होता था कि वे लोग कितने बेरहम, कितने झूठे और कितने द्वेष से भरे हुए थे। उसे इस तरह के इतने उदाहरण याद थे कि वह बड़ी आसानी से पूरी मानवजाति को अपनी स्मृतियों के कीचड़ से नहला सकता था। उनकी आकृतियां जितनी ही अधिक गंदगी में लिथड़ी हुई होती थीं, उतनी ही अधिक उनसे पैदा होनेवाली भावनाएं दम घोटनेवाली होती थीं; ये भावनाएं विषाद का, द्वेषयुक्त आनंद का और इस आभास से उत्पन्न होनेवाले भय का मिश्रण थीं कि उसके चारों ओर उन्मत्त होकर चक्कर काटनेवाले अंधकारमय और दुःखद जीवन के बीच वह बिल्कुल अकेला था।

जब उसके लिए वहां उस छोटी-सी कोठरी में दीवार को पार करके शराबख़ाने से आती हुई धुंधली और बदबूदार आवाज़ों के बीच अकेले पड़े रहना असह्य हो गया तो वह उठकर बाहर चला गया। रात बड़ी देर तक वह शहर की सड़कों पर टहलता रहा, लेकिन वह व्यथित करनेवाले अपने सरल-से विचारों से छुटकारा न पा सका। अंधेरे में वह चलता रहा और सोचता रहा कि जैसे कोई शत्रु उस पर नज़र रख रहा था और उस को बदतरीन, सबसे मनहूस जगहों की ओर ढकेल रहा था, जहां उसे ऐसी चीज़ों के अलावा कुछ दिखायी नहीं देता था जो उसकी आत्मा में विषाद और उसके हृदय में विष भर देती थीं। यक़ीनन इस दुनिया में कुछ तो अच्छा होगा: अच्छे लोग, अच्छे काम, और जीवन का कोई उल्लासमय ढर्रा। वह कभी उनके संपर्क में क्यों नहीं आया? जो बुरा था और खीझ पैदा करनेवाला था उसके अलावा और कुछ उसने कभी क्यों नहीं जाना? वह कौन था जो उसे हमेशा अंधेरे की ओर, गंदगी की ओर और बुराई की ओर ले जाता रहता था?

ऐसे ही विचारों में जकड़ा हुआ वह शहर के बाहर खेतों में एक

मठ की पत्थर की दीवार के किनारे-किनारे चला जा रहा था और अपने सामने देख रहा था। उसने ऊपर नज़रें उठाकर देखा तो दूर अंधेरे में से काले-काले बादल उसकी ओर उमड़ते चले आ रहे थे। सिर पर छाये हुए बादलों के बीच-बीच में दरारें थीं, जिनमें से आकाश की नीलिमा झलक रही थी जिस पर नन्हे-नन्हे सितारे टिमटिमा रहे थे। कभी-कभी मठ के गिरजाघर का पीतल का घंटा अपनी सुरीली आवाज़ रात की निस्तब्धता में उंडेल देता था, लेकिन और कुछ भी इस मौत जैसे सन्नाटे को छेड़ने के लिए नहीं था। इल्या अपने पीछे जिस शहर को छोड़ आया था उसकी घनीभूत परछाइयों से भी कोई आवाज़ खेतों तक नहीं पहुंच रही थी, हालांकि अभी बहुत देर नहीं हुई थी। रात ठंडी थी। इल्या मिट्टी के जमे हुए तूदों से ठोकर खाकर बार-बार लड़खड़ा जाता था। उसके विचारों ने उसके मन में भय और अकेलेपन का जो आभास पैदा कर दिया था उसकी वजह से उसके लिए अब और चलते रहना असंभव हो गया था। वह रुककर मठ की चारदीवारी के ठंडे पत्थर के सहारे खड़ा हो गया और बार-बार अपने आपसे पूछने लगा कि वह कौन था जो उसे उसके जीवन को निर्देशित करता था, वह कौन था जो उसे आगे ले जाता था, जो उसे केवल उन्हीं चीज़ों से परिचित कराता था जो दुष्टता से भरी थीं और एक बोझ जैसी थीं।

"क्या वह तुम हो, भगवान?" यह प्रश्न उसकी आत्मा के अंधकार में चकाचौंध कर देनेवाली रोशनी के साथ चमक उठा।

उस विचार से वह सहम गया और उसके सारे शरीर में एक सिहरन दौड़ गयी। आगे चलकर होनेवाली किसी भयानक बात के पूर्वाभास से भरा हुआ वह एक झटके के साथ दीवार से दूर हट आया और जल्दी-जल्दी शहर की ओर वापस चल पड़ा; चलते-चलते वह बार-बार ठोकर खाकर लड़खड़ा जाता था; पीछे मुड़कर देखने से उसे डर लग रहा था; उसके हाथ शरीर से चिपके हुए थे।

कुछ दिन बाद इल्या की मुलाक़ात पावेल ग्राचोव से हो गयी। शाम का वक़्त था। बर्फ़ के नन्हे-नन्हे गाले अलसाये हुए हवा में मंडला रहे थे और सड़क की बत्तियों की रोशनी में जगमगा रहे थे। सर्दी

के बावजूद पावेल ने फ़लालैन की एक क़मीज़-सी पहन रखी थी जिसे कमर पर बांधने के लिए पेटी तक नहीं थी। वह कंधे झुकाये हुए, नज़रें ज़मीन पर जमाये, दोनों हाथ जेबों में डाले धीमी चाल से चला जा रहा था, मानो कुछ ढूंढ रहा हो। जब इल्या ने उसके पास पहुंचकर उसे पुकारा तो उसने सिर ऊपर उठाकर उसके चेहरे की ओर देखा।

"उंह," वह विरक्त भाव से बोला।

"कैसे हो?" इल्या ने उसके साथ-साथ चलते हुए पूछा।

"इससे बुरा भी क्या होता... तुम कैसे हो?"

"चलता है..."

"मैं देखता हूं कि तुम्हारे पास भी डींग मारने को कुछ है नहीं..."

चलते-चलते वे दोनों कुछ देर तक चुप रहे; दोनों की कुहनियां एक-दूसरे को छू रही थीं।

"कभी हम लोगों से मिलने क्यों नहीं आते?" इल्या ने कहा।

"वक़्त नहीं मिलता... हम लोगों को ज़्यादा फ़ुरसत नहीं मिलती। यह तो तुम्हें मालूम ही है।"

"अगर चाहो तो वक़्त निकाल सकते हो..." इल्या ने झिड़कते हुए कहा।

"नाराज़ न हो... तुम यह तो चाहते हो कि मैं आकर तुमसे मिला करूं, लेकिन तुम मुझसे मिलने कभी नहीं आते। मुझसे यह तक नहीं पूछा कि मैं रहता कहां हूं..."

"यह बात तो है," इल्या ने मुस्कराकर कहा।

पावेल ने जल्दी से उस पर एक नज़र डाली और कुछ ज़्यादा चुस्ती से कहा:

"मैं अकेला रहता हूं। कोई भी दोस्त नहीं है। कोई भी आदमी मुझे ऐसा नहीं मिलता जो मुझे पसंद आये। मैं बीमार था – कोई तीन महीने अस्पताल में पड़ा रहा। इस बीच कोई भी तो बंदा मुझे देखने नहीं आया..."

"क्या हो गया था तुम्हें?"

"शराब पिये हुए था, सर्दी लग गयी... टाइफ़ाइड हो गया... सबसे बुरा तो तब लगता था जब मैं अच्छा होने लगता था! दिन-रात अकेले पड़े-पड़े सोचने लगता था कि बहरा, गूंगा और अंधा हो गया हूं।

जैसे कोई दुतकारा हुआ कुत्ते का पिल्ला किसी गड्ढे में डाल दिया गया हो। भला हो डाक्टर का कि मेरे पास पढ़ने को किताबें थीं। उनके बिना तो मैं मर ही गया होता..."

"अच्छी किताबें थीं?"

"बहुत अच्छी! कविता की किताबें–लेर्मोन्तोव, नेक्रासोव, पुश्किन। उन्हें पढ़ना दूध पीने जैसा था। कभी ऐसी कविताएं मिलती हैं जिन्हें पढ़कर लगता है कि जिस लड़की से तुम प्यार करते हो वह तुम्हें चूम रही है। फिर कभी कोई कविता ऐसी मिलती है जो तुम्हारे दिल के पत्थर पर छेनी की तरह करारी चोट करती है, और उससे ऐसी चिंगारी निकलती है कि तुम्हारा सारा अस्तित्व ज्वाला बनकर धधक उठता है..."

"मेरी तो पढ़ने की आदत ही छूट गयी," इल्या ने आह भरकर कहा। "जो पढ़ते हो वह कुछ और होता है, जो देखते हो वह कुछ और होता है..."

"यही अच्छा है... चलो, शराबख़ाने में चलें? कुछ बातें करेंगे... मुझे कहीं जाना है, लेकिन अभी बहुत जल्दी है..."

"आओ, चलें," इल्या ने कहा और पावेल की बांह थाम ली।

पावेल ने एक बार फिर जल्दी से उसकी ओर देखा और मुस्करा दिया। "हमारी दोस्ती कभी बहुत गहरी नहीं थी," वह बोला, "लेकिन तुमसे मिलकर मुझे हमेशा बड़ी ख़ुशी होती है..."

"मालूम नहीं तुम्हें होती है कि नहीं, लेकिन मुझे तो ज़रूर होती है," इल्या ने कहा।

"अरे, भाई, तुम नहीं जानते कि जब तुम मेरे पास आये थे उस वक़्त मैं क्या सोच रहा था!" पावेल ने उसकी बात काटते हुए कहा। "लेकिन उसे भूल जाना ही अच्छा है!" वह चुप हो गया और उसके क़दम ढीले पड़ गये।

रास्ते में जो पहला शराबख़ाना आया उसमें जाकर वे एक कोने में बैठ गये और उन्होंने बियर मंगायी। लैंप की रोशनी में इल्या ने देखा कि पावेल का चेहरा बहुत दुबला-पतला और उतरा हुआ था, उसकी आंखों में बेचैनी थी, और उसके होंट, जो हमेशा व्यंग-भरी मुस्कराहट से खुले रहते थे, अब कसकर भिंचे हुए थे।

"कहां काम करते हो तुम?" इल्या ने पूछा।

"वहां छापेखाने में," पावेल ने उदास भाव से कहा।

"मुश्किल काम है?"

"काम तो मुश्किल नहीं है, लेकिन चिंता मारे डालती है।"

इल्या को यह देखकर कुछ संतोष मिल रहा था कि उसका दोस्त, जो कभी इतना मस्त और फुर्तीला हुआ करता था, अब ऐसा बेजान और निराश हो गया था।, उसे यह जानने की इच्छा थी कि यह परिवर्तन किस चीज़ की वजह से आया होगा। और उसने पावेल का गिलास जोश से भरते हुए पूछा:

"कविता अब भी लिखते हो?"

"अब तो नहीं, पहले बहुत लिखता था। डाक्टर को दिखायी भी थीं। उसने तारीफ़ की थी। मेरी एक कविता अख़बार में छपवायी भी थी।"

"ओ-हो!" इल्या ने प्रसन्न होकर कहा। "किस तरह की कविता? कुछ मुझे भी तो सुनाओ!"

इल्या की जिज्ञासा और बियर के कुछ गिलासों ने पावेल में नयी जान डाल दी। उसकी आंखें चमकने लगीं और उसके पीले गालों पर लाली के दो धब्बे उभर आये।

"किस तरह की?" अपने माथे को ज़ोर से रगड़ते हुए उसने इल्या के शब्दों को दोहराया। "मैं भूल गया हूं – सचमुच भूल गया हूं! ठहरो, शायद कुछ याद आ जाये। वे मेरे दिमाग़ में हमेशा छत्ते में मक्खियों की तरह भनभनाती रहती हैं – भन्न! भन्न! कभी-कभी जब मैं लिखना शुरू करता हूं – तो उत्तेजित भी हो जाता हूं, ऐसा लगता है कि मैं फट जाऊंगा, और मेरी आंखों में आंसू आ जाते हैं। मैं चाहता हूं कि कविता बहुत अच्छी और सुथरी हो लेकिन ... कोई शब्द नहीं सूझते ..." उसने आह भरकर अपना सिर झटके के साथ पीछे की ओर झुका लिया। "मेरे अंदर बहुत कुछ भरा है, लेकिन काग़ज़ पर फैलकर वह कुछ भी नहीं रह जाता ..."

"कुछ सुनाओ तो," इल्या ने आग्रह किया। वह पावेल को जितना ही देखता था उसकी उत्सुकता उतनी ही बढ़ती जाती थी, और उसकी उस उत्सुकता में धीरे-धीरे उदासी मिली सहानुभूति जुड़ती जाती थी।

"बहुत मसख़रेपन की होती हैं जो कविताएं मैं लिखता हूं। सब कुछ बस अपनी ज़िंदगी के बारे में," पावेल ने झेंपी-झेंपी मुस्कराहट के साथ कहा। फिर उसने अपने चारों ओर नज़र दौड़ायी, गला साफ़ किया और अपने दोस्त से नज़रें मिलाने से कतराते हुए दबी ज़बान से कविता सुनाने लगा:

रात है ... उदासी है!
पार निकलकर खिड़की के
धुंधले-धुंधले शीशे से
फीकी-फीकी चांद की किरनें
अपना सारा नूर समेटे
मैले-मैले फ़र्श पे मेरे
कब से आकर लोट रही हैं,
दीवार के रिसते गीले पत्थर पर
उस पर चिपके मैले काग़ज़ के
फटे-पुराने चप्पों पर
सिर अपना फोड़ रही हैं;
कमरे की मायूसी में
खुलनेवाले दरवाज़े के
जर्जर हिलते तख़्तों पर
इक जाल-सा बुनती हैं कब से;
गुमसुम, खोया-खोया-सा
मैं बैठा हूं ख़ामोशी में
जाने नींद नहीं क्यों आती है ...

पावेल ने रुककर सांस ली और फिर पहले से भी ज़्यादा धीमी आवाज़ में और धीरे-धीरे सुनाने लगा:

गला घोंट रखा है ज़िंदगी ने
हर तरफ़ से थपेड़े, लगातार बौछार चोटों की,
कभी टीस उठती है सीने में
कभी पीठ पर पड़ता है घूंसा।
संजोये बैठा था कब से मैं इक आस दिल में
सो वह भी अब चूर हो चुकी है,
मेरे पास अब बचा ही क्या है
वोदका की इस बोतल के सिवा,

चांदनी में जो झिलमिलाती है
जब बढ़ाता हूं हाथ उसकी जानिब
पुराने दोस्त की तरह मुस्कराती है।
चलो, यों ही सही।
हर ज़ख़्म को मेरे शराब से भर दो
जब दिमाग़ पर छा जायेगा धुंधलका-सा,
यह दर्द भी गुज़र जायेगा,
मुझे चैन आयेगा,
मैं नींद के गहरे समुंदर में
डूब जाऊंगा...
क्यों न पी लूं एक जाम और भरकर?
यह कुछ बात हुई!
न पियें जिनको नींद आती है
मुझे तो दर्द मेरा पिलाता है।

कविता पूरी करके उसने जल्दी से एक नज़र इल्या पर डाली और अपना सिर पहले से भी ज़्यादा झुका लिया।

"मेरी ज़्यादातर कविताएं ऐसी ही हैं," उसने बुदबुदाकर कहा।

वह उंगलियों से मेज़ पर तबला बजाने लगा और अपनी कुर्सी पर कसमसाने लगा।

इल्या आश्चर्यचकित होकर और साथ ही शंका के भाव से कुछ क्षण तक उसे घूरता रहा। लयबद्ध पंक्तियां उसके कानों में गूंजती रहीं और उसे सहज ही यह विश्वास नहीं हो रहा था कि वे इस दुबले-पतले लड़के की लिखी हुई थीं जो एक मोटे कपड़े की पुरानी क़मीज़ और बेडौल जूते पहने उसके सामने बैठा था और जिसकी आंखों में इतनी बेचैनी थी।

"इसमें कोई ऐसी मसख़रेपन की बात तो नहीं है," आख़िरकार उसने पावेल को नज़रें जमाकर देखते हुए धीमे स्वर में शब्दों को खींच-खींचकर कहा। "मुझे तो अच्छी लगी... मेरी आंखों में तो आंसू आ गये – सच कहता हूं... फिर पढ़कर सुनाओ..."

पावेल ने जल्दी से अपना सिर ऊपर उठाया और ख़ुश होकर अपने दोस्त की ओर देखा।

"सचमुच तुम्हें अच्छी लगी?" उसने अपनी कुर्सी और क़रीब खींचते हुए धीरे से कहा।

"क्या सवाल है! तुम समझते हो कि मैं तुमसे झूठ बोलूंगा?"

पावेल ने कविता फिर पढ़कर सुनायी – धीरे-धीरे, विचारमग्न होकर, और जब आवाज़ जवाब देने लगती तो बीच-बीच में रुककर और लंबी सांसें भरकर। उसके दुबारा कविता सुनाने पर इल्या को इस बात में और भी संदेह होने लगा कि वे कविताएं पावेल ने ख़ुद लिखी थीं।

"कुछ और सुनाओ," उसने कहा।

"शायद बेहतर यह होगा कि मैं किसी दिन तुमसे मिलने आऊं और अपनी कापी साथ लेता आऊं... मेरी सारी कविताएं बहुत लंबी हैं... और फिर मुझे अब चलना भी चाहिये! और मेरी याद भी बहुत ख़राब है... मुझे बस शुरू का और आख़िर का हिस्सा याद रहता है... एक कविता है: मैं रात को जंगल में चला जा रहा हूं, रास्ता भटक गया हूं, थककर चूर हो गया हूं और सहमा हुआ हूं... बिल्कुल अकेला... तो रास्ता खोजते हुए मैं कहता हूं:

पांव बोझल,
सिर झुका हुआ
पीड़ा से।
कहां जाऊं मैं?
हे, धरती मां,
मुझे रास्ता दिखा।
मैं गिर पड़ा धरती पर
एक छतनार पेड़ के नीचे
गाल रख दिया धरती पर
और मेरे दिल ने
एक आवाज़ सुनी –
कोई कान में कह रहा था:
"मेरे पास आओ!"

"सुनो, इल्या – मेरे साथ चलो। चलो तो। मैं अभी तुमसे अलग होने को तैयार नहीं हूं..."

पावेल जल्दी करते हुए इल्या की बांह पकड़कर उसे खींचता रहा और बड़े स्नेह से उसके चेहरे को देखता रहा।

"अच्छी बात है!" इल्या राज़ी हो गया। "मैं भी अभी तुमसे अलग नहीं होना चाहता... तुमसे ईमानदारी की बात कहूं – मुझे विश्वास भी है और इसके साथ शंका भी है कि ये तुमने लिखी हैं... तुम हो ही ऐसे विचित्र जीव। और कविताएं कितनी अच्छी बन पड़ी हैं..."

"तो तुम्हें विश्वास नहीं होता कि वे मेरी हैं?"

"ख़ैर, अगर तुम्हारी हैं, तो तुम कमाल के आदमी हो," इल्या ने सच्चे दिल से कहा।

"बस देखते जाओ – मैं लिखना सीखूंगा, तब देखना मेरा कमाल!"

"शाबाश, आगे बढ़ते रहो!"

"अरे, इल्या! काश मैं कुछ ज़्यादा बुद्धिमान होता!.."

वे एक-दूसरे के शब्दों को झपटते हुए, तेज़ी से उन्हें लोकते हुए और दूसरे की ओर फेंकते हुए, लंबे-लंबे क़दम बढ़ाते सड़क पर चले जा रहे थे, और जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते जा रहे थे वैसे-वैसे उनका जोश भी बढ़ता जा रहा था और उनके बीच ज़्यादा भाईचारा पैदा होता जा रहा था। दोनों यह जानकर बेहद ख़ुश थे कि दूसरा उसके विचारों से सहमत था, और उनकी उमंग उल्लास के पंखों से उड़ती हुई ऊंची उठती जा रही थी। अब बर्फ़ तेज़ी से गिरने लगी थी। वह उनके चेहरों पर पिघल रही थी, उनके कपड़ों पर जमती जा रही थी और उनके जूतों पर चिपक रही थी; उनके चारों ओर पतला-पतला कीचड़ फैला था।

"लानत है!" कीचड़ और मैले पानी से भरे हुए एक गड्ढे में पांव पड़ते ही इल्या चिल्ला उठा।

"बायीं ओर को होकर चलो..."

"कहां जा रहे हैं हम लोग?"

"सिदोरिखा के यहां। उसका ठिकाना जानते हो?"

"जानता हूं..." इल्या ने कुछ देर रुकने के बाद कहा, फिर हंसते हुए बोला, "हम लोग एक ही रास्ते पर लग जाते हैं।"

"जानता हूं!" पावेल ने धीरे से कहा। "लेकिन मुझे वहां जाना ही है... एक ख़ास वजह से... मैं तुम्हें बताता हूं क्यों, हालांकि यह बताना बला का मुश्किल काम है..."

उसने ज़ोर से थूका।

"सुनो – वहां एक लड़की है। देखना कैसी है... देखते ही दिल जैसे पिघलने लगता है... जिस डाक्टर ने मेरा इलाज किया था उसके यहां ऊपर का काम करती थी। अच्छा हो जाने के बाद मैं डाक्टर के यहां किताबें लेने जाया करता था... वहां बैठा पढ़ता रहता था... और जब देखो वह वहां मंडलाती हुई आ जाती थी, तितली की तरह पर फड़-फड़ाती हुई, हंसती हुई... मैंने उससे मेलजोल बढ़ाया... उसने एक शब्द भी कहे बिना सीधे आत्म-समर्पण कर दिया... कैसा ज़ोरदार मामला शुरू हो गया हम दोनों के बीच कि बस कुछ पूछो नहीं! ऐसा लगता था कि आसमान तक धधक रहा है! मैं उसकी ओर उड़कर ऐसे जाने लगा जैसे चिराग़ पर पतंगा जाता है... एक-दूसरे को चूमते-चूमते हम दोनों के होंट सूज गये थे और हमारी हड्डियां तक दुखने लगी थीं। क्या सुंदर-सलोनी साफ़-सुथरी लड़की थी, इल्या! बिल्कुल खिलौने जैसी। बांहों में समेट लो तो जैसे कुछ हो ही नहीं। ऐसा लगता था कि जैसे कोई चिड़िया उड़कर मेरे दिल में पहुंच गयी थी और वहां गा रही थी, गाये चली जा रही थी..."

वह बोलते-बोलते रुक गया और उसके मुंह से एक अजीब-सी कराह जैसी आवाज़ निकली।

"फिर?" इल्या ने कहा, वह बाक़ी क़िस्सा सुनने को उत्सुक था।

"डाक्टर की बीवी ने हमें पकड़ लिया... बहुत ही नेक और शरीफ़ क़िस्म की औरत थी वह, क़सम से। कभी-कभी वह मुझ तक से बातें करती रहती थी... बहुत ही अच्छी तरह... बहुत ही ख़ूबसूरत... मगर चुड़ैल थी वह! बेड़ा ग़र्क़ हो उसका!"

"तो फिर?"

"तो हुआ यह कि डाक्टर की बीवी ने बखेड़ा खड़ा कर दिया... वेरा को निकाल दिया गया... बुरी तरह झाड़ा गया वेरा को... और मुझे भी... वेरा आकर मेरे साथ रहने लगी... मेरे पास कोई काम नहीं था उस वक़्त... जो कुछ था हम लोग पोंछ-पांछकर खा गये... वेरा – बड़े जीवट की थी वह ... वह भाग गयी... दो हफ़्ते तक ग़ायब रही... फिर मेरे यहां आयी ... अच्छे-अच्छे कपड़ों में बनी-ठनी, कंगन पहने, ढेरों पैसा लिये..." पावेल दांत पीसने लगा। "मैंने उसे मारा... बुरी तरह मारा..."

"क्या वह तुम्हें छोड़कर चली गयी?" इल्या ने पूछा।

"नहीं। अगर चली जाती तो मैं नदी में कूदकर जान दे देता... 'या तो मुझे मार डालो,' वह बोली, 'या फिर मुझे हाथ न लगाओ। तुम्हें मेरे साथ रहना बहुत मुश्किल लगता है,' वह बोली, 'लेकिन मैं अपना दिल कभी किसी दूसरे को नहीं दूंगी...'"

"और तुमने क्या किया?"

"जो कुछ मैं कर सकता था वह मैंने किया – उसे मारा, झगड़ा किया, रोया... मैं और कर ही क्या सकता था? मैं उसका पेट जो नहीं पाल सकता था।"

"क्या वह कहीं काम नहीं करना चाहती थी?"

"शैतान भी उसे राज़ी नहीं रख सकता था! 'अच्छी बात है!' वह बोली। 'लेकिन हम लोगों के बच्चे होंगे। हम उनका क्या करेंगे? इस तरह तो सब कुछ तुम्हारा है। और कोई बच्चे भी नहीं होंगे'..."

इल्या एक क्षण सोचता रहा।

"बहुत समझदारी की बात है," वह बोला।

पावेल कोई जवाब दिये बिना बर्फ़ीले अंधेरे में झपटकर आगे बढ़ गया।

अपने दोस्त से कोई तीन क़दम आगे निकल जाने पर वह रुका और उसने मुड़कर पीछे देखा।

"जब कभी मैं सोचता हूं कि कोई दूसरा उसे चूम रहा है तो ऐसा लगता है... ऐसा लगता है जैसे मेरे दिल में पिघला हुआ सीसा उंडेल दिया गया हो," उसने हांपते हुए कहा।

"तुम उसे छोड़ नहीं सकते?"

"क्या?" पावेल आश्चर्य से चिल्लाया।

उस लड़की को देखने के बाद इल्या को उसका आश्चर्य समझ में आ गया।

शहर के छोर पर वे एकमंज़िले मकान के पास पहुंचे। उसकी छः खिड़कियां कसकर बंद थीं, जिसकी वजह से वह देखने में एक लंबी पुरानी-सी बखारी जैसा लगता था। उसकी दीवारों पर और छत पर गीली-गीली बर्फ़ ऐसे चिपकी हुई थी मानो उस मकान को छिपाने की कोशिश कर रही हो।

"इस तरह के दूसरे घरों के मुक़ाबले में यह ख़ास क़िस्म का घर है," पावेल ने दरवाज़े पर दस्तक देते हुए कहा। "सिदोरिखा लड़कियों को रहने के लिए कमरा और खाना देती है। हर एक से पचास रूबल महीना लेती है... कुल चार लड़कियां हैं... ज़ाहिर है मादाम शराब और बियर और मिठाइयां भी बेचती है... लेकिन वह लड़कियों को अपने शिकंजे में कसकर नहीं रखती है – जी चाहे तो बाहर जाओ, नहीं तो घर पर बैठो... उसे बस अपने पचास रूबल की चिंता रहती है। लड़कियां महंगी हैं – इतना तो वे बड़ी आसानी से कमा लेती हैं। उनमें से एक है – ओलिंपियादा – वह तो पच्चीस रूबल से कम में मिल ही नहीं सकती।"

"तुम्हारीवाली कितने लेती है?" इल्या ने अपने कोट पर से बर्फ़ झाड़ते हुए कहा।

पावेल ने फ़ौरन कोई जवाब नहीं दिया।

"मुझे मालूम नहीं; वह भी काफ़ी महंगी है," उसने धीरे से कहा।

दरवाज़े के दूसरी तरफ़ कुछ सरसराहट-सी हुई और सुनहरी रोशनी की एक महीन-सी लकीर अंधेरे को चीरती हुई बाहर आयी।

"कौन है?"

"वास्सा सिदोरोव्ना, मैं हूं... ग्राचोव"

"अच्छा!" दरवाज़ा खुला और एक दुबली-पतली छोटी-सी बुढ़िया ने, जिसके थलथल चेहरे पर बड़ी-सी नाक थी, पावेल के चेहरे के सामने मोमबत्ती लाते हुए उससे कहा, "सलाम! वेरा कब से तुम्हारी राह देख रही है। यह तुम्हारे साथ कौन है?"

"एक दोस्त है।"

"कौन है?" लंबे, अंधेरे, बड़े-से बरामदे के दूसरे सिरे से किसी की साफ़ आवाज़ सुनायी दी।

"वेरा के पास आये हैं, ओलिंपियादा," बुढ़िया ने कहा।

"तुम्हारावाला आया है, वेरा," उसी साफ़ आवाज़ ने पुकारकर कहा।

बरामदे के दूसरे छोर पर एक दरवाज़ा धड़ से खुला और रोशनी के चौकोर की पृष्ठभूमि पर एक लड़की की छोटी-सी आकृति दिखायी

दी। वह सिर से पांव तक सफ़ेद कपड़े पहने थी और सुनहरे बालों की घनी-घनी भारी लटें उसके कंधों पर बिखरी थीं।

"बहुत देर कर दी तुमने!.." उसने लचकीले स्वर में कहा। फिर उसने पंजों के बल उचककर अपने हाथ पावेल के कंधों पर रख दिये और अपनी भूरी आंखों से उसके कंधे के ऊपर से झांककर इल्या को देखा।

"मेरा दोस्त है – इल्या लुन्योव..."

"कैसे हैं आप?"

जब उसने मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया तो उसके सफ़ेद ब्लाउज़ की ढीली आस्तीन लगभग कंधे तक सरक गयी। इल्या ने बड़ी नरमी से और बड़े आदर के भाव से उसका छोटा-सा हाथ थाम लिया और उसे इस तरह खुश होकर एकटक देखने लगा जैसे कोई घने जंगल के झाड़-झंखाड़ के बीच ऊपर उभरे हुए नाज़ुक सुडौल बर्च के पेड़ को देखकर खुश होता है। जब वह उसे कमरे में जाने का रास्ता देने के लिए एक ओर को हटकर खड़ी हो गयी तो वह भी एक तरफ़ हट गया और आदरपूर्वक बोला:

"पहले आप!"

"अरे, आप भी कैसा तकल्लुफ़ करते हैं!" वह हंसकर बोली, और कितनी ख़ूबसूरत थी उसकी हंसी – मस्ती-भरी और साफ़। पावेल भी हंस दिया।

"तुम्हें तो देखकर वह बिल्कुल हक्का-बक्का रह गया है, वेरा," पावेल ने कहा, "देख रही हो कैसे खड़ा है, जैसे शहद की नांद के सामने कोई भालू खड़ा हो।"

"सच?" वेरा ने इल्या की ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा।

"सचमुच," इल्या ने जवाब में मुस्कराते हुए कहा। "आपकी ख़ूबसूरती देखकर तो मेरे पांव तले की ज़मीन खिसक गयी है..."

"ज़रा इससे प्यार करने की कोशिश करके तो देखो! गला काट दूंगा!" पावेल ने खुशमिज़ाजी से हंसते हुए कहा, उसकी आंखें गर्व से चमक रही थीं। उसे यह देखकर बहुत खुशी हो रही थी कि इल्या उसकी प्रेमिका की सुंदरता पर लट्टू हो गया था। और वह भी बड़ी मासूम बेहयाई से इतरा रही थी; उसे अपनी नारी-सुलभ शक्ति

का पूरा आभास था। वह सिर्फ़ दूध जैसी सफ़ेद एक स्कर्ट और कुरती के ऊपर एक ढीला-सा ब्लाउज़ पहने थी। ब्लाउज़ का गरेबान खुला हुआ था जिसके नीचे पके हुए आड़ू जैसा उसका गदराया हुआ और ताज़ा बदन दिखायी दे रहा था। उसके छोटे-से मुंह के गुलाबी होंट आत्म-संतुष्ट मुस्कराहट में खुले हुए थे: वह अपने आपसे इतनी खुश दिखायी दे रही थी जैसे कोई बच्चा उस खिलौने से खुश रहता है जिससे उसका जी अभी तक उकताया न हो। इल्या उस पर से अपनी नज़रें हटा नहीं पा रहा था; वह बड़ी लचक और फुर्ती से कमरे में इधर से उधर आ-जा रही थी, उसकी छोटी-सी सुडौल नाक ऊपर को उठी हुई थी, वह पावेल को प्यार-भरी नज़रों से देख रही थी और बहुत चहककर बातें कर रही थी। इल्या को यह सोचकर अफ़सोस हो रहा था कि कोई ऐसी लड़की उसकी दोस्त नहीं थी।

उस छोटे-से साफ़-सुथरे कमरे के बीच में एक मेज़ रखी थी जिस पर सफ़ेद मेज़पोश पड़ा हुआ था। समोवार से निकलती हुई भाप चारों ओर खुशी बिखेर रही थी और कमरे की हर चीज़ में ताज़गी और जवानी की झलक थी। वहां की कोई चीज़ ऐसी नहीं थी जिसे इल्या ने सराहा न हो – प्यालियां, शराब की बोतल, सॉसेज और रोटी की प्लेटें। उसे बरबस पावेल से ईर्ष्या होने लगी। पावेल मेज़ के पास बैठा खुशी के मारे खिला जा रहा था और अच्छी-अच्छी ख़ूबसूरत बातें कह रहा था:

"जब मैं तुम्हें देखता हूं तो जैसे चांदनी में नहा जाता हूं... मेरे सारे दुःख-दर्द दूर हो जाते हैं और नयी आशाओं के अंकुर फूटने लगते हैं... रूप तुम्हारा तारों जैसा, पास तुम्हारे मरना कैसा..."

"पावेल! कितनी सुंदर पंक्तियां हैं!.." वेरा ने सराहते हुए कहा।

"बिल्कुल ताज़ा हैं। अभी-अभी तैयार की हैं! अरे, बात सुनो, इल्या! कुढ़ो नहीं! अपने लिए भी एक ढूंढ लो!"

"कोई अच्छी-सी!" वेरा ने इल्या की आंखों में आंखें डालकर देखते हुए अपने स्वर में एक नया विचित्र भाव पैदा करके कहा।

"मुझे तुम्हारी जैसी अच्छी तो कभी कोई मिलेगी नहीं!" इल्या ने आह भरकर मुस्कराते हुए कहा।

10-01118

"तुम कुछ नहीं जानते हो ..." वेरा ने धीमे स्वर में कहा।

"अच्छी तरह जानता है ..." पावेल ने त्योरियां चढ़ाकर कहा, फिर इल्या की ओर मुड़कर बोला, "सब कुछ अच्छा-भला रहता है! बहुत शानदार रहता है! फिर अचानक – मुझे वही बात याद आती है ... जैसे किसी ने मेरे दिल में छुरा भोंक दिया हो! .."

"याद न किया करो," वेरा ने अपना सिर मेज़ तक नीचे झुकाकर कहा। इल्या ने उसकी ओर देखा और उसे दिखायी दिया कि उसके कानों की लवें तक लाल हो गयी थीं।

"तुम्हें अपने आपसे यह कहना चाहिये," वह धीमे स्वर में लेकिन बड़ी दृढ़ता से बोली, "'चाहे हम एक ही दिन साथ रहे हों, लेकिन वह मेरा दिन था।' मेरे लिए भी यह सब कुछ आसान नहीं है ... जैसा कि एक गीत में कहा गया है, अपने दुःख मैं अपने तक ही रखता हूं लेकिन अपने सुख तुम्हारे साथ बांट लेता हूं ..."

उसकी बात सुनकर पावेल की त्योरियों पर बल पड़ गये ... इल्या का बेहद जी चाहा कि वह कोई अच्छी-सी बात कहे, कोई ऐसी बात जिससे उन दोनों का हौसला बढ़े।

"अगर गांठ न खुल सके तो क्या किया जा सकता है?" उसने एक क्षण सोचने के बाद कहा। "लेकिन मैं तुम लोगों से यह कहना चाहता हूं: अगर मेरे पास हज़ार रूबल हों, तो मैं सारे के सारे तुम लोगों को दे दूं – लो, ये रहे! अपने प्यार की ख़ातिर इन्हें ले लो ... क्योंकि मैं देखता हूं कि यह अच्छा, निर्मल और सच्चा प्यार है, और इसके अलावा किसी भी चीज़ का महत्त्व तिनके के बराबर भी नहीं है!"

वह अचानक भावनाओं के प्रबल प्रवाह में फंस गया। यहां तक कि वह उठ खड़ा हुआ ताकि वह लड़की की कृतज्ञतापूर्ण पैनी नज़रों को और पावेल की मुस्कराहट को ज़्यादा आसानी से बर्दाश्त कर सके, जो उससे कुछ और ही अपेक्षा करता हुआ लग रहा था।

"मैंने अपनी ज़िंदगी में पहली बार ऐसे लोगों को देखा है जो सच-मुच एक-दूसरे को प्यार करते हैं ... और पहली बार मुझे तुम्हारे दिल के अंदर की सच्ची झलक देखने को मिली है, पावेल – मैंने तुम्हारी असली क़द्र जानी है ... और सच पूछो तो मुझे तुमसे जलन होती

है। जहां तक ... तसवीर के दूसरे पहलू का सवाल है ... मुझे उसके बारे में इतना ही कहना है कि मुझे चुवाश और मोर्दवा लोग बिल्कुल पसंद नहीं। मैं उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकता! उन सबकी आंखें हमेशा आयी रहती हैं। लेकिन मैं उसी नदी में नहाता हूं जिसमें वे नहाते हैं और वही पानी पीता हूं। क्या मैं उनकी वजह से नदी को त्याग दूं? मैं ऐसा नहीं करूंगा। मुझे यक़ीन है कि भगवान नदी के पानी को शुद्ध करता है ..."

"शाबाश, इल्या!" पावेल ने ऊंचे स्वर में कहा।

"पर तुम तो चश्मे का पानी पियो," वेरा धीमे स्वर में बोली।

"कहीं अच्छा हो कि तुम मुझे एक प्याला चाय बनाकर पिलाओ," इल्या ने कहा।

"तुम कितने अच्छे हो!" लड़की ने उत्साह से कहा।

"शुक्रिया," इल्या संजीदगी से बोला।

इस छोटी-सी घटना का पावेल पर तेज़ शराब जैसा असर हुआ। उसके जानदार चेहरे पर लाली दौड़ गयी, आंखें चमकने लगीं; वह उछलकर खड़ा हो गया और कमरे में इधर से उधर टहलने लगा।

"बेड़ा ग़र्क़ हो मेरा! जब तक इस पृथ्वी पर लोग तुम्हारे जैसे, बच्चों की तरह भोले हैं, तब तक ज़िंदा रहने में मज़ा है!" उसने भावुक होकर कहा। "तुम्हें यहां लाकर, इल्या, मैंने अपने दिल के साथ बड़ा उपकार किया। यह जाम तुम्हारे नाम का, दोस्त!"

"कितने जोश में आ गया है," लड़की ने उसकी ओर बड़े प्यार से देखकर मुस्कराते हुए कहा। "इसका हमेशा यही रहता है – या उत्साहित, जोशीला या उदास और झुंझलाया हुआ ..."

उसी वक़्त किसी ने दरवाज़ा खटखटाया।

"मैं अंदर आ सकती हूं, वेरा?" किसी औरत की आवाज़ ने पूछा।

"हां-हां, आओ न। इल्या याकोव्लेविच, यह है ओलिंपियादा, मेरी सहेली ..."

इल्या ने मुड़कर देखा कि लंबे क़द की एक शालीन नौजवान औरत शांत नीली आंखों से उसे नज़रें जमाये देख रही थी। उसके कपड़ों से इत्र की ख़ुशबू आ रही थी, उसके गुलाबी गालों में ताज़गी

थी, और उसके सिर पर काले बालों का एक ऊंचा-सा ताज बना हुआ था जिसकी वजह से उसका क़द कुछ और लंबा हो गया था।

"मैं अकेली बैठी थी... उदास हो गयी... तुम लोगों को यहां हंसते सुना तो यहां आ जाने का फ़ैसला किया। बुरा तो नहीं माना? मैं देख रही हूं कि यहां एक नौजवान है जिसका साथ देने को कोई औरत नहीं है। मैं इसे संभाले लेती हूं – कोई एतराज़ तो नहीं है?"

इतमीनान से वह एक कुर्सी खींचकर इल्या के पास बैठ गयी।

"इन लोगों की चिड़िया-चिरौंटे जैसी बातें सुनकर आप उकता नहीं जाते? आपको जलन नहीं होती?"

"इन लोगों से उकता जाना मुश्किल है," इल्या ने उसे इतना नज़दीक पाकर कुछ सिटपिटाकर कहा।

"यह तो बड़ी अफ़सोस की बात है," उस औरत ने शांत भाव से कहा; फिर वह वेरा की ओर मुड़कर बोली, "कल मैं मठ में प्रार्थना के लिए गयी थी, वहां एक छोटी-सी ख़ूबसूरत लड़की देखी जिसने नया-नया वैराग्य लिया था। मैं उसे देखती रही और सोचती रही कि किस चीज़ ने उसे सब कुछ त्यागकर यह सधुनियों का भेस अपनाने पर मजबूर किया होगा। मुझे उस पर बड़ा तरस आया..."

"मुझे तो न आता," वेरा बोली।

"क्या कहा! मैं तुम्हारी इस बात पर यक़ीन नहीं करती..."

इल्या बैठा उस औरत के चारों ओर फैली हुई सुगंध में सांस लेता रहा, नज़रें बचाकर कनखियों से उसे देखता रहा और उसकी आवाज़ सुनता रहा। उसकी आवाज़ अस्वाभाविक रूप से धीमी और शांत थी; उसने चेतनाओं को मंद कर दिया और इल्या कल्पना करने लगा कि उसके शब्दों में भी अपनी ही एक तीव्र सुगंध थी...

"मैं सोचती हूं, वेरा, कि जाकर पोलुएक्तोव के साथ रहूं या नहीं।"

"मालूम नहीं।"

"शायद मैं ऐसा ही करूंगी... वह बूढ़ा है और पैसेवाला है। लेकिन है बड़ा कंजूस... मैं उससे कहती हूं कि पांच हज़ार बैंक में जमा करवा दे और मुझे डेढ़ सौ रूबल महीना दे दिया करे, लेकिन वह बस तीन हज़ार जमा करने और मुझे सौ रूबल देने को राज़ी है।"

"उसकी बातें इस वक़्त न करो, मेरी जान!" वेरा ने कहा।

"अच्छी बात है!" ओलिंपियादा राज़ी हो गयी और फिर इल्या की ओर मुड़कर बोली। "आइये, हम-आप बातें करें... आप मुझे बहुत अच्छे लगते हैं... आपकी सूरत बहुत अच्छी है और आपकी आंखों में सच्चाई झलकती है। आप क्या कहेंगे?"

"कुछ भी नहीं," इल्या ने शरमाते हुए मुस्कराकर कहा; उसे महसूस हो रहा था कि यह औरत उसे अपने आंचल में बांधे जा रही थी।

"कुछ भी नहीं? यह तो कोई बात न हुई! आप करते क्या हैं?"

"फेरी लगाता हूं..."

"सचमुच? मैं तो समझी थी कि किसी बैंक में क्लर्क होंगे या किसी बड़ी दुकान में काम करते होंगे। आप देखने में बहुत शरीफ़ लगते हैं..."

"मुझे साफ़-सुथरा रहना अच्छा लगता है," इल्या ने कहा। उसे गरमी-सी लगने लगी; उस पर सुगंध का नशा-सा छाता जा रहा था।

"साफ़-सुथरा? यह तो अच्छी बात है... क्या आप अंदाज़ा अच्छा लगा लेते हैं?"

"मालूम नहीं आपका क्या मतलब है इससे।"

"क्या आपको इस बात का अंदाज़ा नहीं है कि आप अपने दोस्तों के लिए कबाब में हड्डी बने हुए हैं?" नीली आंखोंवाली उस औरत ने बड़ी नरमी से पूछा।

"मैं तो बस जाने ही वाला था!.." इल्या ने सकपकाकर कहा।

"मैं इनको उड़ा ले जाऊं, वेरा?"

"अगर वह राज़ी हो तो ले जाओ!" वेरा ने हंसकर कहा।

"कहां?" इल्या ने घबराकर पूछा।

"जा न इसके साथ, बुद्धू," पावेल बोला।

इल्या चकराया हुआ खड़ा बेवक़ूफ़ों की तरह मुस्कराता रहा, लेकिन उस औरत ने चुपचाप उसकी बांह पकड़ी और उसे बाहर ले जाते हुए बोली:

"आपको अभी किसी ने क़ाबू में नहीं किया है, और मैं बहुत मनमौजी हूं, हर काम अपने ही ढंग से करती हूं। अगर मेरा जी चाहे

कि सूरज को बुझा दूं तो मैं छत पर चढ़कर तब तक फूंक मार-मारकर उसे बुझाती रहूंगी जब तक मेरा दम बिल्कुल फूल न जाये। ऐसी हूं मैं।"

इल्या उसके साथ-साथ चुपचाप चलता रहा; उसकी समझ में नहीं आ रहा था – बल्कि सच तो यह है कि वह ठीक से सुन भी नहीं पा रहा था – कि वह कह क्या रही है; उसे तो बस उसके शरीर की हल्की-हल्की आंच का, उसकी कोमलता का, उसकी सुगंध का आभास था...

उस औरत की मर्ज़ी से अचानक स्थापित हो जानेवाले इस संबंध में इल्या बिल्कुल डूब गया। उसकी वजह से उसमें कुछ आत्म-संतोष पैदा हो गया और ज़िंदगी ने उसके दिल पर जो ज़ख़्म लगाये थे वे भर गये। इस विचार से ख़ुद अपनी नज़रों में उसकी साख काफ़ी बढ़ गयी कि वह ख़ूबसूरत सजी-संवरी औरत अपनी मर्ज़ी से उस पर अपने अनमोल चुंबन लुटा रही थी और इसके बदले में उससे कुछ मांगती भी नहीं थी। ऐसा लगता था कि वह किसी पाटदार नदी में तैरता चला जा रहा है और नदी की शांतिपूर्ण लहरें उसके शरीर को सहला रही हैं।

"मेरे सपनों के राजा," ओलिंपियादा उसके घुंघराले बालों से खेलते हुए और उसके ऊपरी होंट के ऊपर गहरे रंग के रोमों पर उंगली फेरकर कहती। "तुम दिन-ब-दिन मुझे ज़्यादा अच्छे लगने लगे हो... तुम दिल के बहुत बहादुर हो, तुम पर भरोसा किया जा सकता है और मैं जानती हूं कि तुम्हें तब तक संतोष नहीं होता जब तक तुम्हें अपनी चाही हुई चीज़ मिल न जाये... मैं भी ऐसी ही हूं... अगर मेरी उम्र कुछ कम होती तो मैं तुमसे शादी कर लेती... हम दोनों की ज़िंदगी एक मधुर गीत बन जाती..."

इल्या उसे बड़ी इज़्ज़त की नज़र से देखता रहा। वह समझ गया था कि वह बहुत चतुर थी और जिस तरह की ज़िंदगी वह बसर करती थी उसके बावजूद वह अपनी क़द्र जानती थी। उसका शरीर भी उसकी आवाज़ की तरह ही मज़बूत और लचकीला था, और उसके चरित्र जैसा ही सुडौल था। उसकी किफ़ायतशारी, उसका सुथरापन, किसी

भी चीज़ के बारे में अपनी राय क़ायम करने की उसकी क्षमता और लगभग गर्व की हद तक उसके स्वभाव की स्वतंत्रता इल्या को बहुत पसंद थी। लेकिन कभी-कभी जब वह उससे मिलने आता तो वह बिस्तर पर लेटी होती थी, उसका चेहरा उतरा हुआ और उजाड़ होता था, उसके बाल चारों ओर बिखरे होते थे। उस समय इल्या के मन में उसके प्रति घृणा-सी उत्पन्न होती थी, और वह खड़ा बड़ी कठोरता से उसकी बुझी-बुझी भावशून्य आंखों को देखता रहता था, और उससे अभिवादन का एक शब्द भी कहने की इच्छा उसमें पैदा नहीं होती थी।

लगता था कि वह इल्या की भावना को जान लेती थी और कंबल ओढ़कर उससे कहती थी:

"चले जाओ यहां से! जाकर वेरा के कमरे में बैठो... बुढ़िया से कह दो कि मेरे लिए बर्फ़ डालकर थोड़ा-सा पानी दे जाये..."

और वह उस साफ़-सुथरे छोटे-से कमरे में चला जाता जो पावेल की प्रेमिका का कमरा था। उसके चेहरे पर परेशानी देखकर वेरा अपराधियों की तरह मुस्करा देती।

"हम जैसी लड़कियों से दिल लगाना भी बड़ी मुसीबत है, क्यों है न?" एक बार वह इल्या से बोली थी।

"वेरा, वेरा!" उसने आह भरकर कहा था, "तुम्हारे पाप तो बर्फ़ की तरह हैं – तुम्हारे मुस्कराते ही पिघल जाते हैं।"

"बेचारे तुम! बेचारा पावेल!"

उसे वेरा अच्छी लगती थी और उस पर उसे तरस आता था। जब भी वेरा और पावेल का झगड़ा हो जाता था तो वह बहुत परेशान हो जाता था और हमेशा उनके बीच सुलह-समझौता कराने की पूरी कोशिश करता था। वेरा के कमरे में बैठकर उसे अपने सुनहरे बालों में कंघी करते हुए या अपने कपड़ों की मरम्मत करने के साथ-साथ गुनगुनाते हुए देखकर इल्या को बहुत आनंद आता था। ऐसे मौक़ों पर वह उसे और भी अच्छी लगती थी और उसे उसके दुःखी होने का और भी गहरा आभास होता था। वह अपनी तरफ़ से उसे तसल्ली देने की पूरी कोशिश करता था; लेकिन वह कहती थी:

"तुम लोग इसी तरह तो नहीं चलते रह सकते, इल्या याकोव्लेविच, बिल्कुल नहीं चलते रह सकते। मेरे ऊपर तो हमेशा के लिए

कलंक लग ही गया है – लेकिन पावेल क्यों मेरे साथ चिपका रहे?"

ओलिंपियादा चुपचाप अंदर आकर उनकी बातचीत का क्रम भंग कर देती। हल्के आसमानी रंग के ड्रेसिंग-गाउन में वह चांदनी की ठंडी किरन जैसी लगती।

"आओ, चलकर मेरे साथ चाय पियो, मेरे सपनों के राजा! बाद में तुम भी आना, वेरा..."

ठंडे पानी की बदौलत गुलाबी, साफ़-सुथरी, गठी हुई और शांत वह बड़े रोब से इल्या को साथ लेकर चली जाती, और उसके पीछे-पीछे चलते हुए इल्या मन ही मन सोचता रहता: क्या यह वही उतरे हुए चेहरेवाली औरत है जो अभी घंटा-भर पहले गंदे हाथों से मली-दली वहां पड़ी हुई थी?

"अफ़सोस की बात है कि तुम इतना कम पढ़े हो..." चाय पीते हुए उसने इल्या से कहा। "फेरी लगाने का यह काम छोड़कर तुम्हें कुछ और करना चाहिये। धीरज रखो, मैं तुम्हारे लिए कोई काम खोज निकालूंगी... तुम्हें मदद की ज़रूरत है... जब मैं जाकर पोलुए-क्तोव के साथ रहने लगूंगी तो तुम्हारे लिए कुछ कर सकूंगी..."

"क्या वह तुम्हें तुम्हारे पांच हज़ार देगा?" इल्या ने पूछा।

"देगा," औरत ने पूरे भरोसे से कहा।

"अगर मैं कभी उसे यहां देखता तो मैं उसका सिर फोड़ देता," इल्या ने ताव में आकर कहा।

"जब वह मुझे पैसा दे दे उसके बाद करना," औरत ने हंसकर कहा।

व्यापारी ने उसे मुंहमांगी रक़म दे दी। कुछ ही समय बाद इल्या ओलिंपियादा के नये फ़्लैट में बैठा फ़र्श पर बिछे हुए मोटे-मोटे क़ालीनों और गहरे रंग के मख़मल से मढ़ी हुई कुर्सियों को देख रहा था और उसकी रखैल के शब्दों के शांत प्रवाह की ध्वनि सुन रहा था। उसकी बदली हुई स्थिति के अनुरूप उसमें कोई ख़ास ख़ुशी दिखायी नहीं दी – वह हमेशा की तरह ही शांत और निश्चिंत थी।

"मैं सत्ताईस साल की हूं। जब मैं तीस साल की हो जाऊंगी तब मेरे पास दस हज़ार रूबल हो जायेंगे। तब मैं इस बूढ़े से पीछा छुड़ा

लूंगी और आज़ाद हो जाऊंगी। मुझसे सीखो ज़िंदगी में अपने लिए रास्ता बनाना, मेरे सपनों के राजा।"

इल्या ने अपनी मनचाही चीज़ को हासिल करने की कोशिश में अडिग रहना उससे सीखा। लेकिन जब भी उसे याद आता कि वह अपना लाड़-प्यार किसी दूसरे को अर्पित करती है तो उसके कलेजे पर सांप लोट जाता और वह अपमानित महसूस करता। और तब उसका यह सपना और भी प्रबल रूप से उसके मन में जागृत हो उठता कि वह एक दुकान का मालिक होगा और उसका अपना एक साफ़-सुथरा कमरा होगा जहां वह इस औरत से मिला करेगा। वह भरोसे के साथ यह तो नहीं कह सकता था कि वह उससे प्यार करता था, लेकिन उसे उसकी ज़रूरत थी, इतना वह जानता था।

इसी तरह तीन महीने बीत गये।

एक शाम दिन-भर के काम के बाद घर लौटने पर इल्या मोची के तहख़ानेवाले कमरे में गया और उसे यह देखकर ताज्जुब हुआ कि याकोव और पेर्फ़ीश्का बीच में वोदका की बोतल रखे मेज़ के पास बैठे हैं। पेर्फ़ीश्का ख़ुशी से मुस्करा रहा था और याकोव मेज़ पर सीना टिकाये पड़ा था और सिर हिला-हिलाकर बुदबुदा रहा था:

"अगर भगवान सब कुछ देखता है तो वह मुझे भी देखता होगा... मेरा बाप मुझसे प्यार नहीं करता। वह चोर है, है न?"

"सो तो है, याकोव! अफ़सोस की बात है लेकिन सच है," मोची ने कहा।

"मैं अब क्या करूं?" याकोव ने अपने उलझे हुए बाल पीछे झिटकते हुए रुंधे गले से कहा।

इल्या के दिल में एक टीस-सी उठी। उसने देखा कि याकोव का बड़ा-सा सिर उसकी पतली गर्दन पर बड़ी बेबसी से हिल रहा था; उसने देखा कि पेर्फ़ीश्का का दुबला-पतला और पीला चेहरा सुखद मुस्कराहट से चमक रहा था, और उसे किसी तरह यक़ीन नहीं आ रहा था कि यह सचमुच याकोव है – वही विनम्र और चुप रहनेवाला याकोव जिसे वह जानता था।

"क्या कर रहे हो?" उसने याकोव के पास जाकर कहा।

याकोव चौंक पड़ा, डरी-डरी आंखों से इल्या की ओर देखा और मुंह टेढ़ा करके धीरे से मुस्करा दिया।

"मैं समझा कि मेरे बाप आये हैं," वह चिल्ला उठा।

"कर क्या रहे हो, मैं पूछता हूं?"

"उसे रहने दो, इल्या याकोव्लेविच," पेर्फ़ीश्का ने लड़खड़ाकर उठते हुए कहा। "उसे पूरा हक़ है... शायद इसी में उसका भला है कि वह शराब पी रहा है..."

"इल्या!" याकोव विह्वल होकर चिल्लाया। "मेरे बाप ने... मेरे बाप ने मुझे मारा!"

"हां, उसने मारा। मैंने खुद देखा!" पेर्फ़ीश्का ने अपना सीना ठोंकते हुए घोषणा की। "मैंने सब कुछ देखा, क़सम खाकर कह सकता हूं।"

याकोव का चेहरा, और ख़ास तौर पर उसका ऊपरवाला होंट, बुरी तरह सूजा हुआ था। वह अपने होंटों पर दयनीय मुस्कराहट लिये खड़ा अपने दोस्त को देखता रहा।

"क्या मैं इस लायक़ हूं कि मुझे पीटा जाये?"

इल्या ने महसूस किया कि वह न उसे तसल्ली दे सकता था, न उसे दोष दे सकता था।

"आखिर उसने ऐसा किया क्यों?"

याकोव ने अपने होंट हिलाये मानो कुछ समझाना चाहता हो, लेकिन इसके बजाय वह दोनों हाथों से अपना सिर पकड़कर दहाड़ें मार-मारकर रोने लगा; उसका सारा शरीर एक ओर से दूसरी ओर बुरी तरह हिल रहा था।

"रो लेने दो," पेर्फ़ीश्का ने अपने लिए वोदका उंडेलते हुए कहा। "रो लेने से आदमी का जी हल्का हो जाता है। माशा भी... वह गला फाड़-फाड़कर चीख़ रही थी... वह चिल्ला रही थी कि उसकी आंखें निकाल लेगी। मैंने उसे मुटल्ली के पास भेज दिया..."

"याकोव और उसके बाप के बीच हुआ क्या?" इल्या ने पूछा।

"भयानक झगड़ा हुआ," पेर्फ़ीश्का ने बताया। "इस सारे झगड़े की शुरूआत तुम्हारे चाचा से हुई... 'मेरी छुट्टी कर दो,' उसने पेत्रूख़ा से कहा। 'मैं कियेव जाना चाहता हूं, वहां के संत-महात्माओं के पास...' सच पूछो तो पेत्रूख़ा इस बात से बहुत खुश हुआ। तेरेंती से छुटकारा पाकर खुश तो होता ही वह। हर कारोबार में साथी होने से खुशी नहीं होती। 'जाओ,' वह बोला। 'जाकर उन संत-महात्माओं से मेरे लिए भी प्रार्थना कराना।' इस पर यह याकोव उठकर बोला, 'मुझे भी जाने दो।'"

पेर्फ़ीश्का ने अपनी आंखें फाड़कर डरावनी सूरत बनायी, और धमकी-भरे स्वर में हर शब्द को खींच-खींचकर बोलने लगा:

"क्या कहा?' पेत्रूख़ा बोला। 'मुझे भी जाने दो,' याकोव ने दोहराया। 'तुम्हें?' पेत्रूख़ा ने कहा। 'मैं तुम्हारी आत्मा के लिए प्रार्थना करना चाहता हूं...' याकोव ने कहा। 'मैं तुम्हें अभी बताता हूं प्रार्थना कैसे की जाती है!' पेत्रूख़ा बोला। 'मुझे जाने दो,' याकोव अपनी बात दोहराता रहा। इस पर पेत्रूख़ा ने उसके मुंह पर एक घूंसा जड़ दिया – धड़! और फिर – धड़! धड़!"

"मैं अब उसके साथ नहीं रह सकता!" याकोव चिल्लाया। "मैं अपनी जान दे दूंगा! उसने मुझे मारा क्यों? मैंने उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ा था..."

इल्या उसकी चीख़ों की आवाज़ बर्दाश्त न कर सका; उसने बेबसी से अपने कंधे बिचकाये, मुड़ा और तहख़ाने से बाहर निकल गया। उसे यह सुनकर बहुत खुशी हुई थी कि उसका चाचा तीर्थ-यात्रा पर जा रहा था: तेरेंती के जाते ही वह भी उस जगह को छोड़कर चला जायेगा। वह कोई नयी साफ़-सुथरी जगह ढूंढ लेगा और अकेला रहने लगेगा...

वह अभी अपने कमरे में पहुंचा भी नहीं था कि तेरेंती वहां आ गया। उसकी आंखें चमक रही थीं और चेहरा खिला हुआ था।

"तो, मैं जा रहा हूं," अपना कूबड़ झिटकते हुए वह बोला। "जय हो देवी-मां की, ऐसा लग रहा है कि मैं किसी क़ैद से निकलकर खुली रोशनी में जा रहा हूं!"

"याकोव ने पी-पीकर अपना बुरा हाल कर लिया है – मालूम है तुम्हें?" इल्या ने रूखेपन से कहा।

"सचमुच? यह तो बहुत बुरी बात है!"

"तुम थे वहां जब उसके बाप ने उसे मारा था?"

"था तो ... क्यों?"

"इसीलिए वह पीकर धुत्त हो गया है, तुम समझ रहे हो न?" इल्या ने कठोर स्वर में कहा।

"सचमुच इसीलिए? ज़रा सोचो तो!"

इल्या को साफ़ दिखायी दे रहा था कि उसके चाचा को इसकी कोई चिंता नहीं थी कि याकोव का क्या हो रहा है, और इसकी वजह से उसका मन चाचा की तरफ़ से और भी हट गया। उसने इससे पहले कभी तेरेंती को इतना ख़ुश नहीं देखा था, और याकोव की घोर निराशा के बाद उसकी इस ख़ुशी को देखकर इल्या का मन और भी ज़्यादा कटुता से भर गया।

"शराबख़ाने में वापस जाओ," इल्या ने खिड़की के पास बैठते हुए कहा।

"पेत्रूखा वहां है ... मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूं," चाचा ने कहा।

"काहे के बारे में?"

कुबड़ा चलकर उसके पास आ गया:

"मुझे तैयार होने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा," उसने धीमे स्वर में रहस्यमय ढंग से कहा। "तुम यहां अकेले रह जाओगे ... और इसीलिए ... मतलब है ..."

"सीधे-सीधे साफ़ बात कहो," इल्या ने कहा।

"साफ़ बात कहूं?" तेरेंती आंखें झपकाने लगा। "इतना आसान नहीं है कहना ... देखो ... मैंने कुछ पैसा बचाया है ..."

इल्या ने एक नज़र उसे देखा और कर्कश स्वर में हंस दिया। तेरेंती चौंक पड़ा और उसने पूछा:

"क्या बात है?"

"तो तुमने कुछ पैसा बचाया है ..." इल्या ने "बचाया" शब्द पर ख़ास तौर पर ज़ोर दिया।

"हां ..." तेरेंती ने उसकी ओर देखे बिना कहा। "और अब ... हां, मैंने फ़ैसला किया है कि दो सौ मठ को दे दूंगा और सौ तुम्हें दे दूंगा ..."

"सौ?" इल्या ने जल्दी से पूछा। अब जाकर उसने महसूस किया

कि दिल ही दिल में वह अपने चाचा से सौ रूबल नहीं बल्कि ज़्यादा बड़ी रक़म पाने की उम्मीद लगाये था। उसे अपने आप पर ग़ुस्सा आया – वह जानता था कि इस तरह की बात सोचना उसे शोभा नहीं देता था; इसके साथ ही उसे चाचा पर भी ग़ुस्सा आ रहा था कि उसने इतनी थोड़ी रक़म उसे देने की बात कही। वह उठकर खड़ा हो गया, उसने अपने कंधे तान लिये और ग़ुस्से से चाचा से कहा:

"मैं तुम्हारा चोरी का पैसा नहीं लूंगा ..."

तेरेंती पीछे हटा और चारपाई पर गिर पड़ा – उसके चेहरे का रंग उड़ गया था; वह बड़े दयनीय ढंग से इल्या को देख रहा था; वह सिमट गया था, उसका मुंह खुला हुआ था, जबड़ा नीचे को लटका हुआ था और आंखों में भय दिखायी दे रहा था।

"क्या देख रहे हो? मुझे नहीं चाहिये तुम्हारा पैसा ..."

"दुहाई है भगवान की!" कुबड़ा भर्राये हुए स्वर में फुसफुसाकर बोला। "तुम्हें मैंने बेटे की तरह माना है, इल्या। तुम्हारे लिए ... तुम्हारी ज़िंदगी सुधारने के लिए ... मैंने वह पाप किया था। अगर तुम पैसा नहीं लोगे तो भगवान मुझे कभी माफ़ नहीं करेगा ..."

"तो यह बात है, क्यों?" इल्या ने तिरस्कार से हंसकर कहा। "तो तुम भगवान के सामने अपने हाथ में दूसरों की दस्तख़त की हुई रसीदें लेकर जाना चाहते हो, क्यों? मैंने कभी कहा था तुमसे दादा का पैसा चुराने को? ज़रा सोचो, कैसे आदमी से चुराया था तुम लोगों ने वह पैसा!..."

"इल्या, कहा तो तुमने पैदा होने को भी नहीं था," उसके चाचा ने बड़े मसख़स्पन से इल्या की ओर हाथ बढ़ाकर कहा। "पैसा ले लो – ले लो, भगवान की ख़ातिर, मेरी आत्मा के उद्धार के लिए ... नहीं लोगे तो भगवान मुझे मेरा पाप कभी माफ़ नहीं करेगा ..."

उससे गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करते समय उसके होंट कांप रहे थे और उसकी आंखों में भय समाया हुआ था। इल्या उसे देख रहा था और उसको ठीक से यह भी मालूम नहीं था कि उसे चाचा पर तरस आ रहा था कि नहीं।

"अच्छी बात है, मैं ले लूंगा ..." उसने आख़िरकार कहा और कमरे से बाहर चला गया। उसे पैसा लेने के अपने फ़ैसले से घृणा हो

रही थी: इसकी वजह से खुद अपनी नज़रों में उसकी साख कम हो गयी थी। उसे सौ रूबल की क्या ज़रूरत थी? वह उनका क्या करेगा? अगर हज़ार होते तब कुछ बात भी थी – अरे, तब तो वह फ़ौरन इस नीरस मुसीबत-भरी ज़िंदगी से छुटकारा पाकर सबसे दूर कहीं जाकर शांतिपूर्ण एकांत में खुशी की साफ़-सुथरी ज़िंदगी बिताने लगाता... क्यों न चाचा से पूछ ही ले कि उस कबाड़ी के पैसे में से उसे कितना हिस्सा मिला था? लेकिन इस विचार से ही उसे नफ़रत होने लगी...

ओलिंपियादा से परिचय होने के बाद से इल्या को पेत्रूखा का घर और भी गंदा लगने लगा था। वहां की गंदगी और घुटन से उसका सारा शरीर सिहर उठता था। आज वह इन बातों के प्रति खास तौर पर संवेदनशील हो उठा था, जैसे किसी ने उसे ठंडी चिपचिपी उंगलियों से छू लिया हो। अपने आपको संतुलित रख पाने में असमर्थ रहकर वह मुटल्ली के कमरे में गया और उसे बड़े-से पलंग के पास एक कुर्सी पर बैठा हुआ पाया। उसके अंदर आते ही मुटल्ली ने नज़रें उठाकर उसकी ओर देखा और उंगली उठाकर उसे सतर्क किया।

"शिः! वह सो रही है..." उसका यह कानाफूसी का स्वर हवा के झोंके की तरह सुनायी दिया।

माशा सिकुड़कर गठरी बनी हुई पलंग पर लेटी थी।

"अब क्या होने को रह गया है?" मुटल्ली अपनी बड़ी-बड़ी आंखें रोष से नचाकर कहती रही। "अब उन्होंने बच्चों को भी मारना-पीटना शुरू कर दिया है, राक्षस कहीं के! उनके पांव तले धरती फट जाये..."

चूल्हे के पास खड़े होकर कानाफूसी के स्वर में उसकी बातें सुनते हुए इल्या सुरमई रंग के एक चीथड़े में लिपटी हुई माशा की आकृति को एकटक देखता रहा और मन ही मन सोचता रहा: इसका क्या होगा?

"उसने बाल पकड़कर इसे घसीटा, चोर कहीं का, जिसकी रूह तक में शराबखाना बसा हुआ है! अपने बेटे को भी मारा और इसे भी और इन्हें घर से निकाल देने की धमकी दी! और कुछ होने को रह क्या गया है? यह कहां जायेगी, बताओ मुझे?"

"शायद मैं इसके लिए कोई जगह ढूंढ दूंगा," कुछ सोचकर

इल्या ने कहा, उसे याद आया कि ओलिंपियादा ने कहा था कि उसे एक नौकरानी की ज़रूरत थी।

"तुम भी!" मुटल्ली निंदा के साथ फुसफुसा रही थी। "नाक उठाये यहां घूमते रहते हो तुम... शाहबलूत के उस कम-उम्र पेड़ की तरह पनप रहे हो, जिससे किसी को न छाया मिल सकती है न बीज..."

"ठहरो, मेरे ऊपर फुफकारो नहीं!" इल्या बोला, ओलिंपियादा के यहां जाने का बहाना पाकर वह बहुत खुश था। "कितनी उम्र है माशा की?"

"पंद्रह... तुम क्या समझते थे कितने साल की है वह? लेकिन पंद्रह की है तो क्या हुआ? कोई बारह से ज़्यादा नहीं मानेगा, इतनी छोटी-सी और दुबली-पतली है वह... बिल्कुल बच्ची है! इस दुनिया के काम की नहीं है, किसी काम की नहीं यह लड़की! वह ज़िंदा काहे के लिए रहे? अच्छा हो कि ऐसे ही सोती रहे..."

घंटे-भर बाद इल्या ओलिंपियादा के दरवाज़े पर खड़ा उसके खुलने की राह देख रहा था। वह बहुत देर तक इंतज़ार करता रहा; आखिरकार उसने किसी को असंतुष्ट महीन आवाज़ में कहते सुना:

"कौन है?"

"मैं हूं," लुन्योव ने कहा; वह समझ नहीं पाया कि दरवाज़े के पार कौन पूछ रहा है – ओलिंपियादा की बेडौल चेचकरू नौकरानी की आवाज़ तो भारी और कर्कश थी और वह हमेशा कोई सवाल पूछे बिना ही दरवाज़ा खोल देती थी।

"किससे मिलना है?"

"ओलिंपियादा दनीलोव्ना हैं?"

दरवाज़ा अचानक खुला और रोशनी की धारा आकर इल्या के चेहरे पर पड़ी। वह तिलमिलाकर पीछे हट गया, उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

उसके सामने एक छोटा-सा बूढ़ा आदमी हाथ में लैंप लिये खड़ा था। वह उन्नाबी रंग के किसी भारी कपड़े का ढीला-ढाला ड्रेसिंग-गाउन पहने था। उसका सिर लगभग बिल्कुल गंजा था और उसकी ठोड़ी के सिरे पर एक छिदरी सफ़ेद दाढ़ी हिल रही थी। इल्या को घूरते समय उसकी छोटी-छोटी पैनी कंजी आंखें द्वेष से चमक रही थीं और

उसके ऊपरवाले होंट पर उगे हुए तार जैसे कड़े बाल हिल रहे थे। उसके काले सूखे हुए हाथ में लैंप कांप रहा था।

"कौन हो तुम ? खैर, अंदर आ जाओ..." बूढ़ा बोला। "कौन हो तुम ?"

इल्या समझ गया कि यह आदमी कौन था। उसने महसूस किया कि उसके गालों में अचानक ख़ून दौड़ आया है और उसे ग़ुस्सा चढ़ने लगा। तो यह था वह आदमी जिसके साथ वह उस साफ़-सुथरी तनदुरुस्त औरत के आलिंगनों का साझेदार था !

"मैं एक फेरीवाला हूं..." उसने चौखट लांघते हुए धीरे से कहा।

बूढे ने अपनी बायीं आंख झपकायी और एक दबी हुई हंसी हंस दिया। उसके पपोटे लाल थे और पलकों के बाल नहीं थे और उसके मसूढ़ों में कुछ पीले-पीले खूंटियों जैसे दांत बाहर निकले हुए थे।

"हेरा-फेरीवाला, क्यों ? किस चीज़ की फेरी लगाते हो ?" अब भी चालाकी से मुस्कराते हुए लैंप ऊंचा करके इल्या के चेहरे के सामने लाकर उसने पूछा।

"सभी तरह की चीज़ों की... फ़ीते, सेंट और इसी तरह की छोटी-मोटी चीज़ें..." इल्या ने सिर झुकाकर कहा। उसका सिर चकरा रहा था और उसकी आंखों के सामने लाल धब्बे नाच रहे थे।

"मैं समझा, मैं समझा – सुंदर फ़ीते-लैस के टुकड़े, जिनमें दमकें सुंदर मुखड़े, क्यों ?.. तो, क्या चाहते हो तुम, फेरीवाले ?"

"ओलिंपियादा दनीलोव्ना..."

"उनसे क्या काम है तुम्हें ?"

"कुछ पैसे बाक़ी हैं उनकी तरफ़," इल्या ने अपने आपको मजबूर करते हुए कहा।

उस घिनौने बूढ़े आदमी को देखकर उसके दिल में न जाने क्यों डर समा गया था और उसे उससे नफ़रत हो रही थी। उसकी महीन धीमी आवाज़ और मक्कारी-भरी नज़र में कोई ऐसी बात थी जो इल्या के हृदय को बेधती चली गयी थी, और वह अपमानित और तिरस्कृत अनुभव कर रहा था।

"पैसे ? तुम्हारे पैसे उनकी तरफ़ बाक़ी हैं न ? अच्छी बात है..."

अचानक बूढ़े ने लैंप उसके चेहरे के सामने से हटा लिया और

पंजों के बल खड़े होकर वह अपना पीला चेहरा इल्या के चेहरे के सामने ले आया।

"पर्चा कहां है ?" उसने कटु व्यंग से फुसफुसाकर कहा। "लाओ, पर्चा दिखाओ !"

"कैसा पर्चा ?" इल्या ने डरकर पीछे हटते हुए पूछा।

"तुम्हारे मालिक का। ओलिंपियादा दनीलोव्ना के नाम... लाओ, दो मुझे। मैं ले जाकर उन्हें दे दूंगा... लाओ, जल्दी करो !" बूढ़ा उसकी ओर बढ़ रहा था: डर के मारे इल्या का मुंह सूख गया।

"मेरे पास कोई पर्चा-वर्चा नहीं है !" उसने घोर निराशा से ऊंची आवाज़ में कहा, उसे लग रहा था कि कोई बहुत भयानक अनहोनी बात होनेवाली है।

पर उसी क्षण दरवाज़े में ओलिंपियादा की लंबी सुडौल आकृति दिखायी दी। बड़े निश्चिंत भाव से, पलक तक झपकाये बिना उसने बूढ़े के कंधे के ऊपर से इल्या के चेहरे पर नज़रें जमाकर उसे देखा और बिल्कुल शांत स्वर में कहा:

"क्या बात है, वसीली गव्रीलोविच ?"

"फेरीवाला आया है! कहता है, आपकी तरफ़ कुछ पैसे बाक़ी हैं उसके। फ़ीते ख़रीदे थे आपने ? और पैसे नहीं दिये थे ? वही आया है... अपने पैसे लेने..."

बूढ़ा ओलिंपियादा के सामने फुदक-फुदककर कहता रहा; उसकी नज़रें तीर की तरह कभी इल्या के चेहरे की ओर जातीं और कभी ओलिंपियादा के। अभिमान से अपना दाहिना हाथ घुमाकर ओलिंपियादा ने बूढ़े को अपने पास से हटा दिया, और फिर अपना हाथ ड्रेसिंग-गाउन की जेब में डाला।

"अपने पैसे लेने के लिए तुम्हें कोई और वक़्त नहीं मिला था ?" उसने कठोरता से इल्या से कहा।

"बिल्कुल ठीक !" बूढ़ा महीन आवाज़ में चीख़कर बोला। "बुद्धू, बिल्कुल बुद्धू हो तुम – बेवक़्त जब चाहा चले आये। गदहा कहीं का !"

इल्या पत्थर की तरह खड़ा रहा।

"चिल्लाओ नहीं, वसीली गव्रीलोविच, अच्छा नहीं लगता है,"

11-01118

ओलिंपियादा ने कहा ; फिर इल्या से बोली, "कितने पैसे बाक़ी हैं मेरी तरफ़? तीन रूबल चालीस कोपेक? यह लो..."

"और दफ़ा हो जाओ यहां से!" बूढ़ा फिर चिल्लाया। "मुझे दरवाज़ा बंद करने दीजिये... मैं ख़ुद, मैं ख़ुद..."

उसने अपना गाउन चारों ओर लपेटा और दरवाज़ा खोल दिया।

"निकल जाओ यहां से!.." वह चिल्लाया।

इल्या बाहर सर्दी में खड़ा स्तंभित होकर बंद दरवाज़े को घूर रहा था ; उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह जाग रहा है या कोई बुरा स्वप्न देख रहा है। एक हाथ में वह अपनी टोपी लिये था और दूसरे में – ओलिंपियादा का दिया हुआ पैसा कसकर पकड़े था। वह इसी तरह वहां खड़ा रहा, यहां तक कि उसने महसूस किया कि उसकी खोपड़ी पाले के शिकंजे में जकड़ती जा रही है और ठिठुरन से उसके पांवों में चुभन हो रही है। तभी उसने टोपी अपने सिर पर रखी और पैसे जेब में, अपने दोनों हाथ कोट की आस्तीनों में घुसेड़ लिये और कंधे ऊंचे करके, नज़रें झुकाये हुए धीरे-धीरे सड़क पर चल दिया ; उसका दिल बिल्कुल बर्फ़ का डला बन चुका था और उसकी कनपटियों में ऐसी धमक हो रही थी जैसे उसके सिर में भारी गेंद एक-दूसरे से टकरा रहे हों। उसकी आंखों के सामने उस बूढ़े की काली आकृति तैर रही थी, जिसकी पीली चांद लैंप की ठंडी रोशनी में चमक रही थी।

पोलुएक्तोव उस पर मुस्करा रहा था – विजय-गर्व से, तिरस्कार के साथ और मक्कारी से मुस्करा रहा था...

अगले दिन इल्या शहर की बड़ी सड़क पर धीरे-धीरे ख़ामोशी से चक्कर काट रहा था। बूढ़े की तिरस्कार-भरी नज़रों, ओलिंपियादा की शांत नीली आंखों और उसे पैसे देते हुए उसके हाथ की गति की याद इल्या को रह-रहकर आ रही थी। बर्फ़ के पैने गाले हवा में उड़ते हुए आकर उसके चेहरे पर डंक-से मार रहे थे...

वह अभी एक छोटी-सी दुकान के सामने से गुज़रा था जो एक छोटे-से गिरजाघर और व्यापारी लूकिन की हवेली के बीच छिपी हुई थी। दुकान पर ज़ंग लगा हुआ एक पुराना साइनबोर्ड लटका था जिस पर लिखा था :

'वा० ग० पोलुएक्तोव। महाजन। सोना-चांदी, देव-प्रतिमाओं की सजावट, ज़ेवर-गहने, क़ीमती चीज़ें और पुराने सिक्के तोल के हिसाब से ख़रीदे जाते हैं।'

इल्या को ऐसा लगा कि जब उसने दुकान के दरवाज़े पर नज़र डाली तो दरवाज़े के कांच के पार बूढ़ा खड़ा हुआ था ; वह उसकी ओर खीसें निकालकर हंस रहा था और अपना गंजा सिर हिला रहा था। लुन्योव के दिल में अंदर जाकर उसे पास से देखने की अदम्य इच्छा उत्पन्न हुई। इसके लिए उसे एक बहाना भी तुरंत मिल गया। दूसरे फेरीवालों की तरह इल्या के हाथ में जो पुराने सिक्के आ जाते थे उन्हें वह बचाकर रख लेता था और उन्हें रूबल पीछे बीस कोपेक के मुनाफ़े पर बदल लेता था। उस वक़्त उसके बटुए में इस तरह के कुछ सिक्के भी थे।

वह पीछे वापस गया, हिम्मत के साथ दुकान का दरवाज़ा खोला और बक्से समेत अंदर घुस गया।

"सलाम," उसने टोपी उतारकर कहा।

बूढ़ा पतले-से काउंटर के पीछे बैठा छोटे-से पेंचकश से किसी पुरानी देव-प्रतिमा से चांदी की सजावट उतार रहा था। लड़के पर एक सरसरी-सी नज़र डालकर वह फ़ौरन सिर झुकाकर फिर अपना काम करने लगा।

"क्या चाहिये?" उसने बड़ी रुखाई से कहा।

"मुझे पहचाना?" जाने क्यों इल्या ने पूछा।

बूढ़े ने एक बार फिर नज़र उठाकर उसे देखा।

"शायद पहचाना, तो क्या?.. तुम्हें चाहिये क्या?"

"मेरे पास कुछ पुराने सिक्के हैं।"

"लाओ, देखें..."

इल्या ने अपना बटुआ निकालने के लिए जेब की ओर हाथ बढ़ाया लेकिन दिल की तरह ही, जो बूढ़े के प्रति डर और नफ़रत से कांप रहा था, उसका हाथ भी कांप रहा था और उसे अपनी जेब किसी तरह मिल ही नहीं रही थी। ओवरकोट के अंदर बहकते हाथ से जेब ढूंढते हुए वह अपनी नज़रें उस छोटी-सी गंजी चांद पर जमाये रहा, और उसकी पीठ पर सिहरन की ठंडी लहरें ऊपर-नीचे दौड़ती रहीं...

"क्या हुआ? इतनी देर क्यों लग रही है?" बूढ़े ने झल्लाकर पूछा।

"बस एक मिनट!.." इल्या बोला।

आख़िरकार बटुआ उसे मिल गया। काउंटर के पास जाकर उसने बटुआ उलटकर सारे सिक्के झाड़ दिये। बूढ़े ने उन पर नज़र डाली।

"बस, कुल इतने ही हैं?"

और चांदी के सिक्कों को अपनी पतली-पतली उंगलियों से पकड़कर उसने उन्हें जांचना शुरू किया।

"यह तो कैथरीन महान का... यह आन्ना का... यह भी कैथरीन महान का... यह पावेल का," उसने नाक के सुर में बुदबुदाकर कहा। "यह ... क्या लिखा है, बत्तीस?.. न जाने किसका सिक्का है। लो, इसे रखो तुम – यह तो घिस-घिसकर बिल्कुल चिकना हो गया है।"

"देखने से ही मालूम होता है पच्चीस कोपेक का होगा," इल्या ने झुंझलाकर कहा।

बूढ़े ने सिक्का उसकी ओर फेंक दिया और जल्दी से तिजोरी की दराज़ खोलकर उसमें कुछ खोजने लगा।

इल्या ने बांह घुमाकर बूढ़े की कनपटी पर ज़ोर से एक घूंसा मारा। सूदखोर पीछे की ओर गिरा और उसका सिर दीवार से टकराया, लेकिन दूसरे ही क्षण वह आगे झपटा और आकर काउंटर पर टिक गया और उसने अपनी सूखी हुई गर्दन इल्या की ओर बढ़ायी। लुन्योव को उसके छोटे-से काले चेहरे पर चमकती हुई आंखें दिखायी दे रही थीं, उसे उसके होंट हिलते हुए दिखायी दे रहे थे, उसे उसकी भर्रायी हुई ऊंची फुसफुसाहट सुनायी दे रही थी:

"दया करो... मुझ पर दया करो..."

"कुत्ते का पिल्ला!" इल्या ने कहा और बेहद नफ़रत से वह बूढ़े का गला घोंटने लगा। वह उसकी गर्दन कसकर पकड़े था और उसे झंझोड़ रहा था; बूढ़े ने उसके सीने पर दोनों हाथ टिका लिये और हांपती हुई आवाज़ें निकालने लगा। उसकी आंखें फैल गयीं और उनमें ख़ून उतर आया, उनमें से आंसू बहने लगे; काले मुंह में से उसकी जीभ बाहर लटक आयी थी और इस तरह हिल रही थी मानो हत्या करनेवाले को मुंह चिढ़ा रही हो। इल्या ने अपने हाथों पर गरम-गरम राल टपकती हुई महसूस की। बूढ़े के गले में किसी चीज़ की ख़र-ख़र की आवाज़ हुई और वह घरघराहट के साथ सांस लेने लगा;

उसकी सर्द मुड़ी हुई उंगलियां लुन्योव की गर्दन को छू रही थीं। इल्या ने दांत भींचकर अपना सिर जितना भी हो सका पीछे हटा लिया और बूढ़े के हल्के-फुल्के शरीर को हवा में उठाकर ज़्यादा से ज़्यादा ज़ोर से झंझोड़ने लगा। अगर उस क्षण पीछे से इल्या के सिर पर वार भी किया जाता तब भी वह उस गर्दन पर, जो उसकी उंगलियों में चरमरा रही थी, अपनी पकड़ ढीली न करता। बेहद डर और नफ़रत से वह देख रहा था कि बूढ़े की धुंधली-सी आंखें लगातार बड़ी होती जा रही थीं; उसने उसकी गर्दन को और कसकर मरोड़ा, और जैसे-जैसे बूढ़े का शरीर भारी होता गया, वैसे-वैसे उसके दिल का बोझ हल्का होता गया। आख़िरकार उसने बूढ़े को दूर झटक दिया, और उसका निर्जीव शरीर हल्की-सी थप की आवाज़ के साथ काउंटर के पीछे जा गिरा।

लुन्योव ने चारों ओर नज़र डाली: दुकान ख़ाली थी और हर तरफ़ सन्नाटा था; बाहर बर्फ़ ज़ोर से गिर रही थी। फ़र्श पर इल्या के पांव के पास साबुन की दो बट्टियां, उसका बटुआ और फ़ीते का लच्छा पड़ा हुआ था। वह समझ गया कि ये चीज़ें उसी के बक्से में से गिरी होंगी और उसने उन्हें उठाकर वापस रख लिया। फिर उसने काउंटर के ऊपर झुककर एक नज़र बूढ़े को देखा: वह काउंटर और दीवार के बीच की संकरी जगह में पड़ा हुआ था; उसका सिर सीने पर लुढ़क गया था, इसलिए सिर्फ़ उसकी गुद्दी पर की पीली खाल दिखायी दे रही थी। उसी वक़्त इल्या की नज़र तिजोरी की खुली हुई दराज़ पर पड़ी: उसमें चांदी और सोने के चमचमाते हुए सिक्के और नोटों की कुछ गड्डियां भरी हुई थीं। जल्दी से झपटकर उसने एक गड्डी उठायी, फिर दूसरी, फिर एक और, और उन्हें अपनी क़मीज़ में ठूंस लिया...

वह बड़े इतमीनान से दुकान के बाहर निकला और कोई तीन क़दम जाकर रुक गया और उसने अपना बक्सा मोमजामे से अच्छी तरह ढक लिया; फिर वह अदृश्य ऊंचाइयों से गिरती हुई बर्फ़ के घने बवंडर में चलता चला गया। उसके बाहर और उसके अंदर एक ठंडा और चिपचिपा धुंधलका चुपके-चुपके हिल-डुल रहा था। उस धुंधलके में घूरते हुए उसे अपनी आंखों में अचानक हल्का-हल्का दर्द महसूस

हुआ। उसने अपनी आंखों को दाहिने हाथ से छुआ और सहमकर रुक गया जैसे उसके पांव वहीं जमकर रह गये हों। उसे ऐसा लगा कि उसकी आंखें बूढ़े पोलुएक्तोव की आंखों की तरह अपने कोटरों में से बाहर निकल आयी हैं; उसे महसूस हो रहा था कि जब तक वह ज़िंदा रहेगा तब तक उसकी आंखें ऐसी ही रहेंगी, बाहर की ओर निकली हुई और दर्द करती हुई, वे कभी बंद नहीं होंगी और सभी लोग उनमें उसके अपराध की कहानी पढ़ सकेंगे। ऐसा लग रहा था कि जैसे उसकी आंखें मर गयी हों। उसने अपनी उंगलियों से आंख की पुतलियों को छुआ: बहुत दर्द हुआ, लेकिन वह अपनी पलकें बंद नहीं कर सका। उसकी सांस डर के मारे तेज़ चलने लगी। आखिरकार वह किसी तरह अपनी आंखें बंद करने में कामयाब हो गया और चारों ओर से अंधेरे में घिर जाने पर उसे इतनी खुशी हुई कि वह आंखें बंद किये वहीं खड़ा रहा – दृष्टिहीन, निश्चल, सांस के साथ हवा के बड़े-बड़े घूंट पीता हुआ... उसे पास से गुज़रते हुए किसी आदमी का धक्का लगा। उसने मुड़कर देखा। भेड़ की खाल का कोट पहने हुए कोई लंबा-सा आदमी था। जब तक वह आदमी बर्फ़ के सफ़ेद गालों के मंडराते हुए ढेर में खो नहीं गया तब तक वह उसे देखता रहा। फिर अपनी टोपी ठीक करके वह लंबे-लंबे डग भरता हुआ सड़क की पटरी पर चलने लगा; उसे अपनी आंखों की पीड़ा का और अपने सिर में बोझ का आभास था। उसके कंधे झटका खा रहे थे, उसके हाथों की उंगलियां रह-रहकर अनायास सिकुड़ जाती थीं, उसके दिल में हठधर्मी की ढिठाई समाती जा रही थी, और उसका सारा डर निकाले दे रही थी।

चौराहे पर पहुंचकर उसे एक पुलिसवाले की भूरी आकृति दिखायी दी। अनचाहे ही वह धीरे-धीरे, बहुत ही धीरे-धीरे सीधा उसके पास चला गया। उसका दिल डूबने लगा...

"बहुत बर्फ़ है!" पुलिसवाले के एकदम पास आकर और उसको ग़ौर से देखते हुए उसने कहा।

"है न! भगवान की कृपा है, अब सर्दी कम हो जायेगी," पुलिसवाले ने बहुत खुश होकर जवाब दिया। उसका चेहरा बड़ा-सा और लाल रंग का था और उसके दाढ़ी थी।

"क्या बजा है?" इल्या ने पूछा।

"एक मिनट रुको!" पुलिसवाले ने अपनी बांह पर से बर्फ़ झाड़कर कोट के अंदर हाथ डाला। इल्या को इस आदमी के सामने खड़े रहकर अत्यंत वीभत्स आनंद मिल रहा था। अचानक वह अनमनेपन से रूखी हंसी हंस दिया।

"हंस किस बात पर रहे हो?" पुलिसवाले ने उंगली के नाख़ून से घड़ी का ढक्कन खोलते हुए कहा।

"देखो, तुम्हारे ऊपर बर्फ़ कैसी जमा हो गयी है!" इल्या चिल्लाया।

"ऐसे तूफ़ान में यह कोई ऐसी अजीब बात तो है नहीं। डेढ़ बजा है... एक बजकर पच्चीस मिनट हुए हैं। ऐसी बर्फ़ तो किसी पर भी जमा हो सकती है, भाई! लेकिन तुम्हें क्या? तुम तो अभी शराबख़ाने में जाओगे, वहां गर्मी में बैठे रहोगे। शाम को छः बजे तक यहां खड़ा तो मुझे रहना पड़ेगा... देखो तो तुम्हारे बक्से पर कितनी बर्फ़ जमा हो गयी है..."

आह भरकर पुलिसवाले ने खट से अपनी घड़ी बंद कर दी।

"यह तो ठीक कहते हो, मैं जाकर शराबख़ाने में बैठ जाऊंगा," इल्या मुंह टेढ़ा करके मुस्कराते हुए बोला। "वहां उसवाले में..." उसने जाने क्यों जोड़ दिया।

"मुझे ललचाओ नहीं..." पुलिसवाले ने कहा।

इल्या खिड़की के पासवाली जगह पर जाकर बैठ गया जहां से वह जानता था कि वह पोलुएक्तोव की दुकान से मिला हुआ छोटा-सा गिरजाघर देख सकता था। लेकिन इस वक़्त हर चीज़ को बर्फ़ के एक सफ़ेद पर्दे ने ढक रखा था। चक्कर काटकर नीचे ज़मीन पर गिरते हुए बर्फ़ के गाले वह बड़े ग़ौर से देखता रहा, जिनकी वजह से क़दमों के सारे निशानों को जैसे रूई की एक मोटी परत ढके ले रही थी। उसका दिल ज़ोर से और बहुत तेज़ी से धड़क रहा था, लेकिन वह बहुत खुश था। वह बड़ी देर तक कुछ सोचे बिना बैठा इंतज़ार करता रहा कि आगे क्या हो।

जब वेटर चाय लेकर आया तो वह पूछे बिना रह न सका: "बाहर क्या हो रहा है... कुछ नहीं?"

"गर्मी बढ़ गयी है," वेटर ने उतावलेपन से कहा और तेज़ी

से चला गया। इल्या ने अपने लिए गिलास में चाय उंडेली लेकिन पी नहीं, यहां तक कि वह हिला भी नहीं, वह ध्यान केंद्रित करके इंतज़ार करता रहा। उसे गर्मी लगी, वह अपने कोट का कालर खोलने लगा और ठोड़ी को हाथ लगाते ही वह चौंक पड़ा: उसे लगा कि वे उसके हाथ नहीं थे, किसी और के हाथ थे। ठंडे, अजनबी हाथ। हाथ अपने चेहरे के सामने करके वह बड़े ध्यान से अपनी उंगलियों को देखने लगा। उन पर कोई धब्बे नहीं थे, फिर भी लुन्योव ने सोचा कि उन्हें साबुन से धो लेना ही अच्छा होगा...

"पोलुएक्तोव का ख़ून हो गया!" किसी ने चिल्लाकर कहा।

इल्या उछलकर खड़ा हो गया, मानो यह आवाज़ उसके लिए कोई आवाहन हो। लेकिन शराबख़ाने में खलबली मच गयी; लोग चलते-चलते अपनी टोपियां पहनते हुए उठकर दरवाज़े की ओर चल पड़े। उसने वेटर की ट्रे में दस कोपेक का एक सिक्का फेंका, अपने बक्से का तसमा कंधे पर सरकाया और दूसरों के साथ वह भी जल्दी-जल्दी बाहर निकल गया।

सूदख़ोर की दुकान के बाहर भीड़ जमा हो गयी थी। दुकान में पुलिसवालों की आवाजाही लगी हुई थी और वे चिंतित स्वर में चिल्ला-चिल्लाकर कुछ कह रहे थे। वह दाढ़ीवाला सिपाही, जिससे इल्या ने बात की थी, यहां भी था। वह भीड़ को अंदर जाने से रोकने के लिए दरवाज़े पर खड़ा था; वह डरी-डरी आंखों से लोगों को देख रहा था और अपना बायां गाल मल रहा था, जो अब दाहिने गाल से ज़्यादा लाल था। इल्या ऐसी जगह जाकर खड़ा हो गया जहां वह पुलिस-वाला उसे देख सके और लोगों की बातें सुनने लगा। उसकी बग़ल में एक लंबा-सा, कठोर मुद्रावाला व्यापारी खड़ा था जिसके काली दाढ़ी थी; वह भवें चढ़ाकर एक बूढ़े की बात सुन रहा था जो लोमड़ी की खाल का कोट पहने था और उत्तेजित स्वर में कुछ कह रहा था।

"तो लड़के ने सोचा कि उसे दौरा पड़ गया है या ऐसा ही कुछ हो गया है और वह प्योत्र स्तेपानोविच को बुला लाने के लिए भागा – 'दुकान में चलिये,' वह बोला, 'मालिक बहुत बीमार हैं।' सो प्योत्र भागा हुआ आया और देखा कि वह तो मर चुका है! ज़रा सोचो–कभी कहीं सुना है ऐसा? दिन-दहाड़े, ऐसी चलती हुई सड़क पर! देखो तो क्या हुआ!"

काली दाढ़ीवाला व्यापारी ज़ोर से खांसा।

"इसमें भगवान की मर्ज़ी का हाथ है!" उसने कठोरता से भारी आवाज़ में कहा। "बात साफ़ है कि भगवान पोलुएक्तोव को उसके पापों के लिए माफ़ नहीं करना चाहता था..."

लुन्योव बोलनेवाले की सूरत ज़्यादा अच्छी तरह देखने के लिए आगे बढ़ा और उसका बक्सा उससे जा टकराया।

"ज़रा देखके!" व्यापारी ने इल्या को अपनी कुहनी से धक्का दिया और उसके चेहरे को पैनी नज़रों से घूरते हुए चिल्लाया। "कहां घुस रहा है?"

फिर वह उसी छोटे-से बूढ़े आदमी की ओर मुड़ा। "लिखा है, जब तक भगवान की मर्ज़ी नहीं होगी तब तक आदमी का बाल भी बांका नहीं हो सकता।"

"बिल्कुल ठीक बात है," बूढ़े ने सिर हिलाकर कहा और फिर अपनी आवाज़ धीमी करके और आंख मारकर जोड़ दिया, "भगवान बदमाशों पर नज़र रखता है... भगवान मुझे माफ़ करे! इस तरह कहना – पाप है, पर चुप नहीं रह सकता हूं... यही बात है!"

इल्या दबी हुई हंसी हंस दिया। ये बातें सुनते हुए उसने अपने अंदर कोई ताक़त और ऐसी हिम्मत उमड़ती हुई महसूस की जो भयानक भी थी और सुखद भी। अगर उस वक़्त किसी ने उससे पूछा होता, "क्या तुमने उसका ख़ून किया है?" तो वह यक़ीनन निडर होकर जवाब देता, "हां, मैंने किया है।"

दिल में यही भावना लेकर वह भीड़ को चीरता हुआ दुकान के दरवाज़े तक पहुंच गया।

"कहां जा रहे हो?" पुलिसवाले ने उसका कंधा झंझोड़कर कहा। "यहां तुम्हारा क्या काम है? भागो यहां से!"

इल्या लड़खड़ाकर एक तमाशबीन से जा टकराया। उसे फिर धक्का दिया गया।

"दो इसे एक ज़ोर का हाथ! पिये होगा!"

लुन्योव भीड़ से बाहर निकलकर गिरजाघर की सीढ़ियों पर जा बैठा और मन ही मन इन सब लोगों पर हंसने लगा। धीमी आवाज़ों और पांवों तले बर्फ़ की चरमराहट को चीरती हुई अलग-अलग लोगों

की बातें उसके कान तक आ रही थीं :

"और उस बदमाश को भी यह काम उसी वक़्त करना था जब मैं ड्यूटी पर था!"

"कुछ भी हो, शहर में उसका कारोबार सबसे बड़ा था..."

"इतनी बर्फ़ में मुझे कुछ भी नहीं दिखायी देता..."

"वह पलक झपकाये बिना लोगों की खाल तक खींच लेता था..."

"देखो, उसकी बीवी आ गयी..."

"बेचारी!" चीथड़ों में लिपटे हुए एक आदमी ने कहा।

लुन्योव ने उठकर देखा कि भारी बदन की एक बूढ़ी औरत ढीला-ढाला ओवरकोट पहने और सिर पर काली शाल डाले बहुत कोशिश करके चौड़ी-सी बर्फ़गाड़ी पर से उतर रही है, जिसमें चारों ओर ओढ़ने के लिए रीछ की खाल लगी हुई थी। एक ओर से पुलिसवाला उसे सहारा दे रहा था और दूसरी ओर से लाल मूंछोंवाला एक आदमी।

"हे दयालु भगवन्!.." इल्या ने उसे भयभीत आवाज़ से कहते सुना। भीड़ में ख़ामोशी छा गयी। उसे देखते हुए इल्या को ओलिंपियादा का ख़्याल आया...

"उसका बेटा है यहां?" किसी ने धीरे से पूछा।

"नहीं, वह मास्को में है।"

"शायद वह इसी दिन की राह देख रहा होगा..."

"बेशक!"

लुन्योव बहुत ख़ुश था कि किसी को पोलुएक्तोव के मरने का अफ़सोस नहीं था, इसके साथ ही काली दाढ़ीवाले उस व्यापारी को छोड़कर ये बाक़ी सारे लोग उसे बुद्धिहीन और यहां तक कि घिनौने लगते थे। उस व्यापारी में एक तरह की कठोरता और सच्चाई थी, लेकिन बाक़ी सब लोग जंगल में खड़े हुए ठूंठों की तरह थे जो इल्या को धक्का देकर अपनी गंदी ज़बान से द्वेष-भरी बातें कर रहे थे।

जब सूदख़ोर की छोटी-सी लाश बाहर निकाल लायी गयी तो इल्या सर्दी से ठिठुरता और थका हुआ घर लौट आया, लेकिन उसका मन शांत था। अपना कमरा बंद करके वह पैसा गिनने लगा: छोटे नोटों की दो मोटी गड्डियों में पांच-पांच सौ रूबल थे और तीसरी गड्डी में साढ़े आठ सौ। कूपनों की एक गड्डी और थी, लेकिन उसने

उन्हें गिनने की फ़िक्र नहीं की। उसने सारा पैसा एक काग़ज़ में लपेटा और मेज़ पर कुहनियां टिकाये सोचने लगा कि उसे कहां छिपाये। उसी समय उसने महसूस किया कि उसे नींद-सी आने लगी है। उसने सारा पैसा अटारी में छिपा देने का फ़ैसला किया और उसे हाथ में लिये हुए बाहर निकला; उसने उसे किसी की नज़रों से बचाने की कोई कोशिश नहीं की। ड्योढ़ी में उसकी मुठभेड़ याकोव से हो गयी।

"इतनी जल्दी घर आ गये?" याकोव ने कहा। "वह हाथ में क्या है?"

"यह?" इल्या ने पैसे की ओर देखते हुए कहा; उसके शरीर में सच बोलने के भय की एक हल्की लहर-सी दौड़ गयी, लेकिन उसने बड़ी लापरवाही से पैकेट हिलाते हुए जल्दी से कहा, "यह... फ़ीता है..."

"हम लोगों के साथ चाय पीने आते हो?" याकोव ने पूछा।

"अभी एक मिनट में।"

वह जल्दी से वहां से चल दिया; उसके क़दम डगमगा रहे थे और उसका सिर ऐसा भारी-भारी और धुंधला-धुंधला लग रहा था जैसे उसने शराब पी रखी हो। बड़ी सावधानी से वह अटारी की सीढ़ियां चढ़ा; उसे डर लग रहा था कि कहीं कोई शोर न मचाये, कहीं उसे कोई मिल न जाये। जब वह धुआंरे के पास ज़मीन खोदकर उसमें पैसा गाड़ रहा था उसे अचानक ऐसा लगा कि कोई कोने में छिपा बैठा है और उसे देख रहा है। सबसे पहले तो उसके जी में आया कि कोने में एक पत्थर फेंककर मारे, लेकिन सचेत होकर वह चुपचाप नीचे उतर गया। उसे अब बिल्कुल डर नहीं लग रहा था; उसने पैसे के साथ ही मानो अपना डर भी गाड़ दिया था। लेकिन अब शंकाओं ने उसे आ घेरा था।

"मैंने उसका ख़ून क्यों किया?" वह अपने आपसे पूछता रहा।

जब वह तहख़ानेवाले कमरे में घुसा तो माशा, जो चूल्हे के पास समोवार गर्म करने में व्यस्त थी, ख़ुश होकर चिल्ला पड़ी:

"आज कितनी जल्दी आ गये!"

"बर्फ़ की वजह से," उसने कहा, लेकिन अगले ही क्षण वह चिड़चिड़ाकर चिल्लाया, "जल्दी क्यों? मैं तो हमेशा इसी वक़्त घर आता हूं। दिखायी नहीं देता तुम्हें? अंधेरा हो गया है।"

"यहां तहखाने में तो हमेशा ही अंधेरा रहता है। मगर तुम चिल्ला क्यों रहे हो?"

"क्योंकि तुम सब लोग जासूसों की तरह बातें करते हो: 'कहां जा रहे हो?', 'घर इतनी जल्दी क्यों आ गये?', 'तुम्हारे हाथ में क्या है?' तुमसे मतलब!"

माशा ने उसे ग़ौर से देखा।

"तुम अपने आपको बहुत समझने लगे हो, इल्या," उसने झिड़ककर कहा।

"भाड़ में जाओ तुम सब!" और यह कहकर लुन्योव मेज़ पर बैठ गया। अपमानित होकर माशा ने मुंह फेर लिया और समोवार फूंकने लगी। वह छोटी-सी दुबली-पतली लड़की वहां खड़ी अपनी काली लटें बार-बार पीछे हटा रही थी, खांस रही थी और धुएं के मारे उसकी आंखें बंद हुई जा रही थीं। उसका चेहरा दुबला-पतला था और उसकी आंखों के नीचे के काले-काले घेरों की वजह से उसकी आंखें ज़्यादा चमकदार लग रही थीं। देखने में वह बाग़ के किसी दूर कोने में झाड़-झंखाड़ के बीच उगे हुए फूल जैसी लगती थी। इल्या बैठा उसे देखता रहा और मन ही मन सोचता रहा – यह लड़की बिल्कुल अकेली इस बिल में रहती है और बड़ों की तरह काम करती है; इसकी ज़िंदगी में न कोई सुख इस वक़्त है न आगे चलकर मिलने की कोई उम्मीद है। दूसरी तरफ़, ख़ुद वह जल्दी ही उस क़िस्म की ज़िंदगी बसर करने लगेगा जिसकी वह अरसे से तमन्ना रखता था: शांत और साफ़-सुथरे वातावरण में। यह विचार बहुत सुखद था और माशा के सामने अपने आपको अपराधी महसूस करके उसने धीरे से उसे पुकारा।

"क्या चाहिये, लड़ाकू मुर्ग़े?" वह बोली।

"तुम्हें मालूम है न कि मैं... ए... दुष्ट हूं," लुन्योव बोला। उसकी आवाज़ लड़खड़ायी: वह दुविधा में पड़ा हुआ था कि उसे बता दे कि नहीं। वह सीधी खड़ी हो गयी और उसकी ओर देखकर मुस्करा दी।

"कोई तुम्हारी वैसी पिटाई करनेवाला नहीं है जैसी कि तुम्हारी होनी चाहिये, यही मामला है!"

वह जल्दी से उसके पास चली गयी और उतावलेपन से बोली,

"सुनो, इल्या, अपने चाचा से कहो कि मुझे अपने साथ लेते जायें! कहो न! मैं जनम-भर तुम्हारा उपकार मानूंगी!"

"तुम्हें कहां ले जायें?" लुन्योव ने थके हुए स्वर में कहा; वह अपने विचारों में इतना खोया हुआ था कि उसे बहुत धुंधला-धुंधला ही अंदाज़ा था कि वह क्या कह रही है।

"अपने साथ! उनसे कहो तो, कहो न!"

उसने अपने दोनों हाथ इस तरह जोड़ लिये मानो प्रार्थना कर रही हो और उसकी आंखों में आंसू डबडबा आये।

"अरे, कितना अच्छा होगा!" वह आह भरकर बोल रही थी। "हम लोग वसंत में चल देंगे। मैं रोज़ यही सोचती रहती हूं। रात को भी मैं इसी के सपने देखती हूं – मैं देखती हूं कि मैं चली जा रही हूं, चली जा रही हूं... उनसे कहो न मुझे ले जाने को! मेहरबानी करके! वह तुम्हारी बात मान लेंगे। कहो कि उन्हें ले ही जाना पड़ेगा। मैं उनकी रोटी नहीं खाऊंगी। ख़ुद अपने लिये भीख मांगकर ले आया करूंगी। लोग मुझे दे देंगे, मैं इतनी छोटी जो हूं... मेरे अच्छे इल्या, कहो न उनसे! चाहो तो मैं तुम्हारा हाथ चूम लूंगी?"

सहसा वह उसका हाथ पकड़कर उस पर झुक गयी। उसे ढकेलकर इल्या उछलकर खड़ा हो गया।

"बेवक़ूफ़ कहीं की!" वह चिल्लाकर बोला। "ऐसा न करो! इन हाथों से मैंने एक आदमी का गला घोंटा है।"

पर अपने ही शब्दों से भयभीत होकर उसने जल्दी से बात बनाते हुए जोड़ दिया:

"हो सकता है... मैंने, हो सकता है, कोई ऐसा काम किया हो... और तुम चूम रही हो।"

"कोई बात नहीं," माशा ने उसके पास आते हुए कहा। "मैं फिर भी चूमूंगी, उससे क्या फ़र्क़ पड़नेवाला है? पेत्रूख़ा तो तुमसे भी बुरा है, लेकिन मैं तो खाने के हर टुकड़े के लिए उसका हाथ चूमती हूं। मुझे इससे नफ़रत होती है, लेकिन वह मुझे इसके लिए मजबूर करता है। 'चूमो!' वह कहता है। और वह मेरा बदन भी टटोलता है, गाल नोचता है और मुझे सहलाता भी है, दरिंदा बेशर्म आदमी।"

किसी वजह से – शायद इसलिए कि इल्या ने वे भयानक शब्द

कह दिये थे, या शायद इसलिए कि उसने सचमुच उन्हें कहा नहीं था – अचानक उसके दिल का बोझ हल्का हो गया और वह ख़ुश हो गया।

"अच्छी बात है, तुम्हारी ख़ातिर मैं यह काम कर दूंगा," उसने बड़े प्यार से माशा की ओर देखकर मुस्कराते हुए नरमी से कहा। "मैं सचमुच कर दूंगा। तुम उसके साथ जाओगी... और मैं तुम्हें कुछ पैसा भी दूंगा।"

"कितने प्यारे हो तुम!" उछलकर उसके गले में बांहें डालते हुए माशा ने चिल्लाकर कहा।

"ठहरो!" इल्या ने गंभीर होकर कहा। "मैंने कह दिया जाओगी, तो जाओगी! और मेरे लिए प्रार्थना करना, माशा..."

"तेरे लिए? अरे भगवान!"

उसी वक़्त दरवाज़े पर याकोव दिखायी दिया।

"चीख़ किस बात पर रही हो?" उसने माशा से आश्चर्य से पूछा। "बाहर आंगन तक तुम्हारी आवाज़ सुनायी दे रही थी!"

"याकोव!" वह ख़ुशी के मारे हांपते हुए चिल्लायी और याकोव को सुनाने लगी: "मैं जा रही हूं। मैं इस जगह से हमेशा के लिए जा रही हूं! अलविदा! इसने कुबड़े से कहने का वादा किया है!"

"तो यह बात है!" याकोव ने धीमे से सीटी बजाते हुए कहा। "ख़ैर, मेरा तो ख़ात्मा समझो। अब मैं बिल्कुल अकेला रहूंगा, जैसे आसमान में चांद अकेला होता है..."

"साथ रहने के लिए कोई आया नौकर रख लेना," इल्या ने हंसकर कहा।

"मैं वोदका पीने लगूंगा," सिर हिलाकर याकोव बोला।

माशा ने एक नज़र उसे देखा और सिर झुकाये दरवाज़े की ओर चली गयी।

"तुम भी कैसे कमज़ोर आदमी हो, याकोव," बड़े उदास भाव से माशा की निंदा-भरी आवाज़ सुनायी दी।

"और तुम दोनों बहुत ताक़तवर हो! आदमी को इस तरह छोड़े जा रहे हो..."

उदास होकर वह इल्या के सामने एक कुर्सी पर बैठ गया। "मैं भी क्यों न तेरेंती के साथ ही चुपके से खिसक जाऊं?" उसने कहा।

"ज़रूर चले जाओ। तुम्हारी जगह मैं होता तो यही करता..."

"तुम करते! मेरा बाप मेरे पीछे पुलिस लगवा देगा..."

इसके बाद कुछ देर चुप्पी रही, जिसे सबसे पहले याकोव ने तोड़ा।

"शराब पीकर मदहोश हो जाना भी कितनी अच्छी बात है, भाइयो!" उसने बनावटी ख़ुशी के साथ कहा। "न कुछ जानना... न किसी चीज़ के बारे में सोचना..."

"लानत है तुम्हारे ऊपर!" माशा ने समोवार मेज़ पर रखते हुए कहा।

"ज़बान बंद करो!" याकोव ने चिढ़कर कहा। "तुम्हारे लिए तो बाप का होना न होना बराबर है। वह तो तुम्हारी ज़िंदगी में कोई रोड़ा नहीं अटकाता।"

"अरे, हां! मैं तो बड़े चैन की ज़िंदगी बिता रही हूं! मेरा बस चलता तो मैं तो भाग जाती और कभी पलटकर देखती भी नहीं।"

"हम में से सभी का बुरा हाल है!" इल्या ने धीमे स्वर में कहा और फिर विचारमग्न हो गया।

याकोव स्वप्नमय-सा खिड़की के बाहर देखता रहा।

"कितना अच्छा हो अगर हम सब कुछ छोड़कर कहीं दूर जा सकें!" वह बोला। "जंगल के छोर पर, नदी के किनारे जा बैठें और सभी चीज़ों के बारे में सोचते रहें..."

"बेवक़ूफ़ी है ज़िंदगी से दूर भाग जाना," इल्या ने चिढ़कर कहा।

याकोव ने उसे ज़ोर से घूरा और कुछ डर से कहा:

"सुनो, मुझे एक किताब मिलने में कामयाबी तो हुई है..."

"कैसी किताब?"

"पुरानी किताब है... चमड़े की जिल्द की, जैसी भजनों की किताब होती है। उसे किसी विधर्मी ने लिखा होगा। मैंने उसे एक तातार से सत्तर कोपेक में ख़रीदा था।"

"क्या नाम है?" इल्या ने लापरवाही से पूछा। उसकी बात करने की कोई इच्छा नहीं हो रही थी, लेकिन वह महसूस कर रहा था कि बात न करना ख़तरनाक था।

"नाम तो फट गया है, लेकिन सारी किताब इसके बारे में है कि यह दुनिया शुरू कैसे हुई।" आवाज़ धीमी करके याकोव सुना रहा

था। "पढ़ने में बहुत कठिन है... उसमें कहा गया है कि सबसे पहले मिलेतस के थेल्स ने सारी चीज़ों की शुरूआत के बारे में पूछा था: 'और उसका नाम जल है, और जल ही से सारी चीज़ें पैदा हुई हैं और पैदा हो रही हैं, लेकिन थेल्स ने कहा था कि ईश्वर का नाम है विचार, जिससे जल और उससे उत्पन्न होनेवाली सारी चीज़ें उत्पन्न होती हैं।' और फिर एक और विधर्मी हुआ, जिसका नाम था डायागोरस, जिसने कहा, 'बुद्धि ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करती है।' दूसरे शब्दों में, वह ईश्वर में विश्वास नहीं रखता था। एक और आदमी था, जिसका नाम था एपीक्यूरस, जिसने कहा, 'ईश्वर का अस्तित्व तो है, लेकिन वह न तो किसी को कुछ देता है, न किसी के साथ कोई उपकार करता है, न ही उसे इस संसार की बातों की कोई चिंता है।' दूसरे शब्दों में, ईश्वर है तो, लेकिन उसे इंसानों की रत्ती-भर परवाह नहीं है – मैं तो इसका मतलब यही समझा हूं। जैसे भी बन पड़े वे अपना काम चलायें। इनसे उसे कोई सरोकार नहीं।"

इल्या भवें चढ़ाये हुए उठा, और उसने अपने दोस्त के विचारों के मंद प्रवाह को बीच में ही काट दिया।

"मेरा जी चाहता है कि वह किताब लेकर तुम्हारे सिर पर दे मारूं," वह बोला।

"लेकिन क्यों?" याकोव ने पूछा; उसके दिल को ठेस लगी थी और वह भौचक्का रह गया था।

"इसलिए कि तुम फिर कभी उसे न देखो। तुम तो निरे बुद्धू हो ही, लेकिन जिसने यह किताब लिखी थी वह तुमसे बड़ा बुद्धू था।"

लुन्योव मेज़ का चक्कर काटकर याकोव के पास आया और उसके ऊपर झुककर खड़ा हो गया।

"भगवान है! वह सब कुछ देखता है! वह सब कुछ जानता है! और भगवान के अलावा किसी की कोई हैसियत नहीं है!" उसने ये शब्द बड़ी कटुता से आवेश के साथ कहे, और एक-एक शब्द याकोव के बड़े-से सिर पर हथौड़े की चोटों की तरह लगा। "यह जीवन तो हमारी परीक्षा लेने के लिए दिया गया था। पाप एक प्रलोभन है – हम उसका मुक़ाबला कर सकते हैं या नहीं? अगर नहीं कर सकते तो हमें दंड दिया जायेगा। ज़रूर दंड दिया जायेगा। लोग दंड नहीं देंगे, दंड भगवान देगा। यह बात पक्की है।"

"रुको!" याकोव ऊंचे स्वर में बोला। "मैं इसकी बात नहीं कर रहा था।"

"उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता! तुम मेरा इंसाफ़ कैसे कर सकते हो?" लुन्योव क्रोध और उत्तेजना से पीला होकर चिल्लाया। "जब तक भगवान की मर्ज़ी नहीं होगी तब तक आदमी का बाल भी बांका नहीं हो सकता। यह बात तुमने सुनी है? इसका मतलब है कि जो अपराध मैंने किया है वह उसकी जानकारी में किया गया है और उसकी इच्छा से किया गया है! बुद्धू!"

"तुम पागल तो नहीं हो गये हो?" भयभीत याकोव दीवार पर पीठ टिकाकर चिल्लाया। "कौन-सा पाप किया है तुमने?"

लुन्योव के कानों में जो गूंज हो रही थी उसे बेधकर यह सवाल उसे सुनायी दिया, और ऐसा लगा कि जैसे किसी ने उस पर ठंडा पानी डाल दिया हो। उसने याकोव पर संदेहभरी दृष्टि डाली, फिर माशा पर; वह भी उसकी चिल्लाहट और उत्तेजना से उतनी ही भयभीत हो गयी थी।

"वह तो मैंने एक मिसाल दी थी," इल्या ने धीमे स्वर में कहा।

"तुम्हें ज़रूर कुछ हो गया है," माशा ने डरते-डरते कहा।

"तुम्हारी आंखें भी कुछ धुंधली दिखायी देती हैं," याकोव ने इल्या के चेहरे को देखते हुए जोड़ दिया।

इल्या ने अनायास ही अपनी आंखों पर हाथ फेरा।

"कोई बात नहीं है... यह तो आनी-जानी बात है!" उसने क्षीण स्वर में कहा।

लेकिन दूसरे लोगों के बीच रहना उसके लिए असह्य होता जा रहा था, इसलिए चाय पीने से इंकार करके वह अपने कमरे में चला आया।

वह अभी चारपाई पर लेटा ही था कि तेरेंती अंदर आ गया। जब से उस कुबड़े ने अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए तीर्थ-यात्रा करने का फ़ैसला किया था तब से उसकी आंखों में एक आनंद-मय चमक आ गयी थी, मानो अपनी मोक्ष का आनद उसे अभी से मिलने लगा हो। अपने होंटों पर मुस्कराहट लिये वह चुपचाप अपने भतीजे की चारपाई के पास जाकर खड़ा हो गया और अपनी दाढ़ी नोचते हुए बड़ी नरमी से बोला:

12-01118

"मैंने तुम्हारे अंदर आने की आहट सुनी तो सोचा कि तुमसे कुछ बातें कर लूं – अब हम लोगों को बहुत देर साथ नहीं रहना है।"

"तुम जा रहे हो?" इल्या ने रूखेपन से पूछा।

"जैसे ही सर्दी कुछ कम होगी। मैं ईस्टर तक कियेव पहुंच जाना चाहता हूं..."

"बात यह है, माशा को अपने साथ लेते जाओ..."

"माशा!" कुबड़े ने चौंककर हाथ हिलाते हुए ऊंचे स्वर में कहा।

"सुनो," इल्या ने दृढ़ता से कहा। "यहां उसके रहने से कोई फ़ायदा नहीं है। और फिर उसकी उम्र भी ऐसी है... तुम तो जानते ही हो... याकोव है... और पेत्रूख़ा है... मेरा मतलब समझ रहे हो न? इस घर पर श्राप है, यह घर एक फंदा है! उसे यहां से निकाल ले जाना होगा, और फिर वह शायद यहां कभी वापस न आये।"

"लेकिन मैं उसका करूंगा क्या?" कुबड़े ने दुःखी होकर कहा।

"ले जाओ। ले जाओ उसे!" इल्या ने आग्रह किया। "और वे सौ रूबल भी ले जाओ उसके लिए... मुझे तुम्हारा पैसा नहीं चाहिये... वह तुम्हारे लिए दुआ मांगेगी और उसकी दुआओं में बहुत असर है..."

कुबड़ा सोच में पड़ गया और उसने दोहराया: "बहुत असर है... यह तो सच है... मैं तुम्हारा पैसा तो नहीं ले सकता – उसे तो वैसे ही रहने देते हैं। रही माशा की बात – तो उसके बारे में मैं सोचूंगा..."

उसी क्षण तेरेंती की आंखें उल्लास से चमक उठीं और वह झुककर इल्या के कान में उत्साह के साथ फुसफुसाने लगा:

"कल कैसे कमाल के आदमी से मिला मैं! बहुत मशहूर आदमी है – प्योत्र वसील्येविच सिज़ोव – कभी सुना है उसके बारे में? बड़ा विद्वान है। कैसी ज्ञान की बातें भरी हुई हैं उसके दिमाग़ में! मेरे मन को शांति देने के लिए मानो भगवान ने खुद उसे मेरे पास भेजा हो – मुझ पापी को अपने प्रति भगवान की कृपा में शंका से बचाने के लिए..."

इल्या चुपचाप लेटा रहा, कुछ बोला नहीं। वह चाहता था कि चाचा वहां से चला जाये। अधखुली आंखों से वह खिड़की के पार ऊंची काली दीवार को घूरता रहा।

"हम लोगों ने पाप और आत्मा के उद्धार के बारे में बातें कीं," तेरेंती उत्सुकता से कहता रहा। "वह बोला, 'जिस तरह रुखानी पर धार रखने के लिए सिल्ली की ज़रूरत होती है, उसी तरह मनुष्य की आत्मा को तोड़ने-मरोड़ने के लिए पाप की ज़रूरत होती है, ताकि उसे दयालु ईश्वर के चरणों में राख में फेंका जा सके।"

इल्या ने चाचा की ओर देखा।

"क्या उसकी सूरत शैतान जैसी थी, तुम्हारे उस विद्वान आदमी की?" उसने कटुता-भरी मुस्कराहट के साथ पूछा।

"कैसी बात करते हो तुम!" तेरेंती भतीजे से पीछ हटते हुए चिल्लाया। "वह बहुत धर्मात्मा आदमी है... अरे, उसने जितना नाम कमाया है उतना तो तुम्हारे दादा ने भी कभी नहीं कमाया... अरे, इल्या, इल्या!" और इतना कहकर कुबड़ा अपना सिर निंदा से हिलाने लगा और अपने होंट चबाने लगा।

"अच्छी बात है!" इल्या ने रूखेपन से और द्वेष की भावना से कहा। "और क्या कहा उसने?"

इल्या अरुचि के भाव से हंसा जिसे देखकर उसके चाचा के चेहरे पर आश्चर्य का भाव झलक उठा।

"तुम्हें क्या हो गया है?" तेरेंती ने पीछे हटते हुए पूछा।

"कुछ भी नहीं। बहुत ही बढ़िया बात कही उस विद्वान आदमी ने... मुझे अच्छी लगी। सच तो यह है कि मैं भी यही सोचता हूं!"

एक सेकंड तक कुछ बोले बिना वह अपने चाचा को घूरता रहा, और फिर उसने अपना मुंह दीवार की ओर फेर लिया।

"और इसके अलावा," तेरेंती ने बड़ी सतर्कता से कहना शुरू किया, "उसने कहा कि पाप आत्मा को पश्चात्ताप से उत्तेजित करता है, ताकि वह सर्वशक्तिमान के सिंहासन तक पहुंच सके..."

"तुम खुद कुछ-कुछ शैतान जैसे लगते हो, चाचा," इल्या ने बात काटते हुए कहा और फिर हंसा।

कुबड़े ने बड़ी लाचारी से अपने हाथ हिलाये जैसे कोई बड़ी-सी चिड़िया अपने पंख फड़फड़ा रही हो; फिर वह निश्चल हो गया, डरा हुआ और आहत-सा। लुन्योव अचानक अपने पांव चारपाई के नीचे उतारकर बैठ गया और उसने चाचा को बग़ल की ओर से धीरे से धक्का दिया।

"ज़रा खिसको," उसने तीखे स्वर में कहा।

तेरेंती उछलकर कमरे के बीच में जाकर खड़ा हो गया, उसने अपना कूबड़ झिटका और कुछ न समझती हुई आंखों से अपने भतीजे को देखने लगा, जो सिर झुकाये, कंधों को ऊपर किये अपनी उंगलियों से चारपाई का कगर पकड़े बैठा था।

"और अगर मैं प्रायश्चित न करना चाहूं, तो?" इल्या ने दृढ़ स्वर में पूछा। "अगर मैं इस तरह तर्क दूं: मेरे मन में पाप करने का कोई विचार नहीं था – अपने आप ही वह हो गया ... सब कुछ भगवान की इच्छा से किया जाता है ... तो मैं चिंता क्यों करूं? वह सब कुछ जानता है और हर बात का निर्देश देता है ... अगर वह न चाहता होता कि मैं ऐसा करूं तो वह मुझे रोकता। पर उसने मुझे नहीं रोका; इसलिए मेरा यह काम करना ठीक था। सभी लोग पाप का जीवन बिताते हैं, लेकिन क्या उनमें से कभी कोई प्रायश्चित करता है?"

"मेरी समझ में तो तुम्हारी बात तनिक भी नहीं आती," तेरेंती ने उदास भाव से आह भरकर कहा।

इल्या हंस दिया।

"अगर तुम्हारी समझ में नहीं आती तो मुझसे बात न करो ..."

वह फिर चारपाई पर लेट गया।

"मेरा जी अच्छा नहीं है ..." उसने चाचा से कहा।

"सो तो देख रहा हूं मैं ..."

"मुझे नींद आ रही है। तुम जाओ यहां से!"

जब इल्या अकेला रह गया तो उसे लगा कि उसका सिर चकरा रहा है। पिछले कुछ घंटों के अनुभवों ने अजीब ढंग से मिलकर कुछ भारी, गर्म भाप का रूप धारण कर लिया था और वह उसके दिमाग़ को दहका रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह न जाने कब से यह यातना झेल रहा था, मानो जब उसने उस बूढ़े की हत्या की थी तब से केवल कुछ घंटे नहीं बल्कि न जाने कितने युग बीत गये थे।

उसने अपनी आंखें मूंद लीं और निश्चल पड़ा रहा; उसके कानों में बूढ़े का क्षीण स्वर गूंजता रहा:

"क्या हुआ? इतनी देर क्यों लग रही है?"

उसके दिमाग़ में काली दाढ़ीवाले व्यापारी की कठोर आवाज़ माशा के विनय-भरे आग्रह के साथ, और याकोव की धर्मद्रोही किताब के प्राचीन शब्द उस विद्वान आदमी की बातों के साथ गड्ड-मड्ड हुए जा रहे थे। हर चीज़ झोंके खा रही थी और हिल रही थी और उसे निरंतर घसीटकर नीचे लिये जा रही थी। काश उसे नींद आ जाती और वह सब कुछ भूल जाता! वह सो गया ...

सुबह जब वह सोकर उठा तो दीवार पर पड़ती हुई छाया से उसे पता चला कि मौसम अच्छा था और सर्दी पड़ रही थी। उसने पिछले दिन की घटनाओं को याद किया और उसके मन में यह विश्वास पैदा हुआ कि वह जानता था कि उसे क्या आचरण अपनाना चाहिये। घंटे भर बाद वह अपना बक्सा सीने पर लटकाये सड़क पर चला जा रहा था; सूरज की चमक से बचने के लिए अपनी आंखें सिकोड़कर वह गुज़रते हुए राहगीरों को घूर रहा था। जब वह गिरजाघर के पास पहुंचा तो हमेशा की तरह उसने अपनी टोपी उतारकर सीने पर सलीब का निशान बनाया। पोलुएक्तोव की बंद दुकान से मिले हुए गिरजाघर के पास पहुंचकर उसने फिर अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया और शांत भाव से अपने रास्ते चल दिया। उसके मन में न भय था न करुणा और न ही वह किसी दूसरी परेशान करनेवाली भावना का अनुभव कर रहा था। दोपहर को शराबख़ाने में खाना खाते समय उसने अख़बार में सूदख़ोर की दुस्साहसिक हत्या का विवरण पढ़ा। जब वह इन शब्दों पर पहुंचा कि "पुलिस हत्यारे आ पता लगाने की भरपूर कोशिश कर रही है," तो वह मुस्करा दिया और उसने अपना सिर हिलाया। उसे पूरा यक़ीन था कि जब तक वह ख़ुद ही न चाहे, वे उसका पता कभी नहीं लगा पायेंगे ...

उसी दिन शाम को ओलिंपियादा की नौकरानी उसके पास उसका एक पर्चा लेकर आयी।

"कुज़्नेत्स्काया स्ट्रीट के नुक्कड़ पर हम्माम के पास आकर नौ बजे मुझसे मिलो।"

यह पढ़कर उसका अंतरतम तक इस तरह कांपने और सिकुड़ने लगा जैसे उसे सर्दी लग रही हो। उसे अपनी रखैल के चेहरे की उस समय

की तिरस्कार-भरी मुद्रा याद आयी जब उसने ये चुभते हुए दिल दुखाने-वाले शब्द कहे थे:

"अपने पैसे लेने के लिए तुम्हें कोई और वक़्त नहीं मिला था?"

वह पर्चे को घूरता रहा और सोचता रहा कि ओलिंपियादा ने उसे क्यों बुलाया होगा। संभावित कारण का अनुमान लगाकर उसका दिल डूबने लगा। नौ बजे वह बतायी हुई जगह पर पहुंच गया और जब उसने हम्माम के सामने अकेली और जोड़ों में टहलती हुई औरतों के बीच ओलिंपियादा की लंबे डील-डौलवाली आकृति को देखा तो उसका भय और भी बढ़ गया। वह एक पुराना और फटा हुआ फ़र का कोट पहने थी और उसने अपने सिर पर एक शाल लपेट रखी थी जिसकी वजह से आंखों को छोड़कर उसका सारा चेहरा ढक गया था। वह कुछ कहे बिना क़दम आगे बढ़ाकर उसके सामने आ गया।

"चले आओ!" उसने कहा और दबे स्वर में जोड़ दिया, "चेहरा छिपाने के लिए कोट का कालर खड़ा कर लो..."

वे हम्माम के गलियारे में से होकर आगे बढ़े और एक प्राइवेट कमरे में खो गये; दोनों ने अपने चेहरे इस तरह छिपा रखे थे जैसे लज्जित हों। वहां पहुंचकर ओलिंपियादा ने अपनी शाल फ़ौरन उतार फेंकी, और इल्या उसके शांत चेहरे को, जिस पर सर्दी से लाली दौड़ गयी थी, देखकर आश्वस्त हो गया। लेकिन साथ ही उसने यह भी महसूस किया कि उसे शांत देखकर वह ख़ुश नहीं था। ओलिंपियादा कोच पर उसकी बग़ल में बैठ गयी और बड़े प्यार से उसकी आंखों में आंखें डालकर देखने लगी।

"तो, मेरे सपनों के राजा, जल्दी ही तुम्हें और मुझे छानबीन करनेवाला बुलवायेगा," वह बोली।

"क्यों?" इल्या ने अपनी मूंछ पर से पिघलती हुई बर्फ़ पोंछते हुए कहा।

"अरे, तुम भी कैसी नासमझों जैसी बातें करते हो!" उसने हल्के-से व्यंग से कहा।

अचानक उसकी त्योरियों पर बल पड़ गये और उसने कानाफूसी के स्वर में कहा:

"आज एक जासूस मेरे यहां आया था।"

इल्या ने उसकी ओर देखकर रूखेपन से कहा:

"उनसे मुझे क्या लेना-देना, तुम्हारे जासूसों और तुम्हारे मामलों से! सीधी बात बताओ: तुमने मुझे बुलवाया क्यों था?"

ओलिंपियादा ने उसे तिरस्कार-भरी मुस्कराहट से देखा।

"अच्छा तो रूठ गये तुम!" वह बोली। "ख़ैर, मेरे पास अभी इन बातों के लिए वक़्त नहीं है। मैं तुमसे यह कहना चाहती थी: अगर छानबीन करनेवाला तुम्हें बुलवाये और तुमसे पूछे कि पहली बार तुम मुझसे कब मिले थे, क्या तुम अकसर मुझसे मिलते थे, और बाक़ी सारी बातें, तो सब कुछ सच-सच बता देना; जो कुछ जैसा था, सब बता देना, सच-सच... पूरे ब्योरे के साथ, समझ गये?"

"समझ गया," इल्या हंसकर बोला।

"अगर वह तुमसे बूढ़े के बारे में पूछे तो कह देना कि तुमने उसे कभी नहीं देखा। कभी नहीं। तुम्हें उसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम। तुम्हें यह भी नहीं मालूम था कि मुझे किसी ने रख छोड़ा है। सुना?"

उसकी दृष्टि में कठोरता थी और वह उस पर उसका प्रभाव डालना चाहती थी; उससे एक हल्की-हल्की गुदगुदी पैदा हो रही थी जो इल्या को सुखद लग रही थी। वह महसूस कर रहा था कि ओलिंपियादा उससे डर रही थी। वह उसे छेड़ना चाहता था, और इसलिए वह आंखें सिकोड़कर उसे देख रहा था और एक शब्द भी कहे बिना मुस्करा रहा था। ओलिंपियादा का चेहरा पीला पड़ गया और उसके शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ गयी।

"इल्या! तुम मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो?" उसने उससे पीछे हटते हुए क्षीण स्वर में कहा।

"मैं झूठ क्यों बोलूं?" उसने खीसें निकालकर कहा। "मैंने बूढ़े को तुम्हारे यहां देखा था।"

संगमरमर की मेज़ पर अपनी कुहनियां टिकाकर वह धीरे-धीरे और मंद स्वर में बोलता रहा, उसके बोलने के ढंग में उदासी और उग्रता थी जो अचानक उसके दिल में उभर आयी थी।

"उसे देखते ही मैंने अपने मन में कहा था, 'यही आदमी है जो मेरे रास्ते में रुकावट बना खड़ा है; इसी आदमी ने मेरी ज़िंदगी तबाह कर दी है।' और अगर मैंने उसी वक़्त उसका ख़ून नहीं कर दिया, तो..."

"यह झूठ है!" ओलिंपियादा ने मेज़ पर ज़ोर से हथेली पटकते हुए चिल्लाकर कहा। "यह झूठ है! वह तुम्हारे रास्ते में कभी नहीं आया।"

"वह नहीं आया, नहीं आया वह?" इल्या ने कठोर स्वर में कहा।

"नहीं, वह नहीं आया। अगर तुम चाहते तो मैं उससे पीछा छुड़ा लेती ... मैंने तुमसे कहा नहीं था, इशारा नहीं किया था कि किसी भी वक़्त मैं उसे निकाल सकती हूं? लेकिन तुमने कहा ही नहीं। तुम बस हंसते रहे। तुम्हें मुझसे सचमुच कभी प्यार था ही नहीं ... तुमने अपनी मर्ज़ी से मेरे मामले में उसके साथ साझा बनाये रखा।"

"चुप रहो! ज़बान बंद करो अपनी!" इल्या उछलकर चिल्लाया। लेकिन वह फ़ौरन ही बैठ गया, क्योंकि ओलिंपियादा ने अपने उलाहने से उसे मानो धक्का दे दिया था।

"मैं चुप रहना नहीं चाहती!" वह बोली। "इतने जवान हो तुम, इतने ताक़तवर ... और मैं तुमसे इतना प्यार करती हूं ... और तुमने मेरे लिए क्या किया है? क्या तुमने मुझसे यह बात कभी कही, 'एक को चुन लो, ओलिंपियादा: वह या मैं?' क्या यह बात कही तुमने? नहीं कही। तुम भी बाक़ी मर्दों की तरह भाड़े के प्रेमी हो ..."

इल्या तिलमिला उठा।

"ख़बरदार, तुम्हारी यह मजाल!" वह एक बार फिर उछलकर चिल्लाया। उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया और उसने अपनी मुट्ठियां भींच लीं।

"शायद तुम मुझे मारना चाहोगे?" ओलिंपियादा ने जलकर कहा; उसकी आंखें अचानक चमक उठीं। "मारो! मारो, मैं भी दरवाज़ा खोलकर चिल्लाऊंगी कि तुमने उसका ख़ून किया है और मेरे कहने पर तुमने ऐसा किया है! मारो, मारते क्यों नहीं!"

एक क्षण के लिए इल्या सहम गया। पर डर उसके दिल में चुभकर ही गायब हो गया।

फिर वह कोच पर बैठ गया और कुछ देर बाद फीकी-सी हंसी हंस दिया। उसने देखा कि ओलिंपियादा अपना होंट काट रही थी और साबुन और गीली छाल की बू से बसे हुए उस गंदे कमरे में

अपनी आंखों से मानो कुछ ढूंढ रही थी। अब वह दरवाज़े के पास एक दूसरी कोच पर सिर झुकाये बैठी थी।

"हंसो, ख़ूब हंसो, शैतान कहीं के!"

"ज़रूर मैं ऐसा ही करूंगा ..."

"पहली बार जब मैंने तुम्हें देखा था तो मैंने सोचा था, 'यही तो है वह जिसकी मैं राह देख रही थी, वह जो मुझे मदद देगा ...'"

"ओलिंपियादा!" इल्या ने बड़ी नरमी से कहा।

वह चुप बैठी रही, हिली तक नहीं।

"ओलिंपियादा!" इल्या ने दोहराया; फिर अथाह गर्त्त में छलांग लगाते हुए आदमी की संवेदना के साथ बोला, "बूढ़े का ख़ून मैंने किया है ... सचमुच।"

वह चौंक पड़ी, उसने अपना सिर उठाया और आंखें फाड़े उसे घूरती रही। उसके होंट कांपने लगे और बहुत कोशिश करके मानो हांपते हुए उसने कहा:

"मू-रख ..."

इल्या देख रहा था कि वह सहम गयी थी, लेकिन उसकी बात पर उसे यक़ीन नहीं आया था। अपने होंटों पर घबराहट-भरी मुस्कराहट लिये वह जाकर उसकी बग़ल में बैठ गया। अचानक ओलिंपियादा ने उसका सिर दोनों हाथों से पकड़कर अपनी छातियों से सटा लिया और पागलों की तरह उसके बालों को चूमने लगी।

"तुम मेरा बना-बनाया खेल क्यों बिगाड़ना चाहते हो?" उसने कानाफूसी के स्वर में रुखाई से कहा। "मैं तो ख़ुश थी कि उसका ख़ून हो गया ..."

"मैंने ही किया था," इल्या ने सिर हिलाकर फिर कहा।

"चुप!" वह आतंकित होकर चिल्लायी। "मैं ख़ुश हूं कि उसका ख़ून कर दिया गया। मैं तो चाहती हूं कि उन सबका ख़ून कर दिया जाये – उन सबका जिन्होंने कभी मुझे हाथ लगाया है! बस एक तुमको छोड़कर। मैं जितने लोगों से भी मिली हूं उनमें तुम्हीं अकेले ऐसे हो जिसके अंदर आत्मा है!"

उसके शब्द इल्या को उसके और निकट खींच रहे थे; उसने अपना चेहरा उसकी छातियों से और कसकर सटा लिया और बड़ी देर तक

उसे इसी तरह सटाये रहा, हालांकि उसे सांस लेने में भी कठिनाई हो रही थी। वह समझ गया कि वह उसके सबसे निकट थी और यह कि उसकी ज़रूरत उसे जितनी इस वक़्त थी उतनी इससे पहले कभी नहीं थी।

"जब मुझे त्योरियां चढ़ाकर देखते हो, मेरे राजा बाबू, तब मुझे अंदाज़ा होता है कि मेरी अपनी ज़िंदगी कितनी घिनौनी है, और इसीलिए मैं तुमसे प्यार करती हूं – तुम्हारे इसी अभिमान की वजह से ..."

इल्या के सिर पर आंसुओं की बड़ी-बड़ी बूंदें टप-टप गिरने लगीं, और उनका स्पर्श अनुभव करके वह भी रोने लगा – सारे बंधन तोड़कर, बेझिझक रोने लगा।

ओलिंपियादा उसका सिर ऊपर उठाकर उसकी गीली आंखों, होंटों और गालों को चूमते हुए बोली:

"तुम्हें मेरे रूप से प्यार है, यह मैं जानती हूं। लेकिन तुम दिल से मुझे प्यार नहीं करते और मेरी बुराई करते हो। मैं जिस तरह की ज़िंदगी बसर करती हूं उसके लिए तुम मुझे माफ़ नहीं कर सकते ... और उस बूढ़े की वजह से ..."

"उसकी बात मत करो," इल्या ने कहा। उसने उसके रूमाल के छोर से अपना मुंह पोंछा और उठकर खड़ा हो गया।

"जो होना है सो हो," उसने धीरे से दृढ़तापूर्वक कहा। "अगर भगवान किसी को सज़ा देना चाहेगा, तो वह उसे कहीं से भी खोज निकालेगा। तुमने जो कुछ कहा, ओलिंपियादा, उसके लिए तुम्हारा शुक्रिया। तुम ठीक कहती हो, मैं तुम्हारे सामने दोषी हूं ... मैं समझता था कि तुम ऐसी नहीं हो ... लेकिन मैं देखता हूं कि तुम हो ... अच्छा, मैं तुम्हारे सामने दोषी हूं ..."

उसकी आवाज़ उखड़ गयी, उसके होंट कांपने लगे, उसकी आंखें लाल हो गयीं। वह धीरे-धीरे अपने कांपते हाथ से बिखरे हुए बालों को सहलाने लगा; फिर अचानक उसने अपने हाथ हिलाये और रुआंसी आवाज़ में बोला:

"सारा क़सूर मेरा है! लेकिन क्यों? आखिर क्यों?"

ओलिंपियादा ने उसका हाथ थाम लिया और वह कोच पर उसकी बग़ल में बैठ गया और उसकी बात अनसुनी करके बोला:

"तुम्हारी समझ में नहीं आता, मैंने उसका ख़ून किया है! मैंने!"

"शि:!" ओलिंपियादा ने भयभीत होकर कहा।

ओलिंपियादा ने उसे कसकर अपनी बांहों में भींच लिया और अपनी आंखों में भय लिये उसे देखती रही।

"सुनो सब कुछ अचानक ही हो गया," वह बोला। "भगवान ही जानता है मेरा कोई इरादा नहीं था। मैं तो बस एक बार फिर उसका थोबड़ा देखना चाहता था ... मैं बस दुकान में गया था। मैंने कभी सपने में भी ऐसा काम करने की बात नहीं सोची थी। और फिर अचानक – यह हो गया। शैतान मुझे ऐसा करने के लिए उकसाता रहा और भगवान ने मुझे रोका नहीं ... लेकिन पैसा लेने का मुझे अफ़सोस है। मुझे यह नहीं करना चाहिये था ... हाय!"

उसने संतोष की गहरी सांस ली, मानो उसके दिल पर से कोई पपड़ी उतर गयी हो। कांपती हुई औरत उसे और कसकर अपनी बांहों में जकड़ती जा रही थी और उसके कान में जल्दी-जल्दी कुछ उखड़े-उखड़े शब्द कह रही थी:

"पैसा लेकर तुमने अच्छा ही किया। अब इसे डाका समझा जायेगा, वरना वे इसे जलन समझते ..."

"मैं अपना अपराध मानूंगा नहीं," इल्या ने विचारमग्न होकर कहा। "भगवान मुझे सज़ा देना चाहे तो दे ... ये लोग मेरा इंसाफ़ नहीं कर सकते। उन्हें अधिकार क्या है? मुझे आज तक कोई आदमी ऐसा नहीं मिला जिसने पाप न किया हो ..."

"हे भगवान!" ओलिंपियादा ने गहरी सांस लेकर कहा। "अब क्या होनेवाला है? मेरी जान! मैं कुछ भी नहीं कर सकती ... न सोच सकती हूं ... न बोल सकती हूं ... लेकिन अब हम लोगों को यहां से चलना चाहिये।"

वह उठ खड़ी हुई और इस तरह झूमी जैसे शराब पिये हो। लेकिन अपनी शाल सिर पर लपेटकर वह शांत स्वर में बोली:

"अब हम करेंगे क्या, इल्या? क्या यही हमारा अंत है?"

इल्या ने इंकार में अपना सिर हिलाया।

"तो," वह बोली, "तुम छानबीन करनेवाले को सब कुछ सच-सच बता देना ..."

"मैं बता दूंगा ..." वह बोला। "तुम समझती हो कि मैं अपना बचाव नहीं कर सकता? तुम समझती हो कि मैं उस बूढ़े के लिए यह होने दूंगा कि मुझे क़ैदी बनाकर यहां से दूर भेज दिया जाये? अरे नहीं! यह मेरा अंत नहीं है, क़तई नहीं, समझ गयीं?"

उत्तेजना से उसका चेहरा लाल हो गया और उसकी आंखें चमकने लगीं।

"क्या, पैसा दो हज़ार लिया था तुमने?" ओलिंपियादा ने उसकी ओर झुककर चुपके से पूछा।

"दो से कुछ ऊपर ..."

"बेचारा मेरा! वहां भी भाग्य ने साथ नहीं दिया!"

इल्या ने उस पर एक नज़र डाली और निराशा से बोला:

"तुम समझती हो कि मैंने यह काम पैसे के लिए किया था? तुम्हारी समझ में नहीं आता?.. रुको, पहले मैं जाऊंगा। मर्द हमेशा पहले जाते हैं ..."

"जल्दी ही आकर मुझसे मिलना ... कोई वजह नहीं है कि हम लोग मुंह छिपाये फिरें। जल्दी!" उसने घबराते हुए कहा।

उन्होंने बड़ी देर तक ज़ोर से एक-दूसरे को चूमा, और फिर लुन्योव बाहर चला गया। सड़क पर निकलकर उसने एक गाड़ीवाले को बुलाया और गाड़ी पर बैठकर जाते हुए वह बराबर पीछे मुड़-मुड़कर देखता रहा कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। ओलिंपियादा से बातें करके उसके दिल पर से बोझ उतर गया था और उस औरत के प्रति सद्भावना पैदा हुई थी। जब उसने ख़ून करने का अपराध मान लिया था तो एक बार भी उसने उसका दिल नहीं दुखाया था, न अपने शब्दों से और न अपने देखने के अंदाज़ से, और न ही उसने उसकी ओर से मुंह फेरा था, बल्कि उसने मानो अपराध का कुछ हिस्सा अपने ज़िम्मे ले लिया था। उससे कुछ ही मिनट पहले तक, जब तक उसे कुछ भी पता नहीं था, वह उसे नष्ट कर देनेवाली थी। और वह ऐसा कर भी देती – उसके चेहरे के भाव में इल्या ने यह बात साफ़ देख ली थी ... उसके बारे में सोचते हुए इल्या बड़े प्यार से मुस्करा दिया।

लेकिन अगले ही दिन उसे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे वह कोई जंगली जानवर है जिसके पीछे शिकारी कुत्ते पड़े हुए हैं।

पेत्रूखा ने, जिससे वह बहुत सबेरे शराबख़ाने में मिला था, उसके सलाम के जवाब में सिर थोड़ा-सा हिला दिया था और ख़ास ध्यान से उसे देखा था। तेरेंती भी उसे टकटकी बांधकर देखते हुए बस आह भरकर रह गया था। याकोव ने उसे माशा के कमरे में चलने को कहा, जहां उसने उसे भयभीत स्वर में बताया:

"कल रात एक पुलिसवाला यहां आया था और मेरे बाप से तुम्हारे बारे में तरह-तरह के सवाल पूछ रहा था। क्यों?"

"किस तरह के सवाल?" इल्या ने निश्चिंत भाव से पूछा।

"किस तरह के आदमी हो तुम, शराब पीते हो कि नहीं ... और औरतों के बारे में ... उसने किसी ओलिंपियादा का नाम भी लिया था – पूछ रहा था कि हमें उसके बारे में कुछ मालूम है। इसका मतलब क्या है?"

"मुझे क्या मालूम?" इल्या ने कहा और बाहर चला गया।

उसी दिन शाम को उसके नाम ओलिंपियादा का एक और पर्चा आया। उसमें लिखा था:

"उन लोगों ने मुझसे तुम्हारे बारे में पूछताछ की थी। मैंने उन्हें सब कुछ विस्तार से बता दिया है। सारा मामला बिल्कुल सीधा-सादा है और तनिक भी डरने की बात नहीं है। घबराओ नहीं। ढेरों प्यार, मेरे राजा।"

इल्या ने पर्चा आग में डाल दिया। पेत्रूखा के घर में और शराबख़ाने में सभी लोग उस सूदख़ोर की हत्या की चर्चा कर रहे थे। जो क़िस्से सुनाये जाते थे उन्हें सुनने में इल्या को बड़ा मज़ा आता था। इन लोगों ने जो परिस्थितियां अपने मन से गढ़ ली थीं उनका विवरण उनसे पूछकर उसे बहुत ख़ुशी होती थी, और यह महसूस करके कि अगर वह चाहता तो बस इतना कहकर उन सबको स्तब्ध कर सकता था:

"हत्यारा मैं हूं!"

कुछ चर्चाओं में उसकी चालाकी और हिम्मत को सराहा जाता था, कुछ में इस बात पर खेद प्रकट किया जाता था कि उसे सारा पैसा ले जाने का समय नहीं मिला, कुछ दूसरी चर्चाओं में यह

आशा प्रकट की जाती थी कि वह पकड़ा नहीं जायेगा। लेकिन किसी एक आदमी को भी उस सूदख़ोर के मरने का अफ़सोस नहीं था और न ही किसी ने उसकी प्रशंसा में कभी कोई शब्द कहा था। मारे गये आदमी के प्रति उनके हृदय में कोई दया न होने की वजह से सभी लोगों के प्रति इल्या की तिरस्कार की भावना और पक्की हो गयी। वह पोलुएक्तोव के बारे में नहीं सोचता था, बल्कि इस बात के बारे में सोचता था कि उसने बहुत बड़ा अपराध किया था और उसे उसका जवाब देना होगा। लेकिन यह अनुभूति उसे विचलित नहीं करती थी ; वह उसकी चेतना में स्थिर पड़ी थी, वह उसके अस्तित्व का एक अंग बन गयी थी। चोट की सूजन की तरह, जब तक वह उसे छूता नहीं था तब तक कोई पीड़ा नहीं होती थी। उसे पक्का विश्वास था कि वह घड़ी आयेगी जब भगवान, जो सब कुछ जानता था और जो अपने नियम भंग करने के लिए कभी किसी को क्षमा नहीं कर सकता था, उसे दंड देगा। किसी भी क्षण अपने उचित दंड को स्वीकार करने के लिए अपनी इस विरक्त तत्परता की वजह से वह लगभग बिल्कुल शांत रहता था। लेकिन अब वह दूसरों की बुराइयों को ज़्यादा कड़ी आलोचना की दृष्टि से देखने लगा था।

वह अधिक उदास और खोया-खोया रहने लगा था, लेकिन पहले की तरह सुबह से शाम तक शहर की सड़कों पर वह अब भी फेरी लगाता था, शराबख़ानों में बैठता था, लोगों को ध्यान से देखता था, और वे जो कुछ भी कहते थे उसे कान लगाकर सुनता था। एक दिन जब उसे अटारी में छिपाकर रखी गयी रक़म की याद आयी तो उसने सोचा कि उसके लिए कोई दूसरी जगह खोजनी चाहिये, लेकिन फिर उसने अपने मन में कहा, "नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा। जहां है वहीं रहने दो... अगर तलाशी होगी तो रक़म बरामद हो जायेगी और तब मैं अपना अपराध मान लूंगा!"

लेकिन न तलाशी हुई और न ही छानबीन करनेवाले ने उसे बुलवाया। मंतलब यह कि छठे दिन तक नहीं। जांच के दफ़्तर जाने से पहले इल्या ने नीचे पहनने के कपड़े बदले, अपना सबसे अच्छा सूट पहना और अपने जूतों पर पालिश की। उसने वहां जाने के लिए किराये की एक बर्फ़गाड़ी ली और सड़क की गहरी लीकों पर उछलती हुई

गाड़ी पर वह निश्चल और सीधा बैठा रहा, क्योंकि उसके अंदर की हर चीज़ कसे हुए तार की तरह ऐसी तनी हुई थी कि उसे लगता था कि ज़रा-सा भी झटका लगने से कुछ टूट जायेगा। इसी वजह से वह दफ़्तर की सीढ़ियां भी धीरे-धीरे और बड़ी सावधानी से चढ़ा, मानो वह शीशे के खोल में बंद हो।

छानबीन करनेवाले ने, जो सुनहरे फ़्रेम का चश्मा लगाये घुंघराले बालों और चोंचदार नाकवाला एक नौजवान आदमी था, इल्या को देखकर पहले अपने पतले-पतले सफ़ेद हाथ ज़ोर से आपस में रगड़े, फिर अपना चश्मा उतारा, उसे रूमाल से पोंछने लगा और अपनी बड़ी-बड़ी काली आंखों से इल्या के चेहरे का निरीक्षण करने लगा। इल्या ने कुछ कहे बिना झुककर सलाम किया।

"आइये, कैसे हैं? बैठिये... यहां..."

उसने बड़ी-सी मेज़ के पास, जिस पर उन्नाबी रंग की बनात का मेज़पोश बिछा हुआ था, पड़ी हुई एक कुर्सी की तरफ़ इशारा किया। बैठते-बैठते इल्या ने अपनी कुहनी से हल्का-सा धक्का देकर मेज़ के सिरे पर रखे हुए कुछ काग़ज़ों को एक तरफ़ खिसका दिया। यह देखकर छानबीन करनेवाले ने बड़ी शिष्टता से उन काग़ज़ों को वहां से हटा दिया। फिर वह इल्या के सामने मेज़ के पास बैठ गया और कुछ बोले बिना एक किताब के पन्ने पलटने लगा ; बीच-बीच में वह अपनी झुकी हुई भवों के नीचे से आंखें उठाकर इल्या पर एक नज़र डाल लेता था। इस ख़ामोशी को एक बोझ बनता देखकर इल्या ने छानबीन करनेवाले से मुंह फेरकर चारों ओर कमरे में नज़र दौड़ायी ; ऐसा ख़ूबसूरत सजा हुआ और साफ़-सुथरा कमरा उसने पहली बार देखा था। दीवार पर कुछ तस्वीरें टंगी थीं, जिनमें से एक तस्वीर में ईसा मसीह उदास, विचारमग्न और अकेले खंडहरों के बीच सिर झुकाये चलते हुए दिखाये गये थे ; उनके पांव के पास ज़मीन पर हथियार और लाशें बिखरी हुई थीं, और पीछे पृष्ठभूमि में धधकती हुई आग से धुआं लहराता हुआ ऊपर उठ रहा था। इल्या बड़ी देर तक उस तस्वीर को घूरता रहा और उसका अर्थ समझने की कोशिश करता रहा। वह कुछ पूछने ही जा रहा था कि छानबीन करनेवाले ने किताब धड़ से बंद कर दी। इल्या ने चौंककर उसकी ओर देखा। उस आदमी की मुद्रा में कठोरता

और रूखापन आ गया था और उसने अपने होंट हास्यास्पद ढंग से आगे निकाल रखे थे मानो कोई बात उसे बुरी लगी हो।

"अच्-छा!" उसने मेज़ पर अपनी उंगलियां पटपटाते हुए आवाज़ खींचकर कहा। "इल्या याकोव्लेविच लुन्योव है आपका नाम, अगर मैं ग़लती नहीं कर रहा हूं?"

"जी हां..."

"कुछ आपको अंदाज़ा है कि मैंने आपको क्यों बुलाया है?"

"नहीं," इल्या ने कहा और चुपके से एक नज़र फिर तस्वीर पर डाली। कमरा साफ़-सुथरा और शांत और आकर्षक था। इल्या ने इससे पहले कभी इतनी सफ़ाई और इतनी सुंदर चीज़ें नहीं देखी थीं। और छानबीन करनेवाले के चारों ओर एक सुखद सुगंध फैली हुई थी। इन सब बातों की वजह से उसका जी बहल रहा था, उसके दिमाग़ को शांति मिल रही थी और उसके मन में ईर्ष्या के विचार उठ रहे थे:

"देखो तो, कैसे रहता है! चोरों और ख़ूनियों को पकड़नेवाले की भी अच्छी आमदनी होती होगी... उसे इस काम का कितना मिलता होगा?"

"कुछ भी अंदाज़ा नहीं है?" छानबीन करनेवाले ने आश्चर्य से फिर दोहराया। "ओलिंपियादा दनीलोव्ना ने बताया नहीं आपको?"

"जी नहीं। मैं उनसे बहुत दिन से नहीं मिला..."

छानबीन करनेवाला झटके के साथ पीछे कुर्सी पर टेक लगाकर बैठ गया और उसने फिर अपने होंट हास्यास्पद ढंग से आगे निकाल लिये।

"कब से?"

"याद नहीं... मैं समझता हूं... आठ-नौ दिन हुए होंगे..."

"मैं समझा! उसके घर पर पोलुएक्तोव से आपकी मुलाक़ात अकसर होती थी?"

"उस बूढ़े से जिसका ख़ून हुआ था?" इल्या ने छानबीन करनेवाले की आंखों में आंखें डालकर कहा।

"हां! वही बूढ़ा जिसका ख़ून हुआ था।"

"मैं उससे कभी नहीं मिला..."

"कभी नहीं?! हुंह..."

"कभी नहीं..."

इसके बाद छानबीन करनेवाले ने ताबड़-तोड़ कई सवाल किये, और जब इल्या, जो बड़े इतमीनान से उनका जवाब दे रहा था, किसी सवाल का जवाब देने में बहुत समय लगाता था तो वह अधीरता से अपनी उंगलियों से मेज़ को पटपटाने लगता था।

"क्या आप जानते थे कि ओलिंपियादा दनीलोव्ना को पोलुएक्तोव ने रख छोड़ा था?" उसने अपने चश्मे के पीछे से इल्या को ज़ोर से घूरते हुए अचानक पूछा।

उसके इस तरह घूरने पर इल्या का चेहरा लाल हो उठा और वह अपमानित अनुभव करने लगा।

"नहीं," उसने खोखले स्वर में जवाब दिया।

"हां, उसने उसे रख छोड़ा था," छानबीन करनेवाले ने झुंझलाये हुए स्वर में दोहराया, और जब उसने देखा कि इल्या इस पर कोई टिप्पणी करनेवाला नहीं है तो उसने फिर कहा, "मेरी राय में यह बुरी बात थी!"

"बहुत अच्छी तो नहीं थी!" इल्या ने धीमे स्वर में कहा।

"तो आप मेरी बात मानते हैं?"

इल्या ने फिर कोई जवाब नहीं दिया।

"उसके साथ आपकी जान-पहचान बहुत दिन से है?"

"कोई साल-भर से ऊपर से..."

"मतलब यह कि आप उसे पोलुएक्तोव से उसकी मुलाक़ात होने से पहले से जानते थे?"

"बड़े सयाने कुत्ते हो तुम," इल्या ने सोचा, लेकिन उसने बड़े शांत भाव से जवाब दिया:

"जब मैं मारे गये आदमी से उसके संबंध के बारे में कुछ जानता ही नहीं हूं तो यह बात मुझे कैसे मालूम हो सकती है?"

छानबीन करनेवाले ने अपने होंट भींचकर धीरे से सीटी बजायी और मेज़ पर रखा हुआ काग़ज़ देखने लगा। लुन्योव फिर तस्वीर को देखने लगा; वह महसूस कर रहा था कि उसे ध्यान से देखने से उसे अपना चित्त शांत रखने में मदद मिलती है। दूसरे कमरे से किसी बच्चे

13-01118

के खिलखिलाकर हंसने की आवाज़ आ रही थी ; फिर ख़ुशी और प्यार में डूबी हुई किसी औरत के अलापने की आवाज़ सुनायी दी :

नन्ही-मुन्नी, मिसरी की डली,
प्यारी-प्यारी, सुंदर-सी कली!

"यह तस्वीर आपका ध्यान आकर्षित कर रही है, है न?" छानबीन करनेवाले ने पूछा।

"ईसा मसीह कहां जा रहे हैं?" इल्या ने धीरे से पूछा।

छानबीन करनेवाला एक क्षण तक बुझी-बुझी निराश आंखों से उसे देखता रहा।

"वह इस धरती पर उतरे हैं यह देखने के लिए कि लोग उनके आदेशों का पालन किस तरह कर रहे हैं। इस तस्वीर में उन्हें लड़ाई के एक मैदान में चलते हुए दिखाया गया है, जहां आग लगी हुई है, लूटमार हो चुकी है, ख़ून-ख़राबा हो चुका है, घरों के खंडहर हैं..."

"यह सब कुछ वह वहां ऊपर आसमान पर से नहीं देख सकते थे?" इल्या ने पूछा।

"यह तस्वीर तो बस एक प्रतीक की तरह बनायी गयी है, यह दिखाने के लिए कि ईसा के उपदेश में और जीवन की वास्तविकता में कितना अंतर है।"

इसके बाद फिर लगातार कई छोटे-मोटे इधर-उधर के सवाल पूछे गये, जो मच्छरों के झुंड की तरह इल्या को परेशान करते रहे। वह उनसे उकता गया ; उनसे उसकी ध्यान केंद्रित करने की शक्ति कमज़ोर हो गयी और इस निरर्थक नीरस बकवास से उसकी सतर्कता की धार कुंद हो गयी ; उसे इस तरह के सवाल पूछने पर छानबीन करनेवाले पर ग़ुस्सा आ रहा था, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि वह यह सब कुछ जान-बूझकर कर रहा है।

"अच्छा, यह बताइये, भला आपको कुछ याद है," उस आदमी ने जल्दी से लगे हाथ पूछा, "गुरुवार को दो और तीन बजे के बीच आप कहां थे?"

"शराबख़ाने में चाय पी रहा था," इल्या ने कहा।

"अच्छा। किस शराबख़ाने में?"

"'प्लेव्ना' में।"

"इसकी क्या वजह है कि आप मुझे इतना सही-सही बता पा रहे हैं कि ठीक उस समय आप कहां थे?"

उस आदमी के चेहरे की बोटियां फड़कने लगीं ; वह इतना आगे झुक आया कि उसका सीना मेज़ से लग गया और उसकी दहकती हुई आंखें इल्या की आंखों को बेधने लगीं। इल्या ने फ़ौरन जवाब नहीं दिया।

"शराबख़ाने में जाने से पहले मैंने एक पुलिसवाले से वक़्त पूछा था," उसने सांस लेकर शांत भाव से उत्तर दिया।

छानबीन करनेवाला फिर पीछे हटकर पेंसिल उठाकर उसे अपनी उंगलियों के नाख़ूनों पर पटपटाने लगा।

"पुलिसवाले ने मुझे बताया था कि दो बजनेवाले हैं – एक बजकर बीस मिनट या कुछ ऐसा ही वक़्त बताया था उसने," इल्या ने धीरे से कहा।

"वह आपको जानता है?"

"हां..."

"आपके पास अपनी घड़ी नहीं है?"

"नहीं..."

"पहले भी कभी आपने उससे वक़्त पूछा था?"

"अकसर..."

"आप 'प्लेव्ना' में बहुत देर बैठे थे?"

"उस वक़्त तक जब किसी ने चिल्लाकर क़त्ल की ख़बर सुनायी थी।"

"फिर आप कहां गये थे?"

"लाश देखने।"

"किसी ने आपको वहां देखा था – मेरा मतलब है, दुकान पर?"

"उसी पुलिसवाले ने... उसने मुझे वहां से खदेड़ा भी था... मुझे धक्का दिया था..."

"बहुत अच्छा!" छानबीन करनेवाले ने संतोष से कहा ; फिर लगे हाथ, इल्या की ओर देखे बिना, उसने पूछा, "आपने पुलिसवाले से वक़्त क़त्ल से पहले पूछा था या बाद में?"

इल्या चाल समझ गया। उस आदमी के प्रति जो सफ़ेद क़मीज़

पहने हुए बैठा था, उसकी पतली-पतली उंगलियों के प्रति, जिनके नाखून बहुत सुथरे कटे हुए थे, उसके सुनहरे चश्मे के प्रति और उसकी पैनी काली आंखों के प्रति गुस्से के मारे पागल होकर इल्या उसकी ओर झटके से मुड़ा।

"मुझे क्या मालूम?" इल्या ने कहा।

छानबीन करनेवाला धीरे से खांसा और उसने अपने हाथ इस तरह रगड़े कि उसकी उंगलियां चिटकने लगीं।

"अच्छी बात है!" उसने खीझकर कहा। "बहुत अच्-छी बात है। बस थोड़े-से सवाल और हैं..."

अब वह अपने सवाल सपाट स्वर में पूछ रहा था; उसे न कोई जल्दी थी और न ही मतलब की जानकारी हासिल करने की कोई उम्मीद; लेकिन जवाब देते समय इल्या बराबर सतर्क रहा। हर शब्द जो वह बोलता था उसके खोखले सीने में एक कसे हुए तार पर टंकार करता हुआ मालूम होता था। लेकिन छानबीन करनेवाले ने उसे फिर किसी फंदे में फंसाने की कोशिश नहीं की।

"उस दिन जब आप सड़क पर जा रहे थे, तो आपको कुछ याद है कि आपने भेड़ की खाल का कोट पहने और काली टोपी लगाये किसी लंबे-से आदमी को देखा था?"

"नहीं..." इल्या ने कड़े स्वर में कहा।

"अच्छी बात है, अभी जो गवाही आपने दी है उसे ध्यान से सुन लीजिये; मैं आपसे इस पर दस्तख़त करने को कहूंगा।" काग़ज़ अपने चेहरे के सामने रखकर, छानबीन करनेवाले ने उसे जल्दी-जल्दी सपाट स्वर में पढ़ना शुरू किया, और पढ़ना ख़त्म करके इल्या के हाथ में एक क़लम थमा दिया। इल्या ने मेज़ के ऊपर झुककर काग़ज़ पर दस्तख़त किये, फिर धीरे-धीरे उठ खड़ा हुआ और छानबीन करनेवाले को देखकर धीमे दृढ़ स्वर में कहा:

"अच्छा मैं चला!"

उस आदमी ने लापरवाही से और मानो एहसान करते हुए सिर हिलाकर सलाम का जवाब दिया और मेज़ पर झुककर कुछ लिखने लगा। लेकिन इल्या कमरे के बाहर नहीं गया। वह इस आदमी से

कुछ और कहना चाहता था जिसने उसे इतनी देर सताया था। कमरे के सन्नाटे में उसे क़लम के खरोचने की आवाज़ साफ़ सुनायी दे रही थी और दूसरे कमरे से आवाज़ आ रही थी:

छोटी-सी गुड़िया, नाच दिखा दे,
ता-ता थैया, नाच दिखा दे...

"क्या बात है?" छानबीन करनेवाले ने अचानक नज़र ऊपर उठाकर पूछा।

"कुछ भी नहीं..." इल्या ने उदास भाव से कहा।

"मैंने कहा न कि अब आप जा सकते हैं..."

"जा रहा हूं..."

दोनों एक-दूसरे को घूरते रहे, और इल्या ने महसूस किया कि कोई बहुत बड़ी और भयानक चीज़ उसके अंदर उमड़ रही है। वह जल्दी से मुड़ा और बाहर निकल गया; बाहर सड़क पर निकलकर जब ठंडी हवा का एक तेज़ झोंका उसके लगा तब उसे पता चला कि उसका सारा शरीर पसीने में नहाया हुआ था। आधे घंटे में वह ओलिंपियादा के यहां पहुंच चुका था। उसने खिड़की से उसे गाड़ी पर आते हुए देख लिया था और ख़ुद आकर दरवाज़ा खोला; उसने ऐसे ख़ुश होकर उसका स्वागत किया जैसे मां अपने बेटे का करती है। उसका चेहरा उतरा हुआ था, आंखें फटी-फटी थीं और उनमें बेचैनी का भाव था।

जब इल्या ने उसे बताया कि वह छानबीन करनेवाले के यहां से सीधा उसके पास आया था तो वह बोली, "शाबाश! यही करना चाहिये था तुम्हें। ख़ैर, कैसा लगा वह तुम्हें?"

"बड़ा घाघ है वह!" इल्या ने बड़ी कटुता से कहा। "वह बराबर मुझे पकड़ने की कोशिश करता रहा।"

"इसके अलावा वह कुछ और कर ही नहीं सकता है। यही तो उसका काम है," ओलिंपियादा ने समझदारी से कहा।

"आख़िर उसने सीधे क्यों नहीं पूछा कि 'तुम्हारे ऊपर इन-इन बातों का शक किया जाता है।'"

"लेकिन तुमने भी तो सीधे नहीं बताया था!" ओलिंपियादा ने मुस्कराकर कहा।

"मैंने?" इल्या ने आश्चर्य से कहा। "हां... सचमुच!" ऐसा लगा कि जैसे उसके मन में कोई नया विचार उठा हो और क्षण-भर सोचने के बाद उसने कहा, "अजीब बात है – जब मैं वहां उसके दफ़्तर में बैठा था तो मुझे... ऐसा महसूस हो रहा था कि मैंने ठीक काम किया है, क़सम से।"

"चलो, अच्छा हुआ!" ओलिंपियादा ने खुश होकर कहा। "सब कुछ ठीक हो गया..."

इल्या ने मुस्कराकर उसे देखा और धीरे से बोला :

"मुझे बहुत ज़्यादा झूठ नहीं बोलना पड़ा। मैं भी बड़ा तक़दीर का सिकंदर हूं, ओलिंपियादा!"

यह कहकर वह विचित्र ढंग से धीरे से हंसा।

"जासूस मेरे पीछे लगे हैं," वह दबी ज़बान से बोली। "और शायद वे तुम्हारा भी पीछा कर रहे होंगे।"

"अरे, इसमें तो कोई शक नहीं!" उसने मज़ाक़ उड़ाते हुए जलकर कहा। "मेरे क़दमों के निशानों को सूंघ रहे होंगे – इस तरह मेरा पीछा कर रहे होंगे वे लोग जैसे मैं जंगली भेड़िया हूं। लेकिन वे मुझे पकड़ नहीं पायेंगे। उनके बस का रोग नहीं है! और मैं कोई भेड़िया तो हूं नहीं – मैं तो एक मुसीबत का मारा इंसान हूं... मेरा किसी भी आदमी का गला घोंटने का कोई इरादा नहीं था... ज़िंदगी खुद मेरा गला घोंटे दे रही है, जैसा कि पावेल ने अपनी कविता में लिखा था। और वह पावेल का भी गला घोंट रही है, और याकोव का भी, और... और सभी का!"

"छोड़ो, इल्या," ओलिंपियादा ने चाय बनाते हुए कहा, "सब कुछ ठीक हो जायेगा!"

इल्या कोच पर से उठकर खिड़की के पास चला गया, जहां से वह बाहर सड़क की ओर घूरते हुए उदास भाव से झुंझलाकर कहता रहा :

"ज़िंदगी भर मुझे गंदगी में रगड़ा गया है। जिस चीज़ से भी मुझे नफ़रत थी, जिस चीज़ से भी मैं दूर भागना चाहता था – उसी में मुझे ढकेला गया है। आज तक मुझे कोई आदमी ऐसा नहीं मिला जिसकी ओर मैं खुशी से देख सकता। क्या इस दुनिया में सचमुच

कुछ भी साफ़-सुथरा नहीं है, कुछ भी अच्छा नहीं है? अब मुझे ही देखो – क्यों मैंने उसका गला घोंट दिया? क्यों? मैंने बेकार अपने हाथ गंदे किये और अपनी आत्मा पर धब्बा लगाया। और पैसा लिया... वह लेना चाहिये नहीं था!"

"इसके बारे में इतना परेशान न हो, वह इस लायक़ नहीं था कि उसके बारे में आत्मा को इतना क्लेश दिया जाये," ओलिंपियादा ने तसल्ली देते हुए कहा।

"मैं आत्मा को क्लेश नहीं दे रहा हूं, मैं तो बस अपने किये को ठीक साबित करने की कोशिश कर रहा हूं। हर आदमी जो कुछ भी करता है उसे ठीक साबित करने की कोशिश करता है, क्योंकि हर आदमी को ज़िंदा रहना होता है! उस छानबीन करनेवाले को ले लो – उसकी ज़िंदगी तो पन्नी में लिपटी हुई चाकलेट जैसी है। उसे किसी का गला घोंटने की ज़रूरत नहीं है। वह कोई पाप किये बिना ज़िंदगी बसर कर सकता है – उसके चारों ओर हर चीज़ साफ़-सुथरी है..."

"सुनो, हम यह शहर छोड़कर कहीं और चले जायेंगे..."

"अरे नहीं, मैं कहीं नहीं जाऊंगा!" इल्या ने उसकी ओर मुड़कर दृढ़ता से कहा। "मैं तो यहीं रहकर देखूंगा कि क्या होता है..." उसके ये शब्द किसी को दी गयी धमकी जैसे लग रहे थे।

ओलिंपियादा विचारों में डूब गयी। समोवार के पास सफ़ेद ड्रेसिंग-गाउन पहने हुए बैठी वह बहुत सुंदर और गदरायी हुई लग रही थी।

"देखेंगे, कौन जीतता है," इल्या ने कमरे में इधर से उधर टहलते हुए अपने सिर को अर्थपूर्ण ढंग से हिलाकर कहा।

"मैं जानती हूं, तुम इसलिए नहीं जाना चाहते कि तुम मुझसे डरते हो?" ओलिंपियादा ने आहत स्वर में कहा। "तुम्हें यह डर है कि मैं अब तुम्हें अपने शिकंजे में कसकर रखूंगी? कि अब तुम्हारा भेद जान लेने के बाद मैं उसका फ़ायदा उठाती रहूंगी? यह तुम्हारी भूल है, मेरे प्यारे। तुम्हारी मर्ज़ी के खिलाफ़ मैं तुम्हें कहीं अपने साथ घसीट-कर नहीं ले जाऊंगी।"

उसका स्वर शांत था, लेकिन उसके होंट मानो पीड़ा से कांप रहे थे।

"तुम कह क्या रही हो?" इल्या आश्चर्य से उसकी बात सुनकर बोला।

"डरो नहीं, मैं तुम्हें कभी मजबूर नहीं करूंगी! जहां तुम्हारा जी चाहे जाओ, मेरी बला से!"

"ऐसा न कहो," इल्या ने उसके पास बैठकर उसका हाथ थामते हुए कहा। "मेरी समझ में नहीं आता कि तुम ऐसी बात क्यों कह रही हो।"

"बनो नहीं!" वह दुःखी होकर चिल्लायी और उसने अपना हाथ छुड़ा लिया। "मैं तुम्हें जानती हूं। तुम बहुत अभिमानी हो, तुम निर्दयी हो! तुम मुझे उस बूढ़े के साथ रहने के लिए कभी माफ़ नहीं कर सकते और जिस तरह की ज़िंदगी मैं बसर करती हूं उसकी वजह से तुम मुझसे नफ़रत करते हो... तुम समझते हो कि यह सब कुछ मेरी वजह से हुआ। तुम मुझसे नफ़रत करते हो!"

"यह झूठ है!" इल्या ने बड़े गर्व से कहा। "झूठ है, मैं तुमसे कहता हूं। मैं तुम्हें रत्ती-भर दोष नहीं देता। मैं जानता हूं कि साफ़-सुथरी और निष्कलंक औरतें मुझ जैसे लोगों के लिए नहीं होती। वे हमारे जैसे लोगों के लिए बहुत महंगी होती हैं। ऐसी औरतों से शादी करने की उम्मीद की जाती है। और उनसे बच्चे होते हैं... साफ़-सुथरी चीज़ें सिर्फ़ अमीरों के लिए होती हैं... हमें तो जूठन मिलती है, दूसरों की उतरन, दूसरों की चिचोरी हुई हड्डी, वह, जिस पर थूका गया हो, जो गंदे हाथों से मसला हुआ हो।"

"मैं गंदे हाथों से मसली हुई हूं तो मुझे छोड़ दो!" ओलिंपियादा उछलकर खड़े होते हुए चिल्लायी। "निकल जाओ यहां से!" उसकी आंखों में आंसू छलक आये और वह अपने शब्द दहकते हुए अंगारों की तरह उस पर बरसाने लगी। "मैं इस नाली में अपनी मर्ज़ी से आयी थी, क्योंकि यहां पैसा है। और अब मैं उसी पैसे के सहारे, उसे सीढ़ी की तरह इस्तेमाल करके बाहर निकलकर आ रही हूं, और मैं फिर अच्छी ज़िंदगी बसर करने का पूरा इरादा रखती हूं... इस काम में तुमने मेरी मदद की है... यह मैं जानती हूं। और मैं तुमसे प्यार करती हूं, अगर तुमने एक दर्जन लोगों की भी जान ली हो तो मुझे उसकी कोई परवाह नहीं है। और मैं तुम्हें प्यार इसलिए नहीं करती हूं कि तुमने मेरी मदद की है, मैं तुम्हें प्यार करती हूं उस अभिमान की वजह से जो तुम्हारे अंदर है, उस जवानी की वजह से जो तुम्हारे अंदर है – तुम्हारे घुंघराले बालों की वजह से और तुम्हारे मज़बूत हाथों की वजह से और तुम्हारी कठोर नज़रों की वजह से – और तुम्हारी उन झिड़कियों की वजह से जिनमें से हर एक मेरे दिल में छुरी की तरह उतर जाती है – मैं मरते दम तक तुम्हारा उपकार मानूंगी। मैं घुटने टेककर तुम्हारे पांव चूमूंगी – ऐसे!"

और यह कहकर वह इल्या के सामने गिरकर उसके घुटनों को चूमते हुए चिल्ला पड़ी:

"भगवान साक्षी है कि मैंने वह पाप अपनी आत्मा का उद्धार करने के लिए किया था; और भगवान यही चाहता होगा कि मैं इस कीचड़ को पार करके बाहर स्वच्छता में निकल आऊं, बजाय इसके कि ज़िंदगी-भर इसी कीचड़ में पड़ी सड़ती रहूं। बाहर निकलकर मैं क्षमा मांगूंगी... ज़िंदगी-भर इसी तरह सड़ते रहना मैं नहीं चाहती! मैं कलंकित हूं, सिर से पांव तक मैं गंदी हूं। मैं चाहे जितने आंसू बहाऊं वे मुझे कभी धोकर साफ़ नहीं कर सकते।"

इल्या उसे अपने से दूर ढकेल रहा था और फ़र्श पर से उठाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन ओलिंपियादा ने उसे कसकर पकड़ लिया और अपना सिर उसके घुटनों में गड़ा दिया और उन पर अपना चेहरा रगड़-रगड़कर हांपते हुए, खोखले स्वर में कुछ कहती रही। तभी इल्या ने कांपते हाथों से उसको सहलाना शुरू किया, और आखिरकार उसे फ़र्श पर से उठाकर अपनी बांहों में समेट लिया और उसका सिर अपने कंधे पर रख लिया। ओलिंपियादा का दहकता हुआ गाल उसके गाल से सटा हुआ था, और उसकी मज़बूत बांहों में जकड़ी हुई, उसके सामने घुटनों के बल बैठी वह दबे-दबे स्वर में कहती रही:

"अगर किसी आदमी ने एक बार पाप किया हो और बाक़ी ज़िंदगी वह सिर नीचा करके रहे तो इससे किसी का क्या भला होगा? जब मैं छोटी-सी बच्ची थी और मेरा सौतेला बाप अपनी गंदी वासना लिये मेरा पीछा करता था तो मैंने एक बार चिमटा फेंककर उसे मारा था... लेकिन फिर मुझे क़ाबू में कर लिया गया, मुझे खूब शराब पिलायी गयी... मैं बिल्कुल छोटी बच्ची थी – फूल जैसी साफ़-सुथरी और ताज़ा... मैं रोती रही, मुझे अपनी इस दशा पर बड़ा दुख था... मैं नहीं चाहती थी – मैं बिल्कुल नहीं चाहती थी... लेकिन फिर मैंने

देखा कि वापस लौटकर जाना नामुमकिन था ... तो, मैंने सोचा, कम से कम मैं उनसे कसकर पैसा वसूल करूंगी। मुझे सब से नफ़रत थी। मैं उनके पैसे चुराती थी, शराब पीती थी ... मैं किसी को जो चुंबन देती थी उनमें एक बार भी मेरा दिल नहीं होता था – एक बार भी नहीं! जब तक तुमसे मेरी मुलाक़ात नहीं हुई ..."

उसके शब्द क्षीण होते-होते अस्फुट स्वर में बदल गये; फिर, अचानक अपने आपको उससे छुड़ाते हुए वह ज़ोर से चिल्लायी:

"छोड़ दो मुझे!"

इल्या ने उसे और भी कसकर दबोच लिया और उद्विग्न होकर उसके चेहरे को चूमने लगा।

"मेरे पास तुमसे कहने को कुछ भी नहीं है," उसने जोश से कहा। "मुझे बस इतना ही कहना है: हमारी परवाह किसी को नहीं है ... इसलिए हम भी किसी की परवाह नहीं करेंगे! .. तुमने जो कुछ कहा उसकी मुझे बहुत खुशी है ... वह बहुत अच्छी बात थी। और तुम खुद बहुत अच्छी हो। और मैं तुम्हें इतना प्यार करता हूं जितना ... जितना ... मैं बता नहीं सकता कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूं।"

ओलिंपियादा के विलाप ने इल्या के मन में उस औरत के प्रति एक शुद्ध और तीव्र भावना जागृत कर दी थी। उसकी व्यथा इल्या की विपदा के साथ घुल-मिलकर मानो एक हो गयी थी और वे एक-दूसरे के निकटतर हो गये थे। बहुत देर तक वे एक-दूसरे से चिपटे बैठे कानाफूसी के स्वर में शिकवे-शिकायतें करते रहे।

"हमें सुख कभी नसीब नहीं होगा, तुम्हें और मुझे," ओलिंपियादा ने घोर निराशा से सिर हिलाकर कहा।

"तो हम आपस में अपना दुःख बांटेंगे। अगर हमें कालेपानी भेज दिया गया तो हम दोनों साथ जायेंगे, है न? लेकिन जब तक वह वक़्त नहीं आता, तब तक हम अपनी मुसीबतों को अपने प्यार में डुबो देंगे ... इस वक़्त तो वे अगर चाहें तो मुझे ज़िंदा जला दें ... मेरा मन बिल्कुल हल्का है ..."

एक-दूसरे के शब्दों से अभिभूत होकर, एक-दूसरे के स्पर्श से रोमांचित होकर वे दोनों आंखों में आंखें डालकर धुंधली-धुंधली नज़रों

से एक-दूसरे को देखते रहे। उनके आलिंगनों से उनके अंग-अंग में गर्मी पैदा हो रही थी; उनके कपड़े कसते जा रहे थे ...

बाहर आकाश धुंधला और नीरस था। धरती पर ठंडा कुहरा छाया हुआ था, जिसने पेड़ों को बर्फ़ की चादर उढ़ा दी थी। सामने-वाले बाग़ में बर्च-वृक्षों की पतली-पतली टहनियां हिल-हिलकर बर्फ़ के छोटे-छोटे गाले झिटककर गिरा रही थीं। जाड़े की शाम शुरू हो चुकी थी ...

कुछ दिन बाद इल्या को पता चला कि पुलिस भेड़ की खाल की काली टोपी पहने हुए लंबे क़द के किसी आदमी को खोज रही थी, जिस पर पोलुएक्तोव की हत्या करने का शक था। दुकान की छानबीन करने पर दो देव-प्रतिमाओं की चांदी की सजावटों का पता चला था; बाद में पता यह चला था कि ये देव-प्रतिमाएं चोरी की थीं। दुकान में काम करनेवाले लड़के ने बताया था कि वे हत्या से दो-तीन दिन पहले लंबे क़द के एक आदमी से ख़रीदी गयी थीं जो भेड़ की खाल का कोट पहने था और जिसका नाम अंद्रेई था, और यह कि पोलुएक्तोव अकसर उससे सोने-चांदी की चीज़ें ख़रीदता रहता था और उसे पैसा उधार देता रहता था। बाद में यह पता चल गया था कि क़त्ल से पहलेवाली शाम को और क़त्ल के दिन भी, बिल्कुल उसी हुलिया का आदमी, जैसा कि लड़के ने बताया था, शहर के चकलों में रंगरेलियां करता हुआ पाया गया था।

रोज़ इल्या को नयी-नयी अफ़वाहें सुनने को मिलतीं। इतनी ढिठाई से किये गये इस क़त्ल से सारे शहर में सनसनी फैल गयी थी; हर जगह उसकी चर्चा हो रही थी – गली-कूचों में, शराबख़ानों में और घर-घर में। लेकिन लुन्योव को इन बातों में कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं थी। ख़तरे का डर उसके दिल से वैसे ही उतर गया था जैसे घाव पर से पपड़ी उतर जाती है, और उसकी जगह वह सिर्फ़ एक तरह की बेचैनी महसूस कर रहा था। वह बस एक ही बात के बारे में सोचता रहता था: अब वह अपनी ज़िंदगी कैसे बसर करेगा?

उसकी भावनाएं रंगरूट की या उस आदमी की भावनाओं जैसी थीं जो किसी अज्ञात स्थान की लंबी यात्रा पर जानेवाला हो। इधर कुछ दिनों से याकोव उसका पीछा करने लगा था। बाल बिखेरे, उल्टे-सीधे

कपड़े पहने वह शराबखाने में निरुद्देश्य इधर-उधर मंडलाता रहता था, उसकी बड़ी-बड़ी आंखें एक चीज़ से दूसरी चीज़ पर भटकती रहती थीं, जिसकी वजह से उसकी मुद्रा किसी गहरी समस्या में डूबे हुए आदमी जैसी हो गयी थी। जैसे ही वह इल्या को देखता वह उसे जल्दी से रहस्यमय स्वर में, शायद कानाफूसी के स्वर में भी बुलाता। एक बार उसने कहा:

"तुम्हारे पास एक मिनट का वक़्त है मुझसे बातें करने का?"

"थोड़ी देर में, अभी नहीं..."

"खेद की बात है! बेहद ज़रूरी काम है।"

"क्या है?"

"वह किताब – काश तुम्हें मालूम होता कि उसमें कैसी-कैसी बातें कही गयी हैं! बस, कमाल है!" याकोव ने डर के साथ कहा।

"भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारी किताबें! मुझे यह बताओ: तुम्हारा बाप मुझे त्योरियां चढ़ाकर क्यों देखता रहता है?"

लेकिन याकोव को ज़िंदगी की हक़ीक़तों में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। इल्या के सवाल के जवाब में उसने अपनी आंखें हैरत से फाड़कर बस इतना कहा:

"ऐसी बात है? मुझे कुछ भी मालूम नहीं। अलबत्ता, एक बार मैंने उसे तुम्हारे चाचा से कुछ कहते सुना था, कुछ इस तरह की बात कि तुम जाली सिक्कों का धंधा करते हो... लेकिन वह सब बकवास है..."

"तुम्हें कैसे मालूम?" इल्या ने मुस्कराकर कहा।

"और हो ही क्या सकता है! जाली सिक्के! बकवास है!" वह अपने हाथ को झटके के साथ हिलाकर विचारमग्न हो गया। "तो तुम्हारे पास सचमुच मुझसे बात करने के लिए वक़्त नहीं है?"

"उस किताब के बारे में?"

"हां... उसमें एक जगह मैं समझ पाया हूं – क्या बताऊं! बस कमाल है, भाई!"

और यह कहकर उस दार्शनिक ने ऐसी मुद्रा बना ली जैसे वह किसी गरम चीज़ से जल गया हो।

लुन्योव उसे इस तरह घूरता रहा जैसे वह कोई सनकी या मूरख

हो। कभी-कभी उसे ऐसा लगता कि याकोव अंधा है, और वह उसे हमेशा अभागा समझता रहा, जिसमें ज़िंदगी से निबटने की क्षमता नहीं थी। घर में सब लोग कहते थे और सारी गली में हर आदमी इस बात को जानता था कि पेत्रूखा अपनी रखैल से शादी करनेवाला था, उस औरत से जो शहर में ज़्यादा पैसेवालों के लिए एक चकला चलाती थी। लेकिन याकोव ने इस समाचार को पूर्ण उदासीनता के भाव से स्वीकार कर लिया था। जब इल्या ने उससे पूछा था कि क्या शादी जल्दी ही होनेवाली थी, तो उसने कहा था:

"किसकी शादी?"

"तुम्हारे बाप की।"

"अच्छा, वह। कौन जाने? बड़ी बदनामी की बात है। ऐसी औरत से शादी करना! छि:!"

"जानते हो, उसके एक बेटा भी है। काफ़ी बड़ा है – स्कूल में पढ़ता है।"

"मुझे मालूम नहीं था। तो क्या हुआ?"

"तुम्हारे बाप की सारी जायदाद उसको जायेगी।"

"हां," याकोव ने निश्चिंत भाव से कहा। अचानक जैसे उसमें नयी फुर्ती आ गयी, वह बोला, "बेटा? उससे तो मुझे फ़ायदा ही होगा। है न? अगर मेरा बाप उसे शराब बेचने के काम पर लगा दे तो मैं जहां जी चाहेगा जा सकूंगा! अच्छी बात होगी..."

और इस आज़ादी की कल्पना करके उसने चटखारा मारा। लुन्योव ने तरस खाते हुए मुस्कराकर उसे एक नज़र देखा।

"सच कहा है, 'मूरख तो बस वह कहलावै, रोटी छोड़ जो गाजर खावै।' अरे, याकोव! मेरी समझ में नहीं आता कि इस दुनिया में तुम्हारा निबाह कैसे होगा।"

याकोव अचानक चौकन्ना हो गया और अपनी आंखें फाड़कर देखने लगा।

"इसके बारे में मैंने सोच लिया है!" उसने जल्दी से फुसफुसाकर कहा। "सबसे पहले आदमी को अपनी आत्मा में सुलझाव पैदा करना चाहिये, उसे यह मालूम होना चाहिये कि भगवान उससे क्या चाहता है। अब तक एक ही बात मुझे साफ़ तौर पर समझ में आयी है:

लोग धागे की तरह उलझे हुए हैं, हर आदमी एक अलग दिशा में खींच रहा है, और कोई भी यह नहीं जानता कि उसे किस चीज़ से बंध जाना चाहिये! आदमी पैदा होता है, किसी को यह मालूम नहीं किसलिए; वह जीता चला जाता है, कोई भी नहीं जानता कि किस-लिए; वह मर जाता है, और सारा खेल खत्म हो जाता है। इसलिए सबसे पहले मुझे इस बात को समझना चाहिये कि मैं यहां हूं किस-लिए, समझे?"

"तुम ऐसी बातों के बारे में सोचने के अलावा कुछ नहीं करते," लुन्योव ने तनाव के साथ कहा। "इससे फ़ायदा क्या है?"

उसे इस बात का आभास था कि याकोव की गोलमोल बातों का उस पर अब जितना प्रभाव पड़ रहा था उतना इससे पहले कभी नहीं पड़ा था, और वे उसके मन में कुछ विशेष प्रकार के विचारों को जन्म दे रहे थे। जब याकोव बोलता था तो ऐसा लगता था कि इल्या के अंदर छिपा हुआ कोई मनहूस अस्तित्व, कोई ऐसा अस्तित्व जो हमेशा साफ़-सुथरा और स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के उसके सीधे और साफ़ स्वप्नों का विरोध करता था, उसकी आत्मा में ऐसे कुन-मुनाता था जैसे गर्भ में बच्चा कुनमुनाता है, और अब ख़ास जिज्ञासा से वह याकोव के एक-एक शब्द को पीता रहता था। वह यह नहीं चाहता था, इस बात से उसे झुंझलाहट होती थी, उसे इसकी ज़रूरत नहीं थी, और इसलिए वह याकोव से बात करने से कतराता था। लेकिन उसके लिए अपने दोस्त से पीछा छुड़ाना मुश्किल था।

"इससे क्या फ़ायदा है? अरे, यह तो बिल्कुल साफ़ बात है। इसके बिना तो तुम्हारा काम चल ही नहीं सकता, वैसे ही जैसे हवा के बिना नहीं चल सकता।"

"तुम बूढ़ों जैसी बातें करते हो, याकोव; तुम बहुत बड़े बोर हो गये हो। जैसी कि मसल मशहूर है – अच्छा सबको चाहिये।"

इस तरह की बातों के बाद इल्या को ऐसा लगता जैसे उसने कोई नमक लगा हुआ खाना ठूंस-ठूंसकर खा लिया हो: उसे एक तरह की प्यास सताने लगती, लेकिन वह बता नहीं सकता था कि किस चीज़ की प्यास। ईश्वर के बारे में उसके अस्पष्ट और दम घोंटनेवाले विचारों में कोई ऐसी चीज़ जुड़ जाती जो कठोर और दुराग्रही थी।

"भगवान देखता सब कुछ है, लेकिन उसके बारे में करता कुछ नहीं है," वह उदास होकर सोचता था; उसे आभास था कि उसकी आत्मा ऐसे अंतर्विरोधों में उलझी हुई थी जिनका कोई समाधान नहीं था। वह अपने इन विचारों और अपनी इन आशंकाओं से भागकर ओलिंपियादा की बांहों में शरण लेता।

कभी-कभी वह वेरा से मिलने जाता। धीरे-धीरे वह रंगारंग ज़िंदगी के भंवर में खिंचती चली जा रही थी। वह इल्या को उन सैर-सपाटों के उल्लास-भरे क़िस्से सुनाती थी जिन पर वह सौदागरों, सरकारी ओहदेदारों और फ़ौजी अफ़सरों के साथ जाती थी; वह आली-शान रेस्तरां की दावतों का और तीन घोड़ेवाली गाड़ियों की सैर का वर्णन करती, और उसे वे कपड़े और ज़ेवर दिखाती जो उसे उपहार में मिलते थे। उसका शरीर बहुत सुडौल, मज़बूत और गठा हुआ था, जिसकी गोलाइयां बहुत आकर्षक थीं, और वह डींग मार-मारकर बताती थी कि किस तरह उसके चाहनेवाले उसे हथियाने के लिए आपस में लड़ते थे। लुन्योव उसकी सुंदरता को और ताक़त को और मस्ती को सराहता था, लेकिन कितनी ही बार उसने उससे सतर्कता से कहा था:

"संभलके, वेरा; ये सब चीज़ें तुम्हें नरक में घसीट ले जायेंगी।"

"तो क्या हुआ? इसके अलावा मैं हूं ही किस लायक़? कम से कम मैं ठाठ से तो नरक में जाऊंगी। मैं जी भरकर आनंद लूटूंगी और फिर – अलविदा!"

"पावेल का क्या होगा?"

वेरा की भवें कांप उठतीं और उसकी ख़ुशी पर पानी पड़ जाता।

"उसे चाहिये कि मुझको छोड़ दे... मेरे साथ चिपके रहना उसके लिए मुश्किल है... वह अपने आपको क्यों तड़पाता है? मैं इस ज़िंदगी को कभी छोड़ नहीं पाऊंगी – एक बार जो मक्खी शीरे में गिर जाती है..."

"क्या तुम्हें उससे प्यार नहीं है?" एक बार इल्या ने पूछा।

"पावेल से प्यार किये बिना कौन रह सकता है," उसने गंभीर भाव से कहा। "वह... वह बेहद अच्छा है!"

"तो फिर तुम उसके साथ रहती क्यों नहीं?"

"उसके गले का पत्थर बनकर? वह कितनी मुश्किल से तो अपना

ही पेट पाल पाता है, मेरी तो बात दूर रही। अरे नहीं, मुझे उससे हमदर्दी है।"

"संभलके चलो, नहीं तो इसका अंजाम बुरा होगा," दूसरी बार इल्या ने उसे चेतावनी दी।

"भगवान के लिए," उसने चिढ़कर कहा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं क्या करूं? क्या तुम समझते हो कि मैं बस एक आदमी के लिए बनायी गयी थी? हर आदमी ज़िंदगी का मज़ा लूटना चाहता है। हर आदमी अपनी मनचाही ज़िंदगी बसर करता है – तुम भी, मैं भी, हर आदमी।"

"तुम्हारा ऐसा सोचना ग़लत है!" इल्या ने उदास होकर गंभीर भाव से कहा। "हम ज़िंदा रहते हैं... पर अपने लिए नहीं..."

"फिर किसके लिए?"

"अपने को ही ले लो – तुम सौदागरों के लिए, हर तरह के बदचलन लोगों के लिए ज़िंदा रहती हो..."

"मैं ख़ुद बदचलन हूं!" और यह कहकर उसकी हंसी फूट पड़ी।

इल्या भारी मन से उसके पास से चला आया। वह पावेल से दो बार मिला था, लेकिन दोनों बार बस क्षण-भर के लिए। उसे वेरा के यहां देखकर पावेल भवें चढ़ाकर खिसिया जाता था। वह अपने होंट सिये बैठा रहता था, एक शब्द भी नहीं बोलता था, और उसके दुबले-पतले गालों पर गहरे लाल रंग के दो धब्बे उभर आते थे। इल्या समझता था कि उसके दोस्त को उससे जलन होती थी, और इस बात से उसे कुछ संतोष मिलता था। लेकिन साफ़ दिखायी दे रहा था कि पावेल ने अपनी गर्दन एक ऐसे फंदे में डाल रखी थी जिससे वह अपने आपको नुक़सान पहुंचाये बिना नहीं निकल सकता था। उस पर तरस खाकर, और उससे भी ज़्यादा वेरा पर तरस खाकर, इल्या वेरा से दूर रहता था।

वह और ओलिंपियादा एक बार फिर सुहागरात मना रहे थे। फिर भी उन दोनों के बीच कहीं कोई ऐसी चीज़ थी जो ठंडी हवा के तेज़ झोंके की तरह काम करती थी, जिसकी वजह से इल्या के दिल को ठेस लगती थी। कभी-कभी बातें करते-करते इल्या उदास और विचारग्रस्त हो जाता था। तभी ओलिंपियादा उससे नरमी से फुसफुसाकर कहती थी:

"जाने भी दो, मेरी जान, इस तरह सोच में डूबे रहना अच्छा नहीं होता। इस दुनिया में कितने लोग हैं जिनके हाथों पर कोई धब्बा न हो..."

"सुनो," इल्या गंभीर कठोर स्वर में कहता। "इस मामले के बारे में एक बात भी न कहना। मैं हाथों की बात नहीं सोच रहा था... तुम बहुत होशियार सही, लेकिन मेरे विचारों को नहीं समझ सकती... मुझे एक बात बताओ: कोई आदमी ईमानदारी की ज़िंदगी कैसे बसर कर सकता है, ऐसी ज़िंदगी जिससे किसी को कोई नुक़सान न पहुंचे? और बूढ़े के बारे में एक शब्द भी न कहना!"

लेकिन उससे बूढ़े की चर्चा किये बिना नहीं रहा जाता था और वह इल्या से उसे भूल जाने का अनुरोध करती रहती थी। लुन्योव नाराज़ होकर उसके पास से उठकर चला आता था। अगली बार जब वह आता तो वह दीवानों की तरह चिल्ला-चिल्लाकर कहती कि वह उससे सिर्फ़ इसलिए प्यार करता था कि वह उससे डरता था, कि वह यह नहीं चाहती थी और वह उसे छोड़कर शहर से चली जायेगी। वह फूट-फूटकर रोती, उसके चुटकियां भरती, उसके कंधे पर काटती और उसके पांव चूमती, और आखिरकार जब वह उन्माद के चरमोत्कर्ष पर पहुंच जाती तो अपने सारे कपड़े उतारकर उसके सामने नंगी खड़ी हो जाती और कहती:

"क्या मैं देखने में अच्छी नहीं लगती हूं? क्या मेरा जिस्म ख़ूबसूरत नहीं है? अपने रोम-रोम से, अपने ख़ून की हर बूंद से, अपने अंग-अंग से मैं तुम्हें प्यार करती हूं! तुम्हारा जी चाहे तो मुझे काट डालो – मैं फिर भी हंसती रहूंगी..."

उसकी नीली आंखें गहराने लगतीं, उसके तरसे-तरसे से होंट फड़कने लगते, और उसकी छातियां मानो उससे मिलने के लिए आगे उभर आतीं। वह उसे अपनी बांहों में समेट लेता और तब तक उसे चूमता रहता जब तक कि वह बिल्कुल थककर चूर न हो जाता, और फिर, घर लौटते हुए वह मन ही मन सोचता रहता: "यह औरत, जिसमें जीवन की उमंग इतनी कूट-कूटकर भरी थी, इस बात को कैसे बर्दाश्त कर सकी कि उस बूढ़े के घिनौने हाथ उसे छुएं?" उसे ओलिंपियादा से नफ़रत होने लगती और वह उसके चुंबनों को याद करके बड़ी कटुता से थूकता।

14-01118

एक दिन भावावेश के ऐसे ही तूफ़ान के बाद, जब वह उसके आलिंगनों से बिल्कुल छक गया था, वह बोला :

"जब से मैंने उस बूढ़े शैतान का सफ़ाया कर दिया है तब से तुम मुझसे ज़्यादा प्यार करने लगी हो..."

"सच बात है। तो क्या हुआ?"

"कुछ नहीं। अजीब बात है : कुछ लोगों को सड़े अंडों का स्वाद ताज़े अंडों के स्वाद से अच्छा लगता है, और कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें सेब तभी अच्छे लगते हैं जब उन पर धब्बे पड़ जाये... बहुत अजीब बात है..."

ओलिंपियादा ने उसे धुंधली-सी आंखों से देखा और खोयी-खोयी-सी मुस्करा दी, पर कुछ बोली नहीं।

एक बार जब इल्या काम से लौटने के बाद कपड़े बदल रहा था तो तेरेंती कमरे में आया। अंदर आकर उसने दरवाज़ा बंद कर लिया और एक सेकंड तक वहां खड़ा रहा जैसे किसी की बातों को सुन रहा हो। फिर उसने अपने कूबड़ को झटका देकर दरवाज़े की कुंडी चढ़ा दी। इल्या तिरस्कार-भरी मुस्कराहट से उसे देखता रहा।

"इल्या," तेरेंती ने कुर्सी पर बैठते हुए दबी ज़बान से कहा।

"क्या है?"

"तुम्हारे बारे में अफ़वाहें फैलायी जा रही हैं... गंदी-गंदी अफ़वाहें..."

कुबड़े ने एक गहरी आह भरकर नज़रें झुका लीं।

"क्या अफ़वाहें, मिसाल के लिए?" इल्या ने अपने जूते उतारते हुए पूछा।

"तरह-तरह की... कुछ लोग कहते हैं कि तुम्हारा भी हाथ उसमें था... उसमें... तुम तो जानते हो, वह बूढ़ा जो गला घोंटकर मार डाला गया था... कुछ लोग कहते हैं कि तुम जाली सिक्के बनाते हो..."

"जलते हैं, क्यों?" इल्या ने पूछा।

"और फिर शराबख़ाने के आस-पास भी कुछ लोग मंडलाते हुए देखे गये हैं – जासूस क़िस्म के लोग... वे पेत्रूख़ा से तुम्हारे बारे में पूछते रहते हैं..."

"पूछने दो," इल्या निरीह स्वर में बोला।

"हां, ज़ाहिर है – पूछने दो। जब हमने कोई ग़लत काम किया ही नहीं है तो फिर हमें किस बात का डर।"

इल्या हंस दिया और चारपाई पर लेट गया।

"उन लोगों ने आना तो बंद कर दिया है! लेकिन अब पेत्रूख़ा ने शुरू किया है..." तेरेंती झिझकते हुए और सकपकाते हुए बोल रहा था। "अच्छा हो कि तुम अपने रहने के लिए कोई दूसरी जगह, कोई कमरा ढूंढ लो, इल्या। पेत्रूख़ा कहता है कि मैं अपने घर में किसी ऐसे-वैसे आदमी को नहीं रहने दूंगा। वह कहता है कि मैं नगर-परिषद का सदस्य हूं..."

इल्या ने गुस्से से बिफरा हुआ अपना चेहरा चाचा की ओर फेरा और ऊंचे स्वर में कहा :

"अगर उसे अपने चमकते हुए थोबड़े से प्यार है तो चुप रहे! यह बात उससे कह देना... अगर मैंने फिर कभी उसे मेरे बारे में कोई बेहूदा बात कहते सुना तो मैं उसकी खोपड़ी खोल दूंगा। मैं चाहे जो कुछ हूं, उस बदमाश को मेरे बारे में फ़ैसला करने का कोई हक़ नहीं है। जब मेरा जी चाहेगा तब मैं यहां से चला जाऊंगा। लेकिन अभी कुछ दिन तो मैं धर्मात्मा-पुण्यात्मा लोगों के बीच रहना चाहता हूं।"

इल्या के इस तरह भड़क उठने से कुबड़ा डर गया। एक क्षण तक कुछ बोले बिना वह बैठा अपना कूबड़ खुजाता रहा और सहमा हुआ अपने भतीजे को घूरता रहा, जो चारपाई पर लेटा एकटक छत को देखे जा रहा था और उसके होंठ कठोर मुद्रा में भिंचे हुए थे। तेरेंती की नज़रें लड़के के घुंघराले बालोंवाले सिर, छोटी-सी मूंछवाले उसके कठोर और ख़ूबसूरत चेहरे और आगे को निकली हुई उसकी ठोड़ी, उसके चौड़े सीने और उसके गठे हुए शरीर को इस तरह घूरती रहीं जैसे टटोल-टटोलकर थाह लेने की कोशिश कर रही हों।

"क्या कड़ियल जवान निकले हो तुम!" उसने बुदबुदाकर कहा। "अगर तुम गांव में रहते तो लड़कियां तुम्हें एक पल चैन न लेने देतीं... हुंह... चांदी होती तुम्हारी वहां! मैं तुम्हें पैसे देता। तुम वहां अपनी एक दुकान खोल लेते और किसी पैसेवाली लड़की से शादी कर लेते। ज़िंदगी ढलान पर फिसलती हुई बर्फ़गाड़ी की तरह बिना किसी विघ्न-बाधा के गुज़रती रहती।"

"हो सकता है मैं ऊपर चढ़ना चाहता हूं," इल्या ने गंभीरता से कहा।

"अरे, हां! ज़ाहिर है कि तुम ऊपर ही चढ़ते जाओगे," तेरेंती ने जल्दी से कहा। "वही मेरा मतलब है। ज़िंदगी बिना किसी विघ्न-बाधा के गुज़रती रहेगी और तुम ऊपर चढ़ते जाओगे।"

"और जब मैं ऊपर चोटी पर पहुंच जाऊंगा तब कहां?" इल्या ने पूछा।

कुबड़े ने उसे एक नज़र देखा और बत्तख की तरह हंस दिया। उसने कुछ और भी कहा, लेकिन इल्या ने उसकी बात सुनी नहीं। वह अपनी सारी ज़िंदगी को याद कर रहा था और सोच रहा था कि घटनाएं कितने सुथरे ढंग से और अनजाने ही जाल के चारखानों की तरह एक व्यवस्थित रूप धारण करती जाती हैं। वे किसी आदमी के चारों ओर गरोहबंद हो जाती हैं और जहां जी चाहता है उसे ले जाती हैं, जैसे पुलिसवाला किसी चोर को पकड़कर ले जाता है। मुझी को ले लो, उसने सोचा, मैं इस घर से छुटकारा पाकर अकेले जाकर कहीं रहना चाहता हूं, और – वह देखो। मौक़ा मेरे सामने आ गया। उसने एक भयभीत और खोजती हुई नज़र अपने चाचा पर डाली, लेकिन उसी वक़्त किसी ने दरवाज़ा खटखटाया और तेरेंती उछलकर खड़ा हो गया।

"अरे, खोल दो," इल्या ने चिड़चिड़ाकर और ऊंचे स्वर में कहा।

जब कुबड़े ने कुंडा सरकाकर दरवाज़ा खोला तो याकोव को अपने हाथों में बादामी रंग की एक बड़ी-सी किताब लिये बाहर खड़ा देखा।

"आओ, माशा के यहां चलें, इल्या," उसने चारपाई के पास जाते हुए उत्साह से कहा।

"क्यों, उसे क्या हो गया है?" इल्या ने जल्दी से पूछा।

"हो गया है? कुछ भी नहीं... वह घर पर नहीं है..."

"वह अपनी शामें कहां बिताती है?" कुबड़े ने परोक्ष संकेत करते हुए कहा।

"वह मुटल्ली के साथ जाती है," याकोव ने कहा।

"इसका नतीजा अच्छा होनेवाला नहीं है," तेरेंती ने अलसाये हुए स्वर में कहा।

याकोव ने इल्या का हाथ पकड़कर झटका दिया।

"तुम सिड़ी हो गये हो," इल्या बोला।

"यह सरासर जादू है – और कुछ हो ही नहीं सकता," याकोव ने चुपके से कहा।

"क्या चीज़ जादू है?" इल्या ने अपना जूता पहनते हुए कहा।

"यह किताब... जल्दी करो! कमाल की चीज़ है!" यह कहते हुए याकोव अपने दोस्त का हाथ पकड़कर उसे अपने पीछे-पीछे घसीटता हुआ अंधेरे गलियारे में ले चला। "इसे पढ़ते समय ख़ून सर्द होने लगता है। लेकिन यह अथाह तालाब की तरह अपनी तरफ़ खींचती रहती है।"

इल्या को अपने दोस्त की उत्तेजना का, उसकी कांपती हुई आवाज़ का आभास था, और जब उन्होंने मोची के कमरे में पहुंचकर लैंप जलाया तो उसने देखा कि याकोव का चेहरा सफ़ेद था और उसकी आंखें धुंधली और मस्ती-भरी थीं, जैसी शराबी की होती हैं।

"कुछ पी है?" उसने तीखी नज़र से उसे देखते हुए पूछा।

"मैंने? आज तो नहीं – एक बूंद नहीं पी। अब मैं नहीं पीता – बस जब मेरा बाप घर पर होता है तो कभी-कभार अपनी हिम्मत बढ़ाये रखने के लिए एक-दो चुसकियां लगा लेता हूं! मुझे अपने बाप से डर लगता है... और मैं वोदका तो पीता ही नहीं – उसमें बू आती है... अच्छा, यह सुनो!"

वह धम से कुर्सी पर बैठ गया, किताब खोलकर उस पर झुका और पीले पड़ गये मोटे काग़ज़ पर छपी हुई लाइनों पर उंगली चलाते हुए उसने कांपते स्वर में पढ़ना शुरू किया:

"'अध्याय तीन। मनुष्य की उत्पत्ति के विषय में।' सुनो।"

गहरी सांस लेकर उसने अपना बायां हाथ ऊपर उठाया और दाहिने हाथ की उंगली लाइनों पर चलाता हुआ पढ़ने लगा:

"डियोडोरस कहता है: वस्तुओं की प्रकृति के विषय में जिन विद्वान लोगों ने लिखा है, उनके मनुष्य की उत्पत्ति के संबंध में दो मत हैं, क्योंकि कुछ विद्वानों का विचार है कि संसार की रचना नहीं की गयी थी, और न ही युगों के बीतने के साथ उसका विघटन होता है, और मनुष्य-जाति का अस्तित्व अनादि है..."

याकोव ने सिर उठाकर हवा में अपना हाथ घुमाया।

"सुना यह?" उसने दबे स्वर में कहा। "अनादि है!"

"आगे पढ़ो," इल्या ने किताब की पुरानी चमड़े की जिल्द पर संदिग्ध दृष्टि डालते हुए कहा। तब याकोव की धीमी और उत्साह-भरी आवाज़ सुनायी दी:

"सिसेरो कहता है कि इस मत के समर्थक थे सामोस के पाइथा-गोरस, अर्खीता तेरेंतीन, एथेंस के प्लेटो, ज़ीनोक्रेटीस, स्टागेइरा के अरस्तू, और बहुत से दूसरे विद्वान, जो इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अपने शाश्वत रूप में यह संसार अनादि है और अनंत है। सुना यह? फिर वही अनादि!"

इल्या ने हाथ बढ़ाकर किताब धड़ से बंद कर दी।

"बस करो, बहुत हो गया!" उसने ग़ुर्राकर कहा। "भाड़ में जाये यह सब! जर्मन कहीं के! दिमाग़ को उलझाने के लिए ये सब गुत्थियां सोचते रहते हैं। कुछ सिर-पैर का पता ही नहीं चलता।"

"ठहरो!" याकोव डर से अपने चारों ओर नज़र डालकर चिल्ला उठा; फिर आंखें फाड़कर अपने दोस्त को घूरते हुए बोला, "तुम्हें अपनी उत्पत्ति के बारे में कुछ मालूम है?"

"कैसी उत्पत्ति?" इल्या अधीर होकर चिल्लाया।

"चिल्लाओ मत... आत्मा को ले लो। आदमी पैदा होता है तो उसके आत्मा होती है, होती है न?"

"तो?"

"तो उसे यह जानना चाहिये कि वह कहां से आयी और कैसे। कहा जाता है कि आत्मा अमर है, कि उसका अस्तित्व सदा से रहा है, कहा जाता है न? महत्त्वपूर्ण बात यह जानना नहीं है कि तुम पैदा कैसे हुए, बल्कि यह कि तुम्हें पता कैसे चला कि तुम्हारा अस्तित्व है। तुम जीवित पैदा हुए थे। तुम जीवित कब हुए? अपनी मां के पेट में? अच्छी बात है! तो तुम्हें यह क्यों नहीं याद है कि तुम्हारे पैदा होने से पहले और लगभग पांच वर्ष तक उसके बाद क्या हुआ था? और अगर तुम्हारे आत्मा है तो वह तुम्हारे शरीर में कहां प्रवेश करती है? बता सकते हो मुझे?"

याकोव की आंखों में विजय की चमक थी और उसका चेहरा ऐसे उल्लास और संतोष से खिला हुआ था जो इल्या की समझ के बाहर थे।

"यह है आत्मा! समझा है न?" याकोव ख़ुशी से चिल्लाया।

"अरे, बेवक़ूफ़," इल्या ने कठोर स्वर में कहा। "इसमें इतना ख़ुश होने की क्या बात है?"

"मैं ख़ुश नहीं हो रहा हूं, बस यह बात है कि मैं... बस मैं..."

"बस मैं..." इल्या ने चिढ़ाते हुए कहा। "महत्त्व इस बात का नहीं है कि मैं ज़िंदा क्यों हूं, बल्कि इस बात का है कि मुझे कैसे जीना चाहिये? किस तरह मुझे साफ़-सुथरी और शराफ़त की ज़िंदगी बसर करनी चाहिये, जिसमें न मैं किसी को नुक़सान पहुंचाऊं और न कोई मुझे नुक़सान पहुंचाये। मुझे तो ऐसी किताब लाकर दो जिसमें यह बताया गया हो..."

याकोव निरुत्तर हो गया। वह विचारमग्न सा सिर लटकाये बैठा रहा। अपने दोस्त के दिल में जोश न पैदा कर सकने की वजह से ख़ुद उसका जोश ठंडा हो गया। एक क्षण बाद उसने कहा:

"मैं तुम्हें देख रहा हूं और तुम्हारे अंदर कुछ ऐसा है जो मुझे अच्छा नहीं लगता... मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हारे दिमाग़ में क्या बात है... ऐसा लगता है कि कुछ दिन से तुम किसी बात पर इतरा रहे हो... जैसे तुम अपने आपको कोई बहुत बड़ा संत समझ रहे हो..."

इल्या हंस दिया।

"हंस किस बात पर रहे हो? मैं तुमसे सच बात कह रहा हूं। तुम हमेशा दूसरों की कड़ी निंदा करते हो... ऐसा लगता है कि जैसे तुम्हें किसी से प्यार ही न हो।"

"सो तो मुझे नहीं है," इल्या ने निश्चयपूर्वक कहा। "किससे प्यार करूं मैं, और क्यों करूं? किसी ने कभी मेरे लिए किया ही क्या है? लोग तो सब यही चाहते हैं कि किसी दूसरे के बिरते बस उनका पेट भरता रहे, और फिर भी वे चाहते हैं कि दूसरे लोग उनसे प्यार करें और उनकी इज़्ज़त करें। मैं बुद्धू नहीं हूं! मेरी इज़्ज़त करो, तभी मैं तुम्हारी इज़्ज़त करूंगा; मेरा हिस्सा मुझे दे दो, तभी मैं शायद तुम से प्यार करूंगा! हर आदमी उतना ही भूखा है जितना कि दूसरा आदमी..."

"इंसान सिर्फ़ रोटी के सहारे ज़िंदा नहीं रहता..." याकोव ने रूखेपन से कहा।

"मैं जानता हूं। हर आदमी अपने को किसी न किसी चीज़ से संवारता है, लेकिन वह मुखौटा होता है! मुझे सारी पोल दिखायी देती है। मेरा चाचा भगवान से हिसाब चुकता कर लेना चाहता है, जैसे दुकान का गुमाश्ता अपने मालिक को बिक्री का हिसाब देता है। तुम्हारे बाप ने गिरजाघर के साथ एक नया उपकार किया है; इसका मतलब है कि उसने या तो किसी को धोखा दिया है या वह किसी को धोखा देनेवाला है... और कहीं भी जाओ, यही हालत है – पांच दो, दस लो... हर आदमी धोखा दे रहा है, हर आदमी अपने लिए बहाने ढूंढ रहा है। लेकिन मैं कहता हूं: कोई पाप किया हो तुमने, इत्तफ़ाक़ से या जान-बूझकर, तो वार सहने के लिए सिर झुका दो।"

"तुम जो कहते हो वह सच है," याकोव ने विचारमग्न होकर कहा। "मेरे बापवाली बात भी सच है, और कुबड़ेवाली बात भी... हाय रे! इल्या, हम दोनों ग़लत जगह पैदा हुए हैं! तुम तो कम से कम भड़क सकते हो और दूसरों को बुरा-भला कहकर अपना गुबार निकाल सकते हो। उससे कुछ तो राहत मिलती है। मेरे पास तो यह भी चारा नहीं है... काश मैं यहां से छुटकारा पाकर कहीं जा सकता!" उसने उदास होकर कहा।

"जाओगे कहां?" इल्या ने हल्का-सा व्यंग करते हुए कहा।

इस पर दोनों चुप हो गये। एक मेज़ के इस तरफ़ और दूसरा उस तरफ़ बैठे हुए थे; उन दोनों के बीच चमड़े की बादामी जिल्द और पीतल के बकसुओंवाली वह मोटी-सी किताब रखी थी...

सीढ़ियों पर से पैर घसीटकर चलने और बुदबुदाकर बोलने की आवाज़ें सुनायी दीं। कोई हाथ से टटोलकर दरवाज़े का हैंडिल ढूंढने की कोशिश कर रहा था। दोनों लड़के कुछ बोले बिना इंतज़ार करते रहे; थोड़ी देर बाद दरवाज़ा धीरे-धीरे खुला और पेर्फ़ीश्का अंदर आया। उसने चौखट से ठोकर खायी, झूमा और घुटनों के बल गिर पड़ा; वह अपना अकार्डियन दाहिने हाथ में सिर के ऊपर उठाये था।

"हि-ऊं!" वह नशे में डूबी हुई हंसी हंसा। उसके पीछे-पीछे मुटल्ली किसी तरह बड़ी कोशिश करके अंदर आयी। उसने फ़ौरन झुककर पेर्फ़ीश्का की दोनों बग़लों में हाथ डालकर उसे उठाने की कोशिश की।

"कितनी चढ़ाये हुए है, बूढ़ा शराबी कहीं का!" वह लड़खड़ाती ज़बान से बुड़बुड़ायी।

"हाथ हटा अपने, कुटनी! मैं ख़ुद उठ जाऊंगा... ख़ुद..."

वह ज़ोर लगाकर उठ खड़ा हुआ और लड़कों के पास चला गया।

"कहो!" उसने अपना बायां हाथ बढ़ाकर कहा। "क्या हाल-चाल है!"

मुटल्ली बेवक़ूफ़ों की तरह ठहाका मारकर हंसने लगी।

"कहां से आ रहे हो तुम लोग?" इल्या ने पूछा।

याकोव उस शराबी जोड़े को देखकर मुस्करा दिया और कुछ बोला नहीं।

"कहां से आ रहे हैं हम लोग? अरे, लड़को! अरे, छोकरो!" और यह कहकर पेर्फ़ीश्का फ़र्श पर पांव पटकने और गाने लगा:

कच्ची हड्डी, बच्ची हड्डी!
हड्डी पर जब बोटी आयी
बेच आया बेरहम क़साई!

"ऐ कुटनी!" उसने मुटल्ली से कहा। "आओ, वह गाना गायें जो तुमने मुझे अभी सिखाया था। आओ!"

वह मुटल्ली की बग़ल में चूल्हे का सहारा लेकर खड़ा हो गया और अपने अकार्डियन के परदों पर उंगलियां फेरते हुए उसने कुहनी से उसे टहोका दिया।

"माशा कहां है?" इल्या ने कठोर स्वर में पूछा।

"ऐ! तुम दोनों!" याकोव उछलकर खड़े होते हुए चिल्लाया। "बताओ, माशा कहां है?"

लेकिन शराबियों ने उनकी बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। मुटल्ली एक ओर को सिर झुकाकर गाने लगी:

आओ पड़ोसिन, दारू लाओ,
जिससे यह इतवार कटे...

पेर्फ़ीश्का ने अकार्डियन की धौंकनी चलाकर उसकी आवाज़ में आवाज़ मिलाकर ऊंचे स्वर में गाना शुरू किया:

सोम-सुरा कुछ इतनी पी लें,
कल का भी सोमवार कटे...

इल्या ने उठकर पेफ़ींश्का को इतनी बुरी तरह झंझोड़ा कि मोची का सिर जाकर चूल्हे से टकरा गया।

"कहां है तेरी बेटी?"

"खो-ओ गयी बिटिया भोली-भाली, रैन अंधेरी काली-काली," पेफ़ींश्का अपना सिर पकड़कर ऊटपटांग बुदबुदाया।

याकोव मुटल्ली से पूछ-ताछ कर रहा था। लेकिन वह खीसें निकालकर बोली:

"मैं नहीं बताऊंगी तुम्हें, नहीं बताऊंगी, नहीं बताऊंगी।"

"इन लोगों ने शायद उसे बेच दिया है, जल्लाद कहीं के," इल्या ने धीरे से कठोर हंसी हंसकर कहा। याकोव ने सहमकर उसे एक नज़र देखा।

"सुनो, पेफ़ींश्का, मुझे बता दो माशा कहां है?" उसने बड़े दयनीय स्वर में गिड़गिड़ाकर कहा।

"मा-शा!.." मुटल्ली व्यंग करते हुए धीरे-धीरे बोली, "अब याद आयी माशा की..."

"इल्या! सुना तुमने? अब हम क्या करें?" याकोव ने परेशान होकर पूछा।

इल्या कोई जवाब दिये बिना कठोर दृष्टि से उन शराबियों को घूरता रहा।

मुटल्ली मनहूस स्वर में रिरियाकर अपना गाना गाती रही और अपनी बड़ी-बड़ी आंखें नचाकर बारी-बारी से याकोव और इल्या को देखती रही। अचानक वह अपनी बांहें बेतुके ढंग से घुमाकर चिल्लायी:

"निकल जाओ यहां से! मेरे घर से! यह घर अब मेरा है! हम दोनों भी ब्याह करनेवाले हैं – यह और मैं..."

मोची पेट पकड़े ठहाका मारकर हंसता रहा।

"चलो, याकोव," इल्या बोला। "इन दोनों से कुछ पता नहीं चलने का।"

"रुको!" घबराया हुआ और भयभीत याकोव बोला। "पेफ़ींश्का, बताओ, कहां है माशा?"

"लेना तो इनको, मुटल्ली, मेरी प्यारी घरवाली! लेना इनको! लेना इनको! कच्चा चबा जाओ इन्हें!.. कहां है माशा?"

पेफ़ींश्का ने सीटी बजाने के इरादे से अपने होंट सिकोड़े और जब उनमें से कोई आवाज़ नहीं निकली तो उसने याकोव को चिढ़ाते हुए ज़बान निकालकर दिखायी और ठहाका मारकर हंस पड़ा। मुटल्ली सीना तानकर इल्या की ओर चलते हुए अपने फेफड़े का पूरा ज़ोर लगाकर गरजी:

"तुम कौन हो? तुम समझते हो कि मैं जानती नहीं?"

इल्या उसे हटाकर बाहर चला गया। सीढ़ियों पर याकोव भी उसके पास आ पहुंचा, उसने उसके कंधे पकड़ लिये और अंधेरे में उसे रोककर बोला:

"क्या यह हो सकता है? क्या ऐसा करना ठीक है? वह अभी इतनी छोटी-सी तो है, इल्या! क्या इन लोगों ने सचमुच उसकी शादी कर दी है?"

"झींखना बंद करो!" इल्या ने झिड़ककर उसे टोका। "उससे कोई फ़ायदा नहीं होगा। तुम्हें पहले से ही उन पर नज़र रखनी चाहिये थी। जब तुम शुरूआत का पता लगाने में इतना उलझे हुए थे, तब तक उन्होंने उसका ख़ात्मा कर दिया..."

याकोव चुप हो गया, लेकिन एक मिनट बाद आंगन में इल्या के पीछे चलते हुए वह फिर बोला:

"इसमें मेरा क़सूर नहीं है। मैं जानता था कि वह कहीं झाड़ू-बुहारी करती है..."

"मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि इसमें तुम्हारा क़सूर है कि नहीं," इल्या ने आंगन के बीच में रुकते हुए रुखाई से कहा। "इस घर को छोड़ देना चाहिये... इस घर को तो फूंक देना चाहिये।"

"हे भगवान! हे भगवान!" याकोव बुदबुदाया; वह इल्या के पीछे खड़ा था और उसकी बांहें शिथिल होकर दोनों ओर झूल रही थीं; उसने अपना सिर ऐसे झुका रखा था जैसे वार सहने के लिए तैयार हो।

"जाओ, अब जाकर रोओ," इल्या ने उससे व्यंग से कहा और अंधेरे आंगन में अपने दोस्त को अकेला छोड़कर वह वहां से चला गया।

अगले दिन सुबह उसे पेफ़ींश्का से पता चला कि माशा को ख्रेनोव नामक एक दुकानदार के साथ ब्याह दिया गया था, जो लगभग पचास साल का बूढ़ा था और जिसकी बीवी अभी हाल ही में मरी थी।

पेफ़ींश्का चूल्हे के चबूतरे पर लेटा था, और अपना सिर, जो नशे के उतार की वजह से दर्द कर रहा था, बीच-बीच में झटकते हुए बहक-बहककर यह क़िस्सा सुना रहा था:

"तो उसने मुझसे कहा, 'मेरे दो बच्चे हैं, दोनों लड़के हैं। उनकी देखभाल करने के लिए किसी आया की ज़रूरत है, लेकिन आया तो अपने परिवार का हिस्सा होती नहीं, वह ज़रूर कुछ न कुछ चुरायेगी और दूसरी बहुत-सी बातें होंगी... तुम अपनी बेटी को राज़ी करने की कोशिश करो...' तो मैंने उससे बात की... और मुटल्ली ने भी उससे बात की... माशा बड़ी तेज़ है – वह फ़ौरन समझ गयी। उसे क्या इससे बेहतर किसी चीज़ की उम्मीद हो सकती है? बिल्कुल नहीं। बदतर भले ही हो, लेकिन बेहतर तो नहीं हो सकती। 'कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, मैं जाऊंगी,' वह बोली। और वह चली गयी। सारा मामला तीन दिन में निबट गया... मुटल्ली को और मुझे तीन-तीन रूबल मिले – वह हम पी भी गये। क्या शराब पीती है वह औरत भी! घोड़ा भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता!"

इल्या चुपचाप सुनता रहा। वह समझ गया कि माशा का बंदोबस्त उम्मीद से बेहतर हो गया था, फिर भी उसे उसके लिए अफ़सोस था। इधर कुछ दिन से वह उससे बहुत कम मिला था और उसके बारे में उसने सोचा भी नहीं था, और अब उसे अचानक ऐसा लगा कि उसके चले जाने के बाद पेत्रूखा का घर हमेशा से ज़्यादा घिनौना हो गया था।

पेफ़ींश्का चूल्हे के चबूतरे से इल्या की ओर देख रहा था, उसका सूजा हुआ पीला चेहरा नीचे लटका हुआ था और उसकी आवाज़ खिड़की के कांच पर टूटी हुई टहनी की खरोंच जैसी लग रही थी।

"ख्रेनोव की शर्त यह है कि मैं उसके घर में कभी क़दम न रखूं! वह कहता है: कभी-कभी दुकान पर भले ही आओ, हलक़ तर करने के लिए कुछ पैसा मिल जायेगा, लेकिन मेरे घर के दरवाज़े तुम्हारे लिए स्वर्ग के दरवाज़ों की तरह बंद हैं। इल्या याकोव्लेविच,

तुम मुझे ख़ुमार तोड़ने के लिए पांच कोपेक नहीं दे सकते? मेहरबानी करके!"

"तुम अब क्या करोगे – माशा के बिना?" इल्या ने पूछा।

मोची ने फ़र्श पर थूका और जवाब दिया:

"अब तो मैं पक्का पियक्कड़ बन जाऊंगा। माशा की वजह से कुछ रोक रहती थी... कभी-कभी मैं उसकी ख़ातिर भी दिहाड़ी कर लेता था... वह जैसे मेरे अंतःकरण पर सवार रहती थी। लेकिन अब मैं जानता हूं कि उसे पेट भर खाना मिलता है, और पहनने को कपड़े हैं और उसके सिर के ऊपर छत है – वह मानो संभालकर संदूक़ में रख दी गयी है – इसलिए अब मैं हरदम पीने के लिए आज़ाद हूं..."

"तुम वोदका पीना नहीं छोड़ सकते?"

"बिल्कुल नहीं!" पेफ़ींश्का ने अपना उलझे बालोंवाला सिर निर्णयात्मक ढंग से हिलाकर कहा। "और क्यों छोड़ दूं? आदमी जो कुछ चाहता है उसका बंदोबस्त उसका मुक़द्दर करता है। यही बात है! और अगर किसी आदमी के दिमाग़ में कोई बात घुसे ही नहीं तो उसका मुक़द्दर भी उसकी परवाह नहीं करता। यह सच है कि एक वक़्त था जब मेरे दिमाग़ में भी एक मंसूबा था – यह उस वक़्त की बात है जब मेरी बीवी ज़िंदा थी। मैं उम्मीद करता था कि येरेमेई दादा के यहां से थोड़ा-बहुत मैं भी नोच लूंगा। मैं इसे इस तरह देखता था, कोई न कोई तो उसके पैसे को चुरा ही लेगा, तो मैं ही क्यों न यह काम कर लूं? ख़ैर, भगवान की कृपा से कोई और मुझसे भी पहले वहां पहुंच गया। मुझे इसका अफ़सोस नहीं है। लेकिन मैंने इतना ज़रूर सीख लिया कि कुछ चाहना ही काफ़ी नहीं है, आदमी में उसे हासिल करने की अक़्ल भी होनी चाहिये।"

मोची हंसा और चबूतरे पर से नीचे उतरने लगा।

"अच्छा, पांच कोपेक तो दो... मेरी आंतें सूखी जा रही हैं!"

"यह लो, एक चुसकी लगाओ," इल्या ने कहा।

फिर उसकी ओर देखकर मुस्कराते हुए इतना और जोड़ दिया:

"तुम लतिया शराबी भी हो और मक्कार भी हो, फिर भी कभी-कभी मैं सोचता हूं कि जितने लोगों को मैं जानता हूं उनमें तुम सबसे अच्छे हो।"

पेर्फ़ीश्का ने लुन्योव के गंभीर मगर प्यार-भरे चेहरे को संदेह से देखा।

"मेरी खिल्ली उड़ा रहे हो?"

"मानो या न मानो, तुम्हारी मर्ज़ी। ऐसा नहीं है कि मैं तुम्हें कोई बहुत अच्छा समझता हूं, बल्कि बात यह है कि मैं दूसरों को बहुत घटिया समझता हूं।"

"यह बात मेरे लिए बहुत गहरी है!.. मेरी खोपड़ी ऐसी सख्त चट्टानों को तोड़ने के लिए नहीं बनायी गयी थी... समझ नहीं पाया... मैं तो जाकर एक चुसकी लगाता हूं, शायद उससे मेरा दिमाग़ कुछ बढ़े..."

"ठहरो!" इल्या ने उसकी बांह पकड़ते हुए कहा। "तुम भगवान से डरते हो?"

पेर्फ़ीश्का ने बेचैन होकर एक पांव से दूसरे पर अपना बोझ बदलते हुए लगभग आहत स्वर में कहा:

"क्यों डरूं मैं? मैंने किसी का कुछ बिगाड़ा तो है नहीं..."

"प्रार्थना करते हो?" इल्या ने और भी धीमे स्वर में पूछा।

"करता तो हूं... कभी-कभी!.."

इल्या समझ गया कि मोची को शराबख़ाने में पहुंचने की इतनी जल्दी पड़ी थी कि वह उससे बात भी करने को तैयार नहीं था।

"अच्छा, जाओ," उसने विचारमग्न होकर कहा, "लेकिन न भूलना: जब तुम मर जाओगे तो भगवान तुमसे पूछेगा, 'ए बंदे, तूने किस तरह की ज़िंदगी बसर की?"

"और मैं जवाब दूंगा, 'मैं छोटा पैदा हुआ था; मैं शराबी मरा; मुझे कुछ याद नहीं, प्रभु।' और भगवान बस हंसेगा और मुझे माफ़ कर देगा..."

मोची ख़ुश होकर हंसता हुआ बाहर चला गया।

लुन्योव तहख़ाने में अकेला रह गया। यह सोचकर उसे अजीब लग रहा था कि माशा अब इस घुटन-भरे, गंदे बिल में फिर कभी दिखायी नहीं देगी, और यह कि पेर्फ़ीश्का भी जल्दी ही यहां से निकाल दिया जायेगा।

अप्रैल के सूरज की किरनें खिड़की के अंदर आकर बिना बुहारे हुए फ़र्श पर अपनी रोशनी बिखेर रही थीं। सभी चीज़ें अव्यवस्थित थीं, वातावरण उदास लग रहा था, जैसे अभी वहां से किसी की मैयत उठी हो।

निराशाजनक विचार एक के बाद एक इल्या पर लुढ़कते हुए गुज़र रहे थे; वह कुर्सी पर निश्चल बैठा भारी-भरकम चूल्हे को देख रहा था जिस पर से जगह-जगह सफ़ेदी उखड़ने लगी थी।

अचानक एक विचार बिल्कुल स्पष्ट रूप में उसके दिमाग़ में बिजली की तरह कौंध गया:

"मुझे जाकर अपना अपराध मान लेना चाहिये।"

पर उसने ग़ुस्से से उस विचार को दूर हटा दिया...

उसी दिन शाम को इल्या को पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव का घर छोड़ देने को बाध्य किया गया। यह घटना इस तरह हुई।

दिन-भर काम करके जब वह घर लौटा तो उसने अपने चाचा को बहुत दुःखी होकर आंगन में उसका इंतज़ार करते हुए पाया। वह इल्या को लकड़ी के ढेर के पीछे ले गया और वहां जाकर बोला:

"सुनो, इल्या, इस बार तो तुम्हें यहां से जाना ही पड़ेगा... तुम सुनते कैसा हंगामा हुआ यहां!" कुबड़े ने आंखें कसकर बंद करके और कूल्हे पीटते हुए अपना त्रास व्यक्त किया। "याकोव पीकर धुत्त हो गया और उसने अपने बाप को उसके मुंह पर चोर कहा! उसने और भी बहुत कुछ कहा – निर्दयी दरिंदा, घिनौना व्यभिचारी – और ख़ूब जी भरकर चिल्लाया!.. और पेत्रूख़ा भी उस पर टूट ही तो पड़ा! उसके दांतों पर घूंसा मारा, उसे बाल पकड़कर घसीटा, उसे अपने पांवों से रौंदा, उसे इतनी बुरी तरह पीटा कि वह ख़ून में लथपथ हो गया! याकोव अब वहां पड़ा कराह रहा है... उसके बाद पेत्रूख़ा मुझ पर झपट पड़ा। 'अपने भतीजे को यहां से निकाल दो,' वह दहाड़ा। 'यह सब उसी का किया-धरा है,' उसने कहा। कैसा भूंका है वह! इसलिए होशियार रहना..."

इल्या ने तसमा गर्दन पर से उतारा और बक्सा अपने चाचा को थमा दिया।

"लो, ज़रा इसे पकड़ो।"

"ठहरो! कहां जा रहे हो तुम?"

इल्या के हाथ करुणा और क्रोध से कांप रहे थे: करुणा याकोव के लिये, और क्रोध पेत्रूख़ा पर।

"इसे पकड़ो, मैंने कहा न," वह दांत पीसकर बुदबुदाया और शराबख़ाने में चला गया। उसने अपने जबड़े इतने कसकर भींच रखे थे कि उनमें दर्द होने लगा था और उसके कानों में एक तूफ़ान गरज रहा था। इस गरज के बीच उसे सुनायी दिया कि चाचा चिल्लाकर पुलिस, जेल और तबाही के बारे में कुछ कह रहा था, लेकिन वह रुक न सका।

पेत्रूख़ा काउंटर के पास किसी ऐसे आदमी से बात कर रहा था जो देखने में बहुत शरीफ़ नहीं लग रहा था। वह मुस्करा-मुस्कराकर बातें कर रहा था। उसकी गंजी खोपड़ी पर रोशनी पड़ रही थी और ऐसा लग रहा था जैसे उसके पूरे सिर पर एक संतोषपूर्ण मुस्कराहट बिखरी हुई हो।

"अच्छा, सौदागर साहब!" वह इल्या को देखकर उपहास के भाव से हंसा और उसकी भवें धमकी के अंदाज़ से फड़कने लगीं। "आप ही से तो मैं मिलना चाहता था..."

वह अपने कमरे का दरवाज़ा रोके खड़ा था।

इल्या दृढ़ संकल्प के साथ अपनी आंखों में क्रूर निर्ममता का भाव लिये उसके पास आया और ऊंचे स्वर में बोला:

"हट जाओ रास्ते से!"

"क्या-आ?" पेत्रूख़ा बोला।

"मुझे याकोव को देखने अंदर जाने दो..."

"बहुत जाने दिया मैंने!"

इल्या ने कोई शब्द कहे बिना अपने पूरे ज़ोर से पेत्रूख़ा के मुंह पर एक मुक्का जड़ दिया। वह कराहता हुआ गिर पड़ा। चारों ओर से वेटर दौड़ पड़े।

"पकड़ लो इसे!" कोई चिल्लाया। "मारो!"

गाहक उछलकर खड़े हो गये जैसे किसी ने उन पर खौलता हुआ पानी उंडेल दिया हो, लेकिन इल्या शांत भाव से पेत्रूख़ा को लांघकर कमरे में चला गया और अंदर जाकर उसने दरवाज़ा बंद कर लिया।

उस छोटी-सी कोठरी में, जिसमें बक्सों और शराब के डिब्बों के ऊंचे-ऊंचे ढेर लगे थे, एक टीन का लैंप मद्धिम लौ से जल रहा था। अंधेरे में और उस काठ-कबाड़ के बीच इल्या पहले तो अपने दोस्त का पता नहीं लगा पाया लेकिन थोड़ी ही देर में उसने देखा कि याकोव फ़र्श पर पड़ा था; उसका सिर अंधेरे में था और इसलिए उसका चेहरा काला और विकृत लग रहा था। इल्या ने लैंप उठा लिया और घुटनों के बल उसके पास बैठ गया। याकोव का पूरा चेहरा एक कटे-फटे बदसूरत मुखौटे जैसा लग रहा था, उसकी आंखें सूजन में खो गयी थीं; उसकी सांस ख़र-ख़र की आवाज़ के साथ चल रही थी और साफ़ ज़ाहिर था कि उसे कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था क्योंकि उसने कराहकर पूछा:

"कौन है?"

"मैं हूं," लुन्योव ने उठकर खड़े होते हुए धीरे से कहा।

"पानी दो..."

इल्या ने मुड़कर अपने कंधे के ऊपर से देखा। लोग दरवाज़ा ज़बर्दस्ती खोलने की कोशिश कर रहे थे।

"पीछे के दरवाज़े से जाओ," किसी ने आदेश दिया।

"मैंने उसे हाथ तक नहीं लगाया था," इस शोर-गुल को चीरती हुई पेत्रूख़ा की दर्द-भरी महीन आवाज़ सुनायी दी।

इल्या ने द्वेष की भावना से किलकारी भरी। दरवाज़े के पास जाकर उसने शांत भाव से उन लोगों से बातचीत शुरू की जो दरवाज़े के दूसरी ओर थे।

"अरे, शोर मत मचाइये! जबड़े पर मेरे एक हल्का-सा मुक्का मार देने से वह मर नहीं जायेगा, लेकिन इसके लिए मुझे अदालत में घसीटा जायेगा। अपना-अपना काम कीजिये और दरवाज़े को धक्का मत दीजिये, मैं उसे ख़ुद खोल दूंगा..."

उसने दरवाज़े की कुंडी खोल दी और यह सोचकर कि शायद ज़रूरत पड़े, वह अपनी मुट्ठियां भींचे खुले हुए दरवाज़े के चौखटे में आकर खड़ा हो गया। उसके चेहरे से साफ़ ज़ाहिर था कि वह लड़ने के लिए बिल्कुल तैयार था; उसकी यह तैयारी और उसका गठा हुआ शरीर देखकर भीड़ पीछे हट गयी। लेकिन पेत्रूख़ा उन्हें उकसाता रहा।

15-01118

"यह बिल्कुल दरिंदा है, बदमाश है!" वह रुआंसी आवाज़ में बोला।

"इसे हटा ले जाइये यहां से और अंदर आकर देखिये कि इसने क्या किया है!" इल्या ने उन्हें अंदर आने का रास्ता देने के लिए एक तरफ़ हटते हुए कहा। "देखिये कि इसने किस तरह उसकी हड्डी-पसली एक कर दी है..."

कुछ गाहक इल्या को कनखियों से देखते हुए उसके पास से गुज़रकर चुपके से कमरे में चले गये और झुककर याकोव को देखने लगे।

"कैसी धुनाई की है उसने इसकी!" उनमें से एक ने विस्मित होकर भयभीत स्वर में कहा।

"थोड़ा-सा पानी ले आओ कोई; पुलिस को बुलवाना चाहिये," इल्या ने कहा।

सारे गवाह उसके पक्ष में थे; यह बात वह देख रहा था और महसूस कर रहा था, और इसलिए वह कठोर, ऊंचे स्वर में कहने लगा:

"आप सब लोग पेत्रूखा फ़िलिमोनोव को जानते हैं, आप सब लोग जानते हैं कि आस-पास इससे बड़ा धोखेबाज़ कोई नहीं है, लेकिन इसके बेटे की भला किसी को कभी कोई बुराई करते सुना गया है? तो देखिये, वह पड़ा है इसका बेटा, जिसे इतनी बुरी तरह पीटा गया है कि शायद वह उम्र भर के लिए अपाहिज हो जाये, और उसका बाप साफ़ बचकर निकल जायेगा। और मुझे सिर्फ़ इसलिए सज़ा मिलेगी कि मैंने पेत्रूखा के मुंह पर एक घूंसा मारा था... क्या यह ठीक बात है? क्या यह इंसाफ़ है? लेकिन हमेशा यही होता है: एक आदमी को पूरी छूट रहती है कि उसका जो जी चाहे करे, और दूसरे आदमी को आंख उठाने तक की इजाज़त नहीं होती।"

सुननेवालों में से कुछ ने हमदर्दी से आह भरी, दूसरे लोग चुपचाप वहां से चले गये; पेत्रूखा चीखने लगा और सब लोगों को वहां से भगाने लगा।

"चले जाओ यहां से! चले जाओ, मैं कहता हूं! यह मेरा मामला है, वह मेरा बेटा है। चलो, हटो यहां से! मैं पुलिस से डरता नहीं हूं... और मुझे अदालत का सहारा लेने की भी ज़रूरत

नहीं है। मैं तो तुम्हें अदालत के बिना ही चारों खाने चित कर दूंगा। खिसको यहां से!"

याकोव को पानी पिलाने के लिए इल्या घुटनों के बल झुककर बैठ गया; अपने दोस्त के कटे और सूजे हुए होंठों को देखना उसके लिए असह्य हो गया था।

"सांस लेने में बड़ी तकलीफ़ होती है," पानी पीते हुए याकोव दबे स्वर में कह रहा था। "मुझे यहां से कहीं ले चलो, इल्या। मेहरबानी करके ले चलो; भगवान के लिए!"

सूजन के बीच खुली हुई दरारों में से आंसू छलके आ रहे थे...

"इसे अस्पताल में भरती कराना चाहिये..." इल्या ने गंभीर मुद्रा बनाकर पेत्रूखा से कहा।

शराबखाने के मालिक ने अपने बेटे की ओर देखा और बुदबुदाकर कुछ कहा जो समझ में नहीं आया। अपनी एक आंख फाड़कर वह घूर रहा था और उसकी दूसरी आंख, जिस पर इल्या ने घूंसा जड़ दिया था, याकोव की दोनों आंखों की तरह ही सूजकर बंद हो गयी थी।

"सुना तुमने कि मैंने क्या कहा?" इल्या ने चिल्लाकर कहा।

"चिल्लाओ नहीं," पेत्रूखा ने आशा के विपरीत बड़ी नरमी और धीरे से कहा। "मैं इसे अस्पताल में नहीं भरती करा सकता – लोग चर्चा करेंगे... उससे काम नहीं चलने का!"

"बदमाश हो तुम!" और यह कहकर इल्या ने बड़े तिरस्कार से पेत्रूखा के पांव पर थूका। "मैं कहता हूं कि तुम्हें इसको अस्पताल में भरती कराना होगा! नहीं कराओगे तो मैं बखेड़ा खड़ा कर दूंगा!.."

"छोड़ो, जाने दो। बहुत गुस्सा न करो... शायद वह बन रहा है..."

इल्या उछलकर खड़ा हो गया और यह देखकर पेत्रूखा दरवाज़े की ओर लपका।

"इवान!" उसने पुकारकर कहा। "एक गाड़ी ले आओ – अस्पताल तक, पंद्रह कोपेक दे दूंगा... कपड़े पहन लो, याकोव। बनो नहीं। ऐसा तो है नहीं कि किसी अजनबी ने तुम्हारी पिटाई की है – तुम्हारे अपने बाप ने मारा है। अपने ज़माने में मेरी तो इससे भी बुरी तरह पिटाई हो चुकी है..."

वह कमरे में इधर से उधर भाग-भागकर खूंटी पर से कपड़े उतारने लगा और इल्या की ओर फेंकने लगा और साथ ही यह भी बयान करता रहा कि जवानी में उसकी कैसी पिटाई हुई थी...

तेरेंती काउंटर पर खड़ा था और इल्या को उसकी ताबेदारी की आवाज़ सुनाई दे रही थी:

"तीन कोपेक का बनाऊं या पांच कोपेक का? कैवियार? माफ़ कीजियेगा, केवियार तो सब खत्म हो गया... थोड़ी-सी हेरिंग मछ-ली लेंगे?"

अगले दिन इल्या ने अपने रहने के लिए जगह ढूंढ ली। रसोई के पास का जो छोटा-सा कमरा लेने का उसने फ़ैसला किया था वह उसे एक नौजवान लड़की ने दिखाया जो लाल ब्लाउज़ पहने थी। उसके गाल गुलाबी थे, छोटी-सी नुकीली नांक, छोटा-सा मुंह, और काले बाल जिनके घुंघराले छल्ले उसके पतले-से माथे पर पड़े हुए बहुत सुंदर लगते थे। बीच-बीच में वह अपने छोटे-से नाज़ुक हाथ से जल्दी से झटका देकर उन्हें फुला लेती थी।

"पांच रूबल में ऐसा खूबसूरत छोटा-सा कमरा सस्ता है," वह चहककर कह रही थी और यह देखते हुए कि चौड़े कंधोंवाला यह नौ-जवान उसकी चंचल काली आंखों को देखकर बेचैन हो उठा था मुस्करा रही थी। "दीवारों पर काग़ज़ बिल्कुल नया है... खिड़की बाग़ में खुलती है। और क्या चाहिये आपको? सबेरे मैं आपके लिये समोवार गरम कर दिया करूंगी, लेकिन उसे आपको खुद अपने कमरे में ले जाना पड़ेगा..."

"क्या आप यहां की नौकरानी हैं?" इल्या ने कौतूहल से पूछा।

मुस्कराहट की जगह फ़ौरन उसकी त्योरियों पर बल पड़ गये और वह बड़े घमंड से तनकर खड़ी हो गयी।

"नौकरानी नहीं, मैं मकान-मालकिन हूं," वह बोली। "यह मेरा फ़्लैट है, और मेरा पति..."

"आपका मतलब है कि आपकी शादी हो चुकी है?" इल्या ने आश्चर्य से पूछा और उसके नाज़ुक-से शरीर पर ऊपर से नीचे तक एक अविश्वासपूर्ण नज़र डाली। उसका गुस्सा फ़ौरन ठंडा पड़ गया और वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"आप भी कैसे अजीब आदमी हैं! पहले तो मुझे नौकरानी समझ लिया, फिर आपको यक़ीन नहीं आता कि मेरी शादी हो चुकी है!"

"कैसे आये यक़ीन? बिल्कुल बच्ची जैसे तो लगती हैं आप," इल्या ने हंसकर जवाब दिया।

"अरे, मेरी शादी को तो तीन साल होने को आये। मेरा पति इस इलाक़े का पुलिसवाला है।"

इल्या ने एक नज़र उसके चेहरे को देखा और न जाने क्यों किल-कारी मारकर हंस पड़ा।

"आप हैं बड़े अजीब आदमी!" लड़की उसे बड़े कौतूहल से देखते हुए कंधे बिचकाकर चिल्ला उठी। "तो कमरा ले रहे हैं न?"

"ले रहा हूं। कुछ पेशगी देना होगा?"

"ज़रूर!"

"तो मैं घंटे दो घंटे में अपना सामान ले आऊंगा..."

"अच्छी बात है। आपका जैसा किरायेदार मिल जाने की मुझे बड़ी खुशी है – आप बहुत खुशमिज़ाज क़िस्म के आदमी मालूम होते हैं।"

"कोई खास नहीं..." इल्या ने धीरे से हंसकर कहा।

वह अपने होंटों पर मुस्कराहट और अपने मन में एक सुखद भावना लिये हुए बाहर चला गया। वह दीवारों पर नीले काग़ज़वाले उस कमरे से भी खुश था, और उस चुलबुली नाज़ुक-सी औरत से भी जो मालकिन थी। लेकिन उसे सबसे ज़्यादा खुशी इस बात की थी कि वह एक पुलिसवाले के फ़्लैट में रहने जा रहा था। उसे यह बात बहुत दिलचस्प, ढिठाई की और खतरनाक भी लगी।

वह जाकर याकोव को देखना चाहता था। उसने किराये की एक गाड़ी ली और उस पर बैठकर यह सोचने लगा कि अब वह पैसे का क्या करे, उसे कहां छिपाये?

अस्पताल पहुंचने पर उसे बताया गया कि याकोव को अभी नह-लाकर सुला दिया गया है। इल्या गलियारे में एक खिड़की के पास रुककर यह फ़ैसला करने की कोशिश करने लगा कि वह घर चला जाये या अपने दोस्त के जागने का इंतज़ार करे। मरीज़ स्लीपरें और अस्पताल के पीले गाउन पहने बरामदे में इधर से उधर टहल रहे थे और उसके पास से होकर गुज़रते वक़्त उस पर एक उचटती हुई नज़र

डाल लेते थे। दूर से आती हुई कराहने की आवाज़ें उनकी दबी-दबी आवाज़ों के साथ घुल-मिल रही थीं ... ये मिली-जुली आवाज़ें गलियारे की लंबी सुरंग में खोखली ध्वनि से गूंज रही थीं ... ऐसा लग रहा था कि हवा में बसी हुई अस्पताल की ख़ास बू के बीच कोई अदृश्य जीव आवाज़ किये बिना उड़ रहा था और हृदय-विदारक आहें भर रहा था ... अचानक इल्या का जी चाहा कि वह इन पीली दीवारों के घेरे से निकलकर कहीं भाग जाये, लेकिन उसी वक़्त एक मरीज़ उसके पास आया और उसकी ओर हाथ बढ़ाकर धीमी आवाज़ में बोला:

"कहो, यहां कैसे?"

इल्या ने नज़र उठाकर देखा और आश्चर्य से चौंक पड़ा ...

"पावेल! तुम भी यहां हो?"

"क्यों, और कौन है?" पावेल ने झट से पूछा।

उसका चेहरा बुझा-बुझा-सा था और वह घबराहट और बेचैनी से अपनी पलकें झपका रहा था ... इल्या ने संक्षेप में बताया कि याकोव पर क्या बीती थी और अंत में कहा:

"लेकिन तुम कितने बदल गये हो!"

पावेल ने लंबी सांस ली और उसके होंट कांपने लगे।

"हां, बदल तो गया हूं," उसने भर्राये हुए स्वर में धीरे से कहा; उसने अपना सिर इस तरह झुका रखा था जैसे उसने कोई अपराध किया हो।

"तुम्हें हुआ क्या है?" इल्या ने हमदर्दी से पूछा।

"हुंह! जैसे तुम अंदाज़ा नहीं लगा सकते ..." पावेल ने जल्दी से एक नज़र अपने दोस्त पर डाली और फिर अपना सिर झुका लिया।

"कोई बीमारी लग गयी है?"

"ज़ाहिर है।"

"वेरा से तो नहीं लगी?"

"और किससे लगती?" पावेल ने मुंह लटकाकर कहा।

इल्या ने सिर झिटक दिया।

"किसी दिन मुझे भी लग जायेगी," वह बोला।

"मैं समझा था कि तुम मुझ पर नाक-भौं सिकोड़ोगे," पावेल

ने बड़े विश्वास से कहा। "मैं तो यहां टहल रहा था कि अचानक मुझे तुम दिखायी पड़ गये। मैं शर्मिंदा था ... मैंने मुंह फेर लिया ... कुछ कहे बिना तुम्हारे पास से होकर निकल गया ..."

"बड़ी होशियारी की!" इल्या ने निंदा के भाव से कहा।

"न जाने तुम क्या समझते? घिनौनी बीमारी है ... कोई दो हफ़्ते हो गये यहां आये ... बिल्कुल जी ऊब गया है, और तकलीफ़ इतनी होती है कि जान निकल जाती है! रात को सबसे बुरा हाल होता है – जैसे कोई तवे पर सेंक रहा हो। और घंटे खिंचते चले जाते हैं – ख़त्म ही नहीं होने आते किसी तरह। ऐसा लगता है कि मैं दलदल में धंसता जा रहा हूं और आस-पास कोई भी नहीं है जिसे मैं मदद के लिए पुकार सकूं ..."

वह लगभग बिल्कुल कानाफूसी के स्वर में बोल रहा था, उसके चेहरे की बोटियां फड़क रही थीं और वह अपनी उंगलियों से अपने गाउन का छोर उमेठ रहा था।

"वेरा कहां है?" इल्या ने चिंतित होकर पूछा।

"कौन जाने?" पावेल ने दुखी मुस्कराहट के साथ कहा।

"वह तुमसे मिलने नहीं आती?"

"एक बार आयी थी। मैंने उसे बाहर निकाल दिया ... मैं उसकी सूरत नहीं देखना चाहता!" वह जलकर बुदबुदाया।

इल्या ने उसके ऐंठें हुए चेहरे की ओर देखा और उसे झिड़कते हुए कहा:

"यह सब बकवास है! अगर तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ इंसाफ़ का बर्ताव रखें तो तुम्हें ख़ुद इंसाफ़ का बर्ताव करना होगा। उसे क्यों दोष देते हो तुम?"

"फिर किसे दोष दूं?" पावेल ने उग्रता से धीमे स्वर में कहा। "किसे दोष दूं, मैं पूछता हूं? मैं रातों को जागकर पड़ा सोचता रहता हूं कि मेरी ज़िंदगी इस तरह तबाह क्यों हुई? वेरा के प्यार के चक्कर में पड़ने की वजह से? मैं उसे कितना प्यार करता था! मेरे दिल में उसके लिए जो प्यार था उसकी चमक तो कभी किसी सितारे को भी नसीब नहीं हुई!.."

पावेल की आंखें लाल हो गयीं और उनमें से दो बड़े-बड़े आंसू

उसके गालों पर ढलक आये। उसने अपनी आस्तीन से उन्हें पोंछ डाला।

"बकवास!" लुन्योव ने कहा; वह महसूस कर रहा था कि उसे पावेल से ज़्यादा वेरा के लिए अफ़सोस हो रहा था। "एक घूंट पी लेते हो तो सब कुछ अच्छा लगने लगता है, शेर हो जाते हो! दस घूंट पी लेते हो तो तबियत खराब हो जाती है: अपने को शहीद समझने लगते हो! लेकिन उसकी सोचो? उसे भी तो यह बीमारी लगी ही है न?"

"उसे भी। तुम समझते हो कि उसके लिए मेरा दिल नहीं दुखता?" पावेल ने कांपते हुए स्वर में पूछा। "जब मैंने उससे यहां से चले जाने को कहा तो वह चली तो गयी... मगर रो पड़ी... इतने धीरे-धीरे और इतना फूट-फूटकर! मुझसे देखा नहीं गया। मैं भी रोना चाहता था, लेकिन उस वक़्त मेरा दिल पत्थर हो गया था। उसके बाद ही मैं सोच में डूब गया। क्या बताऊं, इल्या, इस दुनिया में हम जैसे लोगों की ज़िंदगी कोई ज़िंदगी नहीं है!"

"कोई गड़बड़ी ज़रूर मालूम होती है..." इल्या ने धीरे से विचित्र ढंग से मुस्कराकर सहमति प्रकट की। "ज़िंदगी में बस धक्के ही मिलते हैं। याकोव के बाप ने उसका जीना दूभर कर रखा है; माशा को एक घिनौने बूढ़े के साथ ब्याह दिया गया है, और तुम्हारा यह हाल है..."

अचानक वह चुपके से थोड़ा-सा हंसा और अपनी आवाज़ धीमी करके बोला:

"अकेला मैं ही हूं जिसकी क़िस्मत कुछ साथ देती है! मेरे लिए तो किसी चीज़ को चाहने भर की देर होती है, और – बस! वह सामने आ जाती है।"

"तुम्हारी यह बात अच्छी नहीं है," पावेल ने उसके चेहरे को ध्यान से देखते हुए कहा। "क्या तुम मज़ाक़ करने की कोशिश कर रहे हो?"

"मज़ाक़? मैं तो नहीं कर रहा हूं – कोई और मज़ाक़ करने की कोशिश कर रहा है। हम सबके साथ मज़ाक़ कर रहे हैं... जहां तक मैं समझता हूं, इस दुनिया में इंसाफ़ का तो नाम भी नहीं है।"

"मैं भी यही देखता हूं!" पावेल धीरे से, लेकिन अपने दिल की पूरी गहराई से चिल्ला उठा।

उसके गालों पर लाल धब्बे दहक उठे और उसकी आंखों में आग धधकने लगी, जैसा कि उस समय हमेशा होता था जब वह स्वस्थ था।

लड़के बरामदे के छायादार कोने में एक खिड़की के पास, जिसके कांच पर पीला रंग लगा था, दीवार का सहारा लेकर खड़े थे; दोनों आवेश के साथ बड़ी उत्सुकता से बातें कर रहे थे, एक-दूसरे की बातें बड़ी आसानी से समझ रहे थे। कहीं दूर से लंबी कराहों की आवाज़ें आ रही थीं, जो सुनने में किसी अज्ञात हाथों से छेड़े गये तार की झनझनाहट जैसी लग रही थीं, उस तार के करुण क्रंदन जैसी जो यह जानता हो कि उसके कंपन की पीड़ा को समझनेवाला कोई हृदय नहीं है। पावेल उन आघातों की चेतना से तिलमिला रहा था जो नियति के क्रूर हाथों से उसे पहुंचाये गये थे; उस तार की तरह उसका सारा अस्तित्व भी पीड़ा के साथ कांप रहा था, और उतावलेपन से वह अपनी बिखरी हुई शिकायतें अपने दोस्त के कानों में उंडेल रहा था। उसके शब्द इल्या के हृदय में चिंगारियां-सी पैदा कर रहे थे जो उस पर लगातार एक बोझ बने हुए संदेहों और उलझनों के कोयलों को सुलगाये दे रही थीं। और उसे ऐसा लग रहा था कि ज़िंदगी से घबराहट की उसकी भावना का स्थान कोई ऐसी दूसरी चीज़ लेती जा रही है जो अभी थोड़ी ही देर में उसकी आत्मा के अंधकार को दूर कर देगी और उसे हमेशा के लिए शांति दिला देगी।

"इसकी क्या वजह है कि अगर किसी के पास पैसा हो तो उसकी इज़्ज़त ज़रूर की जायेगी, और अगर कोई विद्वान हो उसकी बात ज़रूर सही होगी?" पावेल ने इल्या के पास खड़े होकर दबे स्वर में अपने दिल की बात कही। बोलते समय वह चारों ओर इस तरह नज़र डालता जा रहा था जैसे उसे उस दुश्मन के मौजूद होने का आभास हो जिसने उसकी ज़िंदगी को तहस-नहस कर दिया था।

"हम लोग जो बातें कहते हैं वे किसकी समझ में आ सकती हैं?" इल्या ने कठोर, ऊंचे स्वर में कहा।

"सच कहते हो! है ही कौन जिससे हम बातें करें?"

पावेल ने और कुछ नहीं कहा; लुन्योव विचारों में डूबा हुआ गलियारे की गहराइयों में घूरता रहा; और इस सन्नाटे में कराहने की आवाज़ और भी साफ़ सुनायी देने लगी। जिस सीने से ये कराहें

निकल रही थीं वह सचमुच बहुत विशाल होगा, और उसकी पीड़ा भी अथाह होगी...

"तुम अब भी ओलिंपियादा के साथ रहते हो?" पावेल ने आखिरकार इल्या से पूछा।

"हां!" इल्या ने व्यंग से मुस्कराकर कहा; फिर अपनी आवाज़ धीमी करके बोला, "याकोव इतना पढ़ता है कि उसे अब ईश्वर के बारे में शंका होने लगी है..."

पावेल ने नज़र उठाकर उसे देखा।

"तो?" उसने अनिश्चित रूप से पूछा।

"उसे कोई किताब मिल गयी है... लेकित तुम्हारा क्या ख्याल है इसके बारे में?"

"मेरा?" पावेल सोच में पड़ गया। "मैं... कैसे बताऊं... मैं गिरजा नहीं जाता।"

"और मैंने इसके बारे में बहुत सोचा है... मेरी समझ में नहीं आता कि जो कुछ हो रहा है उसे भगवान बर्दाश्त कैसे करता है।"

फिर वे दोनों जोश में आकर बातचीत करने लगे, जिसमें वे उस समय तक डूबे रहे जब तक कि अस्पताल के एक चौकीदार ने आकर लुन्योव से सख्ती से पूछा नहीं:

"यहां छिपे क्यों खड़े हो तुम?"

"मैं छिपा तो नहीं हूं," इल्या ने कहा।

"तुम्हें दिखायी नहीं देता कि बाक़ी सब मिलनेवाले चले गये हैं?"

"मैंने नहीं देखा... अच्छा, मैं चला, पावेल। याकोव को देख आना..."

"भाग जाओ यहां से!" चौकीदार चिल्लाया।

"जल्दी आना!" पावेल ने अनुरोध किया।

बाहर निकलकर इल्या अपने दोस्तों के अंजाम के बारे में सोचने लगा। यक़ीनन वह उनसे ज़्यादा ख़ुशनसीब था, लेकिन इस बात के आभास से उसे कोई संतोष नहीं मिला। वह बड़ी कटुता से मुस्कराया और उसने अपने चारों ओर संदेह-भरी दृष्टि से देखा।

वह शांतिपूर्वक अपने नये घर में रहने लगा और अपने मकान-

मालिकों में बड़ी दिलचस्पी लेने लगा। मालकिन का नाम तात्याना व्लास्येव्ना था। वह बहुत हंसमुख और बातूनी क़िस्म की औरत थी, और अभी दो दिन भी नहीं बीते थे कि उसने इल्या को अपनी ज़िंदगी का पूरा ढांचा बता दिया था।

जब इल्या सबेरे अपने कमरे में चाय पी रहा होता, तब वह कुहनी तक आस्तीनें चढ़ाये ऐप्रन बांधे रसोई में कुछ न कुछ करती रहती और बीच-बीच में खुले दरवाज़े से उस पर एक नज़र डालकर बता देती:

"भले ही हम पैसेवाले न हो, मेरा पति और मैं, लेकिन हम पढ़े-लिखे हैं। मैंने प्राइमरी स्कूल में पढ़ा है और उसने सैनिक स्कूल में, हालांकि उसने अपनी पढ़ाई पूरी नहीं की... लेकिन हम अमीर बन जाना चाहते हैं, और हम बन भी जायेंगे... हमारे बच्चे नहीं हैं – और ज़्यादातर ख़र्च बच्चों का ही होता है। खाना पकाने और बाज़ार से सौदा-सुलफ़ ले आने का काम मैं ख़ुद करती हूं, और जहां तक सफ़ाई वग़ैरह करने के काम का सवाल है तो मैंने उसके लिए डेढ़ रूबल महीने पर एक नौकरानी रख छोड़ी है, जो अपने घर रहती है। कुछ अंदाज़ा है आपको कि उससे हमें कितनी बचत होती है?"

वह दरवाज़े पर खड़ी रहती और अपनी घुंघराली लटें पीछे की ओर झटकते हुए उंगलियों पर हिसाब जोड़ती रहती:

"खाना पकानेवाली को तीन रूबल महीना देना पड़ता, और उसे खाना देना पड़ता – सात उसके; कुल हुए दस। कम से कम तीन रूबल महीने का सामान वह चुराती – हुए तेरह। जिस कमरे में वह रहती वह मैंने आपको किराये पर उठा दिया है – अठारह! अब सोचिये, खाना पकानेवाली हमें कितने की पड़ती!.. इसके अलावा मैं हर चीज़ थोक में ख़रीदती हूं: मक्खन का पूरा बड़ा चौका, आटे का पूरा बोरा, और शकर का पूरा थैला, वग़ैरह-वग़ैरह। इसका मतलब हुआ कम से कम बारह रूबल महीने की बचत, और इस तरह हो गये तीस! अगर मैं नौकरी करती – पुलिस के थाने में या तारघर में क्लर्की का कोई काम – तो जितना मैं कमाती वह सारा खाना पकानेवाली को दे देती... इस हालत में, मेरे ऊपर मेरे पति को एक कोपेक भी ख़र्च नहीं करना पड़ता है और मुझे इस बात पर गर्व है! ज़िंदगी बिताने का यही तरीक़ा होना चाहिये, नौजवान! मुझसे सीखो!"

वह अपनी चमकीली आंखों से चुलबुलेपन से इल्या को देखती और इसके जवाब में वह उसकी ओर देखकर मुस्करा देता। वह उसे अच्छी लगती थी और वह उसकी इज़्ज़त करता था। सबेरे जब वह सोकर उठता तो वह रसोई के कामों में अपनी नौकरानी के साथ व्यस्त होती – उसकी नौकरानी पंद्रह-सोलह साल की एक चेचकरू लड़की थी, जो बहुत कम बोलती थी और हर चीज़ को डरी-डरी निस्तेज आंखों से देखती थी। शाम को जब वह घर लौटता तो तात्याना व्लास्येव्ना मुस्कराकर उसके लिए दरवाज़ा खोलती ; वह हमेशा साफ़-सुथरी और आकर्षक दिखायी देती और उसके चारों ओर हमेशा भीनी-भीनी ख़ुशबू बसी रहती। जब उसका पति घर पर होता तो वह गिटार बजाता और वह खुले गले से ऊंची आवाज़ में गाती, या फिर दोनों बैठकर ताश खेलते – वे 'ग़ुलामचोर' खेलते थे और हारनेवाले को एक प्यार देना पड़ता था। इल्या को अपने कमरे से सब कुछ सुनायी देता रहता : तारों की झनझनाहट – कभी मस्ती-भरी, कभी भावुक ; ताश के पत्तों का पटकना ; होंटों के चटख़ारे। पति-पत्नी दो कमरों में रहते थे – एक सोने का कमरा था और दूसरा, जो इल्या के कमरे से मिला हुआ था, खाना खाने के काम भी आता था और बैठक के भी, जहां वे अपनी शामें बिताते थे। रोज़ सवेरे वह कमरा चिड़ियों की चहचहाहट से भर जाता था : कभी कोई टिटमस लहककर गाती ; कभी सिस्किन और गोल्डफ़िंच बारी-बारी से ऐसे चहकतीं जैसे उनके बीच कोई झगड़ा हो रहा हो, कोई बुलफ़िंच किसी गंभीर बूढ़े की तरह बुदबुदाती रहती, कभी-कभी किसी लिनेट का शांत, उदास गीत इन ऊंचे स्वरों में मिल जाता।

तात्याना का पति कीरिक निकोदीमोविच अव्तोनोमोव, कोई छब्बीस साल का था। लंबा क़द और गठा हुआ शरीर था उसका और उसकी नाक बड़ी-सी और दांत बदरंग थे। उसके सुशील चेहरे पर ढेरों मुहासे थे और उसकी निस्तेज आंखें हर चीज़ को बड़ी शांति से घूरती रहती थीं। उसके सिर पर ख़शख़शी बाल ब्रश के रेशों की तरह खड़े रहते थे। उसका सारा भारी-भरकम शरीर कुछ हास्यास्पद और अटपटा-सा लगता था। पहली बार इल्या से मिलने पर उसने न जाने क्यों पूछा :

"गानेवाली चिड़ियां तुम्हें अच्छी लगती हैं ?"

"हां ..."

"तुम उन्हें पकड़ते हो ?"

"नहीं ..." इल्या ने पुलिसवाले को कुछ आश्चर्य से देखते हुए कहा।

कीरिक अव्तोनोमोव ने अपनी नाक सिकोड़ी और दूसरा सवाल पूछने से पहले एक क्षण कुछ सोचा।

"कभी पकड़ी हैं तुमने ?"

"नहीं ..."

"कभी नहीं ?"

"कभी नहीं ..."

"तब वे तुम्हें सचमुच अच्छी नहीं लगतीं," उसने तिरस्कार-भरी मुस्कराहट से कहा। "मैं उन्हें पकड़ा करता था ; उन्हें पकड़ने की वजह से मुझे सैनिक स्कूल से निकाल तक दिया गया था ... और आज भी मैं उन्हें पकड़ता, लेकिन मैं अपने बड़े साहब की नज़रों में अपने आपको गिराना नहीं चाहता। क्योंकि गानेवाली चिड़ियों को पसंद करना तो उदात्त भावना है, लेकिन उन्हें पकड़ना मेरे जैसे रोब-दार आदमी को शोभा नहीं देता। लेकिन अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो सिस्किन ज़रूर पकड़ता ! ऐसी मस्त चिड़ियां होती हैं ! सिस्किनों को ही तो 'भगवान की चिरैयां' कहते हैं ..."

बातें करते समय वह इल्या को स्वप्निल दृष्टि से घूरता रहा जिसकी वजह से लुन्योव घबरा उठा। उसे ऐसा लगा कि पुलिसवाला चिड़ियां पकड़ने की बात प्रतीकात्मक ढंग से कर रहा था, और यह कि उसका इशारा किसी दूसरी ही चीज़ की ओर था। लेकिन पुलिसवाले की पनियायी-हुई आंखों को एक नज़र देख लेने के बाद वह आश्वस्त हो गया, और यह फ़ैसला करके कि उस आदमी में कोई छल-कपट नहीं था, इल्या बड़ी शिष्टता से मुस्करा दिया और कुछ भी न बोला। उसके विनम्र संकोच और उसकी गंभीर मुद्रा से कीरिक निकोदी-मोविच स्पष्टतः ख़ुश हो गया, क्योंकि उसने मुस्कराकर कहा :

"आज शाम आकर हम लोगों के साथ चाय पीना ... शरमाओ नहीं – हम लोग 'ग़ुलामचोर' खेलेंगे ... हम लोग मेहमानों को बहुत ज़्यादा अपने यहां नहीं बुलाते। लोगों के साथ उठने-बैठने में तो बहुत

मज़ा आता है लेकिन उन्हें खिलाना मुसीबत हो जाता है – बहुत महंगा पड़ता है।"

इल्या इस जोड़े की ज़िंदगी को जितना ज़्यादा देखता था, उतने ही वे उसे ज़्यादा अच्छे लगते थे। उनके चारों ओर का वातावरण साफ़-सुथरा और टिकाऊ था, उनका जीवन शांत और सुख-चैन का था, और ऐसा लगता था कि उन्हें एक-दूसरे से प्यार भी था। छोटी-सी फुर्तीली तात्याना देखने में बिल्कुल फुदकती हुई टिटमस चिड़िया जैसी लगती थीं; उसका पति भारी-भरकम बुलफ़िंच जैसा। कभी-कभी शाम को इल्या अपने कमरे में बैठा दीवार के उस पार की बातें सुनता रहता और मन ही मन सोचता: आदमी को इस तरह रहना चाहिये! ईर्ष्या से आह भरकर वह उस दिन के सपने देखने लगता जब उसकी अपनी दुकान होगी और एक साफ़-सुथरा कमरा होगा, जिसमें वह गानेवाली चिड़ियां रखेगा और अकेला रहा करेगा, शोर-गुल से दूर और शांतिपूर्वक जैसे किसी सपने में रह रहा हो... बग़लवाले कमरे में तात्याना अपने पति को बताती होती कि उसने बाज़ार से क्या-क्या ख़रीदा था, उसने कितना ख़र्च किया था और कितने की उसने बचत की थी, और उसका पति हंसता और पत्नी को सराहता:

"कैसा सुलझा हुआ दिमाग़ है तुम्हारा! लाओ, इसी बात पर तुम्हें एक प्यार कर लूं।"

फिर अपनी बारी आने पर वह उसे दिन-भर की घटनाएं बताता, उन दस्तावेज़ों के बारे में बताता जो उसने तैयार की थीं, और पुलिस के सबसे बड़े हाकिम ने या उससे ऊपर के किसी दूसरे अफ़सर ने उससे क्या कहा था... वे दोनों उसकी तरक़्क़ी की संभावना के बारे में बातें करते और इस बात पर सोच-विचार करते रहते कि तरक़्क़ी मिल जाने पर उन्हें अपना फ़्लैट बदल देना चाहिये कि नहीं।

अचानक यह बात सुनकर न जाने क्यों इल्या पर उदासी छा जाती। ऐसे क्षणों में उसे उस छोटे-से नीले कमरे में घुटन महसूस होने लगती और वह अपने चारों ओर इस तरह घूरने लगता जैसे इस उदासी का कारण ढूंढ रहा हो; जब उससे और ज़्यादा बर्दाश्त न होता तो वह उठकर बाहर चला जाता – कभी ओलिंपियादा के यहां और कभी यों ही सड़क पर घूमने के लिए।

ओलिंपियादा ज़्यादा ईर्ष्यालु हो गयी थी और उससे बहुत ज़्यादा मांग करने लगी थी और उनके बीच झगड़े भी ज़्यादा जल्दी-जल्दी होने लगे थे। झगड़े के दौरान वह कभी पोलुएक्तोव की हत्या का जिक्र नहीं छेड़ती थी, लेकिन मेल-जोल के क्षणों में वह पहले की तरह उससे उस बात को भूल जाने का अनुरोध करती थी। इस मामले में उसका संयम लुन्योव को आश्चर्य में डाल देता था। एक बार झगड़े के बाद उसने उससे पूछा:

"ओलिंपियादा, जब हम दोनों का झगड़ा होता है तो तुम कभी मुझे बूढ़े की बात को लेकर झिड़कती क्यों नहीं?"

"क्योंकि उसका तुमसे और मुझसे कुछ लेना-देना नहीं है," उसने कुछ सोचे बिना जवाब दिया। "अगर पुलिस ने तुमको नहीं पकड़ा है तो इसका मतलब यह है कि बूढ़े को अपने किये का फल मिल गया। तुम्हारे लिए उसका ख़ून करने की कोई वजह तो थी नहीं – यह बात तुमने ख़ुद कही थी। तुम तो बस एक ज़रिया थे उसे सज़ा देने का..."

इल्या अविश्वासपूर्ण हंसी हंस दिया।

"क्या बात है?" ओलिंपियादा ने पूछा।

"कुछ नहीं... मैंने बस यह सोचा कि अगर आदमी में ज़रा-सी भी अक़्ल हो तो वह ज़रूर ठग है... वह किसी भी चीज़ को सही ठहराने के लिए बहाना ढूंढ सकता है... और किसी भी चीज़ में ऐब निकाल सकता है..."

"मैं तुम्हारी बात नहीं समझ पाती," ओलिंपियादा ने सिर हिलाकर कहा।

"क्यों नहीं समझ पाती?" इल्या ने आह भरकर और कंधे बिचकाकर कहा। "बिल्कुल सीधी-सी बात है। मुझे तो बस किसी ऐसी चीज़ की मिसाल दो जो चट्टान की तरह अटल हो; किसी ऐसी चीज़ की जिसमें दुनिया का चालाक से चालाक आदमी कोई ऐब न निकाल सके या जिसके लिए वह कोई बहाना न ढूंढ सके। मुझे तो वह चीज़ बताओ! लेकिन तुम नहीं बता सकती... ऐसी कोई चीज़ है ही नहीं..."

एक झगड़े के बाद इल्या चार दिन तक उससे मिलने नहीं गया,

और इस अरसे के बाद उसे उसका एक पत्र मिला जिसमें लिखा था:

"विदा, मेरे जान से प्यारे इल्या, हमेशा के लिए विदा, अब हम एक-दूसरे से कभी नहीं मिलेंगे। मुझे ढूंढने की कोशिश न करना क्योंकि तुम मुझे खोज नहीं पाओगे। मैं अगले जहाज़ से इस मनहूस शहर को छोड़कर जा रही हूं। इस जगह रहते-रहते मेरी आत्मा हमेशा के लिए अपाहिज हो गयी है। मैं बहुत दूर जा रही हूं और कभी लौटकर नहीं आऊंगी। मेरे वापस आने की उम्मीद भी न रखना। तुमने मेरे साथ जो भी नेकियां की हैं उनके लिए मैं अपने दिल की गहराई से तुम्हारा शुक्रिया अदा करती हूं, और जो बुरी बातें हैं उन्हें मैं भुला दूंगी। मैं तुम्हें सच-सच बता दूं कि मैं अकेली नहीं जा रही हूं – मैं नौजवान अनान्यिन के साथ जा रही हूं जो बहुत दिन से मेरे पीछे पड़ा हुआ है और क़समें खा-खाकर कहता है कि अगर मैं उसके साथ नहीं रहूंगी तो उसकी ज़िंदगी तबाह हो जायेगी। तो मैं राज़ी हो गयी हूं: मुझे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। हम लोग समुद्र के किनारे एक गांव में जा रहे हैं जहां अनान्यिन के परिवार का मछलियों का कारोबार है। वह बहुत सीधा-सादा आदमी है और मुझसे शादी तक करना चाहता है, बेवकूफ़ कहीं का। मैं तुमसे विदा लेती हूं। ऐसा लगता है कि मैंने तुम्हें बस सपने में देखा था और जब मेरी आंख खुली तो तुम जा चुके थे। काश तुम्हें पता होता कि मेरा दिल कितना दुखी है। मैं तुम्हें चूमती हूं, मेरी जान, मेरे अकेले। अपने आप पर बहुत घमंड न करना – हम सब लाचार बदनसीब लोग हैं। तुम्हारी ओलिंपियादा इधर बहुत दिनों से बिल्कुल दब्बू हो गयी है, और ऐसा लगता है कि वह अपना सिर कुल्हाड़े के नीचे दिये दे रही है, इतनी बुरी तरह उसका टूटा हुआ लाचार दिल रोता है। ओलिंपियादा श्लिकोवा। मैंने डाक से तुम्हारे नाम एक छोटा-सा पार्सल भेजा है – अपनी निशानी की एक अंगूठी। मेहरबानी करके उसे पहन लेना। ओ० श्लि०।"

जब इल्या पत्र पढ़ चुका तो उसने अपना होंट इतने ज़ोर से काटा कि उसकी आंखों में आंसू छलक आये। उसने पत्र को बार-बार पढ़ा, और हर बार उसे ज़्यादा संतोष मिला – बड़े-बड़े टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखे हुए उन सीधे-सादे शब्दों को पढ़कर उसे पीड़ा भी होती थी और साथ ही अपनी तारीफ़ पर ख़ुशी भी। इससे पहले कभी उसने

यह सोचा भी नहीं था कि वह औरत उससे कितना प्यार करती थी, लेकिन अब उसकी समझ में आ रहा था कि ओलिंपियादा को उससे बहुत गहरा प्यार था, और उसका पत्र पढ़कर उसका दिल गर्वोल्लास से भर उठा। लेकिन यह उल्लास इस चेतना के नीचे दबकर रह गया कि कोई जो उसको बेहद प्यारा था उससे छिन गया था, और वह उदास होकर सोचने लगा कि अब अपने निराशा के क्षणों में वह किसके पास जायेगा। उसके दिमाग़ में उसकी आकृति उभर आयी। उसके आवेशपूर्ण आलिंगनों, उसकी समझदारी की बातों और मज़ाक़ों को याद करके उसके हृदय को गहरे विषाद ने आ दबोचा। वह खिड़की के पास खड़ा आंखें सिकोड़कर बाहर बाग़ में देखता रहा जहां एल्डर की झाड़ियां शाम के झुटपुटे में हौले-हौले डोल रही थीं और बेदवृक्ष की रस्सियों जैसी पतली टहनियां हवा के हल्के-हल्के झोंकों में झूम रही थीं। दीवार के उस पार से गिटार का उदासी-भरा स्वर सुनायी दे रहा था, और तात्याना व्लास्येव्ना ऊंचे स्वर में गा रही थी:

ना मैं चाहूं हीरे-मोती,
ना मन चाहे चीज़ अनूठी...

इल्या ने पत्र अपने हाथ में कसकर दबोच लिया। वह महसूस कर रहा था कि वह ओलिंपियादा के सामने दोषी था; उसका सीना उदासी और ओलिंपियादा के प्रति वेदना के भाव से भर उठा और उसका गला रुंधने लगा। गीत जारी था:

मुझको तो बस ला दो मेरी
सागर-तल में खोयी अंगूठी।

पुलिसवाला ज़ोर से ठहाका मारकर हंसा और गायिका भी हंसती हुई रसोई में भाग गयी। वहां पहुंचते ही उसकी हंसी बंद हो गयी। इल्या को उसके सामीप्य का आभास हो रहा था लेकिन वह मुड़कर उसकी ओर देखना नहीं चाहता था, हालांकि वह जानता था कि उसके कमरे में आने का दरवाज़ा खुला था। वह अपने विचारों में खोया हुआ, अपने अकेलेपन में डूबा हुआ, वहीं निश्चल खड़ा रहा। बाहर बाग़ में पेड़ों की टहनियां झूम रही थीं और उसे लग रहा था कि वह धरती

16-01118

से ऊपर उठ गया है और ठंडे धुंधलके में तैरता चला जा रहा है ...

"इल्या याकोव्लेविच, चाय पियेंगे?" उसकी मकान-मालकिन ने पूछा।

"नहीं, शुक्रिया ..."

बाहर से ज़ोर से गिरजाघर का घंटा बजने की आवाज़ आयी; आवाज़ खिड़की के कांच से टकरायी, कांच झनझना उठा ... इल्या ने अपनी उंगलियों से सीने पर सलीब का निशान बनाया और उसे याद आया कि बहुत दिन से वह गिरजाघर नहीं गया था। घर से चले जाने का यह अवसर पाकर वह बहुत खुश हुआ ...

"मैं प्रार्थना करने गिरजाघर जा रहा हूं," उसने दरवाज़े की ओर मुड़कर कहा। मालकिन चौखट पर हाथ रखे खड़ी थी और बड़े कौतूहल से उसे देख रही थी। उसकी घूरती हुई नज़रों ने इल्या को विचलित कर दिया और वह मानो किसी बात की माफ़ी मांगते हुए बोला:

"बहुत दिन से गिरजाघर नहीं गया हूं ..."

"अच्छी बात है, मैं नौ बजे समोवार तैयार रखूंगी।"

गिरजाघर जाते हुए इल्या नौजवान अनान्यिन के बारे में सोचता रहा। उससे उसकी जान-पहचान थी। अनान्यिन एक अमीर सौदागर था, मछली के कारोबार की 'अनान्यिन ब्रदर्स' कंपनी का सबसे कम-उम्र साझेदार; वह दुबला-पतला सुनहरे बालोंवाला लड़का था जिसके चेहरे का रंग पीला और आंखें नीली थीं। वह हाल ही में इस शहर में आया था और आते ही उसने ऐयाशी की ज़िंदगी शुरू कर दी थी।

इल्या बड़ी कटुता से सोचता रहा: "इस तरह रहते हैं कुछ लोग – शिकरों की तरह: ठीक से पंख भी नहीं निकलते कि फ़ाख़्ता को झपट ले जाते हैं ..."

वह अपने विचारों की पैदा की हुई झुंझलाहट लिये गिरजाघर में पहुंचा और एक अंधेरे कोने में खड़ा हो गया जहां शमादान जलाने की सीढ़ी रखी थी।

बायीं ओर गायक-मंडली 'परमपिता, दया करो' गा रही थी। एक लड़का कर्णकटु तीव्र स्वर में गा रहा था जो पादरी के खोखले.

खुरदरे स्वर से मेल नहीं खाता था। उसके बेसुरेपन से इल्या को बेहद चिड़चिड़ाहट हो रही थी और उसका जी चाह रहा था कि जाकर उस छोकरे के कान ऐंठ दे। आतिशदान की वजह से वह कोना बहुत गरम था और वहां जले हुए कपड़े की बू आ रही थी। बहुत ढीला-ढाला लबादा पहने एक बूढ़ी औरत उसके पास आकर कुछ खिसियाकर बोली:

"यह आपकी जगह नहीं है, साहब ..."

इल्या ने उसके खूबसूरत लबादे के कॉलर पर सजावट के लिए लगी हुई चितराले की दुमें देखीं और कुछ कहे बिना वहां से हट आया और उसने मन ही मन सोचा:

"गिरजाघर में भी सबको अपनी हैसियत के हिसाब से ही जगह दी जाती है ..."

पोलुएक्तोव की हत्या के बाद से इल्या पहली बार गिरजाघर आया था, और अचानक इस बात को याद करके वह कांप उठा।

"क्षमा करना, प्रभु," वह बुदबुदाया और उसने उंगलियों से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया।

गायक-मंडली का गाना सुरीला और मधुर था। स्तुति के शब्दों का साफ़-साफ़ उच्चारण करती हुई सबसे ऊंचे सुर में गानेवाले लड़कों की आवाज़ें, छोटी-छोटी घंटियों की कोमल झंकार की तरह ऊपर गुंबद में गूंज रही थीं। पाटदार आवाज़ें तने हुए तारों की तरह कांप रही थीं। उनकी ध्वनि के अबाध प्रवाह की पृष्ठभूमि में ऊंचे स्वर स्वच्छ निर्मल जल पर धूप की किरनों की झिलमिलाहट जैसे लग रहे थे। लड़कों की आवाज़ों को सहारा देते हुए नीचे सुर में गानेवालों के गंभीर और भारी सुर हवा में बड़ी गरिमा से लटके हुए थे; बीच-बीच में धैवत में गानेवाले के मंझे हुए सशक्त स्वर बाक़ी सब स्वरों से ऊंचे सुनायी देते थे, लेकिन कुछ ही देर बाद वे उस छायादार गुंबद में ऊंचे उठते हुए युवा स्वरों के झिलमिलाते हुए झुंड में खोकर रह जाते थे जहां से सफ़ेद लिबास पहने सर्वशक्तिमान ईश्वर आशीर्वाद देने की मुद्रा में अपने दोनों हाथ फैलाये अपने उपासकों को विचारमग्न होकर घूरता रहता था। अब गायक-मंडली की आवाज़ें आपस में घुल-मिलकर सूर्यास्त के समय के बादल जैसी

हो गयी थीं, जब वह सूरज की किरनों में गुलाबी, गहरे लाल और जामुनी रंग के भरपूर वैभव के साथ दहक उठता है और अंततः अपने सौंदर्य से उत्पन्न होनेवाले हर्षातिरेक में विलीन हो जाता है।

गाने की आवाज़ धीरे-धीरे डूब गयी। इल्या ने गहरी सांस ली और उसके दिल पर से बोझ-सा उतर गया। जो झुंझलाहट लेकर वह गिरजाघर में आया था वह दूर हो चुकी थी और अब उसके दिमाग़ में अपने अपराध का विचार भी नहीं रहा था। इस संगीत से उसकी आत्मा को शांति मिली थी और वह शुद्ध हो गयी थी। इस कल्याण-कारी स्थिति के अप्रत्याशित आभास ने उसे चक्कर में डाल दिया था; उसे सहज ही उस पर विश्वास नहीं हो पा रहा था, फिर भी जब उसने अपने हृदय में टटोलकर देखा तो उसमें उसने कोई पश्चात्ताप नहीं पाया।

अचानक, जैसे कोई सुई चुभ गयी हो, यह विचार उसके मन में उठा:

"अगर मेरे पीछे मकान-मालकिन ने मेरे कमरे में इधर-उधर टटोलकर देखा हो और वह पैसा उसके हाथ लग गया हो तो क्या होगा?"

पलक झपकते वह गिरजाघर के बाहर निकल आया और किराये की गाड़ी करके घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसकी आशंकाएं और भी विस्तृत रूप धारण करती गयीं। उसकी उद्विग्नता बहुत बढ़ गयी।

"अगर पैसा उसके हाथ लग गया तो? तो क्या हुआ? वे मेरी शिकायत तो नहीं करेंगे। बस, पैसा अपने पास रख लेंगे..."

यह विचार आते ही कि वे उसकी शिकायत किये बिना ही पैसा रख लेंगे उसकी उद्विग्नता और बढ़ गयी। उसने फ़ैसला किया कि उस हालत में वह सीधा उसी गाड़ी पर पुलिस के थाने में जायेगा और कह देगा कि उसने पोलुएक्तोव का ख़ून किया था। आख़िर वह क्यों यातना सहता रहे और दुबिधा में अपनी ज़िंदगी बिताये जबकि दूसरे लोग इतने भयानक पाप की क़ीमत चुकाकर हासिल किये गये उसके पैसे के बल पर साफ़-सुथरी, आरामदेह और चिंतामुक्त ज़िंदगी बसर करें? यह विचार आते ही उसका क्रोध निर्ममता की हद तक भड़क

उठा। घर पहुंचकर उसने घंटी को ज़ोर से झटका दिया और अपने होंट बंद किये और मुट्ठियां भींचे खड़ा दरवाज़ा खुलने का इंतज़ार करता रहा।

दरवाज़ा तात्याना व्लास्येव्ना ने खोला।

"अरे, कितने ज़ोर से झटका दिया आपने घंटी को! क्या बात है? क्या कुछ हो गया है?" उसने उसकी सूरत देखकर भयभीत होकर कहा।

इल्या ने एक शब्द भी कहे बिना उसे परे ढकेल दिया और सीधा अपने कमरे में चला गया, लेकिन नज़र डालते ही आश्वस्त हो गया कि उसकी आशंकाएं निराधार थीं। पैसा खिड़की के ऊपर फ़्रेम के पीछे छिपाकर रखा गया था और उसने फ़्रेम में एक छोटा-सा पर खोंस दिया था ताकि अगर किसी का हाथ पैसे तक पहुंचे तो वह पर अपनी जगह से गिर जाये। लेकिन पर अपनी जगह मौजूद था, फ़्रेम के कत्थई रंग पर एक सफ़ेद धब्बे की तरह।

"कुछ तबियत ख़राब है?" मकान-मालकिन ने उसके कमरे के दरवाज़े पर आकर कहा।

"तबियत कुछ ठीक नहीं है। माफ़ कीजियेगा – मैंने अंदर आते हुए आपको धक्का दे दिया था..."

"अरे, वह कोई बात नहीं है... अच्छा, गाड़ीवाले को कितना देना है आपको?"

"अगर आप इतनी मेहरबानी करें..."

वह दौड़कर बाहर निकल गयी, और उसके जाते ही इल्या उछलकर कुर्सी पर चढ़ गया; पैसे निकालकर उसने अपनी जेब में डाल लिये और संतोष की सांस ली। वह अपनी आशंकाओं पर लज्जित था और वह पर उसे अपने आचरण जैसा ही मूर्खतापूर्ण और हास्यास्पद लग रहा था।

मन ही मन अपने आप पर हंसते हुए उसने सोचा, "मैं बौखला गया था!" थोड़ी ही देर में तात्याना व्लास्येव्ना फिर दरवाज़े पर खड़ी थी।

"गाड़ीवाले ने बीस कोपेक लिये," वह जल्दी से बोली। "बात क्या हुई? क्या चक्कर आ गया था?"

"थोड़ा-सा ... मैं गिरजाघर में खड़ा था, और अचानक ..."

"आप लेट जाइये," वह उसके कमरे में आते हुए बोली। "लेट जाइये, मेरी फ़िक्र न कीजिये। मैं यहां आपके पास बैठ जाऊंगी। मैं अकेली ही हूं, वह क्लब में ड्यूटी पर हैं ..."

इल्या उठकर पलंग पर बैठ गया और वह कमरे की अकेली कुर्सी पर बैठ गयी।

"इतनी तकलीफ़ दे रहा हूं आपको," इल्या ने खिसियाकर मुस्कराते हुए कहा।

"कोई बात नहीं," वह खुली जिज्ञासा और बेतकल्लुफ़ी से उसके चेहरे को देखते हुए बोली। कुछ देर ख़ामोशी रही। इल्या की समझ में नहीं आ रहा था कि उससे क्या कहे; तात्याना उसे ध्यान से देखते हुए अचानक अजीब ढंग से मुस्कराने लगी।

"क्या बात है?" इल्या ने आंखें झुकाकर पूछा।

"बताऊं आपको?" उसने शरारत-भरे स्वर में कहा।

"बताइये ..."

"आपको बहाना बनाना नहीं आता।"

इल्या चौंक पड़ा और सहमकर उसने एक नज़र उस पर डाली।

"आपको सचमुच नहीं आता। बीमार! आप बिल्कुल बीमार नहीं हैं, बस इतनी बात है कि आपके पास दिल दुखानेवाला ख़त आया है। मैंने देखा, मैंने देखा है।"

"आप ठीक कहती हैं, मुझे ऐसा ख़त मिला है ..." इल्या ने सतर्क रहकर धीरे से कहा।

बाग़ से डालों की सरसराहट की आवाज़ आयी। तात्याना व्लास्ये-व्ना ने एक तेज़ नज़र खिड़की के बाहर डाली, और फिर मुड़कर इल्या की ओर देखने लगी।

"कोई नहीं, बस हवा का झोंका है, या कोई चिड़िया होगी। सुनिये, क्या आप समझदार औरत की एक बात सुनेंगे? मैं उम्र में छोटी ज़रूर हूं, लेकिन मैं नादान नहीं हूं।"

"मेहरबानी करके बताइये, क्या बात है," इल्या ने दिलचस्पी से उसकी ओर देखते हुए कहा।

"उस ख़त को फाड़कर फेंक दीजिये" उसने गंभीर स्वर में कहा।

"अगर उसने आपको ठुकरा दिया, तो उसने वही किया जो हर अच्छी लड़की को करना चाहिये। आपका शादी करने का समय नहीं आया है; अभी तक ज़िंदगी में आपके पांव ठीक से जम नहीं पाये हैं, और जब तक ऐसा न हो जाये लोगों को शादी नहीं करनी चाहिये। आप अच्छे ख़ासे तगड़े नौजवान आदमी हैं, मेहनत से काम कर सकते हैं, और देखने में ख़ूबसूरत भी हैं—सारी लड़कियां आप पर मर मिटेंगी... लेकिन आप ख़ुद उनके चक्कर में न पड़ियेगा। काम कीजिये, अपना माल बेचिये, कुछ पैसा बचा लीजिये, किसी ऐसे कारोबार में लग जाइये जिसके आगे चलकर पनपने की उम्मीद हो, ख़ुद अपनी दुकान खोल लीजिये, और जब काम चल निकले तब शादी कर लीजियेगा। उससे पहले नहीं। आप ज़रूर कामयाब होंगे। आप शराब पीते नहीं हैं, आपके व्यवहार में संतुलन है, आपको किसी का पेट पालना नहीं है।"

इल्या सिर झुकाये सुनता रहा, और मन ही मन हंसता रहा। वह ज़ोर से हंसना चाहता था, मस्त होकर जी खोलकर हंसना चाहता था।

"आपको सिर थामकर बैठने की कोई ज़रूरत नहीं है," तात्याना व्लास्येव्ना उस आदमी के अंदाज़ से कहती रही जिसे इस दुनिया का बहुत तजुर्बा हो। "सब ठीक हो जायेगा। मुहब्बत ऐसी बीमारी है जो बहुत जल्दी अच्छी हो जाती है। शादी होने से पहले मैं तीन बार मुहब्बत कर चुकी थी, और हर बार इतनी बुरी तरह कि डूब मरने को तैयार रहती थी। लेकिन वह सब आयी-गयी बात हो गयी! और जब मैंने देखा कि मेरा शादी कर लेने का वक़्त आ गया है तो मैंने कोई मुहब्बत किये बिना शादी कर ली ... और फिर मुझे मुहब्बत हो गयी—अपने पति से ... कभी-कभी ऐसा होता है कि औरत को अपने पति से मुहब्बत हो सकती है ..."

"क्या मतलब है आपका?" इल्या ने अपनी आंखें फाड़कर पूछा। तात्याना व्लास्येव्ना खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"मैंने तो बस मज़ाक़ किया है ... लेकिन मज़ाक़ छोड़कर भी यह कहती हूं: औरत अपने पति से मुहब्बत के बिना ही शादी कर सकती है और फिर उससे प्यार करने लग सकती है ..."

और आंखें नचाते हुए वह फिर चहकने लगी। उसकी बातें सुनते हुए—बड़े ध्यान से, दिलचस्पी और सम्मान की भावना के साथ

सुनते हुए – वह अपनी नज़रें उसके नाज़ुक, सुडौल शरीर पर दौड़ा रहा था। वह कितनी छोटी-सी और लचकदार थी, कितनी समझदार और कितनी भरोसे की। यह है ऐसी बीवी, उसने सोचा, जिसके साथ कभी ज़िंदगी तबाह नहीं हो सकती। उसके साथ यहां बैठकर उसे बहुत अच्छा लग रहा था, इस सुसंस्कृत औरत के साथ, जो बाक़ायदा पत्नी थी – रखैल औरतों जैसी नहीं – साफ़-सुथरी, नाज़ुक-सी, जिसमें शालीन महिलाओं जैसी सारी बातें थीं, लेकिन जो उसके जैसे सीधे-सादे आदमी के सामने रोब नहीं जमाती थी और जो उसको "आप" कहकर संबोधित करती थी। इस सब से उसके दिल में अपनी मकान-मालकिन के प्रति बहुत अभार की भावना पैदा हुई थी, और जब वह जाने के लिए उठी तो वह भी उछलकर खड़ा हो गया और बड़े सम्मान से झुककर उससे बोला :

"मुझसे दुराव न बरतने के लिए आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। मुझसे बातचीत करके मुझे तसल्ली दी है आपने ..."

"सचमुच ? अच्छी बात है !" और यह कहकर वह चुपके से थोड़ा-सा हंस दी। उसके गालों पर लाली दौड़ गयी और कुछ सेकंड तक उसकी आंखें इल्या की आंखों पर जमी रहीं।

"अच्छा, फिर मिलेंगे ..." उसने कुछ अजीब ढंग से कहा, और फिर मुड़कर बहुत नौजवान लड़की जैसे हल्के क़दमों से बाहर चली गयी ...

इल्या दिन-ब-दिन अव्तोनोमोव-दंपति को ज़्यादा पसंद करने लगा। वह पुलिसवालों की बहुत बुराइयां देख चुका था, लेकिन कीरिक उसे मेहनतकश आदमी लगता था, बहुत समझदार भले ही न रहा हो लेकिन दिल का बहुत नेक। उनके घर में वह शरीर था, उसकी पत्नी आत्मा थी। वह वहां बहुत थोड़ा समय बिताता था और घर पर उसकी बात का कोई ख़ास महत्त्व नहीं था। इल्या के साथ अपने संबंधों में तात्याना व्लास्येव्ना ज़्यादा बेतकल्लुफ़ होती गयी। वह उससे लकड़ी चीर देने का अनुरोध करती, उससे पानी भरवाकर मंगवा लेती और कचरे की बाल्टी बाहर ख़ाली कर आने को कहती। वह ये सारे काम ख़ुशी-ख़ुशी कर देता ; उसे पता भी नहीं चलने पाया और ये काम

उसकी ज़िम्मेदारी समझे जाने लगे। जल्दी ही मकान-मालकिन उस चेचकरू नौकरानी को हफ़्ते में सिर्फ़ एक बार, बस शनिवार के दिन, बुलाने लगी।

अव्तोनोमोव-परिवार के यहां कभी-कभी मेहमान आते थे। उनमें पुलिस का असिस्टेंट चीफ़ कोर्साकोव भी होता था, जो बहुत दुबला-पतला आदमी था और जिसकी मूंछें लंबी-लंबी थीं। वह काला चश्मा लगाता था, मोटी-मोटी सिगरेटें पीता था, और उसे गाड़ीवालों से ऐसी चिढ़ थी कि वह आपे से बाहर हुए बिना उनके बारे में बात ही नहीं कर सकता था।

"क़ानून और व्यवस्था को ये गाड़ीवाले जितना तोड़ते हैं, उतना कोई और नहीं," वह कहता था। "पैदल चलनेवालों को आप हमेशा क़ानून का पाबंद रहने के लिए राज़ी कर सकते हैं, लेकिन इन्हें नहीं कर सकते, इन सुअरों को! पैदल चलनेवालों की आवाजाही को तो ठीक ढर्रे पर लगाने के लिए बस इतना ही काफ़ी है कि जगह-जगह यह नोटिस चिपकवा दिया जाये कि सड़क पर इधर से जानेवाले दाहिनी ओर चलें और उधर से आनेवाले बायीं ओर। लेकिन इन गाड़ीवालों से तो आप कोई क़ायदा-क़ानून मनवा ही नहीं सकते, गाड़ीवाला तो ... तो ... भगवान ही जाने क्या होता है गाड़ीवाला !"

वह सारी शाम गाड़ीवालों को कोसता रह सकता था ; लुन्योव ने कभी उसे और किसी बात के बारे में बोलते ही नहीं सुना था। एक और मेहमान होता था ग्रिज़लोव, जो किसी अनाथालय का सुपरिं-टेंडेंट था ; उसके काली दाढ़ी थी और वह बहुत कम बोलता था। उसे भारी आवाज़ में 'सागर में, गहरे नीले सागर में' गीत गाने का बहुत शौक़ था। उसकी बीवी, जो बड़े-बड़े दांतोंवाली लंबे क़द की तगड़ी-सी औरत थी, हमेशा सारी मिठाई खा जाती थी, जिस पर तात्याना व्लास्येव्ना को बहुत ताव आता था।

"वह महज़ मुझे जलाने के लिए ऐसा करती है !" मेहमानों के विदा हो जाने पर वह कहती।

फिर आनेवालों में होते थे : अलेक्सांद्रा विक्तोरोव्ना त्रावकिना और उसका पति। वह लंबे क़द की दुबली-पतली लाल बालोंवाली औरत थी, और वह कुछ ऐसे अजीब ढंग से नाक छिनकती थी कि

लगता था जैसे कोई चीथड़े फाड़ रहा हो। उसका पति हमेशा फुस-फुसाकर बोलता था, क्योंकि उसके गले में कोई ख़राबी थी। लेकिन वह लगातार बोलता रहता था और लगता था कि वह सूखे भूसे की जुगाली कर रहा है। वह खाता-पीता आदमी था, आबकारी के दफ़्तर में किसी ओहदे पर था और किसी धर्मार्थ संस्था के संचालक मंडल का सदस्य भी था। वह और उसकी पत्नी हमेशा ग़रीबों की निंदा करते रहते थे, उन पर आरोप लगाते थे कि वे भूठे होते हैं, लालची होते हैं और जो लोग उनके साथ भलाई करने की कोशिश करते हैं उनकी वे कोई इज़्ज़त नहीं करते।

अपने कमरे में बैठे-बैठे इल्या जीवन के बारे में उनके मत बड़े ध्यान से सुनता रहता। जो कुछ वह सुनता वह उसकी समझ के बाहर था। ऐसा लगता था कि इन लोगों को सब कुछ मालूम था और वे सारी समस्याएं हल कर चुके थे, और उनके दिल में उन लोगों के लिए, जिनकी ज़िंदगी उनके मापदंडों की कसौटी पर खरी नहीं उतरती थी, तिरस्कार के अलावा और कुछ नहीं था।

कभी-कभी शाम को अव्तोनोमोव-दंपति इल्या को भी अपने साथ चाय पीने के लिए बुला लेते थे। तात्याना व्लास्येव्ना ख़ूब हंसती थी और मज़ाक़ करती थी और उसका पति कहता था कि कितना अच्छा हो अगर वह अचानक अमीर हो जाये और एक घर ख़रीद सके।

"मैं मुर्ग़ियां पालता," वह अधमुंदी आंखों से स्वप्न-सा देखता हुआ कहता। "हर तरह की मुर्ग़ियां: लाल और काली और चित्तीदार। और पीरू भी। और मोर भी! इससे अच्छा और क्या हो सकता है कि तुम ड्रेसिंग-गाउन पहने मुंह में सिगरेट दबाये खिड़की के पास बैठे बाहर लॉन में ख़ुद अपने मोर को पंखे की तरह अपनी दुम फैलाये इठला-इठलाकर इधर से उधर टहलता हुआ देखते हो – पुलिस के चीफ़ की तरह इठलाता हुआ और बड़बड़ाता हुआ: ब्रू, ब्रू, ब्रू!"

तात्याना व्लास्येव्ना धीरे से खी-खी करके हंस देती।

"और मैं," इल्या को कनखियों से देखकर वह भी स्वप्न देखती हुई कहती, "गर्मियों में क्रीमिया और काकेशस जाती और जाड़े में दरिद्र कल्याण समिति की मीटिंगों में जाती। और मैं अपने लिए काले रंग की एक ऊनी पोशाक बनवाती, बिल्कुल सीधी-सादी और

सपाट, और गहनों के नाम पर मैं सिर्फ़ याक़ूत की एक जड़ाऊ पिन लगाती और कानों में मोती के बुंदे पहनती। मैंने 'नीवा' पत्रिका में एक कविता पढ़ी थी जिसमें कहा गया था कि ग़रीबों के ख़ून और आंसुओं की बूंदें स्वर्ग में जाकर याक़ूत और मोती बन जाती हैं।" और हल्की-सी आह भरकर अपनी बात ख़त्म करते हुए वह कहती, "काले बालों पर याक़ूत बहुत फबता है।"

इल्या मुस्करा देता और कुछ भी न कहता। कमरा गरम और साफ़-सुथरा होता था, और उसमें चाय की सुगंध बसी होती थी और किसी और चीज की भी जो उतनी ही मज़ेदार होती थी। चिड़ियां छोटे-छोटे रोयेंदार गेंदों की शक्ल में दब-सिकुड़कर पिंजरों में सो चुकी होती थीं; दीवारों पर चटकीले रंगों की तसवीरें लगी होती थीं। दोनों खिड़कियों के बीच रखी हुई शेल्फ़ दवाओं के ख़ूबसूरत डिब्बों, चीनी मिट्टी के चूज़ों, और शकर और कांच के बने हुए रंग-बिरंगे ईस्टर के अंडों से भरी होती थी। इल्या को यह सब बहुत आकर्षक लगता था, और उसका मन शांत उदासी से भर उठता था।

लेकिन कभी-कभी, ख़ास तौर पर ऐसे दिन जब उसे कामयाबी नहीं मिलती थी, यह उदासी चिड़चिड़ाहट का रूप धारण कर लेती थी। चूज़ों, डिब्बों और अंडों को देखकर उसे इतनी भुंभलाहट होती थी कि अगर वह उन सबको ज़मीन पर फेंककर रौंद पाता तो उसे बहुत ख़ुशी होती। जब उसकी ऐसी मनोदशा होती तो वह चुपचाप बैठा खिड़की के बाहर एकटक देखता रहता; वह कुछ कहते डरता था कि उसकी कोई बात इन नेक लोगों को कहीं ठेस न पहुंचाये। एक बार जब वह उन दोनों के साथ ताश खेल रहा था तो उसने कीरिक की आंखों में आंखें डालकर कहा:

"कीरिक निकोदीमोविच, भला उस आदमी का कुछ पता चला जिसने द्वोर्यांस्काया स्ट्रीट में उस सूदख़ोर का गला घोंट दिया था?"

ये शब्द मुंह से निकलते ही उसे अपने सीने में एक सुखद गुदगुदी-सी महसूस हुई।

"तुम्हारा मतलब पोलुएक्तोव से है?" पुलिसवाले ने अपने पत्तों को ध्यान से देखते हुए खोये-खोये स्वर में कहा और फ़ौरन दोहराया:

"तुम्हारा मतलब है पोलुएक्तोव-ओव-ओव-ओव से?.. नहीं,

कोई पता नहीं चला पोलुएक्तोव-ओव-ओव-ओव का... मेरा मतलब है, पोलुएक्तोव का नहीं, बल्कि उस आदमी का जिसने... हुंह। मैंने उसे खोजा ही नहीं है। मेरी बला से? मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है– मुझे तो चाहिये हुकुम की बेगम। हुकुम, हुकुम, हुकुम! अच्छा देखते हैं: तुमने, तात्याना, पहले मुझे तिग्गी दी, फिर फूल की बेगम, फिर ईंट की बेगम, और ... और क्या फेंका?"

"ईंट का सत्ता। चलो, जल्दी से फ़ैसला करो..."

"बस ऐसे ही आदमी का सफ़ाया कर दिया!" इल्या ने धीरे से हंसकर कहा।

लेकिन पुलिसवाला अपने पत्तों में इतना डूबा हुआ था कि उसने उसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया।

"बस ऐसे ही," कीरिक ने उसके शब्द दोहराये। "ठिकाने लगा दिया पोलुएक्तोव-ओव-ओव-ओव को..."

"यह मसख़रापन बंद करो, कीरिक," उसकी पत्नी ने कहा। "नाहक़ खेल रोके बैठे हो..."

"बहुत ही चलता पुर्ज़ा आदमी होगा जिसने उसका ख़ून किया," इल्या अपना ही राग अलापता रहा। उसकी बात की तरफ़ जो उदासीनता बरती जा रही थी उसकी वजह से उस हत्या के बारे में बात करने की उसकी इच्छा और प्रबल हो उठी।

"चलता पुर्ज़ा?" पुलिसवाला शब्दों को खींचकर बोला। "वह नहीं। मैं हूं चलता पुर्ज़ा। यह लो!"

और यह कहकर उसने एक ऐसा पत्ता मेज़ पर पटका जिससे इल्या ग़ुलामचोर फंस गया। कीरिक और उसकी पत्नी ठहाका मारकर हंस पड़े, और इससे इल्या की चिड़चिड़ाहट और बढ़ ही गयी।

"दिन-दहाड़े शहर की सबसे बड़ी सड़क पर इस तरह किसी का ख़ून कर देना बड़े जिगरे का काम है..." नयी बाज़ी बांटते हुए उसने कहा।

"जिगरे का नहीं, तक़दीर का," तात्याना व्लास्येव्ना ने उसकी बात को ठीक करते हुए कहा।

इल्या ने एक नज़र उस पर डाली, फिर उसके पति पर, और धीरे से हंसकर पूछा:

"आप ख़ून करने को तक़दीर की बात कहती हैं?"

"ख़ून करने को नहीं, बल्कि ख़ून करके बच निकलने को।"

"तुमने यह कमबख़्त ईंट का इक्का फिर मेरे मत्थे मढ़ दिया," पुलिसवाले ने कहा।

"वह मिलना तो मुझे चाहिये था!"* इल्या ने गंभीर होकर कहा।

"किसी सूदख़ोर का ख़ून कर डालिये तो आपको मिल जायेगा!" तात्याना व्लास्येव्ना ने अपने पत्तों को ध्यान से देखते हुए कहा।

"सूदख़ोर का ख़ून करने से मिलेगा ठेंगा, अभी तो लो यह तुरुप," कीरिक ने इल्या के पत्ते पर तुरुप मारते हुए ठहाका मारकर कहा।

लुन्योव ने उनके खिले हुए चेहरों की ओर फिर देखा और हत्या के बारे में बातें करने की उसकी इच्छा बिल्कुल मर गयी।

इन लोगों की साफ़-सुथरी, सुलझी हुई ज़िंदगी से बस एक पतली-सी दीवार से अलगाकर रहते हुए उसे जैसे-जैसे ज़्यादा दिन होते जा रहे थे, वैसे-वैसे उस पर उदासी के दौरे भी ज़्यादा जल्दी-जल्दी पड़ने लगे थे। जीवन की असंगतियों के और उस ईश्वर के विचार फिर उसे सताने लगे थे, जो सब कुछ जानते हुए भी दुष्टों को कोई दंड नहीं देता था। वह किस बात की राह देखता रहता है?

उदासी के इस वातावरण में वह फिर किताबें पढ़ने लगा था। उसकी मकान-मालकिन के पास 'नीवा' और 'सचित्र जगत' पत्रिकाओं की कुछ प्रतियां और कुछ पुरानी फटी हुई किताबें थीं।

अपने बचपन की तरह ही इल्या को अब भी उन्हीं किताबों में दिलचस्पी थी जिनमें उसकी अब तक की जानी-पहचानी ज़िंदगी से बिल्कुल ही दूसरी क़िस्म की ज़िंदगी बयान की जाती थी। उसे वास्तविकता की कहानियां, मामूली लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी बयान करनेवाली कहानियां नीरस और झूठी लगती थीं। कभी-कभी इन्हें पढ़कर उसका मन बहलता था, लेकिन ज़्यादातर वह यही महसूस करता था कि इस तरह की कहानियां वे चालाक लेखक लिखते थे जो

---

* क़ैदियों को पहनने के लिए जो शलूके दिये जाते थे उनकी पीठ पर ईंट के इक्के की शक्ल का निशान टका रहता था।

उस कठिन और भयानक ज़िंदगी पर, जिसे इल्या इतनी अच्छी तरह जानता था, मुलम्मा चढ़ाकर उसे आकर्षक बनाना चाहते थे। हां, वह उस ज़िंदगी को अच्छी तरह जानता था, और लगातार वह उसे और भी अच्छी तरह जानता जा रहा था। रोज़ सड़क पर चक्कर लगाते हुए उसे ऐसी नयी सामग्री मिलती रहती थी जो उसकी निंदा की भावना को और बढ़ा देती थी। पावेल से मिलने के लिए अस्पताल जाकर वह उसके साथ अपने नवीनतम अनुभवों के बारे में चर्चा करता था।

"व्यवस्था! आज ही मैंने देखा कि कुछ बढ़ई और पलस्तर करने-वाले सड़क की पटरी पर चले जा रहे थे। इतने में एक पुलिसवाला उधर आ निकला और उन्हें देखकर चिल्लाया, 'ऐ, सुअरो! हटो पटरी पर से!' मतलब है – जाओ उधर घोड़ों के बीच, नहीं तो शरीफ़ लोगों के कपड़े गंदे करोगे! और यह कहकर उन्हें खदेड़ दिया।"

पावेल भी बौखला उठता और आग को और हवा देता। अस्पताल में वह इतना दुःखी था जैसे किसी क़ैदखाने में हो। उसकी आंखें क्रोध और व्यथा से दहकती रहती थीं, उसके शरीर का मांस घुलता जा रहा था। याकोव फ़िलिमोनोव उसे अच्छा नहीं लगता था; उसे वह पागल समझता था।

लेकिन याकोव, जिसके बारे में पता यह चला था कि उसे तपे-दिक़ थी, अस्पताल में बहुत मज़े में था। उसने अपने बग़लवाले पलंग के मरीज़ से दोस्ती कर ली थी, जिसकी एक टांग काट दी गयी थी। वह किसी गिरजाघर का रखवाला था; वह नाटे क़द का एक मोटा-सा आदमी था, जिसकी गंजी खोपड़ी बहुत बड़ी थी और जिसकी काली दाढ़ी उसके पूरे सीने पर फैली रहती थी। उसकी भवें मूंछों जैसी घनी थीं और वह उन्हें लगातार ऊपर-नीचे हिलाता-डुलाता रहता था। उसकी आवाज़ खोखली थी और आंतों में से निकलती हुई मालूम होती थी। जब भी लुन्योव अस्पताल आता, वह याकोव को गिरजाघर के उस रखवाले के पलंग पर बैठा हुआ पाता।

वह आदमी चुपचाप लेटा अपनी भवें फड़का रहा था और याकोव धीमी आवाज़ में बाइबिल से कुछ पढ़कर उसे सुना रहा था; बाइबिल भी गिरजाघर के रखवाले की तरह ही छोटे आकार की और मोटी-सी थी।

"निश्चय मोआब का आर नगर एक ही रात में बर्बाद कर दिया गया और उसका नाम-निशान तक बाक़ी नहीं रहा; निश्चय मोआब का कीर नगर एक ही रात में बर्बाद कर दिया गया और उसका नाम-निशान तक बाक़ी नहीं रहा।"

याकोव की आवाज़ इतनी कमज़ोर हो गयी थी कि वह लकड़ी पर आरी चलने की आवाज़ जैसी लगती थी। पढ़ते वक़्त उसने अपना बायां हाथ इस तरह ऊपर उठाया जैसे वह दूसरे मरीज़ों को यशायाह की अशुभसूचक भविष्यवाणी सुनने का निमंत्रण दे रहा हो। उसकी बड़ी-बड़ी स्वप्निल आंखों की वजह से उसका पीला चेहरा डरा-वना लगने लगा था। इल्या को देखते ही उसने किताब रख दी और अपने दोस्त से बड़ी परेशानी से वही पुराना सवाल पूछा:

"माशा से मिले?"

इल्या नहीं मिला था।

"हे भगवान, हे भगवान," याकोव बहुत उदास होकर कराहते हुए बोला। "जैसा कहानियों में होता है: अचानक चली गयी, कोई दुष्ट चुड़ैल उसे उठा ले गयी।"

"तुम्हारा बाप तुम्हें देखने आया था?"

याकोव की मुद्रा अचानक बदल गयी और वह सहमकर अपनी पलकें झपकाने लगा।

"आया था। उसने मुझसे कहा कि तुम यहां बहुत दिन पड़े-पड़े आराम कर चुके हो, अब घर लौट जाने का वक़्त आ गया है। मैंने डाक्टर की बहुत खुशामद की कि मुझे किसी तरह यहीं रहने दे... यहां कितना अच्छा है – कितनी शांति है, कितना चैन है... यह है निकीता येगोरोविच – यह और मैं मिलकर बाइबिल पढ़ते रहते हैं। यह सात साल से बाइबिल पढ़ता रहा है – हर चीज़ ज़बानी याद है इसे और यह बता सकता है कि हर भविष्यवाणी का क्या मतलब है। जब मैं अच्छा हो जाऊंगा तो अपने बाप को छोड़ दूंगा और जाकर निकीता येगोरोविच के साथ रहने लगूंगा। गिरजाघर में इसकी मदद किया करूंगा और गायक-मंडली में गाया करूंगा..."

गिरजाघर के रखवाले ने धीरे-धीरे अपनी भवें ऊपर उठायीं; उनके नीचे उसकी गोल-गोल काली आंखें अपने गहरे कोटरों में बड़ी

मुश्किल से हिल-डुल पाती थीं। उनमें कोई चमक नहीं थी। वे शांत निश्चल भाव से इल्या पर जमी हुई थीं।

"कमाल की किताब है यह बाइबिल भी!" याकोव खांसते-खांसते ज़ोर से चिल्लाया। "और हमें वह बात भी मिल गयी – याद है उस विद्वान आदमी ने, जो शराबख़ाने में आया था, क्या कहा था? 'डाकुओं के डेरों में ख़ुशहाली रहती है...' किताब में है यह। मुझे मिल गया! और इससे भी बुरी-बुरी बातें कही गयी हैं!"

अपनी आंखें बंद करके और हाथ उठाकर उसने गंभीर स्वर में पढ़ना शुरू किया:

"'कितनी बार दुष्टों का दीपक बुझ जाता है, और उन पर विपत्ति आ पड़ती है, और ईश्वर क्रोध करके उनके हिस्से में शोक देता है?' सुना यह? और सुनो: 'तुम कहते हो, ईश्वर उसके अन्याय का फल उसकी संतान को देता है। उसे अपने किये का फल स्वयं भोगने दो, ताकि उसे पता चले।'"

"क्या सचमुच यही कहा गया है?" इल्या ने संदेह करते हुए पूछा।

"एक-एक शब्द यही है!"

"मुझे तो ऐसा लगता है कि... कि यह ठीक नहीं है। यह पाप है!" इल्या ने कहा।

गिरजाघर के रखवाले ने अपनी भवें अपनी आंखों पर झुका लीं और उसकी दाढ़ी हिलने लगी।

"सत्य की खोज करनेवाले के साहसपूर्ण कर्म कभी पापमय नहीं होते," उसने अजीब-से खोखले स्वर में कहा, "क्योंकि वे सर्वोच्च शक्ति की प्रेरणा पर किये जाते हैं।"

इल्या चौंक पड़ा। गिरजाघर के रखवाले ने गहरी सांस ली और उसी मंद स्वर में शब्दों का साफ़-साफ़ उच्चारण करते हुए कहता गया:

"सत्य आदमी को प्रेरित करता है कि वह उसे खोजे! क्योंकि सत्य ईश्वर है! और कहा गया है, 'प्रभु के आदेश का पालन करना बड़े सम्मान की बात है।'"

गिरजाघर के रखवाले का दाढ़ीवाला चेहरा देखकर इल्या के मन में श्रद्धा और विनम्रता जागृत हो रही थी: उस चेहरे में कोई कठोर, महत्त्वपूर्ण चीज़ थी।

अब उसकी भवें ऊपर तनी हुई थीं, नज़रें छत पर जमी हुई थीं और दाढ़ी हिल रही थी।

"इसे जॉब की पुस्तक दसवें अध्याय के शुरू से पढ़कर सुनाओ, याकोव," वह बोला।

कुछ कहे बिना याकोव पन्ने पलटने लगा और कोमल, कांपते हुए स्वर में पढ़ने लगा:

"'मेरी आत्मा मेरे जीवन से उकता चुकी है; मैं खुलकर शिकायत करूंगा; मैं अपनी आत्मा की सारी कटुता के साथ बोलूंगा। मैं ईश्वर से कहूंगा, मेरी निंदा न कर; मुझे बता कि मुझसे तेरा क्या झगड़ा है। क्या तुझे यह शोभा देता है कि तू किसी का उत्पीड़न करे, कि तू अपने ही हाथों की बनायी हुई चीज़ से घृणा करे?..'"

इल्या ने आगे झुककर पन्ने की एक झलक देखने की कोशिश की।

"क्या तुम्हें इस पर विश्वास नहीं आता?" याकोव बोला। "तुम भी अजीब आदमी हो!"

"अजीब नहीं, बल्कि बुज़दिल," गिरजाघर के रखवाले ने शांत भाव से कहा।

बड़ी कोशिश से वह अपनी निस्तेज दृष्टि छत पर से हटाकर इल्या के चेहरे तक लाया और भारी-भरकम अंदाज़ में प्रवचन करने लगा, मानो इल्या को अपने शब्दों से कुचलकर रख देना चाहता हो:

"तुमने जो बातें सुनी हैं उनसे भी सख़्त बातें कही गयी हैं। बाईसवें अध्याय का तीसरा अनुवाक्य ले लो: उसमें साफ़-साफ़ कहा गया है: 'क्या सर्वशक्तिमान को इससे कोई ख़ुशी होती है कि तुम सदाचारी हो? या इसमें उसका कोई फ़ायदा है कि तुम निष्कलंक आचरण को अपनाते हो?' इस तरह के क़थनों का ग़लत अर्थ लगाने से बचने के लिए बहुत ज़्यादा समझ-बूझ की ज़रूरत होती है।"

"क्या आप इन सारी बातों को समझते हैं?" इल्या ने संकोच से पूछा।

"यह?" याकोव चिल्लाकर बोला। "अरे, निकीता येगोरोविच सब कुछ समझता है!"

17-01118

लेकिन गिरजाघर के रखवाले ने और धीमे स्वर में कहा :

"अब मेरे लिए इसे समझने की कोशिश करने का वक़्त बहुत पहले निकल चुका है ... मुझे तो अब मौत को समझना है ... मेरी एक टांग तो काट दी गयी है, लेकिन सूजन और ऊपर तक पहुंच गयी है ... और दूसरी टांग भी सूजने लगी है ... और मेरा सीना भी ... मैं बहुत जल्दी मर जाऊंगा।" वह इल्या के चेहरे पर नज़रें जमाये धीरे-धीरे और शांत भाव से कहता रहा, "और मरने की मेरी कोई इच्छा नहीं है, क्योंकि मेरी ज़िंदगी बहुत कठिनाइयों में गुज़री है, कभी कोई सुख नहीं मिला – पीड़ा और अपमान के अलावा कुछ भी नहीं। अपनी जवानी में मैं याकोव की तरह रहता था – अपने बाप के शिकंजे में। वह बला का शराबी और बिल्कुल दरिंदा था। तीन बार उसने मेरी खोपड़ी तोड़ दी और एक बार उसने मेरी टांग खौलते पानी से झुलस दी। मेरी मां नहीं थी : मेरे पैदा होते ही वह मर गयी थी। मेरी शादी हुई। मेरी बीवी मुझसे प्यार नहीं करती थी – उसे मुझसे शादी करने के लिए मजबूर किया गया था। हमारी शादी के बाद तीसरे दिन उसने फांसी लगा ली। मेरा एक बहनोई था। उसने मुझे खूब लूटा। मेरी बहन ने कहा कि मेरी वजह से मेरी बीवी फांसी लगाकर मर गयी। बाक़ी सारे लोग भी यही कहते थे, हालांकि वे अच्छी तरह जानते थे कि मैंने उसे कभी हाथ तक नहीं लगाया था और वह वैसी ही अछूती मर गयी जैसी वह मेरे पास आयी थी। उसके बाद मैं नौ साल जिया हूं। अकेले रहना भी बड़ी भयानक बात है! ... मैं राह देखता रहा कि मुझे कोई सुख तो मिले। और अब यह है मेरी हालत – मरने को पड़ा हूं यहां। यह है मेरी सारी कहानी!"

उसने अपनी आंखें मूंद लीं और कुछ देर चुप रहा। फिर उसने पूछा:

"मैं किसलिए जिया हूं?"

उसकी निराशा-भरी बातें सुनते हुए इल्या के हृदय को भय ने आ दबोचा। याकोव का चेहरा उतर गया और उसकी आंखों में आंसू झलकने लगे।

"मैं किसलिए जिया हूं, मैं तुमसे पूछता हूं? मैं यहां लेटे-लेटे रोज़ अपने आपसे यही सवाल पूछता हूं मैं किसलिए जिया हूं?"

उसने बोलना बंद कर दिया। उसकी आवाज़ अचानक वैसे ही

डूब गयी जैसे कलकल ध्वनि से बहती हुई जल-धारा अचानक भूगर्भ में जाकर खो जाती है।

एक मिनट बाद उसने अपनी आंखें खोलीं और फिर कहने लगा :

"'क्योंकि उसके लिए, जो ज़िंदा है, उम्मीद बाक़ी है : क्योंकि ज़िंदा कुत्ता मरे हुए शेर से बेहतर है।'" उसकी दाढ़ी फिर हिलने लगी। "उसी एक्लिज़ियास्टीस की पुस्तक के एक अध्याय में लिखा है : 'सौभाग्य के दिनों में खुश रहो, और जब विपत्ति का दिन आये तो विचार करो : ईश्वर ने एक को दूसरे के साथ ही बनाया है, इस उद्देश्य से कि मनुष्य उसके खिलाफ़ कुछ न कह सके।'"

इल्या का मन भर चुका था। वह चुपके से उठा, याकोव से हाथ मिलाया, और गिरजाघर के रखवाले की ओर झुककर उससे विदा ली। बिल्कुल अनजाने ही वह उसके सामने इस तरह बहुत ज्यादा झुका था जैसे मरे हुए आदमी से विदा लेते समय झुका जाता है।

जब वह अस्पताल से निकला तो उसके दिल के बोझ पर एक और बोझ लद गया था। इस आदमी को वह बहुत समय तक नहीं भुला सका। उसके साथ मुलाक़ात होने के बाद उन लोगों की लंबी सूची में एक और नाम जुड़ गया जिन्हें ज़िंदगी ने धोखा दिया था। उसे उस आदमी की कही हुई बातें अच्छी तरह याद रहीं और उनके अर्थ की थाह पाने की कोशिश में वह उन्हें अपने दिमाग़ में उलट-पुलटकर हर पहलू से देखता रहता। वे उसे विचलित कर देती थीं क्योंकि वे उसकी आत्मा की उन गहराइयों को छू लेती थीं जहां ईश्वर के न्याय में उसकी आस्था का वास था।

उसने महसूस किया कि किसी समय, बिल्कुल अनजाने ही, ईश्वर के न्याय में उसकी यह आस्था डिग गयी थी। अब वह वैसी अडिग नहीं थी जैसी वह कभी हुआ करती थी। कोई चीज़ उसे धीरे-धीरे खा गयी थी, जैसे ज़ंग लोहे को खा जाता है। उसके अंदर दो शक्तियों के बीच द्वंद्व चल रहा था – दो ऐसी शक्तियां जो आग और पानी की तरह बेमेल थीं। और उसने अपने अतीत के खिलाफ़, सभी लोगों के खिलाफ़ और उस दुनिया के खिलाफ़, जिसकी व्यवस्था को वह स्वीकार नहीं कर सकता था, झुंझलाहट की एक नयी लहर चढ़ती हुई महसूस की।

इसी बीच उसके प्रति अव्तोनोमोव-दंपति का लगाव बढ़ता जा रहा था। समय-समय पर कीरिक उसके कंधे पर सरपरस्ती के अंदाज़ से धप मारते हुए मज़ाक़ उड़ाता और रोब के साथ कहता:

"तुम अपना वक़्त ख़राब कर रहे हो, नौजवान! तुम्हारे जैसे विनम्र और गंभीर आदमी को तो कोई बड़ा काम करना चाहिये। यह अच्छी बात नहीं है कि अगर किसी आदमी में पुलिस का सबसे बड़ा हाकिम बनने लायक़ अक़्ल हो तो वह मामूली पुलिसवाला बना रहे।"

तात्याना व्लास्येव्ना विस्तार से उसके कारोबार के बारे में पूछने लगी – हर महीने वह कितने का माल बेचता था और ख़र्चा निकालकर कितना मुनाफ़ा कमाता था। वह ख़ुशी-ख़ुशी उसे सब कुछ बता देता: दिन-ब-दिन उसके दिल में इस औरत की इज़्ज़त बढ़ती जाती थी, जो इतने कम साधनों से ज़िंदगी को इतना साफ़-सुथरा और आकर्षक बना सकती थी।

एक दिन शाम को वह अपने कमरे में खुली खिड़की के पास बैठा निराश भाव से, ओलिंपियादा के विचारों में डूबा हुआ, बाहर अंधेरे बाग़ को घूर रहा था। तात्याना व्लास्येव्ना रसोई में आयी और उसे अपने साथ चाय पीने के लिए बुलाया। वह अनमनेपन से चला गया: उसे अपने विचारों का क्रम भंग होने का खेद था और बातें करने को उसका जी नहीं चाह रहा था। उदास भाव से वह चुपचाप चाय की मेज़ पर जाकर बैठ गया। इसके विपरीत, उसके मेज़बान बहुत जोश में थे, जैसा कि उनके चेहरों पर एक सरसरी-सी नज़र डालने से ही उसे पता चल गया। समोवार से सनसनाहट की सुखद आवाज़ आ रही थी; एक चिड़िया जाग गयी थी और अपने पिंजरे में फुदक रही थी; कमरे में भुने हुए प्याज़ और ओडिकोलोन की ख़ुशबू बसी हुई थी। कीरिक अपनी कुर्सी पर घूमकर थोड़ा-सा तिरछा बैठ गया और चाय की ट्रे को उंगलियों से बजाकर गाने लगा:

"बूम, बूम, बूमिटी बूम! बूम, बूम..."

"इल्या याकोव्लेविच!" तात्याना ने गंभीर होकर कहा, "मेरे पति के और मेरे पास एक ऐसा विचार है जिस पर हमने बहुत ग़ौर किया है और हम उसके बारे में आपसे संजीदगी से बात करना चाहते हैं..."

"हो, हो, हो!" पुलिसवाला अपने लाल-लाल हाथों को ज़ोर से आपस में रगड़ते हुए ठहाका मारकर हंसा। इल्या चौंक पड़ा और आश्चर्य से उसे देखने लगा।

"'मेरे पति के और मेरे पास,'" कीरिक ने खीसें निकालकर इन शब्दों को दोहराया; फिर अपनी बीवी की ओर आंख मारते हुए कहा, "इसने भी कैसा शानदार दिमाग़ पाया है!"

"हम लोगों ने थोड़ा-सा पैसा बचाया है, इल्या याकोव्लेविच।"

"'हम लोगों ने बचाया है!' हो, हो! वाह, मेरी जान!"

"चुप रहो!" तात्याना व्लास्योव्ना ने सख़्ती से कहा, और उसने ऐसी कठोर मुद्रा धारण कर ली कि उसका नाक-नक़्शा और तीखा दिखायी देने लगा।

"हम लोगों ने कोई एक हज़ार रूबल बचाये हैं," उसने धीमे स्वर में कहा, और इल्या की ओर झुककर अपनी पैनी आंखों से उसकी आंखों की थाह लेने लगी। "यह रक़म बैंक में है और उस पर हमें चार फ़ीसदी सूद मिलता है।"

"और वह काफ़ी नहीं है," कीरिक ने मेज़ पर ज़ोर से हाथ मारते हुए चिल्लाकर कहा। "हम लोग..."

उसकी बीवी ने घूरकर उसे चुप कर दिया।

"हमारे लिए इतना बिल्कुल काफ़ी तो है, लेकिन हम लोग आपको अपने पांवों पर खड़े होने में आपकी मदद करना चाहते हैं..."

मुख्य विषय से हटकर इल्या की प्रशंसा में कुछ बातें कहने के बाद उसने अपनी बात जारी रखी:

"एक बार आपने कहा था कि बिसातख़ाने के कारोबार में लगायी गयी पूंजी पर बीस फ़ीसदी तक पैसा मिल सकता है या इससे भी ज़्यादा, शर्त सिर्फ़ यह है कि कारोबार किस तरह चलाया जाता है। तो हम लोग पुरनोट पर अपनी यह रक़म आपको उधार देने को तैयार हैं – जो उस वक़्त वापस करनी होगी जब हम पुरनोट के भुगतान की मांग करें, वरना नहीं – ताकि आप दुकान खोल सकें। आप मेरे इंतज़ाम में दुकान चलायेंगे और हम लोग मुनाफ़ा आधा-आधा बांट लेंगे। आपको अपने सारे माल का बीमा मेरे नाम से कराना होगा, और आपको एक और काग़ज़ पर दस्तख़त करने होंगे – बस, एक मामूली-

से काग़ज़ पर, लेकिन जो क़ानून की नज़र से ज़रूरी है। सोच लीजिये और हमें बता दीजिये कि यह आपको मंज़ूर है कि नहीं।"

उसकी ऊंची कारोबारी आवाज़ सुनते हुए इल्या अपना माथा बड़े ज़ोर से रगड़ता जा रहा था। उसके बोलने के दौरान एक-दो बार उसने एक नज़र उस कोने की ओर भी डाली जहां दो जलती हुई मोमबत्तियों के बीच देव-प्रतिमा की सुनहरी सजावट जगमगा रही थी। उसे हैरत कम हो रही थी, बेचैनी ज़्यादा; वह लगभग डर-सा गया था। उसके चिरपोषित स्वप्न को साकार कर देनेवाले इस सुझाव को सुनकर वह स्तब्ध रह गया था। लेकिन उसे ख़ुशी भी हो रही थी। घबरायी हुई मुस्कराहट के साथ वह उस छोटी-सी औरत को एकटक देखता रहा और मन ही मन सोचता रहा: तो यह निकली मेरा उद्धार करनेवाली परी।

वह मां जैसे अंदाज़ में उससे बातें करती रही:

"इसके बारे में अच्छी तरह सोच लीजिये; हर पहलू से सोच-विचार कर लीजिये। क्या आप ऐसा क़दम उठाने को तैयार हैं? क्या आपके अंदर उसके लायक़ सूझ-बूझ है? इसकी योग्यता है? और हमें यह भी बताइये कि आप अपनी मेहनत के अलावा इस कारोबार में और क्या लगा सकते हैं। बहरहाल, हमारा पैसा तो काफ़ी नहीं होगा, क्यों है न?"

"मैं कोई एक हज़ार और लगा सकता हूं उसमें," इल्या ने धीरे से कहा। "मेरा चाचा मुझे दे देगा... हो सकता है ज़्यादा भी दे दे..."

"वह मारा!" कीरिक अव्तोनोमोव ज़ोर से चिल्लाया।

"तो आप राज़ी हैं?" तात्याना व्लास्येव्ना ने पूछा।

"इसमें भी कोई पूछने की बात है, बिल्कुल राज़ी है वह!" पुलिसवाले ने चिल्लाकर कहा; फिर अपना हाथ जेब में डालकर जोश में आकर ऊंची आवाज़ में बोला, "और अब हम शैम्पेन की बोतल खोलकर इसका जशन मनायेंगे। शैम्पेन चाहिये! भागकर नुक्कड़ तक चले तो जाओ, इल्या, और एक बोतल तो ले आओ। मेरी तरफ़ से! दोन मार्का कहना, नब्बे कोपेक की बोतल मिलेगी। उससे कहना कि मैंने मंगायी है तो पैंसठ में ही दे देगा। भाग के जाना, बच्चू!"

इल्या पति-पत्नी के खिले हुए चेहरों को देखकर मुस्करा दिया और बाहर चला गया।

वह सोचने लगा, तक़दीर ने मुझे तोड़-मरोड़कर रख दिया है, मुझे भयानक पाप के मार्ग पर लगाया है, मेरा दिल तोड़ा है और मेरी आत्मा को छिन्न-भिन्न कर दिया है, और अब, मानो माफ़ी मांगने के लिए, वह मुझ पर मुस्करा रही है और मुझे मेरा मौक़ा दे रही है... अब मेरे सामने साफ़-सुथरी और भलेमानसों जैसी ज़िंदगी बिताने के लिए रास्ता साफ़ है; मैं अब अकेला रह सकूंगा और अपनी आत्मा को शांति पहुंचा सकूंगा। उसके विचार मस्ती-भरे गीत की तरह झूम रहे थे, नाच रहे थे और अपनी ज़िंदगी में पहली बार उसके दिल में विश्वास की भावना उभर रही थी।

वह असली शैम्पेन की एक बोतल लेकर लौटा जिसके लिए उसने सात रूबल चुकाये थे।

"ओहो!" कीरिक ख़ुश होकर चिल्लाया। "यह तो ठाठ हो गये! बहुत सही ख़्याल है यह!"

तात्याना व्लास्येव्ना ने इस मामले को दूसरी नज़र से देखा। उसने इस बात को नापसंद करते हुए सिर हिलाया और बोतल को अच्छी तरह देखभाल लेने के बाद बोली:

"इसमें तो पूरे पांच रूबल ख़र्च हो गये होंगे... कैसी फ़ज़ूलख़र्ची है!"

इल्या बहुत ख़ुश था और खड़ा कृतज्ञता के भाव से उसे देखकर मुस्करा रहा था।

"असली माल है!" वह ख़ुश होकर चिल्लाया। "मैंने कभी असली शैम्पेन चखी नहीं है! लेकिन मेरी ज़िंदगी भी तो किस क़िस्म की रही है! बिल्कुल सड़ी हुई ज़िंदगी... गंदी, पाशविक, जिसमें सांस लेने की भी गुंजाइश नहीं थी। हमेशा मेरी भावनाओं को ठेस ही पहुंचायी गयी है। यह भी कोई ज़िंदगी है?" उसने अपनी आत्मा के दुखते हुए घाव को छू दिया था और अब उसे कुरेदे बिना नहीं रह सकता था। "जब तक की मुझे याद है, मैं हमेशा किसी असली चीज़ की तलाश में रहा हूं, लेकिन ज़िंदगी मुझे नदी में बहते हुए तिनके की तरह इधर से उधर ढकेलती रही है, और मेरे चारों ओर

हमेशा अंधेरा, गंदगी और गड़बड़ी ही रही है। कोई भी तो चीज़ ऐसी नहीं थी जिसका मैं सहारा ले सकूं। और फिर अचानक पानी के एक रेले के साथ मैं आपके पास किनारे आ लगा। ज़िंदगी में पहली बार मैंने किसी को साफ़-सुथरे ढंग से, शांति के साथ और एक-दूसरे को प्यार करते हुए अपनी ज़िंदगी बिताते देखा।"

खिली हुई मुस्कराहट के साथ उनकी ओर देखकर वह आभार प्रकट करने के लिए झुका।

"आप लोगों का शुक्रिया। आपने मेरे दिल पर से बहुत बड़ा बोझ हटा लिया है, इतना तो यक़ीनन किया है आपने! आपने बाक़ी सारी ज़िंदगी के लिए मुझे सहारा दे दिया है! अब मैं इस दुनिया में अपने लिए रास्ता बना सकूंगा! अब मुझे मालूम है कि मुझे किस तरह रहना चाहिये!"

तात्याना व्लास्येव्ना उसे इस तरह देखती रही जैसे बिल्ली किसी चिड़िया के गाने पर रीझकर उसे देखती है। उसकी आंखों में हल्की-सी हरी रोशनी चमक रही थी; उसके होंट कांपने लगे। कीरिक बोतल को अपने घुटनों में दबाये उस पर झुका हुआ था। उसकी गर्दन लाल हो गयी थी और उसके कान फड़क रहे थे।

बोतल की डाट ज़ोर की आवाज़ करती हुई उड़ी, छत से जाकर टकरायी और वापस मेज़ पर आ गिरी; उसके टकराने से कांच के छनकने की आवाज़ पैदा हुई।

कीरिक होंटों से चटख़ारा लेकर शराब उंडेलने लगा।

"पी जाओ!" उसने आदेश दिया।

जब इल्या और तात्याना ने अपने गिलास उठाये तो कीरिक अपना गिलास सिर के ऊपर ऊंचा उठाकर ज़ोर से चिल्लाया:

"तात्याना अव्तोनोमोवा और इल्या लुन्योव के कारोबार की कामयाबी के नाम! हुर्रा!"

कई दिन तो लुन्योव और तात्याना व्लास्येव्ना अपने नये कारोबार की योजनाओं के बारे में चर्चा करते रहे। उसे बहुत जानकारी मालूम होती थी और वह ऐसे बात करती थी जैसे ज़िंदगी भर बिसातख़ाना चलाती रही हो। इल्या मुस्कराते हुए उसकी बातें सुनता रहता; वह

इतना विभोर हो गया था कि ख़ुद ज़्यादा कुछ नहीं कह पाता था। कारोबार शुरू कर देने के लिए वह इतना उतावला हो रहा था कि तात्याना के हर सुझाव को, उसे सचमुच समझे बिना ही, मान लेता था।

पता यह चला कि तात्याना व्लास्येव्ना ने दुकान के लिए मुनासिब जगह भी देख रखी थी। वह जगह बिल्कुल वैसी ही थी, जैसी कि इल्या कल्पना करता रहता था: साफ़-सुथरी सड़क पर छोटी-सी दुकान जिसके पिछले हिस्से में एक कमरा था। सब कुछ बिल्कुल ठीक-ठाक चल रहा था – छोटी से छोटी बात तक सब कुछ – और इल्या ख़ुशी के मारे फूला नहीं समा रहा था।

ख़ुशी और जोश के इस आलम में वह अपने दोस्तों से मिलने अस्पताल गया। वहां पावेल से उसकी मुलाक़ात हुई; वह भी बहुत ख़ुश था।

"मैं कल घर जा रहा हूं," उसने सलाम करने की फ़िक्र किये बिना ही एलान किया। "वेरा का ख़त आया है। वह मुझसे नाराज़ है..."

उसकी आंखें चमक रही थीं, उसके गालों पर लाली छा गयी थी, वह भावावेश से बेक़ाबू होकर अपने पांव ज़मीन पर रगड़ रहा था और अपने हाथ हवा में हिला रहा था।

"ज़रा संभलके," इल्या ने उससे कहा। "देखना, फिर न फंस जाना कहीं!"

"उसका कोई डर नहीं है। सवाल बस एक है: मादाम वेरा शादी करना चाहती हैं कि नहीं? अगर करना चाहती हैं, तो अच्छी बात है; अगर नहीं करना चाहतीं, तो मैं छुरा भोंक दूंगा।" उसके चेहरे पर और सारे शरीर में हल्की-सी सिहरन दौड़ गयी।

"तुम भी ख़ूब हो!" इल्या ने मुस्कराते हुए कहा।

"मैं सच कहता हूं! मैंने बहुत बर्दाश्त किया! मैं उसके बिना रह नहीं सकता। वह मुझे काफ़ी नुक़सान पहुंचा चुकी है। वह भी तंग आ चुकी होगी। बहरहाल, मैं तो आ ही चुका हूं। कल फ़ैसला हो जायेगा – इस पार या उस पार।"

उसे देखकर इल्या के दिमाग़ में एक विचार बिजली की तरह कौंध गया, बिल्कुल साफ़ और सीधा-सादा विचार। उसका चेहरा लाल हो गया और वह मुस्करा पड़ा।

"पावेल," उसने कहा, "मेरी तक़दीर चमक उठी है!"

और उसने जो कुछ हुआ था वह संक्षेप में बता दिया।

"तुम हो मुक़द्दर के सिकंदर," उसकी बात पूरी होने पर पावेल ने आह भरकर कहा।

"ऐसा सिकंदर कि तुम्हारे सामने शर्म आती है। सचमुच। मैं झूठ नहीं कह रहा हूं।"

"कम से कम इसके लिए तुम्हारा शुक्रिया," पावेल ने व्यंग से कहा।

"मैं सिर्फ़ दिखावे के लिए ऐसा नहीं कह रहा हूं," इल्या ने धीरे से कहा। "सच बात है – मुझे शर्म आती है..."

पावेल एक क्षण चुपचाप उसे देखता रहा, फिर विचारमग्न होकर उसने सिर झुका लिया।

"मैं," इल्या बोला, "यह कहना चाहता था कि हमने बदनसीबी के दिन साथ-साथ झेले हैं, अच्छे दिन भी आपस में मिल-बांटकर बितायें।"

"हुं," पावेल अस्पष्ट स्वर में बोला। "मैंने तो सुना है कि ख़ुशनसीबी औरत की तरह होती है – उसमें कोई साझा नहीं हो सकता।"

"अरे, सब हो सकता है!" इल्या बोला। "तुम पता लगाओ कि प्लंबर की दुकान खोलने के लिए क्या-क्या चाहिये – कौन-से औज़ार और क्या सामान और बाक़ी सब ताम-झाम – और उसकी लागत कितनी होगी, और मैं तुम्हें पैसे दिये देता हूं..."

"क्या-आ!" पावेल ने अविश्वास से कहा। इल्या ने भावावेश में आकर उसका हाथ पकड़ लिया और ज़ोर से दबा दिया।

"गदहे कहीं के! मैं दे दूंगा, सच कहता हूं!"

लेकिन पावेल को इस बात का यक़ीन दिलाने के लिए इल्या को उसे बहुत देर तक समझाना-बुझाना पड़ा। पावेल बस अपना सिर हिलाता रहा और कहता रहा:

"ऐसी चीज़ें होतीं नहीं..."

जब आखिरकार इल्या ने उसे यक़ीन दिला दिया, तो उसके दोस्त ने उसे अपनी बांहों में लिपटा लिया और कांपते हुए खोखले स्वर में बोला:

"बहुत-बहुत शुक्रिया, यार। तुमने मुझे बहुत बड़ी मुसीबत से उबार लिया। लेकिन सुनो: मैं प्लंबर की दुकान नहीं खोलना चाहता – भाड़ में जायें ये दुकानें! उनसे कुछ नहीं होने का... लेकिन तुम मुझे पैसा दे दो, मैं वेरा को लेकर कहीं चला जाऊंगा। मैं इसे तुम्हारे लिए भी बेहतर समझता हूं कि मैं कम पैसा तुमसे लूं। और मेरे लिए भी इसी में अधिक सुविधा है। हम लोग किसी दूसरे शहर में चले जायेंगे और मैं किसी और की प्लंबर की दुकान में काम करने लगूंगा।"

"बकवास है यह," इल्या बोला। "मालिक ख़ुद होना कहीं अच्छा है।"

"अच्छा मालिक बनूंगा मैं भी," पावेल ने चहककर कहा। "अरे, नहीं, मालिक-वालिक बनना मेरे बस का रोग नहीं है... गीदड़ को शेर की खाल उढ़ा देने से वह शेर तो नहीं बन जायेगा..."

पावेल का यह रवैया लुन्योव की समझ में नहीं आया, फिर भी उसमें कोई बात ऐसी थी जो उसे अच्छी लगी।

"यह सच है; तुम लगते भी हो बिल्कुल गीदड़ – वैसे ही दुबले-पतले," उसने मज़ाक़ करते हुए बड़े प्यार से कहा। "जानते हो तुम किसके जैसे लगते हो? पेर्फ़ीश्का मोची जैसे। सचमुच! तो कल आकर मुझसे कुछ पैसे ले जाना ताकि कोई नौकरी मिलने तक तुम्हारी गाड़ी चलती रहे... अब मैं याकोव से मिल आऊं... तुम्हारी और याकोव की कैसी निभती है?"

"बस ऐसी ही... न जाने क्यों, कुछ बात बनती नहीं!.." पावेल ने मुस्कराकर कहा।

"वह बड़ा अभागा है..." इल्या ने कुछ सोचते हुए कहा।

"कमोबेश हम सभी एक जैसे ही हैं!.." पावेल ने अपने कंधे बिचकाकर कहा। "मुझे तो ऐसा लगता है कि उसके होश-हवास पूरी तरह ठीक नहीं रहते... कुछ बुद्धू-सा है..."

जब इल्या चल दिया तो पावेल ने पीछे से पुकारकर कहा:

"बहुत-बहुत शुक्रिया, यार!"

इल्या ने मुस्कराकर उसकी ओर सिर हिला दिया।

याकोव को उसने बिल्कुल निढाल और घोर निराशा में डूबा हुआ पाया। वह पीठ के बल लेटा अपनी आंखें फाड़े छत को तक रहा

था और उसने इल्या के आने की आहट तक नहीं सुनी थी।

"निकीता येगोरोविच दूसरे वार्ड में भेज दिया गया है," वह बोला।

"अच्छा हुआ!" इल्या ने संतोष प्रकट करते हुए कहा। "वह तो बहुत डरावना है..."

याकोव ने खांसते हुए उसे झिड़की-भरी दृष्टि से देखा।

"तबियत कुछ बेहतर है?"

"हां," याकोव ने आह भरकर कहा। "मैं तो जब तक मेरा जी चाहे, बीमार भी नहीं रह सकता। कल रात मेरा बाप फिर आया था। कहता था कि उसने एक और मकान ख़रीद लिया है। एक और शराबख़ाना खोलना चाहता है। और यह सब मेरे मत्थे मढ़ा जायेगा।"

इल्या अपने दोस्त को ख़ुशख़बरी सुना देना चाहता था, लेकिन अब वह ऐसा नहीं कर सकता था।

खिड़की में से वसंत का मुस्कराता हुआ सूरज झांक रहा था, लेकिन उसकी वजह से अस्पताल की पीली दीवारें और भी पीली लगने लगी थीं और पलस्तर के धब्बे और दरारें उभरकर दिखायी देने लगी थीं। दो मरीज़ पलंग पर बैठे ताश खेल रहे थे, और कुछ बोले बिना पत्ते फेंक रहे थे। एक दुबला-पतला लंबा-सा आदमी पट्टी में लिपटा हुआ अपना सिर झुकाये चुपचाप इधर से उधर टहल रहा था। चारों ओर ख़ामोशी थी हालांकि दूसरे कमरे से किसी के जान लड़ाकर खांसने और बरामदे में किसी के स्लीपरें घसीटकर चलने की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं। याकोव के पीले चेहरे में कोई जान नहीं थी और उसकी आंखों में घोर उदासी छायी हुई थी।

"काश मैं मर जाता!" उसने खुरचती हुई आवाज़ में कहा। "यहां लेटे-लेटे मैं सोचता रहता हूं कि मर जाना कितना अच्छा होगा!" उसका स्वर अधिक मृदु हो गया था। "फ़रिश्ते नेक हैं... वे हर सवाल का जवाब दे सकते हैं... सब कुछ समझा सकते हैं..." आंखें झपकाकर वह चुप हो गया और छत पर खेलती हुई धूप की एक फीकी किरन को एकटक देखता रहा। "माशा से मिले थे?"

"न-हीं। वह मेरे दिमाग़ में नहीं रहती।"

"दिमाग़ में नहीं, बल्कि तुम्हारे दिल में।"

इल्या सिटपिटा गया और कुछ बोला नहीं।

याकोव आह भरकर बेचैनी से तकिये पर अपना सिर पटकने लगा।

"निकीता येगोरोविच मरना नहीं चाहता और उसे मरना पड़ेगा... डाक्टर मुझसे कहता था कि वह मर जायेगा। और मैं मरना चाहता हूं लेकिन मर नहीं सकता... मैं अच्छा हो जाऊंगा और मुझे शराबख़ाने में वापस जाना पड़ेगा... किसी को मुझसे कोई फ़ायदा नहीं हो सकता..."

धीरे-धीरे उसके होंट एक उदास मुस्कराहट में फैल गये। उसने अपने दोस्त को एक ख़ास अंदाज़ से देखा और फिर बोलने लगा:

"इस दुनिया में ज़िंदा रहने के लिए फ़ौलाद की हड्डियां और फ़ौलाद का दिल चाहिये।"

इल्या की भवें सिकुड़ गयीं; याकोव के शब्दों में उसे किसी कठोर और अरुचिकर भाव का आभास हुआ।

"और मेरी हालत दो पत्थरों के बीच दबे हुए कांच जैसी है – हर बार जब मैं हिलता-डुलता हूं तो किसी नयी जगह से चिटक जाता हूं।"

"तुम्हें शिकायत करने में मज़ा आता है," इल्या ने अस्पष्ट भाव से कहा।

"और तुम्हें?" याकोव ने पूछा।

इल्या ने जवाब दिये बिना मुंह फेर लिया; फिर यह महसूस करके कि अब याकोव का और कुछ कहने का इरादा नहीं है, वह विचारमग्न होकर बोला:

"ज़िंदगी आसान तो किसी की भी नहीं है। पावेल को ही ले लो..."

"वह मुझे अच्छा नहीं लगता," याकोव ने मुंह बनाकर कहा।

"क्यों अच्छा नहीं लगता?"

"मालूम नहीं। बस, नहीं अच्छा लगता।"

"अच्छा, अब मेरे चलने का वक़्त हो गया..."

याकोव ने कुछ कहे बिना अपना हाथ इल्या की ओर बढ़ा दिया, लेकिन अचानक वह रुआंसे स्वर में बोला जैसे भीख मांग रहा हो:

"इल्या, माशा के बारे में पता लगाना। भगवान के लिए!.."

"लगाऊंगा," इल्या बोला।

बाहर निकलकर उसने राहत की सांस ली। याकोव की प्रार्थना पर वह लज्जित अनुभव कर रहा था कि उसने मोची की बेटी की कोई खबर नहीं ली थी, और उसने जाकर मुटल्ली से मिलने का फ़ैसला किया, जिसे ज़रूर मालूम होगा कि माशा का क्या हुआ।

पेत्रूख़ा के शराबख़ाने की ओर जाते हुए वह भविष्य के सपनों में खो गया, जो उसे बहुत आशाजनक संभावनाओं से परिपूर्ण लग रहे थे। वह अपने सपनों में ऐसा खोया हुआ था कि उसे पता ही नहीं चला कब वह शराबख़ाने के पास से होकर आगे निकल गया। जब उसे इस बात का पता चला तो उसका जी अपने क़दम लौटाने को नहीं चाह रहा था। चलते-चलते वह शहर के बाहर निकल गया। उसके सामने खेत फैले हुए थे जिनके पार जंगल की दीवार दिखायी दे रही थी। सूरज डूब रहा था और हरी-हरी नयी उगी हुई घास पर अपनी गुलाबी आभा बिखेर रहा था। वह अपना सिर ऊंचा किये, दूर आसमान पर नज़रें टिकाये चला जा रहा था, जहां बादलों के निश्चल टुकड़े डूबते सूरज की किरनों में आग की तरह दहक रहे थे। उसे चलने में बड़ा आनंद आ रहा था: हर क़दम जो वह उठाता था, हर सांस जो वह लेता था, उससे उसमें एक नये स्वप्न का जन्म होता था। वह कल्पना कर रहा था कि वह बहुत धनवान और शक्तिशाली हो गया है और पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव को बर्बाद किये दे रहा है। वह कल्पना कर रहा था कि पेत्रूख़ा उसके सामने खड़ा रो रहा था और वह, इल्या लुन्योव, उससे कह रहा था:

"रहम की भीख मांग रहे हो, और तुम? तुमने कब किसी पर रहम किया है? याद है तुमने अपने बेटे को कितनी बुरी तरह सताया था? याद है तुमने मेरे चाचा को किस तरह पाप के रास्ते पर लगाया था? याद है तुम किस तरह मेरा अपमान करते थे, तुम्हारे उस मनहूस घर में कभी कोई सुखी नहीं रहा; वहां कभी किसी ने यह नहीं जाना कि जीवन का सुख किसे कहते हैं। मौत का फंदा है तुम्हारा वह घर। जेलख़ाना है।"

पेत्रूख़ा उसके डर से कांप रहा था, कराह रहा था और बिल्कुल भिखारी जैसा तुच्छ लग रहा था। और इल्या ज़ोर से चिल्लाकर कह रहा था:

"मैं फूंक दूंगा तुम्हारा घर, क्योंकि जो लोग उसमें रहते हैं उन्हें उससे बदनसीबी के अलावा और कुछ नहीं मिलता। और तुम – तुम निकल जाओ यहां से और जाकर टुकड़े-टुकड़े के लिए भीख मांगो और उन लोगों से रहम की भीख मांगो जिन्हें तुमने सताया है। ज़िंदगी भर इस धरती पर मारे-मारे भटकते फिरो और आख़िर में कुत्ते की मौत मर जाओ!"

अब खेतों ने शाम के झुटपुटे की चादर ओढ़ ली थी और दूर खड़ा अंधेरा जंगल पहाड़ की तरह काला हो गया था। हवा में एक छोटे-से काले धब्बे की तरह कोई चमगादड़ आवाज़ किये बिना तेज़ी से उड़ रहा था, मानो अंधेरा बो रहा हो। दूर नदी की ओर से जहाज़ चलने की आवाज़ आ रही थी, जो ऐसी लग रही थी जैसे कोई विशाल पक्षी अपने चौड़े पंख फड़फड़ा रहा हो। लुन्योव को उन सब लोगों की याद आयी जिनका उसकी ज़िंदगी को एक बोझ बना देने में हाथ था, और उनमें से हर एक को उसने बड़ी बेरहमी से लताड़ा। इससे उसका टहलने का सुख और दुगना हो गया और वह वहां चारों ओर अंधेरे से घिरा हुआ खेतों में अकेला धीमे स्वर में गुनगुनाने लगा...

अचानक हवा के झोंके के साथ सड़ांध की बदबू उसकी नाक में आयी। उसने गुनगुनाना बंद कर दिया: उस बदबू के साथ सुखद स्मृतियां जुड़ी हुई थीं। वह खड्ड के किनारे शहर के कचरे के उस ढेर के पास आ गया था, जिसे दादा येरेमेई के साथ अकसर कुरेद-कुरेदकर वह काम की चीज़ें ढूंढा करता था। बूढ़े कबाड़ी की आकृति उसकी कल्पना की दृष्टि के सामने उभरी। इल्या अंधेरे में वह जगह खोजने लगा जो बूढ़े ने उनके आराम करने के लिए चुनी थी, लेकिन वह जगह उसे मिली नहीं: शायद अब वह कचरे के नीचे दब गयी थी। इल्या ने आह भरी – उसे यह आभास हुआ कि उसके दिल में भी कचरे का ढेर बन गया है।

अचानक उसकी समझ में आया कि अगर मैंने उस सूदख़ोर का ख़ून न किया होता तो इस समय मैं पूरी तरह सुखी होता। लेकिन उसके मन में एक दूसरी आवाज़ ने फ़ौरन कहा, उसकी फ़िक्र क्यों करते हो? जो कुछ तुमने किया वह तुम्हारी बदनसीबी थी, तुम्हारा पाप नहीं...

एक आवाज़ सुनायी दी: एक छोटा-सा कुत्ता दबी आवाज़ से भूंकता हुआ मानो उसके पांव तले से तेज़ी से भागकर गुज़रा और अंधेरे में ग़ायब हो गया। इल्या कांप उठा। उसे ऐसा लगा जैसे अंधेरे का एक टुकड़ा अचानक सप्राण हो उठा हो और कराहकर ग़ायब हो गया हो।

कोई फ़र्क नहीं पड़ता, उसने सोचा। अगर मैंने उसका ख़ून न भी किया होता तब भी मुझे कोई चैन न मिलता। ख़ुद अपने साथ और दूसरों के साथ मैं कितना अन्याय होते देख चुका हूं! दिल में एक बार घाव लग जाता है तो उसमें हमेशा दर्द होता रहता है।

वह धीरे-धीरे खड्ड के किनारे चलता रहा। उसके पांव कचरे में धंसे जा रहे थे। उसके क़दमों के नीचे टहनियां चटख़कर टूट रही थीं और काग़ज़ के टुकड़ों के चुरमुराने की आवाज़ आ रही थी। अब वह खड्ड के अंदर आगे को निकली हुई ज़मीन की एक पतली-से पट्टी पर आ पहुंचा था जिस पर कोई कचरा नहीं था। आगे बढ़कर वह उसके सिरे पर बैठ गया और उसने अपने पांव खड्ड में लटका लिये। यहां की हवा ज़्यादा साफ़ थी; खड्ड की पूरी लंबाई के पार देखती हुई उसकी नज़रें छोर तक पहुंचीं तो उसे वहां दूर नदी की फ़ौलाद की तरह चमकती हुई सतह नज़र आयी। बर्फ़ की तरह निश्चल पानी के धरातल पर अदृश्य जहाज़ों की रोशनियां कांपती हुई प्रतिबिंबित हो रही थीं। एक रोशनी हवा में लाल चिड़िया की तरह उड़ रही थी, दूसरी स्थिर और किरणहीन हरी रोशनी भयानक रूप धारण करके चमक रही थी। इल्या के पैरों के पास मुंह फाड़े घनी परछाइयों से भरा गहरा खड्ड ऐसा लग रहा था जैसे काली हवा से भरी कोई नदी बह रही हो। इल्या का दिल उदास होता गया; वह खड्ड में आंखें गड़ाये घूरता रहा और सोचता रहा: अभी कुछ ही समय पहले तक मैं कितना ख़ुश था; एक ही क्षण के लिए ... लेकिन अब वह सब ग़ायब हो चुका है। उसे याद आया कि आज याकोव ने कितने द्वेषपूर्ण ढंग से उससे बातचीत की थी और इससे उसकी निराशा और बढ़ गयी ... नीचे खड्ड में से मिट्टी का ढूह गिरने जैसी आवाज़ आयी। उसने आगे झुककर अंधेरे में घूरकर देखा ... रात की सीलन ने ऊपर उठकर उसके मुंह पर तमाचा-सा मारा। उसने नज़रें उठाकर आसमान की ओर देखा; तारे झिझकते हुए बाहर निकल रहे थे और एक बड़ी-सी आंख जैसा विशाल लाल चांद जंगल के उधर धीरे-धीरे ऊपर चढ़ रहा था। और अभी कुछ ही मिनट पहले जिस तरह चमगादड़ झुटपुटे को तीर की तरह चीरता हुआ उड़ा था उसी तरह अब काले विचार और काली स्मृतियां इल्या की आत्मा में तेज़ी से इधर-उधर उड़ रही थीं। वे आती थीं और किसी जवाब के बिना निकल जाती थीं और अपने पीछे पहले से भी गहरे अंधेरे के अलावा कुछ नहीं छोड़ जाती थीं।

बड़ी देर तक वह विचारों में खोया वहां बैठा रहा और नीचे खड्ड में और ऊपर आसमान को घूरता रहा। चांदनी उस गहरे खड्ड के अंधेरे को बेध रही थी और उसके ढलान पर फटी हुई गहरी दरारों को और उन झाड़ियों को उजागर कर रही थी जो कुरूप आकृतियों की परछाइयां चारों ओर डाल रही थीं। चांद और सितारों को छोड़कर आकाश बिल्कुल सूना था। हवा सर्द होती जा रही थी। इल्या उठा, रात की सीलन से उसे थोड़ी-सी कंपकंपी महसूस हुई, और खेतों को पार करता हुआ वह शहर की रोशनियों की ओर चल दिया। वह अब कुछ भी नहीं सोचना चाहता था। वह भावशून्य होकर हर चीज़ के प्रति उदासीन हो गया था और उसके अंदर एक अथाह सूनापन भर गया था—उस आकाश का सूनापन जहां वह कभी ईश्वर का आवास मानता था।

जब वह घर पहुंचा तो बहुत देर हो चुकी थी; वह दरवाज़े के सामने खड़ा सोचता रहा; वह घंटी बजाने का फ़ैसला नहीं कर पा रहा था। खिड़कियों में कोई रोशनी नहीं थी, जिसका मतलब था कि अव्तोनोमोव-दम्पति सो गये थे। उसे तात्याना व्लास्येव्ना को जगाने में संकोच हो रहा था: हमेशा वही उसके लिए दरवाज़ा खोलती थी ... लेकिन अंदर तो उसे जाना ही था। उसने धीरे से घंटी बजायी। लगभग तुरंत ही दरवाज़ा खुल गया और उसे अपने सामने अपनी नाज़ुक-सी मकान-मालकिन सोते वक़्त पहनने के सफ़ेद लिबास में खड़ी दिखायी दी।

"दरवाज़ा बंद कर दीजिये—जल्दी से!" उसने ऐसे स्वर में कहा जिससे इल्या अब तक परिचित नहीं था। "बहुत सर्दी है ... मैं कुछ पहने भी नहीं हूं ... पति बाहर गया हुआ है ..."

"माफ़ करना," इल्या बुदबुदाकर बोला।

"कितनी देर में आये हैं आप! कहां थे अब तक?"

18-01118

इल्या दरवाज़ा बंद करके जवाब देने के लिए मुड़ा, और उसने देखा कि औरत की खुली हुई छाती उसके सामने थी। पीछे हटने के बजाय वह उसकी ओर और आगे बढ़ आयी। वह खुद पीछे हट नहीं सकता था क्योंकि उसकी पीठ दरवाज़े से लगी हुई थी। वह हंस पड़ी – धीमी-सी खनकती हुई हंसी। इल्या ने अपने हाथ उठाकर धीरे से उसके कंधों पर रख दिये; उसकी उंगलियां कांप रही थीं क्योंकि इस औरत को सामने पाकर उसमें भीरुता आ जाती थी, और इसलिए कि वह उसे अपने बांहों में समेट लेने के लिए लालायित था। यह देखकर वह खुद एड़ियां उठाकर उसके और पास आ गयी और अपने गर्म-गर्म हाथों से उसने उसकी गर्दन को मज़बूती से जकड़ लिया। वह घंटी जैसी खनकती हुई आवाज़ में बोली:

"रात को इतनी-इतनी देर तक बाहर रहने का क्या मतलब है? तुम्हारे लिए घर पर करने को इससे बेहतर काम है, मेरी जान! कितने खूबसूरत हो तुम, कितनी मज़बूत हैं तुम्हारी बांहें!"

इल्या को ऐसा लग रहा था कि जैसे सपने में वह उसके तपते हुए चुंबनों और उसके लचकीले शरीर के आवेशपूर्ण स्पंदन को अनुभव कर रहा हो। तात्याना बिल्ली की तरह उसके सीने को कसकर पकड़े रही और बार-बार उसे चूमती रही। आखिरकार वह उसे अपनी मज़बूत बांहों में उठाकर अपने कमरे में ले गया; उसे उठाये हुए वह बहुत सहज भाव से चल रहा था मानो हवा में तैर रहा हो...

अगले दिन सबेरे जब इल्या सोकर उठा तो उसके दिल में डर समाया हुआ था।

"अब मैं कीरिक का सामना कैसे कर सकूंगा?" उसने सोचा। और वह जितना डर रहा था उतना ही लज्जित भी था।

"अगर मुझे उससे कोई शिकायत होती तब भी बात थी," उसने दुखी होकर सोचा। "या कम से कम मैं उसे पसंद न करता होता। लेकिन यों ही – ज़रा-से भी बहाने के बिना – मैंने उस आदमी का बुरा किया।" उसके दिल में तात्याना व्लास्येव्ना के प्रति द्वेष की भावनाएं उमड़ने लगीं। उसे यक़ीन था कि कीरिक ताड़ जायेगा कि उसकी बीवी ने उसके साथ बेवफ़ाई की है।

"वह मेरे ऊपर ऐसे टूट पड़ी जैसे न जाने कब की भूखी हो," वह असमंजस में पड़कर सोचने लगा, पर इस विचार ने उसके अहंकार को गुदगुदा दिया और यह गुदगुदी उसे बहुत सुखद लगी। उसने एक सचमुच की औरत का – एक साफ़-सुथरी, सुसंस्कृत, ब्याहता औरत का – प्यार पा लिया था।

"मुझमें ज़रूर कोई खास बात होगी," उसने गर्व से सोचा। "बड़ी शर्मनाक बात थी – शर्मनाक... लेकिन मैं कोई पत्थर का बना हुआ तो हूं नहीं। मैं क्या करता, उसे भगा देता?.."

वह नौजवान था: उसे याद आया कि तात्याना ने किस तरह उसे दुलराया था, किस तरह अपनी बांहों में भरकर उसका लाड़ किया था – खास ढंग से, ऐसे ढंग से जिससे वह इससे पहले परिचित नहीं था। और व्यावहारिक स्वभाव का होने के कारण वह अनायास ही यह भी सोचने लगा कि प्यार के इस बंधन से उसे लाभ भी हो सकता था। इन विचारों के बाद झुंड के झुंड बहुत-से निराशाजनक विचार भी उसके मन में उठे:

"लो, मैं एक बार फिर फंस गया। क्या मैं इसी चीज़ की तलाश में था? मेरे दिल में उसके लिए इज़्ज़त थी – एक बार भी मेरे मन में उसके लिए कोई ऐसी-वैसी बात नहीं आयी – फिर भी, देखो तो क्या हो गया..."

लेकिन एक ही क्षण बाद उसकी आत्मा की सारी उलझन, उसमें मचा हुआ सारा द्वंद्व इस उल्लासप्रद आभास की वजह से मिट गया कि जल्दी ही वह एक नयी, असली, साफ़-सुथरी ज़िंदगी में क़दम रखनेवाला है। और फिर यह विचार भाले की चुभन की तरह उसके मन में उठा:

"फिर भी इसके बिना कहीं अच्छा होता..."

वह जान-बूझकर उस वक़्त तक बिस्तर पर से नहीं उठना चाहता था जब तक कि पुलिसवाला काम पर न चला जाये। उसने कीरिक को अपनी पत्नी से विदा लेते समय बहुत मज़ा लेकर होंट चटखारकर कहते सुना:

"आज दोपहर को खाने के लिए कोफ़्ते बनाओ तो कैसी रहे, तात्याना। सुअर का गोश्त ज़्यादा हो उनमें, और उबाल लेने के बाद

उन्हें कढ़ाई में थोड़ा-सा तल लेना – तुम तो जानती हो, जब तक कि बिल्कुल गुलाबी न हो जायें! और काली मिर्च डालने में कंजूसी न करना!"

"अच्छा, अब जाओ! जैसे मुझे मालूम नहीं है कि तुम्हें कैसा खाना अच्छा लगता है!" पत्नी ने बड़े प्यार से कहा।

"जाते-जाते एक प्यार तो कर लेने दो, मेरी बिल्ली!"

इल्या चूमने की आवाज़ सुनकर चौंक पड़ा। यह स्थिति उसके लिए घृणास्पद थी, लेकिन साथ ही हास्यास्पद भी थी।

"चटाख, चटाख, चटाख," अव्तोनोमोव ने तड़ातड़ कई बार अपनी पत्नी को चूमा। वह हंसती रही। और अपने पति के जाने के बाद दरवाज़ा बंद करते ही वह भागकर इल्या के कमरे में आयी और कूदकर उसके बिस्तर पर चढ़ गयी।

"प्यार करो जल्दी से!" वह खिलकर बोली। "मेरे पास वक़्त नहीं है!"

"लेकिन अभी तो आप अपने पति को चूमकर आयी हैं," इल्या ने बुझे हुए स्वर में कहा।

"यह क्या बात हुई? 'आप' कहते हो? अरे, यह लड़का तो जलता है!" वह खुश होकर चिल्लायी, और हंसते हुए उछलकर खड़ी हो गयी और खिड़की पर परदा खींचने लगी। "जलते हो? बहुत अच्छी बात है। जो मर्द जलता है वह प्यार भी भरपूर करता है।"

"मैंने यह बात जलकर नहीं कही थी।"

"चुप रहो!" उसने अपना हाथ उसके मुंह पर रखकर चुलबुलेपन से आदेश दिया।

जब दोनों जी भरकर प्रणय-लीला कर चुके तो इल्या ने उसे मुस्कराकर देखा।

"तुम भी बड़ी हिम्मतवाली हो," वह बोला। "बड़ा जिगरा है तुम्हारा। अपने पति की नाक के नीचे ऐसी हरकत करती हो! ..."

तात्याना की कंजी आंखें शरारत से चमक उठीं।

"इसमें कोई ऐसी कमाल की या अनोखी बात तो है नहीं," वह बोली। "तुम समझते हो कि ऐसी औरतें बहुत होती हैं जो किसी दूसरे से इश्क़ न लड़ाती हों? बस, बदसूरत और बीमार औरतें ही ऐसी होती हैं। जो ख़ूबसूरत होती हैं वे हमेशा रोमांस के चक्कर में रहती हैं।"

सुबह का सारा वक़्त उसने इल्या का ज्ञान बढ़ाने में बिताया और उसे चटपटे क़िस्से सुनाती रही कि औरतें अपने शौहरों को धोखा कैसे देती हैं। फुर्तीली, छोटी-सी वह ऐप्रन और लाल ब्लाउज़ पहने और आस्तीनें ऊपर चढ़ाये रसोई में चिड़िया की तरह इधर से उधर फुदक-फुदककर अपने पति के लिए कोफ़्ते बना रही थी और उसकी गूंजती हुई आवाज़ लगातार इल्या के कमरे में आ रही थी।

"तुम समझते हो कि औरत का पति उसके लिए काफ़ी होता है? हो सकता है कि अगर वह उससे प्यार करती हो तब भी वह उसे न भाये। और फिर यह बात भी न भूलो कि जो पहला फूल उसके हाथ लग जाता है उसका रस चूसने में वह ज़रा भी आनाकानी नहीं करता ... औरत भी हर वक़्त अपने पति के बारे में सोचते-सोचते उकता जाती है, हर वक़्त पति, पति, बस और कुछ नहीं! वह दूसरे मर्दों के साथ खेल-कूद कर अपना जी क्यों न बहलाये? इसी तरह तो उसे मर्दों का फ़र्क़ मालूम होता है। अरे, क्वास भी तो कई तरह का होता है: बवेरिया का क्वास, जुनीपर का क्वास, क्रैनबेरी का क्वास, फिर एक ही तरह का क्वास पीते रहना तो सरासर बेवक़ूफ़ी है।"

इल्या चुसकियां ले-लेकर अपनी चाय पीता रहा और उसकी बातें सुनता रहा; उसे चाय कड़वी लग रही थी। उस औरत की आवाज़ में एक अरुचिकर चीख़ का स्वर था जिसकी ओर उसका ध्यान पहले कभी नहीं गया था। उसे बरबस ओलिंपियादा की भारी आवाज़, उसकी गंभीर मुद्रा और उसके आवेशपूर्ण शब्दों की याद हो आयी जिनमें एक ऐसे आवेग का स्पंदन रहता था जो हृदय को छू लेता था। यह सच है कि ओलिंपियादा सीधी-सादी, अनपढ़ औरत थी। शायद इसीलिए अपनी निर्लज्जता में भी वह अधिक सीधी-सादी थी... तात्याना की बातें सुनते हुए इल्या जी न चाहते हुए भी हंस देता था। उसे उसकी बातों में कोई मज़ा नहीं आ रहा था; वह हंस सिर्फ़ इसलिए देता था कि उसकी समझ में नहीं आता था कि इस औरत से क्या और किस तरह कहे। लेकिन वह उसे दिलचस्पी से सुनता रहा, फिर आख़िरकार उसने विचारमग्न होकर कहा:

"मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि आप लोगों की साफ़-सुथरी ज़िंदगी में इस तरह के क़ानून हैं..."

"क़ानून सभी जगह बराबर हैं, मेरी जान। क़ानून जैसे हैं वैसा उन्हें लोगों ने ही बनाया है, और सभी लोग एक ही चीज़ चाहते हैं: सुख-चैन की ज़िंदगी जिसमें आराम हो और हर तरह की सुख-सुविधा हो, ढेरों खाने को हो। और उसके लिए ज़रूरत होती है पैसे की। पैसा मिलता है वसीयत में या क़िस्मत से। जिस के पास लॉटरी का टिकट है वह सुखी होने की उम्मीद कर सकता है, और ख़ूबसूरत औरत के पास तो जन्म से ही लॉटरी का टिकट होता है – उसकी ख़ूबसूरती। ख़ूबसूरती शक्ति है! जिन लोगों का कोई पैसेवाला रिश्तेदार नहीं होता या जिनके पास लॉटरी का टिकट या ख़ूबसूरती नहीं होती उन्हें काम करना पड़ता है। ज़िंदगी भर काम करते रहना कितने अफ़सोस की बात है... मुझी को देखो, मैं काम करती हूं हालांकि मेरे पास दो लॉटरी के टिकट हैं। लेकिन मैंने उन्हें दुकान खुलवाने में लगा देने का फ़ैसला कर लिया है। दो टिकट काफ़ी नहीं हैं! कोफ़्ते पकाना और मुंहासेवाले को चूमना उबा देनेवाली बात है! और इसीलिए मैं तुम्हें चूमना चाहती हूं।"

उसने इल्या को चुलबुली नज़र से देखा और बोली:

"क्या तुम इससे नफ़रत करते हो? मुझे इस तरह ग़ुस्से से घूर क्यों रहे हो?"

उसने इल्या के पास जाकर उसके कंधों पर हाथ रख दिये और आंखों में आंखें डालकर उसे कौतूहल से घूरने लगी।

"ग़ुस्सा तो नहीं आया है," इल्या ने कहा।

वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"अच्छा, ग़ुस्सा तो आया है नहीं?" हंसी के ठहाकों के बीच उसने भिंचे हुए स्वर में कहा। "कितने नेक हो तुम!"

"मैं तो बस सोच रहा था," इल्या धीरे-धीरे अपने शब्दों का उच्चारण करते हुए कहता रहा "तुम जो कहती हो वह सच है, लेकिन... वह अच्छी बात नहीं है, न जाने क्यों।"

"ओ-हो, तुम भी... डंक मारने में कुछ कम नहीं हो! क्या बात अच्छी नहीं है? ज़रा, मुझे भी तो समझाओ।"

लेकिन इल्या कुछ भी समझा न सका। उसकी समझ में खुद नहीं आ रहा था कि तात्याना की बातों में क्या चीज़ उसे बुरी लगी थी। ओलिंपियादा इससे भी ज़्यादा भोंडे तरीक़े से बात कहती थी, फिर भी उसकी बात कभी उसे इस तरह नहीं चुभती थी जैसे इस साफ़-सुथरी छोटी-सी चिड़िया की बातें चुभ रही थीं। दिन भर वह उस विरक्ति के बारे में सोचता रहा जो उसके दिल में उस संबंध की वजह से पैदा हुई थी जो उसके लिए निस्संदेह गर्व की बात थी। वह इस बात को समझ नहीं पा रहा था।

उस दिन शाम को जब वह काम के बाद घर लौटा तो रसोई में कीरिक से उसकी मुलाक़ात हो गयी।

"आज मेरी बीवी ने क्या खाना बनाया है!" उसने लहककर कहा। "क्या कोफ़्ते हैं! उन्हें खाते हुए अफ़सोस होता है, संकोच होता है – मानो ज़िंदा बुलबुल खा रहे हों... मैंने एक प्लेट तुम्हारे लिए भी रख छोड़ी है, भाई। उस दुकान को गर्दन से उतारो और बैठ जाओ। हर आदमी तुम्हें ऐसी मज़ेदार चीज़ नहीं खिला सकता!"

इल्या ने दोष की भावना से उसे देखा और धीरे से हंस दिया।

"शुक्रिया," वह कुछ देर बाद रुककर बोला, "आप बहुत अच्छे आदमी हैं, सच कहता हूं।"

"बस, रहने भी दो!" कीरिक ने हवा में हाथ घुमाकर कहा। "एक प्लेट कोफ़्ते ऐसी कौन-सी बहुत बड़ी बात है? अगर मैं पुलिस का चीफ़ होता तो... हुं... तो मैं तुम्हें सचमुच शुक्रिया अदा करने का मौक़ा देता। लेकिन मैं पुलिस का चीफ़ कभी बन नहीं पाऊंगा... और मैं पुलिस की नौकरी तो हमेशा के लिए छोड़ रहा हूं। मैं तो एक व्यापारी का एजेंट बन जाने की सोच रहा हूं। वह इससे कहीं अच्छा काम है। एजेंट – एजेंट की कुछ हैसियत होती है!"

उसकी बीवी चूल्हे के पास कुछ खटर-पटर कर रही थी और साथ ही गुनगुनाती जा रही थी। इल्या ने उसकी ओर देखा और एक बार फिर अटपटा महसूस करने लगा।

लेकिन दूसरे अनुभवों और नयी चिंताओं के दबाव के कारण यह भावना धीरे-धीरे मिटती गयी। वह माल ख़रीदने और अपनी दुकान खोलने की तैयारी में इतना व्यस्त था कि अब उसके पास सोचने के

लिए समय ही नहीं था। और जैसे-जैसे दिन बीतते गये वह तात्याना व्लास्येव्ना का आदी होता गया, और इसका उसे पता भी नहीं चला। एक रखैल के रूप में वह उसे दिन-ब-दिन ज़्यादा पसंद करने लगा, हालांकि अब उसके आलिंगनों से उसे अकसर शर्म आने लगी थी और डर भी लगने लगा था। धीरे-धीरे उसकी बातों ने और उसके आलिंगनों ने सम्मान की उस भावना को नष्ट कर दिया जो उसके दिल में तात्याना के लिए थी। जैसे ही उसका पति सुबह अपने काम पर या शाम को ड्यूटी पर चला जाता था, वह इल्या को अपने कमरे में बुलाती या इल्या के कमरे में आ जाती और उसे दुनिया-भर की इधर-उधर की गपशप सुनाती। उसके क़िस्से बहुत घिसे-पिटे होते थे; ऐसा लगता था कि वे सभी एक ऐसे देश में होते थे जिसमें छिनालें और बदचलन लोग रहते थे, जो नंगे घूमते थे और जिनके लिए व्यभिचार एकमात्र मनोरंजन था।

"जो कुछ तुम कहती हो क्या यह सच हो सकता है?" एक बार उसने उदास होकर कहा। वह उसकी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहता था, लेकिन उसकी बातों के आगे वह बेबस हो जाता था और उनका खंडन नहीं कर पाता था। वह बस हंस देती थी और उसे चूम लेती थी।

"अच्छा, हम सबसे ऊपर से शुरू करते हैं," तात्याना ने उसे यक़ीन दिलाने की कोशिश करते हुए कहा। "गवर्नर चांसलर की बीवी के साथ रहता है, और चांसलर ने हाल ही में अपने एक क्लर्क की बीवी छीन ली है – उसे सोबाची गली में किराये पर एक मकान ले दिया है और हफ़्ते में दो बार बिल्कुल खुले आम उससे मिलने जाता है। मैं उस औरत को जानती हूं – अभी बिल्कुल बच्ची है – शादी हुए अभी एक साल भी तो नहीं हुआ। और उसके पति को टैक्स-इंसपेक्टर बनाकर बाहर किसी छोटे शहर में भेज दिया गया है। मैं उसे भी जानती हूं – अच्छा टैक्स-इंसपेक्टर है वह भी! बिल्कुल नासमझ, अनपढ़ जाहिल है वह!"

वह उसे उन व्यापारियों के बारे में बताती जो अपनी वासना को संतुष्ट करने के लिए नौजवान लड़कियां ख़रीदते थे, और व्यापारियों की उन बीवियों के बारे में बताती जिनके अपने आशिक़ थे, और

ऊंचे समाज की उन शरीफ़ लड़कियों के बारे में जो गर्भवती हो जाने पर अपनी कोख के फल को ज़हर देकर मार देती थीं।

उसकी बातें सुनकर इल्या को ऐसा लगता कि यह ज़िंदगी कचरे का बहुत बड़ा ढेर थी जिसमें लोग कीड़ों की तरह बिलबिलाते रहते थे।

"उफ़!" वह उकताकर कहता, "क्या कहीं कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जो शुद्ध और असली हो?"

"असली?" वह आश्चर्य से दोहराती। "ये सब असली मिसालें हैं। भोले नादान! तुम समझते हो कि ये सारे क़िस्से मैं अपने मन से गढ़ती हूं?"

"मेरा मतलब यह नहीं था। कहीं तो यक़ीनन कोई चीज़ ऐसी होगी जो सचमुच अच्छी और शुद्ध हो, है कोई चीज़ ऐसी?"

वह उसकी बात समझे बिना हंस देती। कभी-कभी उसकी बातें बिल्कुल ही दूसरा रुख़ अपना लेतीं। मिसाल के लिए, एक बार उसके चेहरे पर अपनी कंजी आंखों की डरावनी आग बरसाती हुई वह बोली:

"औरत के साथ अपने पहले अनुभव के बारे में मुझे बताओ।"

इल्या को उस घटना को याद करके लज्जा और घृणा-सी महसूस होने लगी, और उसने उसकी पैनी बेधती हुई दृष्टि की ओर से अपना मुंह फेर लिया।

"इस तरह की बातें पूछते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिये," उसने उसे झिड़कते हुए कहा।

लेकिन वह बस हंस दी और उससे बताने के लिए आग्रह करने लगी। उसकी अश्लील बातें सुनकर कभी-कभी उसे ऐसा लगता जैसे उस पर तारकोल पोत दिया गया हो। जब भी तात्याना को उसके चेहरे पर नाराज़गी और उसकी आंखों में व्यथा दिखायी देती वह बेझिझक उसके पुरुषत्व को जगा देती और प्यार-दुलार करके उसकी द्वेषपूर्ण भावना दूर कर देती...

एक दिन दुकान से, जहां बढ़ई अल्मारियां लगा रहे थे, घर आने पर इल्या को यह देखकर ताज्जुब हुआ कि मुटल्ली रसोई में बैठी उसका इंतज़ार कर रही थी। वह अपनी मोटी-मोटी बांहें मेज़ पर टिकाये तात्याना व्लास्येव्ना से बातें कर रही थी, जो चूल्हे के पास खड़ी थी।

"यह मेम साहब... बहुत देर से तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं,"

तात्याना ने मुस्कराकर मुटल्ली की ओर सिर हिलाकर इशारा करते हुए कहा।

"सलाम, इल्या," बड़ी मुश्किल से उठते हुए 'मेम साहब' ने कहा।

"अरे!" इल्या बोला। "तुम अभी तक ज़िंदा हो?"

"सड़ा हुआ करमकल्ला तो सुअर भी नहीं खाते," मुटल्ली ने मोटी आवाज़ से कहा।

इल्या बहुत दिन से उससे नहीं मिला था, और अब वह हर्ष और दया के मिले-जुले भाव से उसे एकटक देख रहा था। वह फटा हुआ सूती कपड़ा पहने थी, उसके सिर पर एक रूमाल बंधा था जिसका रंग उड़ गया था और उसके पांवों में जूते नहीं थे। बड़ी मुश्किल से ही उन्हें ज़मीन पर से उठा पाते हुए वह दीवार का सहारा लेकर धीरे-धीरे इल्या के कमरे में गयी और एक कुर्सी पर ढेर हो गयी।

"अब कुछ ही दिन में मेरा चल-चलाव है," वह भर्रायी हुई आवाज़ में बोली। "जल्दी ही मेरी यह हालत हो जायेगी कि मुझसे चला भी नहीं जायेगा... और उसका मतलब यह होगा कि मैं अपना पेट भरने को भीख भी नहीं मांग सकूंगी, बस – खेल खतम..."

उसका चेहरा बुरी तरह सूजा हुआ था और उस पर जगह-जगह काले धब्बे थे। सूजन की वजह से उसकी आंखें लगभग बंद हो गयी थीं।

"मेरे थोबड़े को क्या घूर रहे हो?" उसने इल्या से पूछा। "क्या तुम समझते हो कि मेरी पिटाई हुई है? अरे नहीं, बीमारी मुझे खाये जा रही है।"

"तुम अपना पेट कैसे पालती हो?" इल्या ने पूछा।

"गिरजाघर के ओसारे पर खड़े होकर भीख मांगकर कुछ पैसे जुटा लेती हूं..." उसने भोंपू जैसी गूंजती हुई आवाज़ में कहा। "यहां मैं एक ख़ास वजह से आयी थी... पेफ़ींश्का ने मुझे बताया था कि तुम यहां रहते हो..."

"चाय पियोगी?" इल्या ने पूछा। उसकी आवाज़ सुनकर और उसके विशाल स्थूल शरीर को देखकर, जो उसके मरने से पहले ही सड़ जानेवाला था, इल्या को अरुचि-सी हो रही थी।

"अपनी चाय रखो तुम शैतान को सौंचाने के लिए। मुझे तो उसके बजाय कुछ पैसा दे दो... लेकिन मैं यहां आयी हूं – तुम्हारे ख़्याल से मैं यहां किसलिए आयी हूं?"

उसे बोलने में कठिनाई हो रही थी। वह हांप-हांपकर सांस ले रही थी और उससे दम घोंटनेवाली बदबू आ रही थी।

"किसलिए आयी हो?" इल्या ने मुंह फेरकर पूछा; उसे याद आया कि एक बार उसने उसका कैसे अपमान किया था।

"माशा की याद है? लेकिन तुम सबको भूल चुके हो! अब पैसे-वाले जो हो गये हो।"

"क्या हुआ उसको? कैसी है वह?" इल्या ने जल्दी से पूछा।

मुटल्ली ने धीरे से अपना सिर हिला दिया।

"बस अभी तक फांसी लगाकर मरी नहीं है..." वह बोली।

"साफ़-साफ़ बात बताओ!" इल्या ने गुस्से से कहा। "मुझे दोष किस बात के लिए दे रही हो? तुम्हीं ने तो उसे तीन रूबल में बेचा था।"

"दोष मैं अपने आपको दे रही हूं, तुम्हें नहीं," मुटल्ली ने निश्चिंत भाव से कहा और आह भरकर उसे माशा के बारे में बताने लगी।

जिस बूढ़े से उसकी शादी हुई थी वह उस पर बेहद शक करता और सताता था। वह उसे कहीं जाने नहीं देता था, दुकान तक नहीं। दिन भर वह घर के अंदर बैठी रहती थी और अगर वह आंगन में भी जाना चाहती थी तो उसे बूढ़े से इजाज़त लेनी पड़ती थी। उसके पति ने अपने बच्चों को किसी और की निगरानी में छोड़ दिया था और माशा के साथ अकेला रहता था। उसकी पहली बीवी उसे धोखा देती थी – दोनों बच्चों में से कोई भी उसका अपना नहीं था – और वह सारा गुस्सा अपनी दूसरी बीवी पर उतार रहा था। दो बार माशा उसके यहां से भाग आयी थी लेकिन दोनों बार पुलिस उसे पकड़कर वापस ले आयी थी। सज़ा के तौर पर उसने उसे बहुत तकलीफ़ें दी थीं और भूखा रखा था।"

"अच्छा सौदा किया था तुमने और पेफ़ींश्का ने भी!" इल्या ने भवें चढ़ाकर कहा।

"मैंने तो सोचा था कि उसके लिए यही सबसे अच्छा होगा," मुटल्ली भावहीन स्वर में बोली। "मुझे वह करना चाहिये था जो उसके

लिए सबसे बुरा होता ... मुझे उसको किसी पैसेवाले आदमी के हाथ बेच देना चाहिये था ... वह उसे पहनने को अच्छे-अच्छे कपड़े, रहने को फ़्लैट और सब कुछ देता ... बाद में वह उससे पिंड छुड़ा लेती और अच्छी तरह रहती ... बहुत-सी औरतें ऐसा करती हैं – बूढ़ों से बचाये हुए पैसों पर अपनी ज़िंदगी गुज़ारती हैं।"

"लेकिन तुम यहां किसलिए आयी हो?" इल्या ने पूछा।

"इसलिए कि तुम पुलिसवाले के यहां रहते हो। यही लोग उसे पकड़ लाते हैं ... इस पुलिसवाले से कह दो कि वे लोग ऐसा न किया करें ... उसे भाग जाने दें! शायद उसे कोई जगह मिल ही जाये जहां वह भागकर शरण ले सके ... क्या कोई जगह ऐसी है ही नहीं जहां कोई भागकर जा सके?"

इल्या सोचने लगा। वह माशा की क्या मदद कर सकता था?

मुटल्ली बड़ी सतर्कता से अपने पांव हिलाते हुए उठ पड़ी।

"अच्छा, मैं चलती हूं। मैं तो अब कुछ ही दिन की मेहमान हूं ..." उसने बुदबुदाकर कहा। "शुक्रिया तुम्हारा, साफ़-सुथरे, पैसेवाले!"

जब वह लड़खड़ाती हुई रसोई के दरवाज़े से बाहर निकल गयी तो तात्याना भागी हुई इल्या के कमरे में आयी और उसने अपनी बांहें उसकी गर्दन में डाल दीं।

"तो यह है तुम्हारी पहली प्रेमिका, है न?" उसने हंसकर पूछा।

इल्या ने उसकी बांहों से अपनी गर्दन छुड़ा ली और गंभीरता से बोला:

"वह एक क़दम के बाद दूसरा क़दम भी मुश्किल से रख पाती है, फिर भी उसकी मदद करने की कोशिश करती है, जिससे उसे प्यार है।"

"और किससे प्यार है उसे?" तात्याना ने इल्या के चिंताग्रस्त चेहरे को जिज्ञासा और आश्चर्य से घूरते हुए पूछा।

"रहने दो, तात्याना," वह बोला। "रहने भी दो। यह मज़ाक़ करने का वक़्त नहीं है।"

और उसने संक्षेप में उसे माशा के बारे में बताया।

"इस हालत में मुझे क्या करना चाहिये?" अपनी बात पूरी करते हुए उसने पूछा।

"कुछ भी नहीं!" तात्याना कंधे बिचकाकर बोली। "क़ानून के हिसाब से औरत अपने पति की होती है और उसे छीनने का अधिकार किसी को नहीं है।"

एक ऐसे आदमी के रोब के साथ जो क़ानून अच्छी तरह जानता हो, और जिसे उसके अटल होने का पूरा विश्वास हो, तात्याना ने इस बात के बारे में लंबा-सा भाषण दिया कि माशा के लिए यह ज़रूरी था कि वह अपने पति के हर तक़ाज़े को पूरा करे।

"वह इंतज़ार करती रहे। वह बूढ़ा है। वह जल्दी ही मर जायेगा और तब वह आज़ाद हो जायेगी और बूढ़े की सारी जायदाद उसे मिल जायेगी ... और तब तुम एक पैसेवाली नौजवान विधवा से शादी कर सकोगे, है न?"

वह हंस दी और फिर उसे उपदेश देती रही:

"सच पूछो तो तुम्हें अपने इन पुराने जान-पहचानवालों से कोई संबंध नहीं रखना चाहिये। अब वे तुम्हारी क़िस्म के लोग नहीं हैं ... उनकी वजह से तुम्हें शर्मिंदगी भी उठानी पड़ सकती है। वे सब के सब फूहड़ और गंदे हैं – उस आदमी की तरह जिसने तुमसे पैसा उधार लिया था, याद है? वही, दुबला-पतला गुस्सैली आंखोंवाला आदमी?"

"पावेल ग्राचोव ..."

"हां। इन आम लोगों के नाम भी कैसे-कैसे अजीब होते हैं! ग्राचोव, लुन्योव, पेतुखोव, स्क्वोर्तसोव। हमारे तबक़े के लोगों के नाम कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत होते हैं: अव्तोनोमोव! कोर्साकोव! मेरे बाप फ़्लोरियानोव थे! शादी से पहले एक आदमी मुझसे प्यार करता था जिसका नाम था ग्लोरियान्तोव, जिसे अदालत में कोई ओहदा मिलनेवाला था। एक बार स्केटिंग-रिंक में उसने मेरी गेटिस उतार ली थी और कहा था कि अगर मैं ख़ुद उसे लेने के लिए उसके यहां नहीं आऊंगी तो वह हंगामा खड़ा कर देगा ..."

जिस समय वह बोल रही थी, इल्या का दिमाग़ बीती हुई बातों की ओर गया। उसे उन अदृश्य बंधनों का आभास था जिन्होंने उसे पेत्रूखा फ़िलिमोनोव के मकान के साथ बांध रखा था, और उसे लगता था कि वह मकान कभी उसे शांति से रहने नहीं देगा।

आख़िरकार इल्या लुन्योव का सपना पूरा हो गया।

सुबह से शाम तक वह अपनी निजी दुकान के काउंटर के पीछे खड़ा रहता और उसे देख-देखकर अपनी आंखें सेंकता रहता; उसके शांत चेहरे पर उल्लास झलकता रहता। अल्मारियों के पटरों पर दफ़्ती के डिब्बे बड़े सुथरे ढंग से सजे हुए थे; उसने खिड़की में साबुन, बटुए, चमकीले बकसुए और बटन बड़े आकर्षक ढंग से सजा रखे थे, और उनके ऊपर रंग-बिरंगे फ़ीतों और लैस की झालर लगा रखी थी। सारा वातावरण खुला-खुला और आकर्षक लगता था। वह ख़ुद बहुत बना-संवरा ख़ूबसूरत और प्रतिष्ठित लगता था और अपने गाहकों का बड़ी शिष्टता से झुककर स्वागत करता था और बड़ी दक्षता से काउंटर पर अपना माल फैलाकर उन्हें दिखाता था। लैस और फ़ीतों की सरसराहट उसके कानों में संगीत जैसी लगती; जो दर्जिन-लड़कियां दो-एक कोपेक का माल लेने उसकी दुकान में आतीं उसको सुंदर और नेकदिल लगती थीं। जीवन सुखद और सुगम था और उसमें एक सीधा-सादा और स्पष्ट अर्थ पैदा हो गया था। अतीत पर मानो कुहरे का परदा पड़ा हुआ था। अपने व्यापार, अपने माल और अपने गाहकों के अलावा कोई विचार उसके दिमाग़ में आता ही नहीं था...

उसने अपनी मदद के लिए एक लड़का नौकर रख लिया था; उसे पहनने के लिए स्लेटी रंग की एक जैकेट दे दी थी और वह इस बात का पूरा ख़्याल रखता था कि वह बिल्कुल साफ़-सुथरा रहे।

"हम लोग बहुत नाज़ुक चीज़ों का व्यापार करते हैं, गावरिक," वह उससे कहता, "इसलिए हमें बेहद साफ़-सुथरा रहना चाहिये।"

गावरिक बारह बरस का लड़का था – कचौरी जैसे गाल, मुंह पर हल्के-हल्के चेचक के दाग़, ऊपर उठी हुई नाक, छोटी-छोटी कंजी आंखें और भावपूर्ण चेहरा। उसने प्राथमिक स्कूल की पढ़ाई अभी पूरी की थी और अपने आपको संजीदा नौजवान समझने लगा था। वह भी इस छोटी-सी साफ़-सुथरी दुकान में काम करके बहुत ख़ुश था। उसे डिब्बों और बंडलों को उठाने-धरने में बहुत मज़ा आता था और वह भी गाहकों के साथ अपने मालिक जैसी ही शिष्टता का व्यवहार करने की कोशिश करता था।

जब भी इल्या उसे देखता उसे उन दिनों की याद आ जाती जब

वह ख़ुद लड़कपन में स्त्रोगानी की मछली की दुकान में काम करता था। इस वजह से उसे अपनी दुकान में काम करनेवाले लड़के से ख़ास ढंग का लगाव हो गया था, और जब भी दुकान में कोई गाहक नहीं होता था तब वह बड़ी मिलनसारी से उसके साथ बातें और हंसी-मज़ाक़ करता था।

"जब करने को कुछ न हुआ करे, गावरिक, तो कोई किताब लेकर पढ़ा करो," वह सलाह देता। "किताब पढ़ते वक़्त समय भी जल्दी गुज़र जाता है और पढ़ने में तुम्हें मज़ा भी बहुत आयेगा।"

इल्या के तौर-तरीक़ों में नरमी आ गयी थी, वह लोगों की ओर बहुत ध्यान देता था और ऐसा लगता था कि उसकी मुस्कराहट उनसे कह रही है:

"देखो, मेरी तो क़िस्मत खुल गयी है, लेकिन तुम भी धीरज रखो: जल्दी ही तुम्हारी क़िस्मत भी चमक उठेगी।"

वह सवेरे सात बजे दुकान खोल देता था और रात को नौ बजे उसे बंद करता था। गाहक बहुत ज़्यादा नहीं होते थे इसलिए उसे दरवाज़े के पास बैठकर वसंत की धूप का आनंद लेने के लिए बहुत समय मिल जाता था; उस समय उसके मन में न कोई विचार होता था न कोई इच्छा। गावरिक उसकी बग़ल में बैठा राहगीरों को देखता रहता, उनका मज़ाक़ उड़ाता, आवारा कुत्तों को सीटी बजाकर बुलाता, गौरैयों और कबूतरों पर कंकर फेंकता, या नाक सुड़कते हुए बड़ी उत्सुकता से कोई किताब पढ़ता रहता। कभी-कभी उसका मालिक उससे ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने को कहता, पर किताब में उसे कोई दिलचस्पी नहीं होती थी: उसे स्वयं अपनी आत्मा की नीरवता और शांति के स्वर सुनना ज़्यादा अच्छा लगता था। इस नीरवता के स्वरों को वह बहुत ख़ुश होकर सुनता था, उनका जी भरकर रस लेता था, क्योंकि वे उसके लिए नये और अकथनीय रूप से प्रिय थे। लेकिन कभी-कभी कोई चीज़ उसकी आत्मा की इस सुखद संपूर्णता में विघ्न डाल देती थी। यह कोई चीज़ थी ख़तरे की लगभग अगोचर पूर्वानुभूति; वह उसकी आत्मा की शांति को छिन्न-भिन्न नहीं करती थी, बस परछाईं की तरह हौले से उस पर हाथ फेर देती थी।

ऐसे क्षणों में इल्या गावरिक से बातें करने लगता था।

"तुम्हारा बाप क्या करता है, गावरिक?"

"डाकिया है – चिट्ठियां बांटता है।"

"तुम्हारा परिवार बहुत बड़ा है?"

"हां। बहुत-से लोग हैं। कुछ बड़े हैं, कुछ छोटे हैं।"

"छोटे लोग बहुत-से हैं?"

"पांच हैं। और तीन बड़े हैं। हम बड़े लोग सब काम करते हैं: मैं यहां आपके साथ काम करता हूं, वसीली साइबेरिया में तारघर में काम करता है, और सोन्या पढ़ाती है। उसका काम सबसे अच्छा है – महीने में पूरे बारह रूबल कमा लाती है। और फिर मीशा है। उसकी हालत उतनी अच्छी नहीं है। मुझसे बड़ा है – स्कूल में पढ़ता है।"

"तब तो तुम बड़े लोग चार हुए।"

"नहीं, चार कहां हैं," गावरिक ने आपत्ति करते हुए कहा और उपदेश के भाव से जोड़ दिया, "मीशा अभी पढ़ रहा है। बड़े लोग तो वे होते हैं जो काम करते हैं।"

"तुम्हारा परिवार गरीब है?"

"ज़ाहिर है," गावरिक ने ज़ोर से नाक सुड़ककर कहा। इसके बाद वह भविष्य के बारे में अपनी योजनाएं विस्तार से बताने लगा:

"जब मैं बड़ा हो जाऊंगा तो फ़ौज में चला जाऊंगा। लड़ाई होगी, और तब मैं अपने जौहर दिखाऊंगा... मैं बहुत बहादुर हूं... मैं भागकर सबसे आगे पहुंच जाऊंगा और दुश्मन का झंडा छीन लूंगा... मेरे चाचा ने एक बार ऐसा ही किया था, और जनरल गुर्को ने इसके लिए उन्हें एक तमग़ा और पांच रूबल ईनाम में दिये थे..."

उस लड़के के चेचक के दाग़ोंवाले चेहरे और उसकी चौड़ी-सी नाक को देखकर, जिसे वह बराबर सुड़कता रहता था, इल्या मुस्करा दिया।

रात को दुकान बंद करके इल्या पीछेवाले छोटे-से कमरे में चला जाता था। तब तक गावरिक समोवार गरम करके मेज़ पर रख देता था; समोवार से सन-सन की आवाज़ आती रहती थी और उसके पास ही एक प्लेट में रोटी और सासेज रखी होती थी। खाने के बाद गावरिक सोने के लिए दुकान में चला जाता था और इल्या समोवार

के पास बैठा रहता था, कभी-कभी तो दो-दो घंटे या उससे भी ज़्यादा।

दो कुर्सियां, एक मेज़, एक पलंग और एक अल्मारी – इल्या के नये कमरे में बस यही सामान था। छोटा-सा नीची छत का कमरा था, जिसकी चौकोर खिड़की में से सड़क पर चलते हुए लोगों की टांगें, सड़क के उस पारवाले घर की छत और उस छत के ऊपर का आसमान दिखायी देता था। उसने खिड़की पर सफ़ेद जाली का परदा डाल रखा था; खिड़की में सड़क की ओर लोहे का एक जंगला लगा था जो इल्या को सख़्त नापसंद था। पलंग के ऊपर दीवार पर उसने एक तसवीर टांग रखी थी, जिसका शीर्षक था 'मनुष्य के जीवन की अवस्थाएं'। यह तसवीर उसे बहुत पसंद थी और उसने बहुत दिन से उसे ख़रीदने का इरादा कर रखा था; किसी वजह से वह नयी दुकान खुल जाने के वक़्त तक अपने इस इरादे को टालता आया था, हालांकि उसकी क़ीमत सिर्फ़ दस कोपेक थी।

मनुष्य के जीवन की अवस्थाओं का चित्रण एक धनुष की शक्ल में किया गया था, जिसके नीचे स्वर्ग की तसवीर बनायी गयी थी। इस तसवीर में ख़ुदा को आदम और हव्वा से बातें करते दिखाया गया था; ख़ुदा को फूलों से घेर रखा गया था और उनके चेहरे के चारों ओर प्रभा-मंडल था। कुल सत्रह अवस्थाएं चित्रित की गयी थीं। पहली अवस्था में एक छोटे-से बच्चे को दिखाया गया था जिसे उसकी मां ने सहारा दे रखा था, और उसके नीचे लाल अक्षरों में लिखा था: 'पहले क़दम'। दूसरी में एक बच्चे को नाचते और ढोल बजाते दिखाया गया था, और उसका शीर्षक था: 'पांच वर्ष का: खेलने के दिन'। सात साल की उम्र में बच्चा 'सीखना शुरू करता है'। दस वर्ष की आयु में वह 'स्कूल जाता है'। इक्कीस वर्ष की आयु में वह हाथ में राइफ़िल लिये खड़ा है और उसके होंटों पर मुस्कराहट है: 'सैनिक सेवा'। अगले चित्र में वह पच्चीस साल का हो जाता है: वह दोपाखा कोट पहने है और एक हाथ में रेशमी हैट और दूसरे में फूलों का गुल-दस्ता लिये है: 'मंगेतर'। फिर उसने दाढ़ी रख ली, लंबा सूट पहना और गुलाबी टाई लगायी और उसे पीला लिबास पहने एक मोटी-सी औरत का हाथ पकड़े दिखाया गया। पैंतीस साल की उम्र में वह आस्तीनें चढ़ाये निहाई के पास खड़ा हथौड़ा चला रहा था। धनुष में सबसे

ऊपरवाली तसवीर में उसे लाल रंग की आराम-कुर्सी पर बैठकर अपनी बीवी और चार बच्चों को अखबार पढ़कर सुनाते चित्रित किया गया था। वह खुद और उसके परिवार के सभी लोग अच्छे कपड़े पहने थे और सुखी और स्वस्थ दिखायी दे रहे थे। उस वक़्त वह पचास साल का था। अगली तसवीर से उतार शुरू होता था। उस आदमी की दाढ़ी अब सफ़ेद हो चुकी थी, वह पीले रंग का लंबा-सा काफ़्तान पहने था; उसके एक हाथ में मछली और दूसरे में सुराही थी, और उस तसवीर का शीर्षक था: 'घरेलू काम-काज'। अगली तसवीर में उसे अपने पोते को सुलाते हुए दिखाया गया था। उसके बाद कोई उसकी बांह पकड़कर उसे चलने में सहारा दे रहा था, क्योंकि अब वह अस्सी साल का हो चुका था। अंतिम चित्र में पचानवे साल की उम्र में, उसे ताबूत में पांव लटकाये एक आराम-कुर्सी पर बैठा दिखाया गया था, और मौत हाथ में दरांती लिये उसकी कुर्सी के पीछे खड़ी थी...

इल्या को मेज़ पर बैठकर चाय पीते हुए इस तसवीर को देखने में बड़ा मज़ा आता था, मनुष्य के जीवन को इतने स्पष्ट और साफ़-सुथरे ढंग से अलग-अलग अवस्थाओं में बांट दिया गया था। इस चित्र से शांति बरसती थी और ऐसा लगता था कि उसके चटकीले रंग मुस्करा रहे हैं, मानो लोगों को आश्वासन दे रहे हों कि उनके ज़रिये सच्चे जीवन का चित्रण मनुष्य के सामने आदर्श रखने के उद्देश्य से बहुत बुद्धिमानी से किया गया था। उसे देखकर इल्या सोचता था कि जो कुछ वह चाहता था वह अंततः उसे मिल गया है और अब से उसका जीवन इस चित्र में दिखाये गये क्रम के अनुसार बीतना चाहिये। वह निरंतर ऊपर चढ़ता जायेगा और शिखर पर पहुंचकर जब वह काफ़ी पैसा बचा लेगा तो किसी विनम्र पढ़ी-लिखी लड़की से शादी कर लेगा...

समोवार बड़े उदास भाव से सनसनाता रहता और रह-रहकर भभक उठता। खिड़की के कांच और परदे की जाली के उस पार मैले आसमान से धुंधले सितारे इल्या को घूरते रहते। सितारों की चमक में हमेशा कोई ऐसी बात होती है जो बेचैन कर देती है...

समोवार की सनसनाहट धीरे-धीरे मंद पड़ती जाती, लेकिन साथ ही अधिक पैनी होती जाती, और उसकी बारीक आवाज़ इल्या के

कानों पर लगातार ऐसा प्रहार करती रहती कि उसे झुंझलाहट होने लगती। उसकी आवाज़ मच्छर की भनभनाहट की तरह होती जो उसके विचारों के क्रम को भंग कर देती थी और उन्हें उलझा देती। फिर भी वह उसे बंद नहीं करना चाहता था, समोवार की आवाज़ के बिना कमरे में बेहद सन्नाटा हो जाता... यहां अपने इस नये निवासस्थान में इल्या को एक बिल्कुल ही अनोखे अनुभव का आभास होने लगा था: अब तक वह हमेशा लोगों के बीच रहा था, उनके और उसके बीच लकड़ी की एक बहुत ही पतली-सी दीवार होती थी, अब उसके चारों ओर पत्थर की दीवारें थीं, जिनके उस पार लोगों का अस्तित्व उसके लिए न होने के बराबर था।

"आदमी के लिए मरना क्यों ज़रूरी है?" वह तसवीर में उस आदमी को सुख-समृद्धि के शिखर से क़ब्र में उतरते देखकर अचानक अपने आपसे पूछता... उसे याद आता कि याकोव हरदम मौत के बारे में सोचता रहता था, और उसे उसके ये शब्द याद आ जाते: "मर जाना कितना अच्छा होगा!"

बड़ी अरुचि से वह इस विचार को दूर हटा देता।

"मालूम नहीं कि पावेल और वेरा का क्या हाल है?" यह अगला प्रश्न था जो उसके दिमाग़ में आता।

सड़क पर कोई गाड़ीवाला अपना खटारा तेज़ी से भगाता हुआ निकल जाता। सड़क के ऊबड़-खाबड़ पत्थरों पर पहियों के आघात से खिड़की के कांच खड़खड़ाने लगते और लैंप की लौ झिलमिला जाती। दुकान में से अजीब टूटी-टूटी-सी आवाज़ें आती रहतीं: गावरिक सोते-सोते बुड़बुड़ाता रहता। कमरे के कोनों में दुबकी हुई गहरी परछाइयां कांपती हुई लगने लगतीं। इल्या मेज़ पर कुहनियां टिकाये और दोनों हाथों में अपना सिर थामे तसवीर को ध्यान से देखता रहता। खुदा की बग़ल में एक सजीला शेर खड़ा था, ज़मीन पर एक कछुआ रेंग रहा था, कछुए के पास ही एक बिज्जू चल रहा था और मेंढक कूद रहा था, और उन सबके ऊपर ज्ञान का वृक्ष उगा हुआ था जो खून जैसे लाल रंग के बड़े-बड़े फूलों से सजा हुआ था। वह बूढ़ा आदमी, जिसने क़ब्र में अपने पांव लटका रखे थे, देखने में बिल्कुल पोलुएक्तोव जैसा लगता था – दुबला-पतला और गंजा, सूखी हुई सींक जैसी गर्दन-

वाला ... सड़क की पटरी पर किसी के पोले-पोले क़दमों से चलने की आहट सुनायी देती, कोई बड़े इतमीनान से सड़क पर सामने से होकर गुज़र जाता। समोवार बुझ जाता और कमरे में इतना सन्नाटा छा जाता कि ऐसा लगने लगता कि हवा जमकर, दीवारों जैसी ठोस हो गयी है।

उस सूदख़ोर के विचारों से इल्या ज़रा भी परेशान न होता, सच तो यह है कि अब वह किसी भी विचार से परेशान नहीं होता था। वे बस उसके चारों ओर बड़ी नरमी से ढीले-ढीले लिपट जाते जैसे बादल चांद के चारों ओर लिपट जाते हैं। और उनकी वजह से 'मनुष्य के जीवन की अवस्थाएं' के रंग फीके पड़ने लगते: उस तसवीर पर धब्बा जैसा उभरने लगता। पोलुएक्तोव की हत्या की याद आने के बाद हर बार लुन्योव शांत भाव से सोचने लगना कि इस संसार में कहीं न्याय तो होना चाहिये, और उसके अनुसार हर आदमी को कभी न कभी तो अपने पापों का दंड मिलना ही चाहिये। जब ये विचार उसके दिमाग़ में आते, वह कमरे के उस कोने में नज़रें गड़ाकर घूरने लगता जहां ख़ास तौर पर अंधेरा और ख़ामोशी बहुत ज़्यादा होती थी, और जहां परछाइयां कोई निश्चित आकृति धारण कर लेने का प्रयत्न करती हुई मालूम होती थीं ... आख़िरकार वह कपड़े उतारकर बिस्तर पर लेट जाता और बत्ती बुझा देता। वह बत्ती एकदम से नहीं बुझाता था; पहले बत्ती को बढ़ाता-घटाता, जिसकी वजह से लौ कभी भड़क उठती और कभी मंद हो जाती और उसके पलंग के चारों ओर परछाइयां उछलने-कूदने लगतीं, कभी वे चारों ओर से आकर उसके पलंग पर टूट पडतीं और कभी फिर भागकर कोने में दुबक जातीं। निश्चल लेटा हुआ वह उन अगोचर अंधकारमय लहरों को देखता रहता जो उसे अपने अंदर समो लेने की धमकी देती रहती थीं। कुछ देर तक वह यह खेल खेलता रहता, और फटी-फटी आंखों से अंधेरे को इस तरह टटोलता रहता मानो उस अंधेरे में आंखों से कोई चीज़ पकड़ लेने की आशा कर रहा हो ... आख़िरकार रोशनी झिलमिलाकर बुझ जाती। एक क्षण के लिए सारा कमरा ऐसे अंधेरे में डूब जाता जो भूलता हुआ मालूम होता था, मानो वह रोशनी के साथ संघर्ष के बाद अभी तक अपना संतुलन न प्राप्त कर सका हो। फिर इस अंधेरे में से खिड़की की नीली-नीली धुंधली आकृति उभरती। अगर चांदनी रात होती तो फ़र्श पर खिड़की के जंगले की परछाईं की धारियां बिखर जातीं। ऐसा गहरा सन्नाटा होता कि लगता मानो सांस तक लेने से कमरे की हर चीज़ थर्रा उठेगी। इल्या कंबल अपने चारों ओर अच्छी तरह लपेट लेता, इस बात का पूरा ध्यान रखते हुए कि उसकी गर्दन ढकी रहे, और सिर्फ़ मुंह खुला रखकर, वह तब तक अंधेरे में घूरता रहता जब तक नींद आकर उसे दबोच न लेती। सबेरे जब वह सोकर उठता तो बिल्कुल शांत और ताज़ादम होता, और रात के मूर्खतापूर्ण आचरण को याद करके वह लगभग शरमा जाता। गावरिक के साथ चाय पीकर वह अपनी दुकान का निरीक्षण करता, और हर बार उसे ऐसा लगता जैसे वह उसे पहली बार देख रहा हो।

कभी-कभी पावेल काम पर से घर लौटते हुए उससे मिलने आ जाता, उसका चेहरा कलौंस से काला होता, उसकी कमीज़ जगह-जगह कहिये से जली होती और उस पर जहां-तहां मैल और तेल के धब्बे लगे होते थे। वह फिर किसी प्लंबर के यहां काम करने लगा था और आम तौर पर अपने साथ रांगे का एक बर्तन, सीसे की कुछ नलियां और कई कहिये रखता था। उसे हमेशा घर वापस लौटने की जल्दी रहती थी, और अगर इल्या उससे कुछ देर रुक जाने का आग्रह करता तो वह कुछ झेंपी हुई मुस्कराहट से कहता:

"मैं रुक नहीं सकता। मुझे ऐसा लगता है कि मेरे घर पर एक चकोरी मेरा इंतज़ार कर रही है और उसका पिंजरा बहुत मज़बूत नहीं है। सबेरे से रात तक अकेले घर पर बैठे-बैठे उसके मन में न जाने कैसे-कैसे विचार उठते होंगे? अब उसकी ज़िंदगी बिल्कुल फीकी हो गयी है – यह तो मैं अच्छी तरह जानता हूं। अगर हम लोगों के एक बच्चा होता!" और यह कहकर वह लंबी आह भरता।

एक दिन उसने उजड़े हुए स्वर में कहा:

"मेरे पास जितना पानी था वह सारा मैंने अपना बाग़ सींचने में लगा दिया। अगर उससे कीचड़ भी हो गयी तो क्या हुआ?"

एक और मौक़े पर इल्या ने उससे पूछा कि क्या वह अब भी कविताएं लिखता था।

"आसमान पर ख़ाली उंगली से लिखता हूं," उसने बड़ी कटुता

से हंसकर कहा। "भाड़ में जायें वे! हम कौन हैं कि छाल के जूते पहनकर शाही दावत की मेज़ पर बैठें? अब तो, यार, मैं बिल्कुल दीवाना हो गया हूं। प्रेरणा की एक चिंगारी भी बाक़ी नहीं रही – रत्ती-भर नहीं। मैं तो हरदम बस उसी के बारे में सोचता रहता हूं... पाइप की भलाई करने लगता हूं तो उसके विचार मेरे ऊपर रांगे की तरह फैल जाते हैं... बस यह है तुम्हारी कविता – हः, हः! लेकिन उस आदमी को श्रद्धा मिलती है जो किसी भी काम में तन-मन से लग जाता है... उसे बड़ी मुसीबत भेलनी पड़ रही है।"

"और तुम्हें?" इल्या ने पूछा।

"इसी वजह से मुझे भी... वह ऐश-आराम की ज़िंदगी की आदी है, यह बात है! वह हर वक़्त पैसा होने के सपने देखती रहती है। कहती है कि बस हमारे पास अगर थोड़ा-सा पैसा होता तो सब कुछ बदल जाता... वह कहती है: "बड़ी बुद्धू थी मैं: किसी पैसेवाले सेठ को अच्छी तरह मूंडना चाहिये था।" तरह-तरह की बेवक़ूफ़ी की बातें कहती रहती है वह – मुझ पर तरस खाकर, मैं जानता हूं। बड़ा कठिन समय आ पड़ा है उस पर..."

अचानक वह अपनी चिंता से प्रेरित होकर जल्दी से बाहर चला गया।

अकसर इल्या से मिलने फटे-पुराने कपड़े पहने वह अधनंगा मोची भी आ जाता था, हमेशा अपनी बग़ल में अकार्डियन दबाये। वह उसे याकोव के बारे में और पेत्रूख़ा के मकान में जो कुछ होता था उसके बारे में बताता था।

एक दिन वह मैला-कुचैला, फटे कपड़े पहने और अधनंगा दुकान के दरवाज़े से चिपककर खड़ा हो गया और मुस्कराकर अपने रोचक और मज़ाक़िया शब्दों में इल्या को सारी ख़बरें बताने लगा:

"पेत्रूख़ा ने शादी कर ली है। उसकी बीवी चुक़ंदर जैसी है और सौतेला बेटा बिल्कुल गाजर जैसा! सच कहता हूं, अच्छा ख़ासा सब्ज़ियों का खेत है! उसकी बीवी नाटी और मोटी और लाल चेहरेवाली है और उसके तीन तहोंवाला थोबड़ा है। ठोड़ियां तो तीन-तीन हैं, लेकिन मुंह फिर भी एक ही है। और आंखें बिल्कुल नस्ली सुअर जैसी हैं – छोटी-छोटी जो ज़मीन से ऊपर नहीं देख पातीं। उसका बेटा दुबला-

पतला और लंबा है, उसका रंग पीला है और वह चश्मा लगाता है। पक्का साहब है! उसका नाम साव्वा है और वह नाक के सुर में बोलता है। जब तक मां कहीं आस-पास होती है, वह बिल्कुल संत बना रहता है, लेकिन जब वह नहीं होती तो बढ़-बढ़कर बातें बघारने लगता है। मानना पड़ेगा, ख़ूब जोड़ी है। और याकोव? वह तो बिल्कुल ऐसा लगता है जैसे कोई डरा-सहमा काक्रोच किसी दरार में घुस जाने की तैयारी कर रहा हो। वह चोरी-छिपे पीता है, बेचारा, और खांस-खांसकर अपनी जान निकाल देता है। साफ़ मालूम होता है कि उस बार उसके बाप ने उसकी हड्डी-पसली एक कर दी थी! उसकी मां और उसका बाप उसे ज़िंदा खाये जा रहे हैं। वह बड़ा नरम लड़का है – अब तो वह किसी के गले में अटक भी नहीं सकता... कियेव से तुम्हारे चाचा की चिट्ठी आयी थी... मैं समझता हूं वह बेकार इतनी मुसीबत उठा रहा है – मेरी समझ में तो कोई कुबड़ा कभी स्वर्ग जाने ही नहीं दिया जायेगा!.. मुटल्ली से अब बिल्कुल चला-फिरा नहीं जाता; वह एक गाड़ी मैं बैठकर चलती है: उसमें एक अंधे को जोत लेती है और उसे घोड़े की तरह हांकती रहती है। इससे ज़्यादा मज़ेदार तमाशा तुमने कभी देखा नहीं होगा! लेकिन दोनों किसी तरह अपना पेट भर लेते हैं। वह है बड़ी नेकदिल, इतना तो मैं कहूंगा उसके बारे में! अगर मेरी बीवी ख़ुद इतनी अच्छी न होती तो मैं यक़ीनन मुटल्ली से शादी कर लेता, यह बात पक्की है। मैं तुम्हें सीधी बात बताऊं: इस धरती पर दो ही सचमुच नेक औरतें – दिलवाली औरतें – हुई हैं: एक मेरी बीवी और दूसरी मुटल्ली... अरे, यह तो मैं जानता हूं कि वह शराबी है, सो तो है मुटल्ली, लेकिन सभी अच्छे लोग शराबी होते हैं..."

"माशा कैसी है?" इल्या ने पूछा।

माशा की बात छिड़ते ही मोची की बातों से सारा हंसी-मज़ाक़ और उसके चेहरे की मुस्कराहट वैसे ही ग़ायब हो गयी जैसे पतझड़ की हवा का तेज़ झोंका पेड़ों पर से सूखी पत्तियां उड़ा ले जाता है। उसका पीला चेहरा फ़ौरन उतर गया और उसने धीमे, झेंपे हुए स्वर में कहा:

"मुझे उसका कुछ भी पता नहीं है... ख़्रेनोव ने मुझे चेतावनी दी है: 'अगर तुम मेरे घर के सामने से गुज़रे भी तो मैं तुम्हारी हड्डी-

पसली एक कर दूंगा।' इल्या याकोव्लेविच, इतनी तो मेहरबानी करो कि एक पौआ या कम से कम एक गिलास-भर जुटाने के लिए कुछ चंदा तुम भी दे दो।"

"तुम्हारा अब कोई इलाज नहीं है, पेर्फ़ीश्का," इल्या ने उदास भाव से कहा।

"बिल्कुल ला-इलाज हो गया हूं, हमेशा के लिए," मोची ने शांत भाव से हामी भारी। "लेकिन जब मैं मर जाऊंगा तब बहुत-से लोग मेरी वजह से दुखी होंगे क्योंकि मैं हमेशा मस्त रहता हूं और मुझे लोगों को हंसाना अच्छा लगता है! लोग हमेशा हाय-हाय करते रहते हैं और रोते-झींकते रहते हैं और मैं उन्हें कोई मस्ती-भरा गीत सुना देता हूं और हंस देता हूं। एक कोपेक के लिए पाप करो या एक रूबल के लिए पाप करो – आखिर में जाओगे एक ही जगह और शैतान सभी को एक तरह से तकलीफ़ें देगा... मस्त आदमी को भी इस दुनिया में रहना चाहिये..."

खिल्ली उड़ाता हुआ और हंसता हुआ वह बाहर चला जाता; देखने में वह बिल्कुल पर-नुचे मुर्ग़े जैसा लगता और इल्या उसे जाता देखकर मुस्करा देता और अपना सिर हिलाकर रह जाता। उसे पेर्फ़ीश्का पर तरस आता था, लेकिन वह जानता था कि इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी, और तरस खाने से उसकी मन की शांति भंग होती थी। अतीत अभी उसके पीछे बहुत दूर नहीं था, और उसकी हर याद से वह बेचैन हो उठता था। उसकी हालत उस आदमी जैसी थी जो थककर चूर हो जाने के बाद आखिरकार सुख की नींद सो गया हो, और मक्खियां उसके कान में भनभना जाती हों और उसे आराम न करने देती हों। पावेल से बातें करते समय या पेर्फ़ीश्का की बातें सुनते समय वह मुस्कराता रहता और हमदर्दी से अपना सिर हिलाता रहता और इंतज़ार करता रहता कि वे कब जायें। कभी-कभी पावेल उसे जो कुछ बताता उसे सुनकर वह उदास और बेचैन हो जाता, और तब वह उतावलेपन से और आग्रह करके उसे कुछ पैसे दे देता।

"मैं तुम्हारी मदद और किस तरह कर सकता हूं?" उसने अपने कंधे बिचकाकर एक दिन कहा। "बस यह सलाह और दे सकता हूं: तुम्हें वेरा को छोड़ देना चाहिये..."

"नहीं छोड़ सकता," पावेल ने धीरे से कहा। "आदमी छोड़ तो उस चीज़ को सकता है जिसकी उसे ज़रूरत न हो। मुझे उसकी ज़रूरत है। लेकिन उसे मुझसे छीन ले जाने की कोशिश की जा रही है, मुसीबत तो यही है... हो सकता है कि मेरा दिल उसे प्यार न करता हो – यह बस मेरे अपमान और मेरे ग़ुस्से का नतीजा हो। वही तो अकेला सुख है जो मुझे जीवन में मिला है। और उसे भी मैं छोड़ दूं? फिर मेरे पास रह ही क्या जायेगा?.. मैं उसे नहीं छोड़ूंगा, उनकी जीत होने नहीं दूंगा! उसे किसी को दे देने के बजाय मैं उसे मार डालूंगा!"

उसके सूखे चेहरे पर लाल धब्बे उभर आये और उसने अपनी मुट्ठियां भींच लीं।

"क्या तुमने किसी को देखा है जो उसके फेर में हो?" इल्या ने उससे पूछा।

"नहीं..."

"फिर तुम किसके बारे में कहते हो कि उसे तुमसे छीन लेने की कोशिश की जा रही है?"

"कोई ऐसी ताक़त है जो उसे मेरे हाथों से छीन लेना चाहती है... मेरे बाप को औरत ने ही तबाह किया और ऐसा लगता है कि मेरे नसीब में भी यही लिखा है..."

"तुम्हारी मदद किसी तरह नहीं की जा सकती है!" इल्या ने कहा और इस आभास के साथ ही उसे कुछ राहत भी मिली। उसे पावेल पर पेर्फ़ीश्का से भी ज़्यादा तरस आता था, और जब पावेल का ग़ुस्सा भड़क उठता था तब वह भी अपने दिल में ग़ुस्सा उमड़ता हुआ महसूस करता था। लेकिन वह दुश्मन जो वार पर वार कर रहा था, वह दुश्मन जो पावेल की ज़िंदगी को तबाह कर रहा था, कहीं दिखायी नहीं देता था; वह आंख से ओझल दुश्मन था। और लुन्योव के ग़ुस्से की भी उसी तरह कोई ज़रूरत नहीं थी जिस तरह उसके तरस खाने की कोई ज़रूरत नहीं थी – या उन तमाम दूसरी भावनाओं की जो लोग उसके हृदय में जागृत करते थे। वे अनावश्यक, निरर्थक और व्यर्थ भावनाएं थीं।

"मैं जानता हूं कि मेरी मदद नहीं की जा सकती है..." पावेल

ने माथे पर बल डालकर कहा; फिर वह अपने दोस्त के चेहरे को एकटक देखते हुए बड़े आत्मविश्वास के साथ चेतावनी-भरे दृढ़ स्वर में बोला:

"तुमने अपने लिए यह एक छोटा-सा आरामदेह कोना बना लिया है और तुम यहां सुख-चैन से बैठे हो... लेकिन मेरी बात याद रखना: कोई रातों को जगाकर लेटे-लेटे तुम्हें यहां से उखाड़ फेंकने की तरकीबें सोचता रहता है। और तुम उखाड़कर फेंक दिये जाओगे, देख लेना! या फिर तुम अपने आप ही यह सब कुछ छोड़ दोगे..."

"अरे, बहुत छोड़ा मैंने!" इल्या ने हंसते हुए कहा।

लेकिन पावेल अपनी बात पर अड़ा रहा।

"छोड़ना तो पड़ेगा," वह अपने दोस्त के चेहरे को घूरकर हठ करते हुए बोला। "अंधेरे बिल में चुपचाप बैठे रहकर ज़िंदगी बिता देना तुम्हारे बस की बात नहीं है। या तुम शराब पीने लगोगे या तुम्हारा दीवाला निकल जायेगा – तुम्हें कुछ न कुछ ज़रूर हो जायेगा..."

"लेकिन क्यों?" इल्या चकित होकर चिल्ला उठा।

"बस, हो जायेगा। यह शांत, ऐश-अराम की ज़िंदगी तुम्हारे स्वभाव से मेल नहीं खाती... तुम नेक आदमी हो, तुम्हारे दिल है... कुछ लोग होते हैं जो ज़िंदगी-भर तनदुरुस्त रहते हैं, और फिर अचानक – टें हो जाते हैं!"

"क्या मतलब तुम्हारा, टें हो जाते हैं?"

"बस, पट से मर जाते हैं..."

इल्या हंस दिया और अपनी अकड़ी हुई मज़बूत पेशियों को ढीला करने के लिए अंगड़ाई लेकर उसने इतनी लंबी सांस ली कि उसका पूरा सीना भर गया।

"बकवास है!" उसने कहा।

लेकिन उस दिन रात को समोवार के पास बैठे-बैठे उसे पावेल के शब्द याद आये और वह तात्याना व्लास्येव्ना के साथ अपने व्यापार के संबंधों के बारे में सोचने लगा। खुद अपनी दुकान खोल पाने का मौक़ा पाकर वह खुशी से इतना पागल हो गया था कि उसकी सारी शर्तें उसने मान ली थीं। और अब अचानक यह बात बिल्कुल साफ़ समझ में आने लगी थी कि उस कारोबार में हालांकि उसने तात्याना से ज़्यादा पैसा लगाया था लेकिन उसकी हैसियत उसके साझेदार से ज़्यादा उसके कारिंदे जैसी थी। इस बात का पता लगते ही वह हैरान और आगबबूला हो उठा।

"तो तुम मुझे अपने सीने से कसकर महज़ इसलिए चिपटाती हो कि मेरे जाने बिना ही तुम मेरी जेब में हाथ डाल सको?" उसने अपनी कल्पना में तात्याना से कहा। और उसी वक़्त उसने फ़ैसला किया कि वह दुकान में तात्याना का हिस्सा ख़रीद लेने के लिए अपना आख़िरी रूबल तक ख़र्च कर देगा और अपनी प्रेमिका से बिल्कुल नाता तोड़ लेगा। यह फ़ैसला करने के लिए उसे कोई मेहनत नहीं करनी पड़ी। कुछ अरसे से वह महसूस करता रहा था कि उनका संबंध अनुचित था और इधर कुछ दिनों से तो उसे इस संबंध से झुंझलाहट भी होने लगी थी। वह उसके लाड़-प्यार का आदी नहीं हो पाया था, और एक बार तो उसने उससे साफ़-साफ़ कह दिया था:

"तुम बड़ी बेहया औरत हो, तात्याना..."

जवाब में वह सिर्फ़ हंस दी थी।

वह अब भी उसे अपने तबक़े के लोगों के बारे में तरह-तरह के क़िस्से सुनाती रहती थी; एक दिन इल्या ने अपनी राय देते हुए कहा:

"जो कुछ तुम कहती हो अगर वह सच है तो तुम्हारी यह शरीफ़ों-वाली ज़िंदगी दो कौड़ी की भी नहीं है।"

"क्यों नहीं? बड़ा मज़ा आता है!" उसने अपने सुडौल कंधे उचकाकर कहा।

"बहुत मज़ा तो आता ही होगा। दिन-भर नोचा-खसोटी और रात-भर भोग-विलास और व्यभिचार।"

"तुम भी कैसे भोले हो!" वह हंस दी।

और एक बार फिर जब वह उससे अपनी साफ़-सुथरी, आरामदेह शरीफ़ाना, मध्यम वर्ग की ज़िंदगी की बातें करने लगी तो उस ज़िंदगी की सारी गंदगी और क्रूरता उसकी आंखों के सामने आ गयी।

"क्या तुम इसे ठीक समझती हो?" इल्या ने कहा।

"अरे, तुम भी कैसी मज़ेदार बातें करते हो! मैंने यह कब कहा कि यह ठीक है, कहा मैंने? लेकिन अगर ज़िंदगी में यह सब न हो तो जी ऊब जाये!"

कभी-कभी वह उसे सुधारने की कोशिश करती।

"अब तुम्हें ये मोटी गाढ़े की क़मीज़ें पहनना छोड़ देना चाहिये; शरीफ़ इज़्ज़तदार लोग लिनेन की क़मीज़ें पहनते हैं। और मेहरबानी करके ध्यान लगाकर सुना करो कि मैं कैसे बोलती हूं और वैसे ही बोलने की कोशिश किया करो। तुम्हें ऐसे नहीं बोलना चाहिये कि 'हइयै नई' और 'ऐसे कि जैसे' और 'उसे चहियेइ चहिये'। ऐसे तो सिर्फ़ गंवार बोलते हैं और तुम अब गंवार नहीं रहे।"

वह फिर वही राग अलापने लगी कि उस जैसे गंवार और उस जैसी पढ़ी-लिखी औरत में कितना अंतर था; अकसर वह ऐसी बातें कह देती जो इल्या को बुरी लगतीं। जब वह ओलिंपियादा के साथ रहता था तो वह उसके प्रति घनिष्ट मित्रता अनुभव करता था। तात्याना व्लास्येव्ना के प्रति उसने ऐसा कभी अनुभव नहीं किया। यह तो वह देखता था कि वह आकर्षक ओलिंपियादा से ज़्यादा थी, लेकिन उसके दिल में उसके लिए कोई इज़्ज़त नहीं रह गयी थी। अव्तोनोमोव-परिवार के साथ रहते हुए वह अकसर तात्याना को सोने जाने से पहले प्रार्थना करते सुनता था।

"स्वर्ग में रहनेवाले परमपिता..." एक बार पतली-सी दीवार के उस पार से उसके जल्दी-जल्दी फुसफुसाकर बोलने की आवाज़ आयी थी। "हमें आज हमारी रोज़ की रोटी देना... हमारे अपराधों को क्षमा करना... कीरिक! उठकर ज़रा रसोई का दरवाज़ा बंद कर दो। मेरे पांव में ठंडी हवा लग रही है।"

"तुम ख़ाली फ़र्श पर घुटनों के बल बैठती ही क्यों हो?" कीरिक ने उनींदे स्वर में पूछा।

"बीच में न बोलो!"

और इल्या को एक बार फिर उसकी जल्दी-जल्दी फुसफुसाकर बोलने की कारोबारी आवाज़ सुनायी दी। "व्लास, निकोलाई, येव्दोकीया और मारीया की आत्माओं को शांति देना और तात्याना, कीरिक, सेराफ़ीमा पर अपने वरदानों की वर्षा करना..."

जिस तरह जल्दी-जल्दी वह प्रार्थना कर रही थी वह इल्या को अच्छा नहीं लगा। ज़ाहिर था कि वह सिर्फ़ इसलिए प्रार्थना कर रही

थी कि आदत से मजबूर थी और इसलिए नहीं कि वह इसकी ज़रूरत महसूस करती थी।

"तात्याना, तुम ईश्वर पर विश्वास करती हो?" एक बार उसने उससे पूछा।

"यह भी कोई पूछने की बात है!" वह आश्चर्य से बोली। "करती क्यों नहीं हूं। किसलिए पूछ रहे हो?"

"बस, योंई... हमेशा ऐसा लगता है कि तुम्हें उसे जल्दी से निबटा देने की जल्दी रहती है," इल्या ने मुस्कराकर कहा।

"एक बात तो यह कि 'योंई' नहीं बल्कि 'यों ही' कहते हैं, और दूसरी बात यह कि दिन-भर के बाद मैं इतना थक जाती हूं कि अगर मैं थोड़ी जल्दी भी करूं तो भगवान मुझे ज़रूर माफ़ कर देगा..." अपनी अलसायी हुई आंखें ऊपर उठाकर उसने पूरे भरोसे के साथ फिर कहा:

"वह बड़ा दयालु है; वह सब कुछ क्षमा कर देता है।"

"बस इसीलिए तो तुम लोगों को उसकी ज़रूरत है, ताकि कोई तुम्हारे पाप क्षमा कर दे," इल्या ने जलकर सोचा। उसे याद आया कि ओलिंपियादा हमेशा चुपचाप और बड़ी देर तक प्रार्थना करती थी; वह सिर झुकाये घुटनों के बल देव-प्रतिमा के सामने ऐसे निश्चल बैठी रहती थी जैसे पत्थर की हो गयी हो, और उसके चेहरे पर व्यथा और गंभीरता का भाव रहता था।

जब इल्या की समझ में यह बात अच्छी तरह आ गयी कि दुकान के मामले में तात्याना ने उसे धोखा दिया था, तो उसका मन उसकी ओर से लगभग बिल्कुल हट गया।

"अगर वह कोई अजनबी होती तब तो उससे ऐसी उम्मीद की जा सकती थी," उसने सोचा। "हर आदमी दूसरे का फ़ायदा उठाने की कोशिश करता है... लेकिन वह तो बिल्कुल... बिल्कुल मेरी बीवी जैसी है – मुझे चूमती है, मेरे साथ रहती है। बिल्कुल घिनौनी बिल्ली की तरह चालाक है! ऐसा तो बस रंडियां करती हैं और सो भी सब नहीं।" तात्याना के प्रति उसके व्यवहार में रुखाई और अविश्वास आ गया और वह उससे न मिलने के बहाने खोज निकालने लगा। लगभग इन्हीं दिनों उसकी मुलाक़ात एक और औरत से हुई – गावरिक

की बहन से जो अकसर अपने भाई से मिलने दुकान पर आती थी। वह लंबी और सुडौल ज़रूर थी लेकिन ख़ूबसूरत बिल्कुल नहीं थी। गावरिक का कहना था कि वह उन्नीस साल की थी, लेकिन इल्या का ख़्याल था कि वह देखने में इससे कहीं बड़ी लगती थी। उसका चेहरा लंबा, पतला और पीला था। उसके चौड़े-से माथे के आर-पार महीन-महीन लकीरें पड़ी थीं, उसकी बत्तख़ जैसी नाक के नथुने गुस्से की वजह से फैले हुए लगते थे, और उसके छोटे-से मुंह के पतले-पतले होंट हमेशा कसकर भिंचे रहते थे। वह बोलती तो साफ़ उच्चारण से थी, लेकिन ऐसे मानो उसका बोलने को जी न चाह रहा हो। वह तेज़ क़दमों से चलती थी और अपना सिर ऊंचा रखती थी, मानो अपनी लावण्यहीन सूरत पर इतरा रही हो। या शायद काले बालों की लंबी-सी भारी चोटी उसके सिर को पीछे खींचती रहती थी... उसकी बड़ी-बड़ी काली आंखों में कठोरता और गंभीरता थी और कुल मिलाकर उसके नाक-नक़्शे और चाल-ढाल से उसके लंबे डील-डौल में किसी के आगे न झुकनेवाले अहंकार का भाव पैदा हो गया था। इल्या उसके सामने शरमाता था; वह उसे स्वाभिमानी लगती थी, लेकिन उसे देखकर उसके मन में आदर की भावना जागृत होती थी। जब भी वह दुकान में आती थी तो वह उसे कुर्सी देकर बैठ जाने को कहता था।

"शुक्रिया," वह संक्षेप में कहती और सिर हिलाकर बैठ जाती। और जितनी देर वह वहां बैठी रहती थी इल्या छिपकर उसके चेहरे को (वह जितनी भी औरतों को जानता था उनके चेहरों से कितना भिन्न था उसका चेहरा) और उसके घिसे हुए कत्थई लिबास को और पैवंद-लगे जूतों को और पीले रंग की तिनकों की हैट को बड़े ध्यान से देखता रहता था। वहां बैठकर अपने भाई से बातें करते हुए वह अपने घुटने पर दाहिने हाथ की लंबी-लंबी उंगलियां जल्दी-जल्दी न सुनायी देनेवाली धुन पर बजाती रहती थी। अपने बायें हाथ से वह तसमे से बंधी हुई कुछ किताबों को झुलाती रहती थी। इल्या को यह बात कुछ अजीब लगती थी कि इतने बुरे कपड़े पहननेवाली युवती इतना गुमान करे। दो-तीन मिनट वहां बैठने के बाद वह अपने भाई से कहती:

"अच्छा, मैं चलती हूं। कोई शरारत न करना..."

और चुपचाप दुकान के मालिक की ओर सिर हिलाकर वह दुकान से इस तरह झपटकर बाहर निकल जाती जैसे कोई सिपाही लड़ाई के मैदान में जा रहा हो।

"तुम्हारी बहन भी बड़ी कठोर लड़की है," इल्या ने एक बार गावरिक से कहा।

गावरिक ने नाक सिकोड़ी, आंखें फाड़कर देखा और अपने होंट बाहर की ओर निकाल लिये; वह दृढ़ संकल्प की मुद्रा की ऐसी नक़ल उतारने की कोशिश कर रहा था जिससे स्पष्टतः उसकी बहन के चेहरे के भाव का संकेत मिलता था।

"ऐसी है उसकी सूरत..." वह मुस्कराकर बोला। "वह बस बनती है कि वह ऐसी है।"

"क्यों करती है वह ऐसा?"

"बस, मज़ा लेने के लिए। मैं भी वैसा ही हूं – मैं भी किसी तरह की सूरत बना सकता हूं।"

इल्या को उससे गहरी दिलचस्पी हो गयी, और मन ही मन वह वही बात कहने लगा जो उसने कभी तात्याना व्लास्येव्ना के बारे में कही थी:

"ऐसी औरत से शादी करनी अच्छा होता।"

एक दिन वह अपने साथ एक मोटी-सी किताब लायी।

"लो, यह पढ़ना," उसने किताब अपने भाई की ओर बढ़ाते हुए कहा।

"मैं देख सकता हूं?" इल्या ने बड़ी शिष्टता से कहा।

उसने किताब अपने भाई से लेकर उसे दे दी।

"डॉन क्विक्ज़ोट," वह बोली। "यह एक ऐसे सूरमा के बारे में है जो बहुत दयालु था।"

"मैं सूरमाओं के बारे में बहुत-सी किताबें पढ़ चुका हूं," इल्या ने उसके चेहरे पर एक नज़र डालते हुए सधी हुई मुस्कराहट के साथ कहा।

लड़की की भवें कांपने लगीं। "आपने जो पढ़ी हैं वे परियों की कहानियां थीं," उसने रूखेपन से कहा। "लेकिन यह बहुत गहरी और बहुत अच्छी किताब है। इसके हीरो ने अपनी सारी ज़िंदगी अभागे

लोगों की रक्षा करने में लगा दी – उन लोगों की जो जीवन के अन्यायों के सताये हुए थे ... वह हमेशा दूसरों की ख़ातिर अपनी क़ुर्बानी देने को तैयार रहता था। यह मज़ाक़िया अंदाज़ में लिखी गयी है ; लेकिन इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि जिस ज़माने में यह लिखी गयी थी उस ज़माने का तक़ाज़ा यही था ... इसे बड़ी गंभीरता से पढ़ा जाना चाहिये, बहुत ध्यान देकर ..."

"बिल्कुल इसी तरह पढ़ेंगे हम लोग इसे," इल्या ने कहा।

यह पहला मौक़ा था कि वह लड़की उससे कुछ बोली थी। उस बात से उसे बहुत ख़ुशी हुई और वह मुस्करा दिया। लेकिन उसने उस पर एक नज़र डाली और उसी रूखे स्वर में बोली :

"मैं नहीं समझती कि आपको इसमें मज़ा आयेगा।"

और इतना कहकर वह चली गयी। इल्या को ऐसा लगा कि उसने "आपको" पर ख़ास तौर पर ज़ोर दिया था, और यह सोचकर वह चिड़चिड़ा उठा।

"अब पढ़ने का वक़्त नहीं है," उसने झिड़ककर गावरिक से कहा, जो किताब की तसवीरें देख रहा था।

"क्यों नहीं? कोई गाहक तो है नहीं," गावरिक ने किताब बंद किये बिना ही कहा। इल्या ने उसकी ओर देखा लेकिन कुछ कहा नहीं। वह अपने दिमाग़ में उसी बात को उलटता-पलटता रहा जो उस लड़की ने किताब के बारे में कही थी। जहां तक उस लड़की का सवाल था तो उसके बारे में उसकी पक्की राय बन चुकी थी :

"नकचढ़ी है!"

समय बीतता गया। इल्या काउंटर के पीछे खड़ा अपनी मूंछें एंठता रहता और अपना माल बेचता रहता, लेकिन अब दिन बड़ी मुश्किल से कटने लगा था। कभी-कभी उसका जी चाहता कि दुकान में ताला डालकर कहीं टहलने निकल जाये, लेकिन यह जानते हुए कि इसका कारोबार पर बुरा असर पड़ेगा वह अपनी उमंग को दबा लेता। वह रात को भी दुकान छोड़कर कहीं नहीं जा सकता था। गावरिक को वहां अकेले रहते डर लगता था, और अगर न भी लगता तो भी उसे वहां छोड़कर जाना ख़तरे से ख़ाली नहीं था : कहीं अचानक उससे

आग न लग जाये या वह किसी चोर के लिए दरवाज़ा न खोल दे। कारोबार चल निकला था ; इल्या अपनी मदद के लिए एक नौकर रख लेने की बात भी सोचने लगा था। धीरे-धीरे तात्याना व्लास्येव्ना के साथ उसका संबंध अपने आप ही ख़त्म होता गया ; ऐसा लगता था कि तात्याना को भी इसमें कोई आपत्ति नहीं थी। वह हंसते-हंसते रोज़ का हिसाब बड़ी संजीदगी से देखती थी। इल्या जब उसे अपने कमरे में बैठकर गिनतारे पर गोलियां सरकाकर हिसाब जोड़ते हुए देखता तो वह महसूस करता कि वह चिड़िया जैसे चेहरेवाली इस औरत को बर्दाश्त नहीं कर सकता था। लेकिन कभी-कभी वह अपना खिला हुआ उल्लास-भरा चेहरा लेकर उसके पास हंसी-मज़ाक़ करती हुई आती और उसे अपना "साझेदार" कहती, और तब वह उसके जादू का शिकार हो जाता और एक बार फिर वही सब कुछ शुरू कर देता जिसे वह "सड़ा-गला सिलसिला" कहता था। कभी-कभी कीरिक वहां आ जाता और काउंटर के पास कुर्सी पर टांगें फैलाकर बैठ जाता और दुकान में आनेवाली दर्ज़िनों के साथ छेड़छाड़ करता रहता। अब वह पुलिस की वर्दी छोड़कर टसर का सूट पहनने लगा था, और व्यापारी के यहां अपनी नयी नौकरी के बारे में डींग मारते हुए कहता था :

"साठ रूबल महीना तनख़्वाह और इतनी ही ऊपर की आमदनी – बुरा नहीं है, क्यों? मैं ऊपर की आमदनी हाथ-पांव बचाकर ही करता हूं – बस वही लेता हूं जो क़ानून के ख़िलाफ़ न हो। तुम्हें मालूम है कि हम लोगों ने अपना फ़्लैट बदल लिया है। अब हमारे पास बहुत बढ़िया नया फ़्लैट है। हमने खाना पकानेवाली भी रख ली है – क्या बढ़िया खाना पकाती है वह! भगवान क़सम! पतझड़ आने पर हम अपने यहां मेहमान बुलाने लगेंगे, ताश खेलेंगे ... मज़ा आयेगा, भाई! तफ़रीह की तफ़रीह हो जाती है और इसके अलावा जीत की आमदनी भी होती है। हम लोग दोनों खेलते हैं, मैं और मेरी बीवी, इसलिए एक तो जीतेगा ही! जीत की आमदनी से मेहमानों का ख़र्च निकल आता है, हः, हः! इसे कहते हैं फोकट का तमाशा।"

उसका भारी-भरकम शरीर पूरी कुर्सी को घेर लेता था ; वह सिगरेट जला लेता और कश लेते हुए बीच-बीच में धीमी आवाज़ में कहता रहता :

20-01118

"जानते हो, मैं अभी देहात का दौरा लगाकर लौटा हूं। भगवान क़सम, सच कहता हूं, क्या लड़कियां होती हैं वहां! ऐसी लाजवाब चीज़ें तो मैंने कभी देखी नहीं! जिसे कहते हैं, प्रकृति की बेटियां। ऐसी जानदार और गठी हुई कि चुटकी तक काटना नामुमकिन था। और सस्ती इतनी कि कुछ पूछो मत! एक बोतल शराब और एक पौंड का केक – बस, माल अपना समझो!"

इल्या चुपचाप सुनता रहता। न जाने क्यों इल्या को कीरिक पर बड़ा तरस आता था, सहज भाव से उसके मन में उसके प्रति दया जागृत होती थी; वह यह भी नहीं जानता था कि इस मोटे, मंदबुद्धि आदमी में कौन-सी बात ऐसी थी जो उसके मन में दया जागृत करती थी। लेकिन फिर उसका जी उस पर हंसने को भी चाहता था। कीरिक अपनी विजयों के जो क़िस्से उसे सुनाता था उन पर वह विश्वास नहीं करता था। उसे यक़ीन था कि वह कोरी डींग हांकता था, किसी दूसरे के कहे हुए शब्दों को अपना लेता था। जब कीरिक अपनी लंबी-चौड़ी दास्तान शुरू करता उस समय अगर इल्या किसी बात पर चिढ़ा हुआ होता तो वह मन ही मन बुदबुदाकर कहता:

"शेख़ीख़ोर कहीं का!"

"अहा, भाई, प्रकृति की गोद में, जैसा कि कविताओं में लिखा जाता है, चेसनट के छतनार पेड़ तले प्यार करने का अलग ही मज़ा है।"

"अगर तात्याना व्लास्येव्ना को पता चल जाये तो?" इल्या ने पूछा।

"वह पता लगाना ही नहीं चाहेगी," कीरिक ने मक्कारी से आंख मारकर कहा। "वह अच्छी तरह जानती है कि उसके लिए इस बात को न जानना ही अच्छा है। स्वभाव से ही मर्द की हालत मुर्ग़े जैसी होती है... लेकिन अपनी कहो, मेरे दोस्त? तुम्हारी कोई माशूक़ा नहीं है?"

"है तो," इल्या ने हंसकर कहा।

"कोई दर्ज़िन है, क्यों? ख़ूबसूरत, छोटी-सी, सांवली-सलोनी, भूरे बालोंवाली?"

"नहीं, दर्ज़िन नहीं है..."

"खाना पकानेवाली? यह भी बहुत अच्छी बात है – कैसी मोटी-मोटी और रसीली होती हैं वे!"

हंसते-हंसते इल्या के गालों पर आंसू ढलकने लगे, और उसके इस तरह हंसने से कीरिक को यक़ीन हो गया कि वह खाना पकानेवाली ही होगी।

"जल्दी-जल्दी बदलते रहा करो उन्हें," कीरिक ने बहुत बड़े पारखी के स्वर में उसे सलाह दी।

"आपको यह क्यों ख़्याल हुआ कि वह दर्ज़िन या खाना पकानेवाली ही होगी? क्या मैं इससे अच्छी किसी औरत के लायक़ नहीं हूं?" इल्या ने हंसी के ठहाकों के बीच में पूछा।

"वे तुम्हारी हैसियत के लायक़ हैं, भाई। बहरहाल, तुम यह तो उम्मीद नहीं कर सकते कि किसी शरीफ़ घराने की लड़की या ब्याहता औरत से तुम्हारा मामला होगा, है न?"

"क्यों नहीं?"

"बिल्कुल साफ़ बात है। मैं तुम्हारा दिल नहीं दुखाना चाहता, लेकिन... बात यह है... तुम सीधे-सादे आदमी हो... देहाती..."

"लेकिन मेरीवाली... मेरीवाली तो रईसज़ादी है," इल्या ने कहा; हंसी के मारे उसका गला रुंधा जा रहा था।

"तुम्हें भी मज़ाक़ करने में मज़ा आता है!" कीरिक ने ख़ुश होकर कहा और वह भी हंस पड़ा।

लेकिन उसके चले जाने के बाद इल्या उसकी कही हुई बात के बारे में सोचने लगा और उसे बहुत बुरा लगा। उसकी समझ में यह बात साफ़-साफ़ आ रही थी कि कीरिक स्वभाव का कितना ही अच्छा क्यों न हो, वह अपने आपको इल्या के स्तर पर नहीं रखता था; वह अपने आपको ज़्यादा ऊंचा और बेहतर समझता था। फिर भी वह और उसकी बीवी इल्या का फ़ायदा उठा रहे थे।

पेर्फ़ीश्का की ज़बानी उसने सुना था कि पेत्रूख़ा उसके कारोबार का मज़ाक़ उड़ाता था और उसे ठग कहता था... याकोव ने भी मोची को बताया था कि इल्या पहले ज़्यादा अच्छा था – ज़्यादा हमदर्द था और उसमें इतना घमंड नहीं था। गावरिक की बहन भी हरदम यही जताती रहती थी कि वह उसके बराबर का नहीं था। चीथड़ों

जैसे कपड़े पहननेवाली वह डाकिये की बेटी उसे ऐसे देखती थी जैसे उसे एक ही धरती पर उसके साथ रहना भी अच्छा न लगता हो। इल्या ने जब से ख़ुद अपनी दुकान खोल ली थी तब से उसका स्वाभिमान बढ़ गया था और उसे इस बात का बहुत ख़्याल रहने लगा था कि लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं। और इस लड़की में उसकी दिलचस्पी दिन-ब-दिन बढ़ने लगी थी, जो ख़ूबसूरत न होने पर भी दूसरी लड़कियों से इतनी अलग थी; वह यह बात समझना चाहता था कि उसकी जैसी ग़रीब लड़की में इतना अहंकार कैसे पैदा हुआ कि वह तक उसका रोब मानने लगा था। वह कभी उससे बोलने में पहल नहीं करती थी, और इस बात से उसे झुंझलाहट होती थी। आख़िर, उसका भाई उसके यहां नौकर था, और सिर्फ़ इसी वजह से उसे उसके साथ, अपने भाई के मालिक के साथ ज़्यादा अदब में पेश आना चाहिये।

एक दिन वह उससे बोला, "मैं डॉन क्विक्ज़ोट के बारे में तुम्हारी वह किताब पढ़ रहा हूं।"

"अच्छी लग रही है?" उसने नज़रें उठाये बिना ही पूछा।

"बहुत ज़्यादा! बहुत ही मज़ेदार है। क्या अजीब आदमी था वह भी!"

इल्या को ऐसा लगा कि उसकी अभिमान-भरी काली-काली आंखों से निकलकर घृणा की एक छुरी उसके कलेजे के पार उतर गयी।

"मैं जानती थी कि आप ऐसी ही कोई बात कहेंगे," उसने धीरे-धीरे और शब्दों का उच्चारण साफ़-साफ़ करते हुए कहा।

उसका स्वर गहरी चोट करनेवाला और शत्रुतापूर्ण लग रहा था।

"मैं तो निरा जाहिल ठहरा," उसने अपने कंधे बिचकाकर कहा।

लड़की ने उसकी इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

और एक बार फिर इल्या की आत्मा पर वही भावना छा गयी जो बहुत दिन से दबी हुई थी – हर इंसान से नफ़रत की वह भावना। वह जीवन के अन्यायों के बारे में, अपने अपराध के बारे में, और अपने अंजाम के बारे में देर तक और गहराई से सोचता रहता था। कहीं उसे हमेशा ऐसे ही तो नहीं रहना पड़ेगा: ज़िंदगी-भर सुबह से रात तक वह दुकान पर खड़ा रहेगा, और फिर सोने के लिए बिस्तर पर लेटने से पहले तक अपने विचारों में डूबा हुआ समोवार के पास बैठा

रहेगा, और सुबह उठकर फिर अपनी उसी पुरानी जगह पर पहुंच जायेगा? वह जानता था कि ज़्यादातर दुकानदार, शायद सभी, यही करते थे, लेकिन उसकी अपनी बाहरी और भीतरी ज़िंदगी के कुछ लक्षण ऐसे थे जिनकी वजह से वह अपने आपको निराला आदमी समझता था, आम क़िस्म के लोगों से अलग। उसको याद था कि याकोव ने उसके बारे में क्या कहा था, "भगवान न करे कि तुम्हारे पास हो। तुम लालची हो।" उसे उसके ये शब्द बहुत बेजा लगते थे। वह लालची नहीं था – वह तो बस साफ़-सुथरी और शांत ज़िंदगी बिताना चाहता था, बस यह चाहता था कि दूसरे लोग उसकी इज़्ज़त करें, बस इतना चाहता था कि कोई उसे हर क़दम पर यह याद न दिलाये, "मैं तुमसे बेहतर हूं, इल्या लुन्योव; मैं तुमसे बढ़कर हूं..."

और एक बार फिर वह सोचने लगा कि उसका अंजाम क्या होगा: क्या उसे अपने अपराध के लिए जवाब देना होगा? कभी-कभी उसे लगता था कि अगर उसे ऐसा करना पड़ा तो यह अनुचित होगा। शहर में कितने हत्यारे, कितने व्यभिचारी और कितने धोखेबाज़ भरे पड़े हैं; हर आदमी को मालूम है कि वे जान-बूझकर हत्या करते हैं, व्यभिचार करते हैं और धोखा देते हैं, फिर भी वे जीवन के सारे सुख भोगते रहते हैं और उन्हें कभी कोई दंड नहीं दिया जाता। न्याय का तक़ाज़ा तो यह है कि हर अपराधी को उसके अपराध के लिए दंड दिया जाये। जैसा कि बाइबिल में कहा गया है: "भगवान उसका दंड ख़ुद उसे दे, ताकि उसे मालूम हो।" इन विचारों से उसके दिल के पुराने घाव फिर हरे हो जाते, और वह अपने बिखरते हुए जीवन का बदला लेने की प्रबल इच्छा से भर उठता। कभी-कभी ऐसा भी होता कि उसका बेहद जी चाहता कि कोई भयानक काम कर बैठे: पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव के घर को आग लगा दे, और जब लोग भागे हुए आयें तो वह चिल्लाकर कहे:

"मैंने किया है यह! और पोलुएक्तोव की हत्या भी मैंने ही की थी!"

वह पकड़ लिया जायेगा, उस पर मुक़द्दमा चलेगा, और उसे साइबेरिया भेज दिया जायेगा, जैसे उसके बाप को भेज दिया गया था... इस संभावना का ध्यान आते ही वह भड़क उठता और अपने

आप पर अंकुश लगाते हुए बदला लेने के अपने सपनों में कुछ परिवर्तन कर लेता: वह सिर्फ़ कीरिक को यह बता देगा कि वह उसकी बीवी के साथ रहता है, या शायद इससे भी अच्छा यह होगा कि माशा को सताने का मज़ा चखाने के लिए वह बूढ़े ख्रेनोव की पिटाई कर दे...

बिस्तर पर लेटे-लेटे जब वह अंधेरे में घूरता रहता और निस्तब्धता के स्वर सुनता रहता, तो उसे ऐसा लगता कि जैसे अचानक हर चीज़ हिल उठेगी और ढह जायेगी और एक तूफ़ानी बवंडर में चक्कर काटने लगेगी और उससे बेहद शोर और हंगामा पैदा होगा। और इसी बवंडर में वह ख़ुद भी फंस जायेगा और उसमें चक्कर काटते-काटते मर जायेगा... और वह किसी असाधारण घटना के पूर्वाभास से सिहर उठता...

एक दिन शाम को जब वह दुकान बंद करने जा रहा था तो पावेल आया और उसने दुआ-सलाम किये बिना ही शांत भाव से कहा:

"वेरा भाग गयी..."

वह काउंटर पर अपनी कुहनियां टिकाकर कुर्सी पर बैठ गया, और एकटक सड़क की ओर देखते हुए धीरे-धीरे सीटी बजाने लगा। उसका चेहरा भावशून्य होकर बिल्कुल मुखौटे जैसा हो गया था, लेकिन उसकी छोटी-सी भूरी मूंछें बिल्ली की मूंछों की तरह फड़क रही थीं।

"अकेले या किसी के साथ?"

"मालूम नहीं... उसे गये तीन दिन हो गये..."

इल्या चुपचाप उसे देखता रहा। अपने दोस्त के भावशून्य चेहरे और उसकी शांत आवाज़ से उसके लिए यह अनुमान लगाना असंभव था कि अपनी बीवी के भाग जाने का उस पर क्या असर हुआ था। लेकिन उसे पावेल की इस शांत मुद्रा के पीछे किसी अटल निश्चय का आभास मिल रहा था।

"अब तुम क्या करनेवाले हो?" जब उसने देखा कि पावेल कुछ भी कहनेवाला नहीं है तो उसने शांत भाव से पूछा। इस पर पावेल ने सीटी बजाना बंद कर दिया और अपना सिर तक घुमाये बिना संक्षेप में घोषणा की:

"उसे मार डालूंगा।"

"फिर वही पुराना राग अलापने लगे!" इल्या ने बड़ी अरुचि से हाथ हिलाकर कहा।

"उसकी वजह से मैंने अपना दिल छलनी कर डाला है," पावेल ने धीरे से कहा। "यह रहा चाक़ू।"

उसने रोटी काटने का एक छोटा-सा चाक़ू अपनी क़मीज़ के अंदर से निकाला और उसे अपनी नाक के सामने नचाने लगा।

"मैं उसका गला काट दूंगा..."

इल्या ने चाक़ू उसके हाथ से छीनकर काउंटर के पीछे फेंक दिया।

"तलवार से सुई का काम लेने चले हो," उसने चिढ़कर कहा।

पावेल कुर्सी पर से उछलकर खड़ा हो गया और तेज़ी से पलटकर उसके सामने आ गया। उसकी आंखों से लपटें निकल रही थीं, उसका चेहरा विकृत हो गया था और उसका सारा शरीर थर-थर कांप रहा था। लेकिन अगले ही क्षण वह फिर कुर्सी पर बैठ गया।

"तुम बड़े बेवक़ूफ़ हो!" वह तिरस्कार से बोला।

"तुम तो बड़े समझदार हो!"

"तलवार क्या चीज़ है – मेरे पास अपने हाथ भी तो हैं।"

"हां!"

"और अगर मेरे हाथ कटकर गिर भी पड़ें तो मैं अपने दांतों से उसकी गर्दन दबोच लूं।"

"कैसा ख़ौफ़नाक जानवर है!"

"रहने दो, इल्या," कुछ देर रुककर पावेल ने फिर शांत भाव से धीरे से कहा। "तुम मेरी बात का यक़ीन करो न करो, तुम्हारी मर्ज़ी, लेकिन मुझे तंग न करो। मुझे मेरा नसीब काफ़ी तंग कर चुका है..."

"लेकिन, अरे नासमझ, सोचो तो कि तुम कह क्या रहे हो," इल्या ने नरमी से कहा।

"मैंने सोच लिया है। लेकिन अब मुझे चलना चाहिये। तुमसे मैं कह ही क्या सकता हूं? तुम्हारा पेट भरा हुआ है... तुम मुझे समझ नहीं सकते..."

"यह बकवास अपने दिमाग़ से निकाल दो," इल्या झिड़कते हुए चिल्लाया।

"मैं भूखा हूं – मेरी आत्मा भी और मेरा शरीर भी।"

"कमाल है कि लोग चीज़ों को किस तरह देखते हैं!" इल्या

ने कंधे उचकाकर कहा। "औरत को पालतू जानवर समझते हैं – घोड़े जैसी कोई चीज़! ढोकर ले चलेगी? अच्छी बात है, मैं तुझे नहीं मारूंगा। मुझे ढोने से इंकार करती है? तेरे सिर पर ऐसा कोड़ा पड़ेगा – धड़! लेकिन औरत भी इंसान होती है और उसका ख़ुद अपना स्वभाव होता है।"

पावेल ने एक नज़र उसे देखा और भर्रायी हुई हंसी हंस दिया।

"और मैं? मैं इंसान नहीं हूं?"

"पर क्या तुम्हें इंसाफ़ करना चाहिये या नहीं करना चाहिये?"

"भाड़ में जाये तुम्हारा इंसाफ़!" पावेल ग़ुस्से से चिल्लाया और कुर्सी पर से उछलकर खड़ा हो गया। "तुम्हारे लिए इंसाफ़ से काम लेना बहुत आसान है; तुम्हारा पेट भरा है न... समझे? अच्छा, मैं चला..."

और यह कहकर वह तेज़ी से दुकान के बाहर निकल गया और दरवाज़े के पास पहुंचकर जाने क्यों उसने अपनी टोपी उठा ली। इल्या झपटकर काउंटर के पीछे से बाहर आया और उसके पीछे लपका, लेकिन पावेल बड़ी उत्तेजना से अपनी टोपी झुलाता हुआ सड़क पर बहुत आगे निकल चुका था।

"पावेल!" इल्या ने पुकारा। "ठहरो!"

लेकिन वह नहीं रुका। उसने पीछे मुड़कर देखा तक नहीं, और मिनट-भर में वह एक नुक्कड़ पर मुड़कर आंखों से ओझल हो चुका था। इल्या धीरे-धीरे चलता हुआ फिर काउंटर के पीछे पहुंच गया; उसे इस बात का पूरा आभास था कि अपने साथी के शब्द सुनकर उसके गाल इतने तमतमा उठे थे मानो वह दहकती हुई भट्ठी में झांक रहा हो।

"बड़ा ग़ुस्सैल आदमी है, सचमुच!" गावरिक की आवाज़ आयी।

इल्या हंस दिया।

"किसे चाक़ू मारनेवाला है?" गावरिक ने काउंटर के पास आकर पूछा। उसने अपने दोनों हाथ पीठ के पीछे बांध रखे थे, उसका सिर पीछे की ओर झुका हुआ था, और चेचक के दाग़ों से भरा हुआ उसका चेहरा तमतमा उठा था।

"अपनी बीवी को," इल्या ने एक नज़र उस लड़के पर डालकर कहा।

गावरिक एक क्षण तक चुप रहा; फिर मानो बड़ी कोशिश करते हुए उसने अपने मालिक से बहुत धीमे और विचारमग्न स्वर में कहा:

"क्रिसमस के दिन हमारी पड़ोसिन ने अपने पति को संखिया खिला दी थी... वह दर्ज़ी था..."

"लोग करते हैं, कभी-कभी..." इल्या ने उसकी बात की ओर ध्यान दिये बिना ही कहा; वह पावेल के बारे में सोच रहा था।

"यह आदमी... क्या यह सचमुच उसे चाक़ू मार देगा?"

"चुप भी रहो, गावरिक!"

लड़का मुड़कर दरवाज़े की ओर चल दिया और चलते-चलते बुड़-बुड़ाता रहा:

"ये कमबख़्त शादी ही क्यों करते हैं?"

सड़क पर झुटपुटा फैलता जा रहा था और सामनेवाले घर की खिड़कियों में बत्तियां जल गयी थीं।

"दुकान बंद करने का वक़्त हो गया," गावरिक ने धीरे से कहा।

इल्या उन खिड़कियों की ओर घूरने लगा जिनमें रोशनी हो रही थी। उनका निचला हिस्सा पौधों के गमलों और ऊपर का हिस्सा सफ़ेद परदों से ढका हुआ था। पौधों की पत्तियों के बीच से दीवार पर लटकी हुई एक तसवीर के सुनहरे फ्रेम की झलक दिखायी देती थी। जब खिड़कियां खुली होती थीं तो गिटार बजने की, लोगों के गाने की और ज़ोर से हंसने की आवाज़ें साफ़ सुनायी देती थीं। लगभग रोज़ ही शाम को लोग उस घर में गाते थे, हंसते थे और गिटार बजाते थे। इल्या जानता था कि उस घर में सर्किट कोर्ट का एक जज रहता था जिसका नाम ग्रोमोव था – स्थूल शरीर का लाल-लाल गालोंवाला आदमी, जिसके काले रंग की बड़ी-बड़ी मूंछें थीं। उसकी बीवी भी गठे हुए शरीर की थी, उसके बाल सुनहरे और आंखें नीली थीं। जब वह सड़क पर चलती थी तो ऐसे इठलाकर कि लगता था कि परियों की कहानी में से कोई रानी निकल आयी है, और लोगों से बात करते वक़्त वह हमेशा मुस्कराती रहती थी। ग्रोमोव की एक शादी करने की उम्र की बहन थी – काले बालों और सांवले रंग की एक लंबी-सी लड़की, जिसे हमेशा नौजवान अफ़सर घेरे रहते थे। यही लोग थे जो लगभग हर शाम को वहां हंसते-गाते रहते थे।

"सचमुच दुकान बंद करने का वक़्त हो गया है," गावरिक ने आग्रह से कहा।

"तो बंद कर दो।"

लड़के ने दरवाज़ा बंद कर दिया और ताले में चाभी घुमा दी; दुकान में अंधेरा छा गया।

"बिल्कुल जेल जैसा लगता है," इल्या ने सोचा।

पावेल ने उसका पेट भरा होने की जो बात कही थी वह उसके दिल में नासूर बनकर रह गयी थी। समोवार के पास बैठे-बैठे उसके मन में पावेल के प्रति बहुत द्वेष उमड़ रहा था, और उसे विश्वास नहीं था कि पावेल वेरा को चाक़ू मार सकता है।

"फिर भी मैंने बेकार उसका पक्ष लिया," उसने कटुता से सोचा। "भाड़ में जायें वे दोनों! खुद मुसीबत में रहते हैं और दूसरों को मुसीबत में डालते हैं।'"

गावरिक तश्तरी में से चाय सुड़प-सुड़प करके पी रहा था और फ़र्श पर अपने पांव रगड़ रहा था।

"क्या उसने अब तक उसे चाक़ू मार दिया होगा?" उसने अचानक अपने मालिक से पूछा।

इल्या ने उदास भाव से घूरकर देखा।

"तुम चाय पीकर सो जाओ," वह बोला।

समोवार इस तरह सनसना रहा था और गरज रहा था कि जैसे अभी मेज़ पर से कूद पड़ेगा।

अचानक खिड़की में एक काली छाया दिखायी दी और किसी ने डरी-डरी कांपती हुई आवाज़ में पूछा:

"इल्या याकोव्लेविच का घर यही है?"

"हां," गावरिक ने ज़ोर से कहा, और इससे पहले कि इल्या एक शब्द भी कह पाता वह कुर्सी पर से उछलकर दरवाज़ा खोलने चल दिया था।

दरवाज़े में सिर पर रूमाल बांधे एक औरत की दुबली-पतली आकृति दिखायी दी। एक हाथ से वह दरवाज़े की चौखट पकड़े थी और दूसरे हाथ से अपने रूमाल का छोर मरोड़ रही थी। वह बग़ल की ओर मुड़ी खड़ी थी, मानो भाग जाने को तैयार हो।

"अंदर आ जाइये," इल्या ने सख़्ती से कहा; वह उसे पहचान नहीं सका था।

वह उसकी आवाज़ सुनकर चौंक पड़ी और उसने अपना सिर ऊपर उठाया, और उसके छोटे पीले चेहरे पर मुस्कराहट की चमक दौड़ गयी।

"माशा!" इल्या ने उछलकर खड़े होते हुए कहा।

वह धीरे से हंसकर उसकी ओर बढ़ी।

"तुमने... आपने मुझे पहचाना भी नहीं," उसने कमरे के बीच में ठिठककर कहा।

"हे भगवान! पहचानता भी कैसे! तुम तो देखने में..."

ज़रूरत से ज़्यादा शिष्टता से उसकी बांह पकड़कर इल्या उसे मेज़ की ओर लाते हुए झुककर उसे अच्छी तरह देखने की कोशिश कर रहा था; उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि उसे बता दे कि वह कैसी लग रही थी। वह बेहद दुबली हो गयी थी और चलती थी तो ऐसा लगता था कि उसकी टांगें अभी जवाब दे जायेंगी।

"तो यह... तो यह हाल हो गया है तुम्हारा!" उसने बड़े प्यार से उसे कुर्सी पर बिठाकर उसके चेहरे को ध्यान से देखते हुए बुदबुदाकर कहा।

"देखो क्या हो गयी हूं मैं..." वह इल्या की आंखों में आंखें डालकर बोली।

अब चूंकि उस पर लैंप की रोशनी पड़ रही थी, इल्या उसे अच्छी तरह देख सकता था। वह पीछे सहारा लगाकर बैठी थी, उसकी पतली-पतली बांहें दोनों ओर झूल रही थीं, सिर एक ओर को लटक गया था, और उसका सपाट सीना जल्दी-जल्दी उभरता था और फिर बैठ जाता था। उसके शरीर पर कहीं मांस दिखायी भी नहीं देता था, जैसे वह सिर्फ़ हड्डियों की बनी हुई हो। उसके कंधों, कुहनियों और घुटनों के नुकीले उभार उसकी सूती फ़्रॉक की सिलवटों में साफ़ दिखायी देते थे, और उसका सूखा हुआ दुबला-पतला चेहरा देखकर डर लगता था। उसकी खाल में एक नीलापन आ गया था और उसकी कनपटियों, गालों की हड्डियों और ठोड़ी पर वह बिल्कुल कसकर मढ़ी हुई लगती थी; मुंह बीमारों की तरह खुला रहता था, पतले-पतले होंट दांतों

को ढक नहीं पाते थे, और उसके छोटे-से लंबोतरे चेहरे पर निरंतर व्यथा का भाव बना रहता था। उसकी आंखों में कोई जान या चमक नहीं थी।

"क्या बीमार थीं?" इल्या ने नरमी से पूछा।

"न-हीं," वह बोली। "बिल्कुल ठीक हूं। यह सब उसका किया-धरा है।"

धीमे स्वर में खींच-खींचकर बोले गये उसके शब्द कराहने की आवाज़ जैसे लगते थे और उसके खुले हुए दांतों की वजह से उसकी सूरत कुछ-कुछ मछली जैसी लगती थी।

गावरिक उसकी बग़ल में खड़ा अपने होंट कसकर भींचे भयभीत आंखों से उसे घूर रहा था।

"जाओ, सो जाओ!" इल्या ने उससे कहा।

लड़का दुकान में चला गया, एक-दो मिनट तक वहां कुछ करता रहा और फिर दरवाज़े में से सिर निकालकर झांकने लगा।

माशा बिल्कुल निश्चल बैठी थी, बस उसकी आंखें हिल-डुल रही थीं और बड़ी मुश्किल से एक चीज़ से दूसरी चीज़ तक जा पाती थीं। इल्या ने उसके लिए एक प्याली में चाय उंडेली और उसे ध्यान से देखता रहा, लेकिन उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि कहे क्या।

"वह मुझे सता-सताकर मार डालेगा..." वह बोली। उसके होंट कांप रहे थे और एक सेकंड के लिए उसने अपनी आंखें बंद कर ली थीं। जब उसने आंखें खोलीं तो पलकों के नीचे से बड़े-बड़े आंसू ढलक आये।

"रोओ नहीं..." इल्या ने अपनी नज़रें दूसरी ओर फेरकर कहा। "थोड़ी-सी चाय पी लो और मुझे सब कुछ बता दो। तुम्हारा जी हल्का हो जायेगा..."

"मुझे डर लगता है कि वह मेरा पता लगा लेगा," वह सिर हिलाते हुए बोली।

"क्या तुम उसे छोड़कर चली आयी हो?"

"हां। चौथी बार। जब भी मुझसे और ज़्यादा बर्दाश्त नहीं होता मैं भाग जाती हूं। पिछली बार मैं कुएं में कूद जाना चाहती थी... लेकिन उसने मुझे पकड़ लिया... कितना मारा था उसने मुझे! कैसी-कैसी तकलीफ़ें दी थीं!"

उसकी आंखें डर के मारे फट गयीं और उसकी ठोड़ी कांपने लगी। "वह मेरी टांगें मरोड़ता रहता है।"

"हाय रे! तुम यह सब कुछ सहती क्यों हो?" इल्या ने चिल्लाकर कहा। "तुम पुलिस में उसकी शिकायत क्यों नहीं कर देतीं – कह दो कि वह तुम्हें सताता है! इसकी सज़ा में लोगों को जेल भेज दिया जाता है।"

"उसे नहीं भेजा जायेगा। वह ख़ुद जज है," माशा ने निराश भाव से कहा।

"कौन, ख्रेनोव? नहीं तो, वह जज तो नहीं है।"

"अरे, है कैसे नहीं। अभी कुछ ही दिन पहले की तो बात है, दो हफ़्ते तक लगातार वह अदालत में बैठा था... न जाने कितने लोगों को उसने सज़ा सुना दी – घर आता था तो भूख से बेहाल और सूरत बिगड़ी हुई – मेरी छातियों को समोवार के चिमटे से पकड़कर उन्हें कसकर दबाता था और मरोड़ता था। यह देखो।"

कांपती हुई उंगलियों से उसने अपने बटन खोले और इल्या को अपनी छोटी-छोटी लटकी हुई ढीली छातियां दिखायीं जिन पर जगह-जगह काले धब्बे थे जैसे किसी ने उन्हें चबाया हो।

"बटन लगा लो," इल्या ने उदास स्वर में कहा। उसके क्षत-विक्षत कृषकाय शरीर को देखकर अरुचि होती थी। उसे किसी तरह यक़ीन नहीं आता था कि उसके सामने वहीं हंसमुख माशा बैठी थी, उसकी बचपन की दोस्त।

"और उसने मुझे कंधों पर इतनी बुरी तरह मारा कि क्या बताऊं!" वह अपने कंधों पर से कपड़ा सरकाते हुए सपाट स्वर में कह रही थी। "और मेरे बाक़ी शरीर का भी यही हाल है। उसने मेरे सारे जिस्म पर चुटकियां काटीं और मेरी बग़लों के बाल नोच डाले।"

"लेकिन किसलिए?" इल्या ने पूछा।

"'तुम मुझसे प्यार नहीं करतीं?' वह कहता है, और चुटकियां काटता है।"

"हो सकता है कि तुम... जब उसके पास गयी थीं तब तुम कुआंरी नहीं थीं?"

"तुम ऐसी बात कैसे सोच सकते हो? हर वक़्त तो मैं तुम्हारे और याकोव के साथ रहती थी और कोई आदमी कभी मुझे छू भी नहीं पाता था। और अब तो मैं किसी काम की भी नहीं हूं... तकलीफ़ होती है और घिन आती है... मतली होने लगती है..."

"चुप रहो, माशा," इल्या ने धीरे से कहा।

वह चुप हो गयी और अपनी छातियां खोले चेहरे पर स्तब्धता का भाव लिये बैठी रही।

समोवार के पीछे से इल्या ने उसके क्षीण, क्षत-विक्षत शरीर को देखा और फिर बोला:

"बटन लगा लो..."

"मुझे तुमसे कोई शरम नहीं आती है," उसने कांपती उंगलियों से बटन लगाते हुए इतनी धीमी आवाज़ में कहा कि सुनना भी मुश्किल था।

कमरे में मौत का सा सन्नाटा था। अचानक दुकान में से किसी की ज़ोर-ज़ोर से सूं-सूं करने की आवाज़ आयी। इल्या उठकर दरवाज़ा बंद कर देने के लिए बढ़ा।

"बंद करो यह, गावरिक," उसने उदास स्वर में कहा।

"क्या वह लड़का था?" माशा ने पूछा। "क्या हुआ है उसे?"

"रो रहा है..."

"डर लगता है?"

"नहीं। मैं समझता हूं दुःखी हो गया है।"

"किसके लिए?"

"तुम्हारे लिए..."

"अच्छा!" माशा ने उदासीन भाव से कहा; उसके मुखौटे जैसे चेहरे के भाव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह चाय पीने लगी; उसके हाथ कांप रहे थे जिसकी वजह से तश्तरी बार-बार उसके दांतों से टकरा जाती थी। समोवार के पीछे से उसे ध्यान से देखते हुए इल्या यह फ़ैसला नहीं कर पा रहा था कि उसे माशा पर तरस आ रहा था कि नहीं।

"अब तुम्हारा क्या करने का इरादा है?" बड़ी देर तक चुप रहने के बाद इल्या ने पूछा।

"मालूम नहीं," वह आह भरकर बोली। "मुझे क्या करना चाहिये?"

"शिकायत लिखवा दो," इल्या ने निश्चयपूर्वक कहा।

"वह अपनी पहली बीवी के साथ भी ऐसा ही सलूक करता था," माशा ने कहा। "वह उसे बालों से चारपाई से बांध देता था और उसके शरीर पर चुटकियां काटता था – बिल्कुल वैसे ही जैसे मेरे साथ करता है। एक बार मैं सो रही थी कि अचानक मैंने दर्द महसूस किया... मैं जाग पड़ी और चिल्लाने लगी... उसने माचिस जलाकर मेरे पेट पर रख दी थी..."

इल्या उछलकर खड़ा हो गया और बेहद गुस्से से चिल्लाया कि उसे अगले ही दिन पुलिस में जाकर अपने घाव दिखाने चाहिये और मांग करनी चाहिये कि उसके पति पर मुक़द्दमा चलाया जाये। जब वह बोल रहा था तो माशा तिलमिलाकर अपने चारों ओर सहमी-सहमी नज़रों से देख रही थी।

"मेहरबानी करके चिल्लाओ नहीं!" वह बोली। "कोई तुम्हारी आवाज़ सुन लेगा..."

इल्या ने देखा कि उसके शब्दों का उस पर डरने के अलावा और कोई असर नहीं हो रहा था।

"अच्छी बात है," उसने फिर बैठते हुए कहा। "मैं ख़ुद यह काम करूंगा। माशा, तुम रात को यहीं रहो। तुम मेरे पलंग पर सो जाना, मैं दुकान में सो जाऊंगा।"

"मैं लेटना तो चाहती हूं... बहुत थक गयी हूं..." वह बोली।

धीरे से उसने मेज़ पलंग के पास से खिसका दिया। माशा लेट गयी और उसने कंबल ओढ़ने की कोशिश की, लेकिन इतना भी कर पाना उसके बस के बाहर था।

"मैं अजीब लगती हूं न, जैसे मैं नशे में हूं," उसने धीरे से मुस्कराकर कहा।

इल्या ने कंबल उसे उढ़ाकर चारों ओर से उसके नीचे दबा दिया और तकिया उसके सिर के नीचे ठीक किया। वह बाहर जाने ही को था कि माशा ने चिंतित स्वर में कहा:

"जाओ नहीं। मुझे अकेले डर लगता है... मुझे न जाने क्या-क्या दिखायी देता रहता है।"

वह उसके पास कुर्सी पर बैठ गया, लेकिन माशा के काले घुंघराले बालों के घेरे में उसका सफ़ेद चेहरा देखकर उसने मुंह फेर लिया। उसे इस हालत में देखकर उसका अंतःकरण कचोट उठा – वह ज़िंदा से ज़्यादा मुर्दा लग रही थी। उसे याद आया कि याकोव ने उससे कुछ प्रार्थना की थी, और उसे यह भी याद आया कि मुटल्ली ने उसे माशा के बारे में क्या बताया था; उसका सिर शर्म से झुक गया।

सड़क के उस पारवाले घर में दो आवाज़ें एकसाथ गा रही थीं, और गीत के शब्द खुली खिड़की से तैरते हुए इल्या के कमरे में आ रहे थे। कोई नीचे सुर की भरपूर आवाज़ में गा रहा था :

हा-य! मेरा दिल टू-ट गया...

"मुझे नींद आ रही है," माशा ने बुदबुदाकर कहा। "यहां कितना अच्छा है... कोई गा रहा है... बहुत अच्छी आवाज़ें हैं..."

"हां, वहां लोग गा रहे हैं," इल्या ने बड़ी कटुता से हंसकर कहा। "कोई गाता है, कोई रोता है।"

मैं अब न करूंगा प्या-र...
ब-स एक बा-र!

रात के सन्नाटे में एक ऊंचा सुर गूंजा और लहराता हुआ ऊपर उठता चला गया।

इल्या उठा और उसने झुंझलाकर खिड़की बंद कर दी। गाना उसे बेवक़्त की रागिनी जैसा लग रहा था; उससे उसे उलझन हो रही थी। खिड़की बंद होने की आवाज़ से माशा जाग पड़ी। उसने अपनी आंखें खोलीं और डरकर अपना सिर ऊपर उठाया।

"कौन है?" उसने पूछा।

"मैं हूं... खिड़की बंद कर रहा था..."

"हे दयालु भगवन्!... क्या तुम जा रहे हो?"

"नहीं, तुम डरो नहीं।"

माशा ने अपना सिर तकिये पर टिका लिया और जल्दी ही उसे

फिर नींद आ गयी। लेकिन हर चीज़ से उसकी नींद उचट जाती थी – इल्या के ज़रा भी हिलने-डुलने से, या बाहर सड़क पर क़दमों की आहट से। वह फ़ौरन आंखें खोलकर आधी नींद में चिल्ला पड़ती :

"एक मिनट... अरे, रुको!.. बस, एक मिनट!"

इल्या ने खिड़की फिर खोल दी और चुपचाप बैठा सोचता रहा कि वह माशा की मदद करने के लिए क्या कर सकता है। उसने तै कर लिया था कि जब तक उसके मामले की शिकायत पुलिस में नहीं कर दी जायेगी तब तक वह उसे वहां से जाने नहीं देगा।

"मैं कीरिक के ज़रिये यह काम करूंगा," उसने सोचा।

"एक बार फिर! एक बार फिर!" ग्रोमोव के घर से जोश-भरी आवाज़ें आ रही थीं। किसी ने तालियां बजायीं। माशा कराह उठी। ग्रोमोव के यहां से एक बार फिर गाने की आवाज़ आयी :

गाड़ी में दो घो-ड़े जोते,
भोर पहर की बेला में...

इल्या लाचारी से सिर हिलाने लगा... यह गाना, ये मस्त आवाज़ें, और यह हंसी उसे बेचैन कर रही थी। वह खिड़की की सिल पर कुहनियां टिकाये सामनेवाली खिड़कियों की रोशनियों को देख रहा था; वह गुस्से से खौल रहा था और सोच रहा था कि बाहर जाकर अगर एक पत्थर किसी खिड़की को तोड़ता हुआ अंदर फेंक दिया जाये तो कितना मज़ा आये। या रंगरेलियां मनानेवाले इन लोगों के बीच छर्रों की बौछार कर दी जाये। छर्रों की बौछार उन लोगों तक ज़रूर पहुंच जायेगी। वह ख़ून में सने उनके भयभीत थोबड़ों की और उनकी चीख़-पुकार और बौखलाहट की कल्पना करने लगा; इस चित्र से उसका दिल ख़ुशी से भर उठा और उसके होंटों पर मुस्कराहट आ गयी। गीत के बोल अनायास उसके दिमाग़ पर अंकित हो गये। वह उनको दोहरा रहा था और उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि रंगरेलियां मनानेवाले ये लोग एक वेश्या की मौत के बारे में यह गीत गा रहे थे। उसे बहुत धक्का पहुंचा। वह ज़्यादा ध्यान देकर सुनने लगा, और सुनते-सुनते सोचने लगा कि ये लोग ऐसा गीत क्यों गा रहे थे? इसमें उन्हें क्या मज़ा आता होगा? भला कोई बात हुई यह! यहां,

21-01118

उनसे कुछ ही क़दम की दूरी पर एक जिंदा औरत पड़ी तड़प रही है, और उसकी हालत किसी को मालूम नहीं...

"वाह-वाह! शाबाश!" लोगों के चिल्लाने की आवाज़ आयी।

इल्या मुस्कराने लगा और बारी-बारी से कभी माशा को और कभी खिड़की को देखता रहा। उसे यह बात अजीब लगी कि लोग अपना मन बहलाने के लिए एक वेश्या की मौत के बारे में भी गीत गा सकते हैं।

"वासीली... वासीलिच..." माशा बुदबुदायी।

वह छटपटाकर करवटें बदलने लगी जैसे जल गयी हो; उसने कंबल उतारकर फ़र्श पर फेंक दिया, बांहें फैला दीं और फिर बिल्कुल निश्चल लेटी रही। उसका मुंह आधा खुला हुआ था और वह जल्दी-जल्दी हांपने की सी आवाज़ निकाल रही थी। लुन्योव जल्दी से झुककर सुनने लगा; उसे यह डर लगा कि शायद वह मर रही है। जब उसकी सांस चलने की आवाज़ से उसे आश्वासन हो गया तो उसने उसे कंबल उढ़ा दिया, फिर चढ़कर खिड़की की सिल पर बैठ गया और लोहे के जंगले से अपना चेहरा सटाकर ग्रोमोव के घर की खिड़कियों को एकटक देखने लगा। लोग वहां अभी तक गा रहे थे—कभी अकेले, कभी दो आदमी एकसाथ, और कभी सब मिलकर। संगीत और हंसी। खिड़कियों में उसे गुलाबी और नीली और सफ़ेद फ़्राकें पहने औरतों की झलक दिखायी दे जाती थी। कान लगाकर सुनते हुए उसे इस बात पर हैरत हो रही थी कि वे लोग वोल्गा के बारे में, मौत के बारे में और बिना जुते हुए खेतों के बारे में ऐसे उदास और लंबे-लंबे गीत गा सकते थे और हर गाने के बाद इस तरह हंस सकते थे जैसे कोई बात ही न हुई हो, जैसे ये गीत उन्होंने न गाये हों... क्या व्यथा से भी उनका मनोरंजन होता होगा?

हर बार जब माशा उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती तो वह उदास नज़रों से उसे देखता और सोचने लगता कि आगे चलकर उसका क्या होगा? अगर तात्याना आ जाये और उसे यहां देख ले तो? वह उसका करे भी तो क्या? उसका सिर चकराने लगा। जब उसे नींद आने लगी तो वह खिड़की से नीचे उतरा और पलंग के पास सिर के नीचे अपना कोट लपेटकर तकिये की तरह रखकर लेट गया।

उसने सपना देखा कि माशा मर गयी थी और एक बखार के कच्चे फ़र्श पर पड़ी हुई थी; उसे चारों ओर से कुछ औरतों ने घेर रखा था जो गुलाबी और नीली और सफ़ेद फ़्रॉकें पहने थीं और उसकी लाश पर गा रही थीं। जब वे कोई करुण गीत गाती थीं तो सबकी सब बेसुरी हंसी हंस देती थीं और जब वे कोई मस्ती-भरे गीत गाती थीं तो वे रोने लगती थीं और अपने सिर हिलाने लगती थीं, और नाज़ुक सफ़ेद रूमालों से अपनी भीगी आंखें पोंछने लगती थीं। बखार में अंधेरा और सीलन थी, और उसके एक कोने में सावेल लोहार लाल दहकते हुए लोहे को हथौड़े से पीटकर खिड़की का जंगला बना रहा था। बखार की छत पर कोई चल रहा था और चिल्ला-चिल्लाकर आवाज़ दे रहा था:

"इल्या! इल्-या-आ-आ!"

लेकिन वह भी इतना कसकर बंधा हुआ बखार में पड़ा था कि वह न बोल सकता था और न हिल-डुल सकता था।

"इल्या! उठो! उठो तो!"

वह जाग पड़ा और उसने देखा कि पावेल ग्राचोव कुर्सी पर बैठा हुआ है और उसकी टांगों को अपने पांव से हल्की-हल्की ठोकरें मार रहा है। खिड़की में से धूप की एक चमकदार किरन आकर मेज़ पर खौलते हुए समोवार पर पड़ रही थी। इल्या ने चकाचौंध कर देनेवाली रोशनी से अपनी आंखें सिकोड़ लीं।

"सुनो, इल्या..."

पावेल की आवाज़ ऐसी भर्रायी हुई थी जैसे वह बड़ी देर से शराब पी रहा हो, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और बाल उलझे हुए थे। उसकी यह हालत देखकर इल्या उछलकर खड़ा हो गया।

"क्या बात है?" उसने दबी ज़बान से पूछा।

"वह पकड़ ली गयी है," पावेल ने सिर झटककर कहा।

"क्या? कौन? कहां है वह?" इल्या ने उसकी ओर झुककर और उसका कंधा पकड़कर पूछा। पावेल डगमगा गया।

"उसे जेल में डाल दिया गया है," घबराकर उसने कहा।

"किसलिए?" इल्या ने ऊंची फुसफुसाहट में पूछा।

माशा की आंख खुल गयी; पावेल को देखकर वह चौंक पड़ी

और डरी-डरी आंखों से उसे एकटक देखती रही। दुकान के दरवाज़े पर खड़ा गावरिक उनकी ओर देख रहा था। उसने अपने होंट अरुचि के भाव से टेढ़े कर रखे थे।

"कहते हैं कि उसने बटुआ चुराया था... किसी व्यापारी का..."

इल्या अपने दोस्त को हल्का-सा झटका देकर उससे दूर हट गया।

"और उसने एक थानेदार के सहायक को थप्पड़ भी मारा था।"

"हां, क्यों नहीं," इल्या ने बड़ी कठोरता से थोड़ा-सा हंसकर कहा। "जब जेल जाना ही ठहरा तो दोनों टांगों से क्यों न जाना।"

जैसे ही माशा को यक़ीन हो गया कि बातचीत उसके बारे में नहीं हो रही है, वह मुस्करा दी।

"वे लोग मुझे जेल में डाल देते तो कितना अच्छा होता!" उसने धीमी आवाज़ में कहा।

पावेल ने एक नज़र पहले उसको देखा, फिर इल्या को।

"इसकी याद नहीं है तुम्हें?" इल्या ने पूछा। "माशा, पेर्फ़ीश्का की बेटी। भूल गये?"

"अच्छा," पावेल ने लापरवाही से कहा और मुंह फेर लिया, हालांकि यह पता चलने पर कि वह कौन था माशा मुस्करा दी थी।

"इल्या!" पावेल दुःखी होकर बोला, "अगर उसने ऐसा मेरी ख़ातिर किया हो तो?"

लुन्योव मुंह धोये बिना और अपने बाल ठीक किये बिना ही पलंग पर माशा की पायंती बैठ गया और बारी-बारी से उन दोनों की ओर देखने लगा; इस नयी मुसीबत से वह बेहद परेशान हो उठा था।

"मुझे यक़ीन था कि इस क़िस्से का अंजाम बुरा होगा," वह धीरे-धीरे बोला।

"वह मेरी बात सुनती ही नहीं।" पावेल का स्वर घोर निराशा में डूबा हुआ था।

"क्या कहा?" इल्या ने तिरस्कार से कहा। "तो यह सब कुछ इसलिए हुआ कि उसने तुम्हारी बात नहीं सुनी, क्यों? तुम उससे क्या कह सकते थे?"

"मैं उससे प्यार करता था..."

"तुम्हारा कमबख़्त प्यार किस काम का है?"

उसका दिमाग़ खौलने लगा। इन दोनों के, पावेल और माशा के क़िस्सों से उसे ग़ुस्सा आ रहा था, और चूंकि ग़ुस्सा उतारने के लिए कोई और था नहीं इसलिए उसने सारा ग़ुस्सा दोस्त पर उतारा...

"क्या हर आदमी यह नहीं चाहता कि वह आराम की ज़िंदगी बसर करे और ख़ुश रहे? वह किसी से अलग तो है नहीं; उससे बस यही कह सकते हो: 'मैं तुमसे प्यार करता हूं,' जिसका मतलब है: मेरे साथ रहो और किसी भी चीज़ के बिना काम चलाओ! यह भी अच्छी बात है तुम्हारी!"

"मुझे क्या करना चाहिये?" पावेल ने दबी ज़बान से पूछा।

इस सवाल से इल्या का ताव कुछ ठंडा पड़ गया। अनायास ही वह कुछ सोचने लगा।

गावरिक ने दरवाज़े में से सिर निकालकर झांका।

"दुकान खोल दूं?" वह बोला।

"भाड़ में जाये दुकान!" इल्या अधीर होकर चिल्लाया। "जैसे अब मैं दुकान चला ही तो सकता हूं!"

"क्या मैं रुकावट बना हुआ हूं?" पावेल ने पूछा।

वह अपनी कुहनियां घुटनों पर टिकाये बैठा फ़र्श को घूर रहा था। तनाव की वजह से उसकी कनपटी की एक नस फड़क रही थी।

"तुम?" उसने एक नज़र उसे देखकर कहा। "नहीं, तुम मेरे रास्ते में नहीं हो, और माशा भी मेरे रास्ते में नहीं है। लेकिन कोई चीज़ है जो हम सबके रास्ते में है–तुम्हारे, मेरे और माशा के... हो सकता है कि मेरी बात नासमझी की हो, लेकिन एक बात पक्की है: हम लोगों में से किसी के लिए वैसी ज़िंदगी बसर करने की रत्ती-भर भी उम्मीद नहीं है जैसी कि इंसान को बसर करनी चाहिये! मैं गंदगी और मुसीबतें–अपराध और हर तरह का कचरा–देखते-देखते तंग आ गया हूं, फिर भी..."

बात कहते-कहते वह रुक गया और उसका चेहरा पीला पड़ गया।

"तुम हमेशा अपनी ही बात करते रहते हो," पावेल ने कहा।

"और तुम? तुम किसकी बातें करते रहते हो?" इल्या ने व्यंग से पूछा। "हर आदमी को अपने ही घाव की पीड़ा होती है और वह

अपनी ही आवाज़ में कराहता है। मैं अपनी नहीं बल्कि सब लोगों की बात करता हूं, क्योंकि मुझे सब लोगों की चिंता लगी रहती है।"

"मैं चलता हूं," पावेल ने भारी मन से उठते हुए कहा।

"हाय रे!" इल्या बोला। "समझने की कोशिश करो कि मैं क्या कह रहा हूं, बुरा मानने की यहां कोई बात नहीं है।"

"मुझे ऐसा लग रहा है जैसे किसी ने मेरे सिर पर पत्थर दे मारा हो। वेरा पर तरस आ रहा है! क्या करूं?"

"कुछ भी नहीं करना है!" इल्या ने निर्णायक स्वर में कहा। "तुम तो अब उससे हाथ धो लो। उसे सज़ा ज़रूर दी जायेगी..."

पावेल फिर बैठ गया।

"अगर मैं कहूं कि उसने पैसा मेरे लिए चुराया था, तो क्या होगा?" उसने पूछा।

"तुम हो कौन – कहीं के राजकुमार हो? जाओ, कह दो जाकर। बस होगा यह कि तुम्हें भी जेल में डाल दिया जायेगा... अच्छा, हम लोग हाथ-मुंह धो लें। माशा, सुनो, पावेल और मैं दुकान में जाते हैं, तुम ज़रा उठकर कमरा ठीक-ठाक कर दो... और हमारे लिए थोड़ी-सी चाय बना दो।"

माशा ने कुछ चौंककर तकिये पर से अपना सिर उठाया।

"क्या मुझे घर जाना पड़ेगा?" उसने इल्या से पूछा।

"घर? घर तो वह होता है जहां आदमी को कम से कम सताते नहीं..."

इल्या और पावेल दुकान में आ गये।

"वह तुम्हारे यहां क्यों है? बिल्कुल अधमरी लगती है," पावेल ने उदास स्वर में कहा।

इल्या ने उसे संक्षेप में सारा क़िस्सा बता दिया। उसे यह देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ कि माशा का क़िस्सा सुनकर पावेल में जैसे नयी जान आ गयी।

"बूढ़ा शैतान कहीं का!" उसने माशा के पति के बारे में कहा, और यह कहकर मुस्करा भी दिया।

इल्या उसके पास खड़ा अपनी दुकान को बड़े ग़ौर से देख रहा था।

"अभी कुछ ही दिन पहले तुमने कहा था कि मुझे इसमें कोई

मज़ा नहीं आयेगा," उसने हाथ हिलाकर दुकान की तरफ़ इशारा करते हुए विकृत मुस्कराहट के साथ कहा। "तो तुम्हारा कहना ठीक ही था!" और यह कहकर उसने कटुता से अपना सिर हिलाया। "दिन-भर यहां खड़े-खड़े चीज़ें बेचकर मेरा क्या भला होता है? इसकी वजह से मेरी आज़ादी छिन गयी है। मैं यह जगह छोड़कर कहीं जा नहीं सकता। एक ज़माना वह था कि जहां जी चाहता था चला जाता था, सारे शहर में इधर से उधर तक... अगर रास्ते में कोई जगह अच्छी लगती तो वहीं बैठ जाता था और उसका आनंद लेता था। अब रोज़ यहां रहता हूं और कुछ नहीं..."

"दुकान में तुम्हारी मदद करने के लिए वेरा बहुत अच्छी होती," पावेल ने कहा।

इल्या ने जल्दी से एक नज़र उसे देखा और कुछ कहा नहीं।

"चाय पीने आओ!" माशा ने पुकारकर कहा।

तीनों कुछ बोले बिना चाय पीते रहे। बाहर सूरज चमक रहा था, खिड़की के पास से सड़क पर घूमनेवाले लड़कों के नंगे पांव फटफट करते हुए गुज़र रहे थे, सब्ज़ीवाले इधर-उधर मंडला रहे थे।

हर चीज से वसंत का, सर्दी से मुक्त सुहावने दिनों का संकेत मिलता था, लेकिन उस छोटे-से कमरे में जिसमें वे बैठे थे सीलन की बू बसी हुई थी, वे लोग आपस में कभी एकाध शब्द बोलते भी थे तो बहुत ही धीमी बुझी हुई आवाज़ में, और समोवार एक ही सुर में सनसना रहा था, और सूरज की किरनों को प्रतिबिंबित कर रहा था।

"ऐसा लग रहा है जैसे हम लोग अभी किसी के जनाज़े से घर लौटे हों," इल्या बोला।

"वेरा के जनाज़े से," पावेल ने कहा। "मैं यहां बैठा सोच रहा हूं कि यह कहीं मेरा दोष तो नहीं है कि वह जेल में है?"

"बहुत मुमकिन है ऐसा ही हो," इल्या ने बेरहमी से कहा।

पावेल ने उसे निंदा के भाव से देखा।

"तुम्हारा दिल भी बिल्कुल पत्थर का है," उसने कहा।

"क्या मेरे दिल को नरम बनाने के लिए कभी कुछ किया गया है?" इल्या चिल्लाकर बोला। "क्या कभी किसी ने मेरे सिर पर

प्यार से हाथ फेरा है? अलबत्ता, एक आदमी ऐसा ज़रूर था जो शायद सचमुच मुझे प्यार करता हो, और वह थी एक छिनाल!"

उबलते हुए गुस्से की लहर की वजह से उसके गाल तमतमा उठे और उसकी आंखों में ख़ून उतर आया; वह उछलकर उठ खड़ा हुआ और उसका जी चाहा कि वह गालियां दे, चिल्लाये और दीवार पर और मेज़ पर ज़ोर-ज़ोर से मुक्के मारे।

माशा सहम गयी और छोटे बच्चे की तरह ज़ोर-ज़ोर से करुण स्वर में रोने लगी।

"मैं चलती हूं – मुझे जाने दो," वह आंखों में आंसू भरकर कांपती हुई आवाज़ में बोल रही थी और अपना सिर इस तरह हिला रही थी जैसे उसे कहीं छिपा लेना चाहती हो।

इल्या चुप हो गया। उसने देखा कि पावेल भी उसे द्वेष-भरी नज़र से देख रहा था।

"तुम रो किस बात पर रही हो?" इल्या ने चिढ़कर कहा। "मैं तुम्हारे ऊपर तो चिल्ला नहीं रहा था... और तुम्हारे पास जाने को कोई ठिकाना तो है नहीं... जाऊंगा तो मैं... पावेल यहां तुम्हारे पास बैठेगा। गावरिक! अगर तात्याना व्लास्येव्ना आयें... यह कौन है?"

कोई आंगन की ओर खुलनेवाला दरवाज़ा खटखटा रहा था। गावरिक ने अपने मालिक की ओर इस तरह देखा जैसे पूछ रहा हो कि दरवाज़ा खोले कि नहीं।

"दरवाज़ा खोल दो!" इल्या ने कहा।

गावरिक की बहन दरवाज़े पर खड़ी थी। कुछ देर वह सीधी तनी हुई अपना सिर पीछे की ओर झुकाये चुपचाप खड़ी रही और आंखें सिकोड़कर उस जमावड़े को देखती रही। थोड़ी ही देर में उसके भावशून्य असुंदर चेहरे पर घृणा का भाव आ गया और इल्या के सलाम का जवाब दिये बिना ही वह अपने भाई से बोली:

"गावरिक, मैं एक मिनट तुमसे बात करना चाहती हूं। यहां बाहर आओ..."

इल्या को बेहद गुस्सा आया; उस अपमान की वजह से अचानक उसके भेजे की ओर इतनी तेज़ी से ख़ून दौड़ने लगा कि उसकी आंखों में चुभन होने लगी।

"जब आपको सलाम किया जाता है तो आपको भी जवाब में सलाम करना चाहिये!" उसने अपने गुस्से पर क़ाबू रखते हुए सपाट स्वर में कहा।

गावरिक की बहन ने अपना सिर कुछ और ऊंचा उठा लिया और अपनी भवें सिकोड़कर एक-दूसरे के और क़रीब कर लीं। होंट कसकर बंद किये हुए उसने इल्या पर सिर से पांव तक नज़र डाली और एक शब्द भी नहीं कहा। गावरिक ने भी अपने मालिक को गुस्से से देखा।

"आप कोई शराबियों और चोरों के बीच नहीं आ गयी हैं," इल्या कहता रहा; तनाव से उसका सारा शरीर कांप रहा था। "आपके साथ इज़्ज़त का बर्ताव किया गया है, और एक पढ़ी-लिखी लड़की होने के नाते आपको उसके जवाब में वैसा ही सलूक करना चाहिये।"

"जाने दो, सोन्या," गावरिक अचानक सुलह-समझौता कराने के अंदाज़ से बोला और अपनी बहन के पास जाकर उसने उसका हाथ पकड़ लिया।

इसके बाद थोड़ी देर तक तनाव-भरी ख़ामोशी रही। इल्या और वह लड़की चुनौती-सी देते हुए एक-दूसरे को घूरते रहे; ऐसा लग रहा था कि उन्हें किसी चीज़ का इंतज़ार है। माशा एक कोने में दुबक गयी। पावेल बेवक़ूफ़ों की तरह आंखें झपकाता रहा।

"बोलो, सोन्या," गावरिक ने अधीर होकर कहा, "क्या तुम समझती हो कि ये लोग तुम्हारा दिल दुखाना चाहते थे? अरे, नहीं!" गावरिक के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गयी और उसने इतना और जोड़ दिया, "ये लोग बस अजीब क़िस्म के आदमी हैं!"

उसकी बहन ने उसके हाथ को हल्का-सा झटका दिया।

"आप क्या चाहते हैं मुझसे?" सोन्या ने बड़े रूखेपन से इल्या से पूछा।

"कुछ नहीं... बस..."

अचानक उसके दिल में एक नेक विचार आया। वह एक क़दम उसकी ओर बढ़ा और जितनी विनम्रता से हो सकता था बोला:

"बस इतनी मेहरबानी कीजिये... बात यह है... हम तीनों को देखिये... हम ठहरे अनपढ़, जाहिल लोग... और आप... आप हैं पढ़ी-लिखी..."

उसे अपने विचार को व्यक्त करने की बेहद जल्दी थी और वह कर नहीं पा रहा था। वह लड़की जिस तरह सधी हुई कठोर नज़रों से उसे घूर रही थी उससे उसका ध्यान भटक रहा था ... उसकी आंखें मानो इल्या को अपनी ओर से दूर हटा रही थीं। इल्या ने अपनी आंखें झुका लीं।

"मैं सारी बात इस तरह एकदम तो नहीं कह सकता," वह झुंझलाकर कुछ सिटपिटाते हुए बुदबुदाया। "अगर आपके पास एक मिनट का वक़्त है ... तो बैठ जाइये ..."

वह सोन्या को रास्ता देने के लिए पीछे हट गया।

"तुम वहीं ठहरो, गावरिक," सोन्या ने कहा, और अपने भाई को दरवाज़े पर ही खड़ा छोड़कर कमरे में आ गयी। इल्या ने उसकी तरफ़ एक स्टूल बढ़ा दिया। वह उस पर बैठ गयी। पावेल दुकान में चला गया। माशा चूल्हे के पास कोने में दुबक गयी, इल्या गावरिक की बहन के सामने दो क़दम की दूरी पर खड़ा रहा, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कहां से बात शुरू करे।

"तो?" वह बोली।

"तो ... बात यह है ..." इल्या ने लंबी सांस लेकर कहना शुरू किया। "इस लड़की को देखा? .. बल्कि, कहना चाहिये, शादीशुदा औरत को ... एक बूढ़े को ब्याही है। वह ... वह बिल्कुल दरिंदा है ... और यह भाग आयी है, बुरी तरह पिटी हुई और नोची-खसोटी हुई ... भागकर मेरे पास चली आयी है ... हो सकता है कि आपको किसी बुरी बात का शक हो? ऐसी कोई बात नहीं है।"

वह उखड़े-उखड़े ढंग से बातें कर रहा था, उसके शब्द आपस में उलझते जा रहे थे; वह माशा का सारा क़िस्सा भी सुना देने को उत्सुक था और इसके साथ ही उस पूरे मामले के बारे में अपनी राय भी दे देना चाहता था। उस लड़की को खुद अपनी राय बता देने के लिए वह खास तौर पर उत्सुक था। इल्या की ओर देखते हुए लड़की की नज़रों में नरमी आती जा रही थी।

"मैं समझ गयी," लड़की बीच में बोल पड़ी। "और आपकी समझ में नहीं आ रहा है कि क्या किया जाये? सबसे पहले तो आपको इसे किसी डाक्टर के पास ले जाना चाहिये। वह अच्छी तरह इसकी

जांच कर ले। मेरी जान-पहचान के एक डाक्टर हैं ... क्या आप चाहेंगे कि इसको मैं उनके पास ले जाऊं? गावरिक, ज़रा देखना तो क्या बजा है। ग्यारह? बहुत अच्छी बात है, वह इस वक़्त मरीज़ों को देखते हैं ... गावरिक, एक गाड़ी तो ले आओ ... अच्छा, अब अपनी दोस्त से मेरी जान-पहचान तो करा दीजिये ..."

लेकिन इल्या अपनी जगह से हिला नहीं। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि यह कठोर लड़की इतनी नरमी से भी बोल सकती थी। वह उसके चेहरे का भाव देखकर भी आश्चर्यचकित रह गया था: वही लड़की जो हमेशा इतनी घमंड में चूर रहती थी, इस समय वह चिंता के अलावा और कोई भाव नहीं व्यक्त कर रही थी और हालांकि उसके नथुने इस वक़्त हमेशा से ज़्यादा फूले हुए थे लेकिन उसके चेहरे पर ऐसी नेकी और सादगी थी जो इल्या ने इससे पहले कभी नहीं देखी थी। उसे देखकर वह एक शब्द भी बोले बिना कुछ अटपटा महसूस करते हुए शरमाकर मुस्करा दिया।

उसकी ओर से मुड़कर वह माशा के पास चली गयी।

"रोओ नहीं ..." वह नरमी से बोली, "और डरो नहीं। डाक्टर साहब बहुत नेक आदमी हैं; वह और कुछ नहीं करेंगे, बस तुम्हारी जांच करके तुम्हें एक काग़ज दे देंगे। और मैं तुम्हें यहां वापस ले आऊंगी। अच्छा, रोओ नहीं, मेहरबानी करके ..."

उसने माशा को अपनी ओर खींचने के लिए अपने हाथ उसके कंधों पर रख दिये।

"आह, बहुत तकलीफ़ होती है!" माशा ने धीरे से कराहकर कहा।

"किस चीज़ से होती है?"

इल्या उनकी बातें सुनकर मुस्कराता रहा।

"अरे, यह ... यह तो सरासर बेहूदगी है!" सोन्या माशा से दूर हटते हुए चिल्लाकर बोली। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था और उसकी आंखें गुस्से और नफ़रत से चमक उठी थीं।

"कितनी बुरी तरह चोट लगी है इसे!"

"अब देख लिया आपने कि हम लोग किस तरह की ज़िंदगी बसर करते हैं!" इल्या ने चिल्लाकर कहा; उसका गुस्सा फिर भड़क

उठा था। "मैं आपको एक और मिसाल दे सकता हूं। उसे देखिये! आइये, मैं आपको अपने दोस्त पावेल सावेल्येविच ग्राचोव से मिला दूं।"

पावेल ने उसकी ओर देखे बिना ही अपना हाथ बढ़ा दिया।

"मेरा नाम है सोफ़िया नीकोनोव्ना मेद्वेदेवा," वह पावेल के उदास चेहरे को ध्यान से देखते हुए बोलीं; फिर इल्या की ओर मुड़कर उसने कहा, "और आपका नाम है इल्या याकोव्लेविच?"

"जी हां," इल्या ने बड़ी उत्सुकता से कहा और अपने हाथ में उसका हाथ कसकर पकड़ लिया; उसका हाथ थामे-थामे ही वह कहता रहा, "सुनिये, अगर आप सचमुच ऐसी ही हैं... मेरा मतलब है... अगर आप इसकी मदद करने को तैयार हैं तो शायद आप उसकी भी कुछ मदद कर सकें। वह भी फंदे में पड़ा है।"

उसके खूबसूरत उत्तेजित चेहरे को गंभीर भाव से देखते हुए सोन्या चुपचाप अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश कर रही थी। लेकिन इल्या उसे वेरा और पावेल के बारे में बताने के जोश में ऐसा खो गया था कि वह उसका हाथ ज़ोर से पकड़े रहा और बात करते हुए उसे हिलाता भी रहा।

"यह कविताएं लिखता था, और कैसी बढ़िया कविताएं लिखता था! लेकिन अब यह बिल्कुल बुझ गया है। और वह भी... शायद आप सोचेंगी कि वह चूंकि... मेरा मतलब है... उस तरह की औरत है, तो उसमें उसके अलावा और कुछ था ही नहीं? अरे, नहीं; आपको ऐसा नहीं सोचना चाहिये! न बुरी हालत में, न अच्छी हालत में – आदमी का असली रूप कभी पूरी तरह खुलकर सामने नहीं आता!"

"क्या मतलब?" लड़की ने कहा।

"मेरा मतलब है कि अगर आदमी बुरा भी हो तो उसमें कुछ न कुछ अच्छाई ज़रूर होगी; और अगर वह अच्छा है तो उसमें कोई न कोई बुराई भी होगी। हमारी सबकी आत्माएं चितकबरी हैं–हम सबकी!"

"आप जो कह रहे हैं वह सच है!" लड़की ने अनुमोदन करते हुए अपना सिर हिलाया। "लेकिन अगर आप बुरा न मानें तो मेरा हाथ तो छोड़ दीजिये। मेरा हाथ दुखने लगा है।"

इल्या माफ़ी मांगने लगा, लेकिन उसे न सुनते हुए वह पावेल को हिदायतें देने के लिए मुड़ चुकी थी:

"शर्मनाक बात है। आपको कोई क़दम उठाना चाहिये – उसकी तरफ़ से पैरवी करने के लिए कोई वकील ढूंढना होगा। अगर आप चाहें तो मैं ढूंढ दूं। ढूंढ दूं? और उसका बाल भी बांका न होगा, वे लोग उसे साफ़ छोड़ देंगे; यक़ीनन छोड़ देंगे!"

सोन्या का चेहरा तमतमाया हुआ था, उसकी लटें कनपटियों पर बिखरी हुई थीं, और उसकी आंखें चमक रही थीं।

माशा, जो उसकी बग़ल में ही खड़ी हुई थी, बच्चों जैसे विश्वास-भरे कौतूहल से उसे देख रही थी। इल्या विजय के भाव से कभी पावेल की ओर देख रहा था और कभी माशा की ओर; उसे इस बात पर कुछ गर्व हो रहा था कि यह लड़की उसके कमरे में थी।

"अगर आप मदद करने के लिए सचमुच कुछ कर सकती हैं, तो ज़रूर कीजियेगा!" पावेल ने कांपते हुए स्वर में कहा।

"शाम को सात बजे मेरे घर आ जायेंगे? गावरिक वहां का रास्ता बता देगा..."

"आ जाऊंगा... समझ में नहीं आता कि किस तरह आपका शुक्रिया अदा करूं।"

"बेकार की बातें न कीजिये। लोगों को एक-दूसरे की मदद करनी ही चाहिये!"

"वे मदद करेंगे!" इल्या ने व्यंग से कहा।

लड़की ने जल्दी से उसकी ओर मुड़कर देखा, लेकिन गावरिक ने, जो स्पष्टतः यह महसूस कर रहा था कि इन तमाम उद्विग्न लोगों के बीच वही अकेला समझदार आदमी है, अपनी बहन का हाथ खींचते हुए कहा:

"अब तुम्हारे जाने का वक़्त हो गया है न?"

"हां! कपड़े पहन लो, माशा।"

"मेरे पास कपड़े हैं ही नहीं।" माशा ने शरमाते हुए कहा।

"अरे! अच्छा, कोई बात नहीं है। ऐसे ही चलो। और आप आना न भूलियेगा, ग्राचोव? अच्छा, मैं चलती हूं, इल्या याकोव्ले-विच।"

दोनों दोस्तों ने कुछ कहे बिना बड़े आदर के भाव से उससे हाथ मिलाया, और वह माशा की बांह पकड़े हुए बाहर निकल गयी।

दरवाज़े पर पहुंचकर वह पीछे मुड़ी और अपना सिर झटके के साथ ऊंचा उठाकर इल्या से बोली:

"मैं तो भूल ही गयी थी... यहां आने पर मैंने आपको सलाम नहीं किया था। वह मेरी बहुत बड़ी बदतमीज़ी थी और उसके लिए मैं माफ़ी मांगती हूं।"

सोन्या के चेहरे पर लाली दौड़ गयी और उसने अपनी आंखें झुका लीं। उसके मुंह से यह बात सुनकर इल्या का मन नाच उठा।

"मुझे बहुत अफ़सोस है। पहले मैं समझी थी कि आप... मेरा मतलब है... पी रहे थे।"

वह रुक गयी और आगे अपनी बात कहने से पहले उसने घूंट निगला।

"और जब आपने मुझे झिड़का तो मैंने सोचा कि आप... कि आप मेरे भाई के मालिक की हैसियत से बात कर रहे हैं, लेकिन वह मेरी भूल थी। मैं अब बेहद खुश हूं। आप अपनी क़द्र पहचानते थे।"

अचानक उसका चेहरा बहुत लुभावनी मुस्कराहट से खिल उठा और वह बहुत खुश होकर बोली, मानो इन शब्दों को कहकर उसे अपार हर्ष हो रहा हो:

"मुझे बेहद ख़ुशी है कि सारी बात इतनी अच्छी तरह निबट गयी – बहुत, बहुत ख़ुशी है!"

और इतना कहकर वह मुस्कराती हुई बाहर चली गयी; उसकी यह मुद्रा देखकर इल्या को सूर्योदय की लालिमा की गोट लगे हुए सुरमई बादल की याद हो आयी। दोनों लड़के अपनी नज़रों से उसका पीछा कर रहे थे। उन दोनों के चेहरे गंभीर थे, भले ही वे कुछ हास्यास्पद भी लग रहे हों। थोड़ी देर बाद इल्या ने कमरे में चारों ओर नज़र डाली।

"जगह साफ़ है न?" उसने पावेल की कुहनी मारते हुए कहा। पावेल धीरे से हंस दिया।

"कमाल है वह, है न?" इल्या ने आह भरकर कहा। "क्यों, क्या ख़्याल है तुम्हारा उसके बारे में?"

"एक झोंके में सबका सफ़ाया कर दिया!"

"तुमने भी देखा न?" इल्या ने अपने घुंघराले बालों में उंगलियां

फेरते हुए गर्वोल्लास से कहा। "तुमने सुना, कैसे माफ़ी मांगी थी उसने? यह होता है सचमुच पढ़ा-लिखा आदमी होने का मतलब: वह किसी भी आदमी की इज़्ज़त करता है, लेकिन सलाम करते समय पहला अपना सिर कभी नहीं झुकाता है। समझे?"

"बहुत अच्छी औरत है," पावेल ने मुस्कराकर कहा।

"तेज़ और चमकती हुई, सितारे की तरह!"

"वाह-वाह। उसे यह फ़ैसला करने में ज़रा भी वक़्त नहीं लगा कि किसे क्या करना है..."

इल्या पुलकित होकर हंस दिया। यह जानकर वह बहुत खुश हो रहा था कि उस अभिमानी औरत में दरअसल सादगी कूट-कूटकर भरी हुई थी, और इस बात पर वह मन ही मन खुश हो रहा था कि उसके सामने उसने अपनी आन-बान बनाये रखी थी।

गावरिक उनके आस-पास मंडला रहा था। उसे उकताहट हो रही थी।

"गावरिक," इल्या ने उसका कंधा पकड़ते हुए कहा। "तुम्हारी बहन बहुत अच्छी है!"

"हां, वह नेकदिल है," लड़के ने मानो उस पर एहसान करते हुए कहा। "आज दुकान खुलेगी कि नहीं? या आज छुट्टी मनायी जाये? तब मैं बाहर खेतों में घूमने निकल जाता..."

"बिल्कुल ठीक – आज कोई काम नहीं होगा! पावेल, हम भी घूमने-फिरने चलें, भाई!"

"मैं तो पुलिस के दफ़्तर जा रहा हूं," पावेल ने कहा; उसका दिल फिर डूबने लगा था। "शायद वे लोग मुझे उससे मिलने की इजाज़त दे ही दें।"

"ख़ैर, मैं तो घूमने जा रहा हूं!" इल्या ने कहा।

मन में उमंग भरे वह टहलता हुआ सड़क पर निकल गया; उसके दिमाग़ में लगातार उस लड़की का ध्यान आ रहा था, जिसकी तुलना वह अपनी जान-पहचान के सभी लोगों से कर रहा था। वह उसकी सूरत भूल नहीं सकता था, जिसकी हर मुद्रा से किसी श्रेष्ठ लक्ष्य की ओर अग्रसर होने की अडिग आकांक्षा व्यक्त होती थी, और उसे उसके वे शब्द याद आये जो उसने माफ़ी मांगते हुए कहे थे।

"लेकिन शुरू में उसने मुझे कैसा काट दिया था!" इल्या ने मुस्कराकर सोचा, और वह इसकी वजह मालूम करने के लिए अपने दिमाग़ पर ज़ोर देने लगा कि उसके साथ संजीदगी से एक भी बात होने से पहले वह उसके साथ इतने अभिमान और द्वेष के साथ क्यों पेश आयी थी।

उसके चारों ओर ज़िंदगी गुनगुना रही थी। कुछ हंसते हुए छात्र सामने से सड़क पर चले आ रहे थे, लदी हुई गाड़ियां खड़खड़ाती हुई पास से होकर गुज़र रही थीं, घोड़ागाड़ियों के टायरवाले पहिये तेज़ी से घूमते हुए उन्हें सरपट भगाये ले जा रहे थे, एक भिखारी अपनी लकड़ी की टांग पर खट-खट करता सड़क की पटरी पर लंगड़ाता हुआ जा रहा था, दो क़ैदी एक हथियारबंद सिपाही की निगरानी में अपने कंधों पर एक बल्ली रखे उस पर बड़ा-सा भरा हुआ टब लटकाये ले जा रहे थे, एक छोटा-सा कुत्ता जीभ बाहर लटकाये भागा चला जा रहा था... खड़खड़ाहट, हुल्लड़, शोर, चीख़-पुकार और क़दमों की आहट – सबने मिलकर जानदार और स्फूर्ति पैदा करनेवाली गूंजती-गरजती आवाज़ का रूप धारण कर लिया था। हवा में सिंकी हुई धूल के कण तैर रहे थे और नथुनों को गुदगुदा रहे थे। गहरे स्वच्छ आकाश पर सूरज चमक रहा था और धरती पर हर चीज़ को तपती हुई चमक प्रदान कर रहा था। इल्या अपने चारों ओर नज़र दौड़ाकर हर चीज़ को ऐसे उल्लास से देख रहा था जो उसने बहुत समय से अनुभव नहीं किया था। हर चीज़ उसे नयी-नयी और बेहद दिलचस्प लग रही थी। सड़क पर गुलाबी गालोंवाली एक सुंदर चुलबुली लड़की तेज़ी से उसकी ओर आती दिखायी दी और उसने इल्या को इस तरह खुश होकर चमकती हुई नज़रों से देखा मानो कह रही हो:

"कितने अच्छे आदमी हो तुम!"

इल्या उसे देखकर मुस्करा दिया।

किसी दुकान में काम करनेवाला लड़का तांबे की केतली हाथ में लिये, जिसका ढक्कन मस्त होकर टनटन की आवाज़ पैदा कर रहा था, भागा-भागा सड़क पर आया और उसका ठंडा पानी बाहर उंडेलते हुए राहगीरों की टांगों पर छींटें उड़ाने लगा। सड़क पर गर्मी और घुटन और शोर था; शहर के क़ब्रिस्तान में उगे हुए कुछ पुराने लाइम

के पेड़ों को देखकर इल्या का जी ललचाया कि उनकी ठंडी और शांत छाया में टहले। इस प्राचीन क़ब्रिस्तान की सफ़ेद पत्थर की दीवार के पीछे हरियाली की प्रबल लहरें आसमान की ओर उठ रही थीं जिनके शिखर झाग की तरह पत्तियों की नाज़ुक झालर से सजे हुए थे। हवा में बहुत ऊपर अलग-अलग हर पत्ती की आकृतियां आसमान के गहरे नीले रंग की पृष्ठभूमि पर उभरी हुई थीं और कांपती हुई वे मानो व्योम में विलीन होती जा रही थीं।

इल्या फाटक में घुसा और लाइम के पेड़ों के बीच में से होकर गहरी-गहरी सांसों के साथ उन वृक्षों की सुगंध को पीता हुआ एक चौड़े रास्ते पर आगे बढ़ा। पेड़ों के बीच उनकी डालों की छाया में क़ब्रों के सिरहाने लगे हुए संगमरमर और ग्रेनाइट के पत्थर उभरे हुए थे – अटपटे, भारी और काई से ढके हुए। इन रहस्यमयी छायाओं के बीच जहां-तहां सुनहरी सलीबें और पत्थरों पर अंकित शब्दों के अधमिटे अक्षर झिलमिला रहे थे। क़ब्रों के घेरों के अंदर हनीसकल, अकाशिया, हाथार्न और एल्डर की झाड़ियां उगी हुई थीं जिन्होंने क़ब्रों के टीलों को अपनी हरियाली में छिपा लिया था। बीच-बीच में लकड़ी की कोई सलीब हरी लहरों के ऊपर उभरी हुई दिखायी दे जाती थी, जिस पर चारों ओर कोमल टहनियां लिपटी होती थीं। पत्तियों के घने जाल के बीच से अल्पवयस्क बर्च-वृक्षों के सफ़ेद मख़मली तने चमकते थे; हमेशा शरमाते और सकुचाते हुए ये वृक्ष ऐसे लगते थे मानो जान-बूझकर पीछे छाया में खिसक गये हों, ताकि वहां अच्छी तरह देखे जा सकें। क़ब्रों के हरे-हरे टीलों पर रंग-बिरंगे फूल खिले थे, सन्नाटे में भिड़ें भनभना रही थीं, हवा में दो सफ़ेद तितलियां एक-दूसरे का पीछा कर रही थीं, धूप में भुनगे मूक छलांगें लगा रहे थे... हर तरफ़ घास और झाड़ियां हुमककर धरती से प्रकाश की ओर बढ़ रही थीं, और क़ब्रों के उदास टीलों को ढके ले रही थीं। क़ब्रिस्तान की सारी हरियाली में बढ़ने और फैलने की उतावली समायी हुई थी, रोशनी और हवा को पी जाने की, इस संपन्न धरती के रसों को रंग और सुगंध और सौंदर्य में बदल देने की उतावली, जिससे आंखों को और मन को सुख मिलता है। हर जगह जीवन विजयी दिखायी दे रहा था! जीवन सदा विजयी रहेगा!

22-01118

इल्या को इस निस्तब्धता में घूमने में, अपने फेफड़ों में फूलों की और लाइम के वृक्षों की सुगंध भर लेने में बहुत मज़ा आ रहा था। वह ख़ुद भी शांत और चिंतामुक्त अनुभव कर रहा था; उसको राहत मिल गयी थी; वह एकांत का आनंद ले रहा था, जो उसे बहुत समय से नहीं मिला था।

वह चौड़े रास्ते से बायीं ओर एक पतली-सी पगडंडी पर मुड़ गया और उस पर चलते हुए वह सलीबों और क़ब्रों के पत्थरों पर अंकित शब्दों को पढ़ने लगा। उसके चारों ओर ढले हुए लोहे के बने क़ब्रों के जंगले थे, बेलबूटों से सजे हुए, महंगे।

'इस सलीब के नीचे ईश्वर के सेवक वोनिफ़ांती के पार्थिव अवशेष सुरक्षित हैं', उसने मुस्कराकर पढ़ा। यह नाम उसे दिलचस्प लगा। वोनिफ़ांती के अवशेषों पर स्लेटी रंग के ग्रेनाइट पत्थर का एक विशाल स्मारक बना था। उसकी बग़ल में एक दूसरे घेरे के अंदर अट्ठाईस वर्षीय प्योत्र बाबुश्किन की क़ब्र थी।

"बहुत कम उम्र में चल बसा," इल्या ने सोचा।

सफ़ेद संगमरमर के एक साधारण स्तंभ पर लिखा था:

धरती ने जो खोया सुंदर फूल हमारा,
दूर गगन में चमका बनकर एक सितारा!

इल्या इन पंक्तियों के बारे में सोचने लगा और वे उसे बहुत हृदयस्पर्शी लगीं। अचानक उसे ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके दिल में छुरा भोंक दिया हो। वह लड़खड़ा गया और उसने अपनी आंखें बंद कर लीं। लेकिन बंद आंखों से भी उसे वे अंकित शब्द दिखायी दे रहे थे जिनसे उसके दिल पर चोट-सी पड़ी थी। भूरे पत्थर पर खुदे हुए सुनहरे अक्षर उसके दिमाग़ पर अंकित हो गये थे:

'यहां चिरनिद्रा में सो रहा है वासीली गव्रीलोविच पोलुएक्तोव, द्वितीय गिल्ड का व्यापारी।'

अगले ही क्षण वह अपने भय से भयभीत हो उठा; उसने जल्दी से अपनी आंखें खोल दीं और नज़रें बचाकर चारों ओर देखने लगा। कहीं कोई दिखायी नहीं दे रहा था, लेकिन दूर से उसे किसी के अंतिम संस्कार के समय की प्रार्थना सुनायी दी। सन्नाटे को चीरती हुई किसी पादरी की आवाज़ आयी:

"प्रार्थना करें..."

और किसी ने मानो असंतोष-भरी भारी आवाज़ में कहा:

"दया करो!"

झूलती हुई धूपदानी की टिक-टिक की आवाज़ बहुत ही धीमी थी, इतनी धीमी कि लगभग सुनायी नहीं दे रही थी।

इल्या मैपिल के पेड़ के तने के सहारे टिककर खड़ा उस आदमी की क़ब्र को देखता रहा जिसकी उसने हत्या की थी। उसकी टोपी, जिसका पिछला हिस्सा पेड़ के तने से लगा हुआ था, उसके माथे से ऊपर सरक आयी थी। उसकी भवें तनी हुई थीं और उसका ऊपरी होंट कांप रहा था जिसकी वजह से उसके दांत दिखायी दे रहे थे। उसने अपने हाथ पतलून की जेब में डाल लिये और पांव मज़बूती से ज़मीन पर गड़ा लिये।

पोलुएक्तोव की क़ब्र ताबूत की शक्ल की थी, जिसके ढक्कन पर एक खुली किताब और कंकाल की खोपड़ी और एक-दूसरे को काटती हुई दो हड्डियों की आकृतियां खुदी हुई थीं। उस क़ब्र के पास उसी घेरे में उससे छोटा एक और ताबूत था जिस पर ये शब्द अंकित थे कि वहां बाईस-वर्षीया येवप्राक्सिया पोलुएक्तोवा के पार्थिव अवशेष सुरक्षित थे।

"उसकी पहली बीवी," इल्या ने सोचा।

यह विचार बिजली की तरह उसके मस्तिष्क के उस एकमात्र छोटे-से क्षेत्र में कौंध गया जो पिछली बातों को याद करने से मुक्त रह गया था। उसका सारा अस्तित्व पोलुएक्तोव से संबंधित यादों में डूबा हुआ था – उसके साथ उसकी पहली मुठभेड़, उसका गला घोंटने की घटना, जब उसके हाथ पर बूढ़े की राल टपक रही थी। लेकिन इन सब स्मृतियों को अपने दिमाग़ में जागृत करके वह न भय अनुभव कर रहा था न खेद; उस क़ब्र को देखकर उसके मन में घृणा और पीड़ा और क्षोभ की भावनाएं जागृत हो रही थीं। उसके दिल में अपार क्रोध उमड़ पड़ा जब उसने मन ही मन उस सूदख़ोर महाजन से ये शब्द कहे जिनकी सच्चाई पर उसे पूरा विश्वास था:

"मैंने अपनी सारी ज़िंदगी तेरी वजह से तबाह कर ली, कमबख़्त! तेरी वजह से, सुनता है? कुत्ता कहीं का! अब मैं ज़िंदगी कैसे बसर करूं? मरते वक़्त तक मेरे दामन पर तेरा दाग़ रहेगा!"

वह भरपूर आवाज़ से चिल्लाना चाहता था ; सच तो यह है कि उसे अपनी इस प्रचंड आकांक्षा का दमन करने में कठिनाई हो रही थी। अपनी कल्पना में उसे पोलुएक्तोव का द्वेष-भरा सूखा हुआ चेहरा, गंजी चांद और लाल भवोंवाली स्त्रोगानी की कठोर आकृति, पेत्रूखा की आत्मतुष्ट सूरत, कीरिक की बेवक़ूफ़ों जैसी शक्ल, सफ़ेद बालोंवाले ख़्रनोव की ऊपर को उठी हुई नाक और सुअरों जैसी आंखोंवाली सूरत दिखायी दे रही थी – जिन लोगों को वह जानता था उनकी तसवीरों की एक पूरी नुमाइश। उसके कानों में एक शोर गूंज रहा था और उसे ऐसा लग रहा था कि इन लोगों ने उसे चारों ओर से घेर लिया था और वे लगातार उसकी ओर बढ़ते आ रहे थे।

वह पेड़ के तने का सहारा छोड़कर अलग हट गया। उसकी टोपी नीचे गिर पड़ी। जब वह टोपी उठाने के लिए नीचे झुका तो अपनी नज़रें उस स्मारक की ओर से न हटा सका, जो सूदख़ोर और चोरी का माल ख़रीदनेवाले के सम्मानार्थ बनाया गया। उसे मतली हो रही थी और वह हांप रहा था ; उसके भेजे की ओर ख़ून तेज़ी से दौड़ रहा था और उसकी आंखें तनाव की वजह से दर्द करने लगी थीं। बहुत कोशिश करके उसने अपनी नज़रें क़ब्र पर से हटायीं, जंगले के पास जाकर उसे दोनों हाथों से पकड़ लिया और घृणा से कांपते हुए क़ब्र पर थूक दिया... और वहां से चलते हुए उसने अपना पांव ज़ोर से ज़मीन पर पटका, मानो उसे चोट पहुंचाना चाहता हो!..

वह घर नहीं जाना चाहता था। उसका मन भारी था और वह व्यथा के बोझ से दबा जा रहा था। वह धीरे-धीरे चल रहा था, न किसी को देख रहा था, न उसे किसी चीज़ में दिलचस्पी थी और न वह कुछ सोच रहा था। यंत्रवत् सड़क के छोर पर आकर वह नुक्कड़ पर मुड़ गया, और अचानक उसे आभास हुआ कि वह पेत्रूख़ा के शराबख़ाने के पास पहुंच गया है। इस बात से उसे याकोव की याद आयी। फाटक पर पहुंचकर उसने महसूस किया कि उसे अंदर जाना चाहिये, हालांकि ऐसा करने की उसकी कोई इच्छा नहीं हो रही थी। वह पिछले दरवाज़े की सीढ़ियां चढ़ने लगा।

"भले लोगो!" पेर्फ़ीश्का की आवाज़ सुनायी दी, "अपने हाथों पर रहम खाओ और मेरी पसलियों का पीछा छोड़ दो!"

इल्या दरवाज़े पर ही ठिठक गया। धूल और तंबाकू के धुंए की झीनी चादर के पीछे उसे याकोव काउंटर पर खड़ा दिखायी दिया। उसके बाल चिपके हुए थे और उसने आधी आस्तीनों की एक कसी हुई जैकेट पहन रखी थी। वह जल्दी-जल्दी चायदानियां भर रहा था, शकर के डले गिन-गिनकर दे रहा था, गिलासों में वोदका उंडेल रहा था और गल्ले की दराज़ ज़ोर की आवाज़ के साथ बार-बार खोल रहा था और बंद कर रहा था। वेटर भाग-भागकर उसके पास आ रहे थे और अपनी पर्चियां काउंटर पर फेंककर चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे :

"एक पौआ! दो बियर! दस कोपेक का स्टू!"

अपने दोस्त के लाल हाथों को बड़ी तेज़ी से हवा में चलते हुए देखकर इल्या ने द्वेषपूर्ण संतोष के साथ सोचा, "सारे हथकंडे सीख गया है!"

"अरे, तुम!" इल्या के काउंटर के पास पहुंचने पर याकोव ख़ुशी से बोला, लेकिन फ़ौरन ही अपने पीछे के दरवाज़े पर बेचैन होकर नज़र डाली। उसके माथे पर पसीने की बूंदें छलक आयी थीं, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, उसके गालों की हड्डियों पर लाल धब्बे उभर आये थे। उसे सूखी खांसी आ गयी। खांसते-खांसते वह इल्या का हाथ पकड़कर ज़ोर से हिला रहा था।

"क्या हालचाल है तुम्हारा?" इल्या ने ज़बर्दस्ती मुस्कराते हुए पूछा। "तो तुम्हें जोत दिया गया?"

"क्या किया जाये?"

याकोव के कंधे ढीले पड़ गये और ऐसा लगा कि उसका क़द ज़रा छोटा हो गया।

"तुमसे मिले बहुत दिन हो गये," उसने इल्या को अपनी उदास, नेकी-भरी आंखों से घूरते हुए कहा। "मैं तुमसे बातें करना चाहता हूं... अरे, हां, मेरा बाप बाहर गया हुआ है। ज़रा ठहरो : यहां अंदर आ जाओ, मैं अपनी सौतेली मां से कहता हूं कि कुछ देर तक मेरी जगह संभाल लें..."

उसने अपने बाप के कमरे का दरवाज़ा खोला और बड़े आदर के भाव से पुकारकर कहा :

"मां ! एक मिनट के लिए आप ज़रा यहां आयेंगी ?"

इल्या उस कमरे में चला गया जिसमें कभी वह अपने चाचा के साथ रहा करता था और उसे बड़े ध्यान से देखने लगा। उसमें उसे बस इतना परिवर्तन दिखायी दिया कि दीवार पर चिपका हुआ काग़ज़ गंदा हो गया था, कमरे में दो के बजाय अब एक ही चारपाई थी, और उसके ऊपर किताबों की एक शेल्फ़ टंगी हुई थी। पहले जहां इल्या की चारपाई बिछी रहती थी वहां अब एक बड़ा-सा, भोंडी शक्ल का संदूक़-सा रखा हुआ था।

"अच्छा, मुझे एक घंटे की फ़ुर्सत है !" याकोव ने कमरे में आकर दरवाज़ा बंद करते हुए खुश होकर कहा। "चाय पिओगे ? इ-वान ! चाय !" उसने चिल्लाकर कहा। उसे खांसी आ गयी और वह बड़ी देर तक सिर झुकाकर, दीवार पर अपना हाथ टिकाये खांसता रहा और अपने फेफड़ों में से मानो कुछ निकाल देने की कोशिश में दोहरा हो गया।

"कितनी खांसी आती है तुम्हें !" इल्या ने कहा।

"तपेदिक़ है। मेरी तोबा, लेकिन तुमसे मिलकर बहुत खुशी हुई ! तुम सचमुच लगते हो बहुत ... बहुत बड़े आदमी ! तो, ज़िंदगी कैसी कट रही है ?"

"बस, चलता है," इल्या ने कुछ रुककर कहा। "मैं तो तुम्हारा हालचाल जानना चाहता हूं।"

इल्या का अपने बारे में कुछ कहने को, या कुछ भी कहने को जी नहीं चाह रहा था। याकोव का मुरझाया हुआ चेहरा देखकर उसे तरस आ रहा था। लेकिन वह भावशून्य करुणा थी – एक तरह की बंजर भावना।

"किसी तरह अपनी ज़िंदगी का बोझ ढो रहा हूं, भाई," याकोव ने धीरे से कहा।

"तुम्हारे बाप ने सारा खून चूस लिया है तुम्हारा ..."

दीवार के उस पार पेर्फ़ीश्का अकार्डियन बजा रहा था और गा रहा था :

रूबल तो है एक छलावा,
उसकी माया आनी-जानी,
गीतों में मैं प्यार लुटाता,
आ जा, बन जा मेरी रानी !

"वह संदूक़ जैसा क्या है ?" इल्या ने पूछा।

"वह ? हार्मोनियम है। मेरे बाप ने पच्चीस रूबल का मेरे लिए खरीदा है। कहता है कि मैं बजाना सीख लूं तो मुझे बढ़िया हार्मोनियम खरीद देगा और उसे शराबख़ाने में रख देगा ताकि मैं उसे बजाकर गाहकों का मन बहलाऊं। वह कहता है कि मैं और तो किसी काम का हूं नहीं। उसने सारा हिसाब अच्छी तरह लगा लिया है : बाक़ी सब शराबख़ानों में आर्गन बाजे हैं – बस हमारे शराबख़ाने में ही नहीं है। इसके अलावा मुझे भी बजाना अच्छा लगता है ..."

"बदमाश है वह," इल्या ने कटुता से मुस्कराकर कहा।

"ऐसा क्यों कहते हो ? मैं सचमुच उसके किसी काम का नहीं हूं।"

इल्या ने उस पर एक कठोर दृष्टि डाली और गुस्से से बिफरकर बोला :

"तुम्हें उससे कहना चाहिये, 'मेरे प्यारे पापा, जब मैं मर जाऊं तो मेरी लाश शराबख़ाने में घसीटकर पहुंचा देना और जो भी भकुआ मुझे देखना चाहे उससे पांच-पांच कोपेक वसूल कर लेना।' इस तरह तुम उसके किसी काम आ सकते हो।"

याकोव खिसियायी हुई हंसी हंस दिया ; उसे फिर खांसी का दौरा पड़ गया और वह कभी अपना गला और कभी सीना पकड़कर खांसने लगा।

"तुम्हारी अपने सौतेले भाई से कैसी बनती है ?" उसकी खांसी का दौरा खत्म होने पर इल्या ने उससे पूछा।

"वह हम लोगों के साथ नहीं रहता," याकोव ने कहा ; उसका चेहरा खांसते-खांसते नीला पड़ गया था। "उसका चीफ़ उसे यहां रहने नहीं देता। यह ठहरा शराबख़ाना ... और वह शरीफ़ बनना चाहता है।"

याकोव अपनी आवाज़ धीमी करके उदास भाव से कहता रहा :

"किताब याद है ? वह किताब ? वह उसे मुझसे छीन ले गया। कहने लगा कि बहुत दुर्लभ किताब है और उसके बहुत पैसे मिल जायेंगे।

बस, यह कहकर ले गया। मैं गिड़गिड़ाकर मना करता रहा, लेकिन उसने मेरी एक न सुनी।"

इल्या हंस दिया। फिर दोनों दोस्तों ने साथ चाय पी। दीवार का काग़ज़ जगह-जगह से फट गया था और दीवार की दरारों में से शराबख़ाने की आवाज़ें और ख़ुशबुएं अंदर आ रही थीं। एक बार तो किसी के जोश में आकर चिल्लाने की आवाज़ में बाक़ी सारी आवाज़ें डूब गयीं:

"मित्री निकोलायेविच! जो कुछ मैंने ईमानदारी से कहा है उसका ग़लत मतलब न निकालो!"

"मैं आजकल एक किताब पढ़ रहा हूं, भाई," याकोव बोला। "उसका नाम है 'जूलिया, या मैज़िनी के महल का तहख़ाना'... बहुत दिलचस्प किताब है! और तुम?"

"भाड़ में जायें तुम्हारे महल और उनके तहख़ाने! मैं ख़ुद ज़मीन से बहुत ऊपर नहीं रहता हूं," इल्या ने मुंह लटकाकर कहा।

याकोव ने उसे हमदर्दी से देखा।

"कुछ गड़बड़ी है?" उसने पूछा।

इल्या सोच रहा था कि वह उसे माशा के बारे में बताये या नहीं, लेकिन उसके फ़ैसला कर पाने से पहले ही याकोव अपनी बात का सिलसिला जारी रखते हुए बोला:

"तुम्हारा तो हमेशा यही हाल रहता है – हमेशा बिफरे हुए – हमेशा कोई न कोई दुखड़ा पाले रहते हो; मैं नहीं समझता कि यह कोई अच्छी बात है। बहरहाल, जो भी हालत है उसके लिए किसी को दोष तो नहीं दिया जा सकता।"

इल्या कोई जवाब दिये बिना ही अपनी चाय पीता रहा।

"कहा गया है: 'हर आदमी को अपने किये का फल मिलता है', और यह है भी सच। मेरे बाप को ही ले लो – वह बहुत बेरहम है, इससे तो इंकार नहीं किया जा सकता। और फिर अचानक उसकी वह नयी बीवी आ गयी, फ़्योक्ला तिमोफ़ेयेव्ना, और उसने उसे अपने शिकंजे में कस लिया। कैसा नाच नचाती है वह उसे! वह शराब भी पीने लगा है। अभी उनकी शादी हुए दिन ही कितने हुए हैं। और कोई न कोई फ़्योक्ला तिमोफ़ेयेव्ना सभी इंतज़ार करती रहती है, उसे अपने गुनाहों की सज़ा देने के लिए..."

इल्या को इन बातों से उकताहट हो रही थी। उसने अधीर होकर अपना प्याला परे कर दिया और उसे ख़ुद इस बात पर इतना आश्चर्य हुआ कि वह अचानक बोला:

"तुम इंतज़ार किस बात का कर रहे हो?"

"क्या मतलब तुम्हारा?" याकोव ने अपनी आंखें फाड़कर धीरे से पूछा।

"तुम किस बात का... मेरा मतलब है... आगे चलकर; तुम किस बात का इंतज़ार कर रहे हो?" कठोर स्वर में इल्या ने अपना सवाल दोहराया।

याकोव ने सिर झुका लिया और विचारों में खो गया।

"तो?" इल्या ने धीमी आवाज़ में कहा। वह बेहद बेचैन हो रहा था और जल्दी से जल्दी वहां से चला जाना चाहता था।

"इंतज़ार करने के लिए मेरे पास है ही क्या?" याकोव ने इल्या की ओर नज़र उठाये बिना धीरे से कहा। "कुछ भी नहीं। कुछ दिन में मैं मर जाऊंगा – और बस।"

फिर उसने झटके के साथ अपना सिर पीछे की ओर झुका लिया और उसके थके हुए चेहरे पर ख़ुशी की मुस्कराहट दौड़ गयी।

"मुझे नीले-नीले सपने दिखायी देते हैं। हर चीज़ नीली – आसमान ही नहीं, बल्कि धरती और पेड़ और फूल और घास भी – हर चीज़! और हर चीज़ बेहद शांत। इतनी शांत जैसे कहीं कुछ हो ही नहीं। और हर चीज़ नीली। और मैं उन सब चीज़ों के बीच से होकर चलता रहता हूं, चलता ही चला जाता हूं, यह सिलसिला कभी ख़त्म ही नहीं होता, और मैं ज़रा भी नहीं थकता। और यह समझ में ही नहीं आता कि मैं हूं या नहीं। कितना सुगम होता है... नीले सपने हमेशा मौत से पहले दिखायी देते हैं..."

"अच्छा, मैं चलता हूं," इल्या ने उठते हुए कहा।

"लेकिन क्यों? थोड़ी देर और ठहरो!"

"नहीं, मैं चलूंगा। फिर मिलेंगे।"

याकोव भी उठ खड़ा हुआ।

"अच्छा... तो फिर मिलेंगे।"

इल्या ने उसका तपता हुआ हाथ दबा दिया और एक क्षण के

लिए उसकी आंखों में आंखें डालकर घूरता रहा ; विदा होते समय कहने के लिए उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। और वह कुछ कहना ज़रूर चाहता था, बहुत बुरी तरह उसका कुछ कहने को जी चाह रहा था, इतनी बुरी तरह कि उसे पीड़ा हो रही थी।

"और माशा, वह बड़ी मुसीबत झेल रही है, सुना?" याकोव ने उदास होकर कहा।

"सो तो वह झेल रही है..."

"ऐसा लगता है कि हमारा सबका एक जैसा ही अंजाम होगा। तुम भी ज़िंदगी का कोई ख़ास सुख उठाते नहीं मालूम होते, क्यों, है न?"

यह बात कहते हुए याकोव के होंटों पर फीकी-सी मुस्कराहट दौड़ गयी, और उसकी आवाज़ और उसके शब्द, वग़ैरह न जाने क्यों बेजान और विवर्ण लग रहे थे... इल्या ने अपनी पकड़ ढीली कर दी और याकोव का हाथ उसकी बग़ल में झूल गया।

"अच्छा, मैं चलता हू, याकोव। माफ़ करना..."

"माफ़ करनेवाला तो बस भगवान है। फिर आओगे न?"

इल्या जवाब दिये बिना बाहर चला गया।

बाहर सड़क पर निकलकर उसकी तबीयत कुछ संभली। यह बात उसकी समझ में बिल्कुल आ गयी थी कि याकोव जल्दी ही मर जायेगा, और इसकी वजह से उसके मन में किसी के ख़िलाफ़ झुंझलाहट की भावना पैदा हुई। उसे इस बात का अफ़सोस नहीं था कि याकोव मर जायेगा, क्योंकि वह इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था कि इतना दब्बू आदमी इस दुनिया में ज़िंदा कैसे रह सकता है। बहुत पहले ही से उसने याकोव के बारे में यह समझ लिया था कि वह तो मिट जायेगा ही। लेकिन जिस बात पर उसका ग़ुस्सा भड़क उठता था वह यह थी: जो आदमी इतना सीधा हो उसे क्यों इस तरह सताया जाये, और उसे वक़्त से पहले ही इस दुनिया को छोड़कर चले जाने पर मजबूर क्यों कर दिया जाये? और इस विचार से जीवन के प्रति उसकी वह झुंझलाहट, जो उसके अस्तित्व का आधार बन चुकी थी, और भी मज़बूत हो गयी और पहले से भी ज़्यादा बढ़ गयी।

उस रात वह सो नहीं सका। खिड़की खुली होने के बावजूद कमरे में उसका दम घुटा जा रहा था। वह बाहर आंगन में निकल आया

और चहारदीवारी के पास उगे हुए एल्म के पेड़ के नीचे ज़मीन पर लेट गया। वह पीठ के बल लेटा रात के आसमान को ताकता रहा; वह जितनी ही देर तक घूरता रहा, उसे लगातार नये सितारे दिखायी देते रहे। आकाशगंगा आसमान के आर-पार एक रुपहले दुपट्टे की तरह फैली हुई थी। पेड़ों की डालों के बीच से उसका दृश्य एक ऐसी भावना उत्पन्न करता था जो सुखद भी थी और उदास भी। आकाश पर तो, जहां कोई भी नहीं रहता था, जगह-जगह तारे टंके हुए थे, लेकिन धरती को सजाने के लिए क्या था? इल्या ने अपनी आंखें सिकोड़ लीं और उसे यह भ्रम होने लगा कि पेड़ की डालें ऊंची उठती जा रही हैं। तारों-भरे आकाश के नीले मख़मल की पृष्ठभूमि पर डालों के काले बेल-बूटे ऐसे लग रहे थे जैसे किसी ने आकाश तक पहुंचने की लालसा में उसकी ओर हाथ फैला रखे हों। इल्या को याकोव के नीले सपनों की याद आ गयी, और ख़ुद याकोव की आकृति उसकी आंखों के सामने फिरने लगी, नीला-नीला याकोव, नाज़ुक और पारदर्शी, जिसकी नेकी-भरी आंखें सितारों जैसी चमकदार थीं... एक वह था, जिसे क़ब्र में सिर्फ़ इसलिए ढकेला जा रहा था कि बहुत भीरु और विनम्र था, और दूसरी ओर वे लोग, जो उसे ढकेल रहे थे, मनमानी कर रहे थे...

गावरिक की बहन अब दुकान में लगभग रोज़ ही आने लगी थी। उसे हमेशा कोई न कोई चिंता लगी रहती थी, और इल्या से बड़े तपाक से हाथ मिलाकर उससे दो-चार बातें करने के बाद वह चल देती थी और उसके सोचने के लिए कोई नयी चीज़ छोड़ जाती थी। एक दिन उसने इल्या से कहा:

"आपको दुकानदारी का काम अच्छा लगता है?"

"नहीं, मैं यह तो नहीं कह सकता कि मुझे यह काम कुछ ख़ास अच्छा लगता है," इल्या ने कंधे बिचकाकर कहा, "लेकिन किसी न किसी तरह पेट तो पालना ही है।"

उसकी गंभीर नज़रें इल्या को बड़ी जिज्ञासा से देख रही थीं और उसका चेहरा ऐसा लगता था कि इल्या की ओर बढ़ आने की कोशिश कर रहा है।

"आपने कभी अपनी मेहनत से रोज़ी कमाने की कोशिश नहीं की है?" उसने पूछा।

उसका सवाल इल्या की समझ में नहीं आया।

"क्या कहा आपने?"

"आपने कभी काम किया है?"

"हमेशा करता रहा हूं। ज़िंदगी भर। व्यापार का काम करता हूं..." उसने कुछ उलझन में पड़कर कहा।

वह मुस्करा दी, और उसके मुस्कराने के ढंग में कुछ दिल दुखानेवाला अंदाज़ था।

"क्या आप समझते हैं कि चीज़ें बेचना मेहनत है? क्या आप दोनों को एक ही चीज़ समझते हैं?"

"क्यों, क्या कोई फ़र्क़ है?"

उसके चेहरे को एक नज़र देखते ही इल्या समझ गया कि यह बात वह संजीदगी से कह रही थी।

"फ़र्क़ ज़रूर है," वह नरमी से मुस्कराकर बोली। "मेहनत वह होती है जब आदमी अपनी ताक़त ख़र्च करके कोई चीज़ बनाता है; जैसे जब वह फ़ीता, रिबन, कुर्सी, अल्मारी जैसी कोई चीज़ बनाता है – समझ रहे हैं आप?"

इल्या ने सिर हिला दिया और शरमा गया: उसे यह मानते हुए शर्म आ रही थी कि वह समझ नहीं पा रहा था।

"जहां तक व्यापार का सवाल है–उसे मेहनत कैसे कहा जा सकता है? वह लोगों को कुछ नहीं देता!" वह दृढ़ विश्वास के साथ बोली और अपनी बात कहते हुए इल्या के चेहरे को बड़े ध्यान से देखती रही।

"यह बात तो ठीक है," इल्या ने धीरे-धीरे सतर्कता से बोलते हुए स्वीकार किया। "व्यापार करना कोई मुश्किल काम नहीं है... आदत पड़ जाये तो... लेकिन इससे लोगों को कुछ मिलता तो ज़रूर है। अगर उन्हें मुनाफ़ा न मिलता तो वे व्यापार कभी न करते।"

वह इस चर्चा को छोड़कर अपने भाई की ओर मुड़कर उससे बातें करने लगी और थोड़ी ही देर बाद सिर के हल्के-से झटके के साथ इल्या से विदा लेकर वह चली गयी; उसका चेहरा वैसा ही गर्वीला और भावशून्य था जैसा कि माशा की घटना से पहले रहा करता था।

इल्या सोच में पड़ गया कि कहीं उसने कोई ऐसी बात तो नहीं कह दी जो उसे बुरी लग गयी हो। उसने मन ही मन अपनी कही हुई बातों को दोहराया, लेकिन उनमें उसे कोई भी बुरी लगनेवाली बात दिखायी नहीं दी। फिर उसे याद आया कि वह क्या कह रही थी, और वह उसकी बातों के बारे में सोचने लगा। मेहनत और व्यापार के बीच वह क्या फ़र्क़ निकाल सकती है?

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह इतनी गुस्सा और इतनी हठीली क्यों दिखायी देती थी जबकि वह सचमुच न सिर्फ़ नेकदिल थी और न सिर्फ़ उसके दिल में दूसरों के प्रति दया थी, बल्कि वह उनकी मदद करने की भी भरसक कोशिश करती थी। पावेल उसके घर हो आया था और वह उसके बारे में और जिस तरह वह रहती थी उसके बारे में तारीफ़ के पुल बांधते नहीं थकता था।

"जब भी उसके घर जाओ यही सुनने को मिलता है: 'आपसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई!' अगर वे लोग खाना खा रहे होते हैं, तो आइये, साथ खाना खाइये, और अगर चाय पी रहे हों, तो चाय पीजिये। बस यों ही, कोई तकल्लुफ़ नहीं। और बहुत-से लोग होते हैं। सब गाते रहते हैं और शोर मचाते रहते हैं और किताबों के बारे में बहस करते रहते हैं। बहुत मस्त और जानदार। और किताबें तो इतनी जितनी किताबों की दुकान में होती हैं। घर तो बहुत बड़ा नहीं है – चलते-फिरते हर आदमी दूसरे से टकरा जाता है, लेकिन वे हंसकर टाल जाते हैं। सभी पढ़े-लिखे लोग हैं। कोई वकील है, कोई जल्दी ही डाक्टर हो जायेगा, और कुछ विद्यार्थी और इसी तरह के दूसरे लोग होते हैं। लेकिन थोड़ी ही देर में तुम्हें याद ही नहीं रहता कि तुम उनके बराबर नहीं हो और तुम उनके साथ घुल-मिलकर सिगरेट पीने लगते हो, हंसने लगते हो। बहुत अच्छे लोग हैं! जोशीले और ईमानदार।"

"मुझे तो वह कभी नहीं बुलायेगी," इल्या ने उदास होकर कहा। "वह बड़ी अभिमानी है..."

"कौन, वह?" पावेल ने आश्चर्य से कहा। "मैं तुम्हें बताता हूं, वह तो इतनी सीधी-सादी है कि कुछ पूछो नहीं! बुलाये जाने का इंतज़ार न करो – ख़ुद चले जाओ। पहुंच गये – बस। उन लोगों

का घर शराबखाने की तरह है, सच कहता हूं! कहीं कोई रोक-टोक नहीं, किसी तरह का कोई तकल्लुफ़ नहीं। मुझ को ही देखो – उनके मुक़ाबले मैं कौन हूं? लेकिन दो बार वहां जाने के बाद ही मुझे वहां बिल्कुल अपने घर जैसा लगने लगा है। बहुत दिलचस्प लोग हैं! ज़िंदगी का भरपूर मज़ा उठाते हैं..."

"माशा कैसी है?" इल्या ने पूछा।

"लगता तो है कि कुछ-कुछ ठीक होती जा रही है... चेहरे पर मुस्कराहट लिये बैठी रहती है। वे लोग उसे दूध पिलाते हैं और दवा देते हैं... ख़ ेनोव को तो अच्छी तरह मज़ा चखाया जायेगा! वकील कहता है कि उस खूसट सुअर को अपने किये का पाई-पाई हिसाब चुकाना होगा। वे लोग माशा को छानबीन करनेवाले सरकारी अफ़सर के पास ले जाते हैं... और वे लोग वेरा के बारे में भी कुछ कर रहे हैं – मुक़द्दमे का फ़ैसला जल्दी करवाने की कोशिश कर रहे हैं... अरे, सच कहता हूं, उसका घर बहुत अच्छा है। छोटा-सा घर है – चूल्हे में लकड़ियों की तरह लोग वहां ठसाठस भरे रहते हैं, और हर तरफ़ रोशनी और गर्मी भी वैसी ही फैली रहती है।"

"और वह? उसके बारे में क्या ख़्याल है तुम्हारा?"

पावेल उसके बारे में वैसी ही श्रद्धा के साथ बताता रहा जिस श्रद्धा के साथ वह बचपन में उन क़ैदियों के बारे में बातें करता था जिन्होंने उसे पढ़ना-लिखना सिखाया था। वह बहुत जोश में आ गया था और उसके वाक्यों में भावावेश पैदा हो गया था।

"वह? वह तो अपनी तरह की एक ही है, सच कहता हूं तुमसे! सब पर अपना रोब रखती है, और अगर किसी ने कोई बेजा बात कही तो बस – ग़र्र! बिल्कुल शेरनी है!"

"क्या मैं जानता नहीं!" इल्या ने हल्की हंसी के साथ कहा।

उसे पावेल से ईर्ष्या हो रही थी। वह इस कठोर लड़की के यहां जाने के लिए तड़प रहा था, लेकिन उसका स्वाभिमान उसे निमंत्रण के बिना जाने से रोकता था।

काउंटर के पीछे खड़े-खड़े वह मन ही मन सोचता रहता था: "इस दुनिया में बहुत-से लोग हैं, और उनमें से हर एक अपने पड़ोसी से कोई न कोई फ़ायदा उठाने की कोशिश करता है, लेकिन

माशा और वेरा की मदद करके उसे क्या फ़ायदा मिल जाता है? वह ग़रीब है। उस घर में एक-एक दाने की बड़ी क़ीमत है। मतलब यह कि उसका दिल बहुत बड़ा है। फिर भी, देखो, वह मुझसे किस तरह बात करती है। क्या मैं पावेल से किसी बात में कम हूं?"

वह इन विचारों में इतना डूबा रहता था कि किसी दूसरी चीज़ का उसके लिए कोई ख़ास महत्त्व ही नहीं रह गया था। ऐसा लगता था कि उसके जीवन के अंधकार में एक पतली-सी दरार खुल गयी है, और इस दरार में से वह बहुत दूर से आती हुई किसी ऐसी चीज़ की चमक को देखने से ज़्यादा महसूस करता था, जिसका अभी तक उससे संपर्क नहीं हुआ था।

"तुम्हें यह पतला ऊनी फ़ीता थोड़ा-सा और मंगाना होगा," एक दिन दुकान आकर तात्याना व्लास्येव्ना ने कड़े स्वर में कहा। "और वह लैस भी ख़त्म हो गयी है। और काला सूती धागा – पचास नंबर का। एक कंपनी हमारे हाथ सीप के बटन बेचना चाहती है। उनका एजेंट मुझसे मिलने आया था। मैंने उसे तुम्हारे पास भेज दिया था। आया था यहां?"

"नहीं तो," इल्या ने रुखाई से जवाब दिया। वह इस औरत से दिल से नफ़रत करने लगा था। उसे शक था कि वह कोर्साकोव के साथ रहती थी, जिसे अभी हाल ही में तरक़्क़ी देकर थानेदार बना दिया गया था। अब वह इल्या से मिलने का वक़्त कभी-कभार ही तै करती थी, हालांकि उसकी तरफ़ उसका प्यार और हंसी-मज़ाक़ का बर्ताव अब भी पहले जैसा ही था, और जब भी वह उससे मिलने की कोशिश करती वह टाल जाने का कोई रास्ता निकाल लेता। इस बात पर तात्याना को कोई ग़ुस्सा न आने की वजह से वह उससे और भी नफ़रत करने लगा था।

"छिनाल! रंडी कहीं की!" वह मन ही मन कहता।

जब वह दुकान में माल का हिसाब-किताब करने आती तब वह उसे ख़ास तौर पर बुरी लगती थी। वह फिरकी की तरह चारों ओर नाचती रहती थी, कूदकर काउंटर पर चढ़ जाती थी, अल्मारियों के सबसे ऊपरवाले पटरों पर से डिब्बे उतार लाती थी, गर्द की वजह से छींकने लगती थी और अपने बालों को पीछे की ओर झिटक देती

थी। वह लगातार गावरिक के बारे में बड़बड़ाती रहती थी :

"दुकान में काम करनेवाले लड़के को फुर्तीला और दौड़-दौड़कर काम करनेवाला होना चाहिये। उसे पैसा इस बात का नहीं दिया जाता कि दरवाज़े पर बैठा नाक खूंटता रहे। और जब उसकी मालकिन उससे बात करे तो उसे ध्यान से सुनना चाहिये, न कि उसे गुस्से से घूरता रहे।"

लेकिन गावरिक भी अपनी आन का पक्का था। उसकी डांट-फटकार चुपचाप सुन लेता और उससे ढिठाई के साथ बात करता और मालकिन की हैसियत से उसके प्रति तनिक भी सम्मान प्रकट न करता। जब वह चली जाती तो वह इल्या से कहता :

"नकचढ़ी चली गयी।"

"अपनी मालकिन के बारे में तुम्हें ऐसी बात नहीं कहनी चाहिये," इल्या अपनी मुस्कराहट रोकते हुए उपदेश देता।

"मालकिन, मेरे ठेंगे पर!" गावरिक कहता। "बस आकर फुदकती रहती है, चांव-चांव करती है, और फुदककर बाहर चली जाती है। मालिक तो आप हैं।"

"वह भी है," इल्या क्षीण स्वर में आपत्ति करता; मुंहफट तरीक़े से बात कह देने और स्वतंत्र स्वभाव की वजह से इस लड़के पर उसे बहुत प्यार आता था।

"मगर, वह है नकचढ़ी, मैं तो बस इतना जानता हूं," गावरिक कहता।

एक बार तात्याना व्लास्येव्ना ने इल्या से कहा :

"तुम लड़के को ठीक से काम सिखाते नहीं। और कुल मिलाकर, मैं यह कह देना अपना फ़र्ज़ समझती हूं कि इधर कुछ दिनों से हमारा कारोबार जिस तरह चलाया जा रहा है वह... मेरा मतलब है... उसमें कोई जोश नहीं है – कारोबार से तुम्हें कोई लगाव नहीं है।"

इल्या ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उसका दिल उसके लिए नफ़रत से भर उठा और उसने मन ही मन सोचा : "मैं तो यही मनाता हूं कि यहां उचकते-फांदते तेरे टखने में मोच आ जाये, चुड़ैल कहीं की!"

उसके पास चाचा तेरेंती का ख़त आया था, जिसमें उसने लिखा था कि वह न सिर्फ़ कियेव गया था, बल्कि त्रोइत्से-सेर्गियेव्स्की

मठ भी गया था और श्वेत सागर में सोलोव्की द्वीप पर बने हुए मशहूर मठ तक की यात्रा भी उसने लगभग पूरी कर ली थी, लेकिन वह लादोगा झील में वलआम द्वीप के मठ तक ही पहुंच पाया था और जल्दी ही घर आनेवाला था।

"यह लो एक और ख़ुशख़बरी," इल्या ने चिढ़कर सोचा। "शायद वह मेरे साथ रहना भी चाहेगा..."

इतने में कुछ गाहक आ गये और अभी वह उन्हें निबटा ही रहा था कि गावरिक की बहन दुकान में आयी। वह बहुत थकी हुई थी, हांपते हुए उससे दुआ-सलाम करने के बाद उसने इल्या के कमरे की तरफ़ सिर के झटके से इशारा करके पूछा :

"अंदर पानी है?"

"अभी एक सेकंड में लाया!" इल्या ने कहा।

"नहीं, मैं ख़ुद ले आऊंगी..."

वह कमरे में चली गयी और तब तक वहीं रही जब तक कि इल्या अपना काम ख़त्म करके वहां आ नहीं गया। इल्या ने देखा कि वह 'मनुष्य के जीवन की अवस्थाएं' के सामने खड़ी थी। उसके अंदर आते ही वह मुड़ी और अपनी आंखों से तसवीर की तरफ़ इशारा करके बोली :

"कितनी भद्दी है!"

उसकी यह बात सुनकर इल्या कुछ खिसिया गया और विनीत भाव से मुस्करा दिया। लेकिन इससे पहले कि वह उससे अपनी बात ठीक से समझाने को कहता, वह जा चुकी थी।

कुछ दिन बाद वह अपने भाई के लिए उसके धुले हुए कपड़े लेकर आयी और इतनी लापरवाही से अपने कपड़े फाड़ने और गंदे करने पर उसे डांटने लगी।

"लो, बस शुरू हो गयीं!" गावरिक ने ढिठाई से कहा। "मालकिन तो हर वक़्त जान खाती ही रहती हैं, और अब तुम भी..."

"क्या यह बहुत शरारत करता है?" लड़की ने इल्या से पूछा।

"बस, जितनी शरारत जानता है उतनी करता है," इल्या ने शिष्टता से कहा।

"मैं बिल्कुल सीधा हूं," गावरिक ने दृढ़तापूर्वक कहा।

23-01118

"इसमें बस इतनी खराबी है कि ज़बान बहुत चलाता है," इल्या ने कहा।

"सुना तुमने?" लड़की ने आंखें तरेरकर अपने भाई से कहा।

"सुन रहा हूं, अच्छी तरह," गावरिक लड़ाका स्वर में बोला।

"अरे, कोई बात नहीं है," इल्या बीच में बोला। "जो आदमी जवाब देना जानता है वह उससे तो अच्छी ही हालत में होता है जो जवाब नहीं दे सकता। जो आदमी जवाब नहीं दे सकता उसकी जब पिटाई होती है तो वह अपना मुंह बंद रखता है, और लोग पीट-पीटकर उस बेचारे को क़ब्र में पहुंचा देते हैं..."

उसकी बात सुनते समय लड़की के चेहरे पर ऐसा भाव आया जिससे मानो संतोष झलकता था। इल्या ने इस बात को देखा।

"मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था," इल्या ने कुछ खिसियाते हुए कहा।

"क्या बात है?"

वह उसके पास आकर आंखों में आंखें डालकर देखने लगी। इल्या उसकी नज़र की ताब न ला सका और उसने अपनी नज़रें झुका लीं।

"क्या मैं आपकी बात ठीक समझा हूं कि जो लोग व्यापार करते हैं उन्हें आप पसंद नहीं करतीं?"

"जी हां!"

"क्यों नहीं करतीं?"

"इसलिए कि वे दूसरों की मेहनत के बल पर जीते हैं..." लड़की ने बिना किसी लाग-लपेट के कहा।

इल्या ने झटके के साथ सिर पीछे की ओर झुकाकर अपनी भवें तान लीं; उसे उसकी बात पर आश्चर्य उतना नहीं हुआ था जितना कि उसने उसका बुरा माना था। और उसने अपनी बात कितनी सादगी से और कितना ज़ोर देकर कही थी।

"यह बात सच नहीं है," इल्या ने कुछ देर रुककर ऊंची आवाज़ में कहा।

लड़की की मुद्रा बदल गयी और उसका चेहरा तमतमा उठा।

"वह रिबन आपने कितने में ख़रीदे थे?" उसने उपेक्षा के भाव से पूछा।

"वह?.. सत्रह कोपेक अर्शिन* के भाव से..."

"और बेचते कितने में हैं?"

"बीस में..."

"देखा आपने? वे तीन कोपेक जो आप कमाते हैं उन लोगों के होते हैं जिन्होंने रिबन बनाया है, आपके नहीं। समझ में आया आपकी?"

"जी नहीं!" इल्या ने साफ़-साफ़ स्वीकार किया।

यह सुनकर उस लड़की की आंखें शत्रुता के भाव से चमकने लगीं। इल्या ने यह बात अच्छी तरह देखी और वह उसके सामने गिड़गिड़ाने लगा, लेकिन उसके सामने इस तरह गिड़गिड़ाने पर उसे अपने आपसे फ़ौरन नफ़रत होने लगी।

"मेरा ख़्याल है कि आपके लिए इतनी सीधी-सी बात को समझना मुश्किल है," उसने कहा और दरवाज़े की ओर चल दी। "लेकिन मान लीजिये कि आप मज़दूर होते और ये सब चीज़ें आपने बनायी होतीं।"

उसने अपना हाथ चारों ओर घुमाकर दुकान की सारी चीज़ों की ओर इशारा किया और बताने लगी कि किस तरह मेहनत से सभी लोगों की ज़िंदगी मालामाल हो जाती है, अलावा उन लोगों की ज़िंदगी के जो मेहनत करते हैं। पहले तो वह हमेशा की तरह बोलती रही – बड़ी रुखाई से नपे-तुले शब्दों में – और उसका असुंदर चेहरा बिल्कुल भावशून्य रहा; लेकिन थोड़ी ही देर में उसकी भवें कांपने लगीं और सिकुड़कर एक-दूसरे के पास आ गयीं, उसके नथुने फूल गये, उसने अपना सिर पीछे तान लिया और अपने सत्य के प्रति नौजवानों जैसी जोशीली और अडिग आस्था से भरपूर शब्दों की बौछार इल्या पर करने लगी।

"व्यापारी मज़दूरों और गाहकों के बीच खड़ा रहता है। वह चीज़ों के मूल्य में रत्ती-भर भी कुछ जोड़े बिना उनकी क़ीमत बढ़ाता रहता है। व्यापार क़ानूनी चोरी के अलावा और कुछ नहीं होता।"

इल्या अपमानित अनुभव कर रहा था लेकिन उसके पास इस

* एक रूसी नाप जो २८ इंच के बराबर होती है। – अनु०

ढीठ लड़की की बात का खंडन करने को कोई तर्क नहीं थे जो उसे उसके मुंह पर चोर और निकम्मा कह रही थी। उसकी बात सुनते हुए वह दांत भींचकर रह गया लेकिन उसने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया ; वह उस बात पर विश्वास कर ही नहीं सकता था। जब वह अपने दिमाग़ में कोई ऐसा जवाब खोज रहा था जो उसकी दलीलों को फ़ौरन चकनाचूर कर दे और उसे चुप कर दे, उसी वक्त अनायास ही उसने महसूस किया कि वह उसके साहस के लिए उसे मन ही मन सराह रहा था। और उसके दिल दुखानेवाले शब्दों को सुनकर वह दंग रह गया ; वे उसके मन में यह परेशान करनेवाला सवाल पैदा कर रहे थे : मैंने ऐसा क्या क़सूर किया है कि मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया जाये ?

"बात वैसी बिल्कुल नहीं है !" जब उससे और ज़्यादा चुप न रहा गया तो उसने उसकी बात काटते हुए ऊंची आवाज़ में कहा। "मैं आपकी बात नहीं मानता।"

उसके सीने में विरोध का तूफ़ान उठ रहा था और उसके चेहरे पर लाल-लाल धब्बे उभर आये थे।

"फिर मेरा जवाब दीजिये !" उसने स्टूल पर बैठते हुए शांत भाव से कहा और अपनी लंबी चोटी कंधे के ऊपर से सामने लाकर उससे खेलने लगी।

इल्या उसकी बैर-भरी घूरती हुई आंखों से नज़रें बचाने के लिए अपना सिर इधर-उधर घुमा रहा था।

"मैं जवाब दूंगा !" वह गुस्से से बेक़ाबू होकर चिल्लाया। "मेरी ज़िंदगी ... मेरा जवाब है ! मैं ... आपको क्या मालूम कि जहां मैं आज हूं वहां तक पहुंचने के लिए मैंने कोई बहुत बड़ा अपराध किया हो ..."

"यह और भी बुरी बात है ... फिर भी यह तो कोई जवाब न हुआ," उसने ऐसे स्वर में कहा जैसे इल्या के चेहरे पर ठंडे पानी का छींटा मार दिया हो। वह काउंटर पर अपने हाथ टिकाकर इस तरह आगे झुका जैसे अभी उसे फांद जायेगा। अपने घुंघराले बालों को पीछे की ओर झिटककर वह उसके शब्दों से आहत होकर, उसकी शांत मुद्रा से आश्चर्यचकित होकर कुछ क्षणों तक चुपचाप उसे एकटक

देखता रहा। उसकी नज़र और उसका निश्चल विश्वासपूर्ण चेहरा उसकी समझ में बिल्कुल न आता था और उसके ग़ुस्से को भड़कने नहीं देता था। उसके हाव-भाव में उसे एक तरह की निडरता और निर्ममता का आभास मिलता था, और उसे जिन शब्दों की ज़रूरत थी वे उसके होंटों तक नहीं आ पाते थे।

"बोलिये, आप कुछ कहते क्यों नहीं ?" उसने चुनौती देते हुए दो-टूक सवाल किया ; फिर तिरस्कार के साथ थोड़ा-सा मुस्कराकर उसने विजयोल्लास से कहा, "आप कुछ कह ही नहीं सकते, क्योंकि जो कुछ मैंने कहा है वही सच्चाई है।"

"कुछ भी नहीं ?" इल्या खोखले स्वर में बोला।

"कुछ भी नहीं। आप कह ही क्या सकते हैं ?"

एक बार फिर उसने इल्या को तिरस्कार से देखा और मुस्करा दी।

"अच्छा, मैं चलती हूं," वह बोली और अपना सिर हमेशा से और ऊंचा उठाये हुए बाहर चली गयी।

"यह सच नहीं है ! ये सब बेवक़ूफ़ी की बातें हैं !" इल्या ने पीछे से पुकारकर कहा, लेकिन उसने पीछे मुड़कर देखा तक नहीं।

इल्या धम से स्टूल पर बैठ गया। गावरिक, जो दरवाज़े पर खड़ा था, अपनी बहन के आचरण से बहुत ख़ुश हुआ होगा, क्योंकि उसने जिस दृष्टि से अपने मालिक को देखा उसमें गर्व भी था और विजयोल्लास भी।

"घूर क्या रहे हो ?" इल्या ने लड़के के इस तरह घूरने से तिलमिलाकर डपटकर पूछा।

"कुछ नहीं," गावरिक बोला।

"ख़बरदार !" इल्या ने डांटते हुए कहा, और फिर थोड़ी देर बाद बोला, "जाओ, थोड़ा घूम आओ।"

लेकिन अकेले रह जाने पर भी वह अपने बिखरे हुए विचारों को समेट नहीं पाया। वह लड़की के शब्दों का अर्थ समझ पाने की कोशिश तक नहीं कर रहा था ; सबसे बढ़कर वे दिल दुखानेवाले थे।

"मैंने उसका क्या बिगाड़ा है ? वह आती है, मुझे दोष देती है और चली जाती है – बस ऐसे ही। अच्छा, अबकी आना, तुम्हें तुम्हारा जवाब मिल जायेगा ..."

इल्या ने उसे धमकाया, और साथ ही यह भी पता लगाने की कोशिश की कि वह उसका इस तरह अपमान क्यों करती है। उसे याद आया कि पावेल ने किस तरह उसकी समझदारी और सादगी की तारीफ़ की थी।

"पावेल की भावनाओं को शायद वह ठेस नहीं पहुंचाती," उसने सोचा।

उसने सिर ऊपर उठाया तो आईने में उसे अपनी सूरत दिखायी दी। उसकी काली मूंछें फड़क रही थीं, उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में थकन थी, उसके गालों पर दो लाल धब्बे दहक रहे थे। इस वक़्त भी, इतना उत्तेजित और उदास होने पर भी, उसमें एक तरह की अनगढ़ सुंदरता थी और उसके चेहरे की तुलना पावेल ग्राचोव के पीले, बीमार, हड़ियल चेहरे से किसी भी तरह नहीं की जा सकती थी।

"क्या वह सचमुच पावेल को मुझसे ज़्यादा पसंद करती है?" उसने सोचा, लेकिन फ़ौरन अपने आपको टोक दिया, "पर उसे इसकी क्या परवाह कि मेरी सूरत कैसी है? मैं कोई उसका चाहनेवाला तो हूं नहीं।"

अपने कमरे में जाकर उसने एक गिलास पानी पिया और चारों ओर नज़र डालकर देखा। 'मनुष्य के जीवन की अवस्थाएं' के चटकीले रंगों पर उसकी नज़र पड़ी और वहीं जमकर रह गयी।

"यह सब धोखा है, फ़रेब है। क्या लोग सचमुच इस तरह रहते हैं?" उसने मन ही मन कहा। "और अगर वे रहते हैं, तो उनकी ज़िंदगी नीरस उकताहट होती होगी!"

दीवार के पास जाकर उसने तसवीर नोच ली, और उसे लेकर दुकान में चला गया। वहां उसे काउंटर पर फैलाकर वह और ज़्यादा ध्यान से मनुष्य के जीवन की अवस्थाओं को देखने लगा; वह तसवीर को व्यंग से देखता रहा और तब तक उस पर नज़रें जमाये रहा जब तक कि सारे रंग एक में नहीं मिल गये। तभी उसने उसे मरोड़कर उसका गोला बनाकर काउंटर के नीचे फेंक दिया। लेकिन वह लुढ़ककर फिर बाहर निकल आयी और उसके पांव के नीचे आ गयी। झुंझलाकर उसने फिर उसे उठा लिया, पहले से ज़्यादा कसकर मरोड़ा और दरवाज़े के बाहर सड़क पर फेंक दिया...

सड़क पर बहुत शोर था। हाथ में छड़ी लिये हुए एक आदमी सडक के उस पारवाली पटरी पर चला आ रहा था; छड़ी की खट-खट उसके क़दमों की चाप से मेल नहीं खा रही थी, और इसकी वजह से ऐसा लग रहा था कि उस आदमी के तीन टांगें हैं। कबूतर गुटर-गूं बोल रहे थे। धातु पर किसी के क़दमों की धप-धप की आवाज़ सुनायी दे रही थी – शायद कोई चिमनी साफ़ करनेवाला छत पर चल रहा था। एक गाड़ीवाला दुकान के सामने से गुज़रा; वह अपनी सीट पर बैठा ऊंघ रहा था, और गाड़ी के हचकोलों के साथ उसका सिर इधर-उधर झोंके खा रहा था। ऐसा लग रहा था कि इल्या के चारों ओर हर चीज़ झूम रही है। इल्या ने अपना गिनतारा उठाया और उस पर बीस कोपेक की गोलियां सरकायीं। उसमें से उसने सत्रह घटाये। बाक़ी बचे तीन। वह अपने नाख़ून से गोलियां सरका रहा था; गोलियां हल्की-सी गूंज पैदा करते हुए तार पर नाचने लगीं और अलग होकर ठहर गयीं।

इल्या ने आह भरकर गिनतारा रख दिया। फिर वह काउंटर पर अपना सीना टिकाकर झुक गया और वहां इसी तरह पड़ा अपने दिल की धड़कनें सुनता रहा।

अगले दिन गावरिक की बहन फिर आयी। वह हमेशा की तरह ही थी; वही फटी-पुरानी पोशाक पहने थी और उसके चेहरे पर वही भाव था।

"तो तुम आ गयीं!" इल्या ने अपने कमरे से ही उसे शत्रुता के भाव से देखते हुए सोचा।

जब उसने सिर झुकाकर इल्या को सलाम किया तो इल्या ने अपना सिर बहुत अकड़कर बस थोड़ा-सा हिला दिया। अचानक उस लड़की के चेहरे पर बहुत ही सहृदय मुस्कराहट खिल उठी और उसने बड़ी नरमी से इल्या से कहा:

"इतने पीले क्यों दिखायी दे रहे हैं? तबीयत तो ठीक है न?"

"बिल्कुल ठीक हूं," इल्या ने रुखाई से जवाब दिया; लड़की के उसके स्वास्थ्य के बारे में चिंता प्रकट करने से उसके मन में जो भावना उत्पन्न हुई थी उसे वह छिपाने की कोशिश कर रहा था। वह बहुत ही अच्छी, बहुत ही सुखद भावना थी; उसकी मुस्कराहट और उसके

शब्दों ने उसके दिल को बड़े प्यार से सहला दिया था, लेकिन उसने फ़ैसला किया कि वह अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करेगा क्योंकि वह मन ही मन यह उम्मीद कर रहा था कि इस पर वह फिर मुस्करायेगी और उससे वैसे ही प्यार-भरे शब्द कहेगी। यह उसका दृढ़ निश्चय था, और इसीलिए वह आंखें चुराये रूठा हुआ इंतज़ार करता रहा।

"आप शायद मेरी बात का बुरा मान गये," वह दृढ़ स्वर में बोली। उसका लहजा अभी थोड़ी ही देर पहले के लहजे से इतना भिन्न था कि इल्या ने सहमकर नज़रें ऊपर उठाकर देखा। वह फिर अपने सामान्य रूप में आ गयी थी, उसकी काली-काली आंखों में फिर वही गर्व और अभिमान का भाव था।

"मैं इस बात का आदी हो चुका हूं कि लोग मेरा दिल दुखायें," इल्या ने मानो चुनौती देते हुए मुस्कराकर कहा, लेकिन निराशा के कारण उसके दिल पर बर्फ़-सी जम गयी थी।

"तो तुम मुझसे खेलने की कोशिश कर रही हो?" उसने सोचा। "पहले पीठ पर थपका और फिर मुंह पर तमाचा मार दिया? नहीं, मैं तुम्हें यह नहीं करने दूंगा।"

"मैं आपका दिल दुखाना नहीं चाहती थी..." वह बोली।

"आपको ऐसा करने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा होगा!" उसने बहुत ज़ोर से ढिठाई के साथ कहा। "मैं आपकी बिसात जानता हूं! आप जैसी चिड़ियां बहुत ऊंचा नहीं उड़ पातीं!"

वह तनकर सीधी हो गयी और आश्चर्य से फटी-फटी आंखों से उसे देखने लगी। लेकिन इल्या किसी बात की ओर ध्यान देने की स्थिति में ही नहीं रह गया था; उसके सिर पर उसका मुंहतोड़ जवाब देने का भूत सवार था; वह जान-बूझकर नपे-तुले शब्दों में उस पर जली-कटी बातों की बौछार करता रहा।

"आपके इस अहंकार में और आपके इस तरह इतराने में आपका कुछ लगता नहीं है। जिस स्कूल में आप पढ़ती हैं वहां ये चीज़ें कोई भी हासिल कर सकता है। अगर आपको स्कूल जाने का मौक़ा न मिला होता तो आप भी कोई मामूली दर्ज़िन या किसी के यहां ऊपर का काम करनेवाली नौकरानी होतीं। आप इतनी ग़रीब हैं कि इसके अलावा कुछ और हो ही नहीं सकती थीं, क्यों है न?"

"आप कह क्या रहे हैं?" वह धीरे से बोली।

इल्या ने उसकी आंखों में आंखें डालकर देखा और उसे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि उसके नथुने फूल रहे थे और उसके गाल तमतमा उठ थ।

"मैं वही कह रहा हूं जो मैं सोचता हूं, और मैं यह समझता हूं कि आपका यह इतराना बहुत ही घटिया सस्ते क़िस्म का है – उसका मोल तिनके के बराबर भी नहीं है।"

"मैं इतराती नहीं हूं!" लड़की ने गूंजती हुई आवाज़ में चिल्लाकर कहा। उसके भाई ने लपककर उसका हाथ पकड़ लिया और मालिक की ओर गुस्से से देखकर चिल्लाया भी:

"चलो, यहां से चलें, सोन्या!"

इल्या ने तेज़ी से उन पर एक नज़र डाली और ज़हर में बुझी हुई नफ़रत से बोला:

"ठीक है – निकल जाओ यहां से। न मेरी तुम लोगों को ज़रूरत है न तुम लोगों की मुझे..."

वे दोनों एक क्षण के लिए उसकी नज़रों में विचित्र ढंग से झिलमिलाये और बाहर चले गये। उनके चले जाने पर इल्या ज़ोर से हंसा।

जब वह अकेला रह गया तो कुछ मिनट तक निश्चल खड़ा रहा और प्रतिशोध के मीठे रस का आनंद लेता रहा। उसके मस्तिष्क की गहराई में कहीं उस लड़की की सूरत अंकित थी – गुस्से से भरी हुई, बौखलायी हुई और कुछ डरी हुई।

"लेकिन वह लड़का!.." यह विचार इल्या के दिमाग़ में गूंजता रहा। गावरिक के आचरण से वह परेशान हो उठा था और उसका सारा मज़ा किरकिरा हो गया था।

"इसे कहते हैं हत्थे से उखड़ जाना!" उसने मन ही मन हंसकर सोचा। "तात्याना इस वक़्त आ जाती तो उसे भी मैं खरी-खरी सुना देता – जी भरकर।"

उसके मन में यह अदम्य इच्छा उमड़ रही थी कि सबको अपने से दूर हटा दे – झिड़ककर, उनका दिल दुखाकर, बेरहमी से...

लेकिन तात्याना नहीं आयी। इल्या ने सारा दिन अकेले बिताया,

और ऐसा लग रहा था कि दिन कभी खत्म ही नहीं होगा। जब सोने का वक़्त आया तो वह बहुत अकेलापन महसूस करने लगा ; उसे लड़की के शब्दों से उतनी चोट नहीं पहुंची थी जितनी इस अकेलेपन से पहुंच रही थी। वह आंखें बंद करके रात के सन्नाटे में कान लगाकर सुनने लगा। ज़रा-सी भी आवाज़ से वह चौंककर डर जाता, अपना सिर तकिये पर से उठाता और आंखें फ़ाड़-फाड़कर अंधेरे में घूरने लगता। वह इसी तरह किसी चीज़ का इंतज़ार करते हुए सुबह तक पड़ा जागता रहा ; उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे उसे किसी तहख़ाने में बंद कर दिया गया हो ; गर्मी के मारे और अपने बिखरे हुए भटकते विचारों की वजह से उसका दम घुटा जा रहा था। वह उठा तो उसके सिर में धमक हो रही थी। वह समोवार गरम करना चाहता था लेकिन उसने किया नहीं ; हाथ-मुंह धोकर उसने बस कटोरा-भर पानी पी लिया और फिर दुकान खोलने चला गया।

लगभग दोपहर के वक़्त पावेल त्योरियां चढ़ाये झल्लाया हुआ आया ; इल्या को सलाम किये बिना ही वह बोला :

"आखिर तुम इतना अकड़ते क्यों हो ?"

इल्या उसका मतलब समझ गया और कोई जवाब दिये बिना उसने निराशा के भाव से सिर झटका ।

"यह भी मेरे खिलाफ़ है," उसने सोचा।

"तुम सोफ़िया निकोनोव्ना के साथ ऐसी बदतमीज़ी के साथ क्यों पेश आये ?" पावेल अपने दोस्त के सामने डरा हुआ सख्ती से पूछता रहा। पावेल के लटके हुए मुंह और उसकी धिक्कारती हुई नज़रों में इल्या को साफ़ दिखायी दे रहा था कि पावेल उसके खिलाफ़ अपना फ़ैसला सुना रहा था, लेकिन उसे अब उसकी कोई परवाह नहीं थी।

"बात करने से पहले कुछ साहब-सलामत कर लिया करो। और अपनी टोपी उतार लो – वहां कोने में देव-प्रतिमा टंगी हुई है।"

पावेल ने अपनी टोपी का छज्जा पकड़कर उसे और मज़बूती से अपने सिर पर मढ़ लिया, और बड़ी कटुता से अपने होंट टेढ़े करके जल्दी-जल्दी, गुस्से से कांपते हुए स्वर में बोलने लगा :

"ठीक है, खूब इतराओ ! अब पैसेवाले हो गये हो न ! पेट

जो भर गया है ! याद है, एक बार तुमने कहा था, 'हमारे पास है ही क्या जिससे हम उम्मीद बांधें' ? और जैसे ही ऐसा कुछ सामने आता है तुम उसे दूर भगा देते हो। छिः ! बड़ा आया महाजन कहीं का !"

इल्या के मन में ऐसी शिथिल उदासीनता छा गयी कि वह कोई जवाब न दे सका। निरीह भाव से वह पावेल के उत्तेजित तिरस्कार-भरे चेहरे को देखता रहा ; उसे इस बात का आभास था कि पावेल के तानों से उसे तनिक भी आघात नहीं पहुंच रहा था। पावेल की ठोड़ी और उसके ऊपरवाले होंट पर भूरे-भूरे बाल ऐसे लग रहे थे जैसे उसके दुबले-पतले चेहरे पर फफूंदी लग रही हो, और एकटक उसे देखते हुए इल्या उदासीन भाव से सोचता रहा :

"क्या अपनी बातों से मैंने सचमुच उसका दिल इतना दुखाया है ? मैं तो इससे भी बुरी-बुरी बातें कह सकता था।"

"वह सब कुछ समझती है, सब कुछ समझा सकती है, और तुम उसके साथ ऐसे ... छिः !" पावेल ने हमेशा की तरह अपनी बात के बीच-बीच में ज़हर में बुझे शब्दों का प्रयोग करते हुए कहा।

"मुझे सिखाना बंद करो," इल्या ने कहा। "मेरा जो जी चाहेगा करूंगा ... और जैसे मेरा जी चाहेगा रहूंगा ... मैं तुम सब लोगों से तंग आ चुका हूं ... बस, हर वक़्त उपदेश देते रहते हो ..."

वह एक अल्मारी के सहारे अपने पूरे बोझ से टिककर खड़ा हो गया और बोला, मानो अपने आपसे बातें कर रहा हो :

"तुम्हारे पास कहने को है ही क्या जो कहने लायक़ हो ?"

"उसके पास तो है !" पावेल ने दृढ़ आस्था के साथ कहा, यहां तक कि उसने एक हाथ भी ऊपर उठाया मानो शपथ ले रहा हो। "वे लोग सब कुछ जानते हैं !"

"तो उनके यहां जाओ," इल्या ने उदास भाव से कहा। पावेल जो कुछ कह रहा था और जिस तरह उद्विग्न होकर कह रहा था, वे दोनों ही उसके लिए अरुचिकर थे, लेकिन उससे बहस करने को उसका जी नहीं चाह रहा था। वह बोझल और गहरी उदासीनता में डूबा हुआ था, जो उसे कुछ भी बोलने या सोचने नहीं दे रही थी।

"मैं जाऊंगा !" पावेल ने धमकी-भरे स्वर में कहा। "क्योंकि

मैं समझता हूं कि मेरे लिए उन्हीं के साथ रहना मुमकिन है। मुझे उनसे अपनी ज़रूरत की हर चीज़ मिल सकती है – हर चीज़!"

"चिल्लाओ नहीं," इल्या ने क्षीण स्वर में कहा।

एक लड़की दुकान में आयी और उसने मर्दों की क़मीज़ में लगाने के दर्जन-भर बटन मांगे। इल्या ने बड़े इतमीनान से उसे बटन दिये, उसका दिया हुआ बीस कोपेक का सिक्का अपनी उंगलियों के बीच मसलता रहा, फिर उसे वह सिक्का यह कहकर वापस कर दिया:

"मेरे पास रेज़गारी नहीं है। अगली बार दे देना।"

गल्ले में रेज़गारी थी, लेकिन चाभी उसके कमरे में रखी थी, और उसे जाकर लाने को उसका जी नहीं चाह रहा था। उस लड़की के चले जाने के बाद पावेल ने अपनी बातचीत का सिलसिला दुबारा शुरू नहीं किया। वह काउंटर के पास खड़ा अपने घुटने को टोपी से पीटता रहा, जिसे आखिरकार उसने उतार लिया था; और इल्या को इस तरह देखता रहा जैसे उससे किसी चीज़ की उम्मीद कर रहा हो। लेकिन इल्या ने मुंह फेर लिया और दांतों के बीच से धीरे-धीरे सीटी बजाने लगा।

"तो?" पावेल ने चुनौती देते हुए कहा।

"तो क्या?" इल्या ने कुछ देर रुककर पूछा।

"तुम्हें कुछ भी नहीं कहना है?"

"भगवान के लिए, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो!" इल्या ने अधीर होकर कहा।

पावेल ने टोपी उछालकर सिर पर पहन ली और बाहर निकल गया। इल्या की नज़रें उसे जाते हुए देखती रहीं और वह फिर सीटी बजाने लगा।

एक बड़े-से बादामी रंग के कुत्ते ने दरवाज़े में से झांककर देखा और दुम हिलाता हुआ अपने रास्ते चला गया। उसके बाद बड़ी-सी नाकवाली एक भिखारिन आयी।

"दया करो, सेठ, भगवान के नाम पर..." वह बहुत नीचे झुककर बुदबुदायी।

इल्या ने इंकार करते हुए सिर्फ़ सिर हिलाया – एक भी शब्द नहीं कहा। तपती हुई सड़क पर काम-काज के दिन का कोलाहल था।

ऐसा लग रहा था कि सड़क नहीं कोई बड़ी-सी भट्ठी है जिसमें लकड़ी के कुंदे चटखकर सुलग रहे हैं और हवा में बहुत गर्मी पैदा कर रहे हैं। धातु के टकराने की खटर-खटर से पता चल रहा था कि सड़क पर कोई गाड़ीवाला आ रहा है; उसकी गाड़ी से बाहर लटकी हुई लंबी-लंबी लोहे की छड़ें सड़क के पत्थरों से रगड़ खाकर ऐसी कर्कश आवाज़ में चीत्कार कर रही थीं, जैसे उन्हें बहुत पीड़ा हो रही हो। कोई चाक़ू पर धार रखनेवाला हवा में कर्णकटु खसखसाहट की आवाज़ भरता हुआ अपना काम कर रहा था।

हर क्षण कोई नयी और अप्रत्याशित चीज़ सामने आ जाती थी। जीवन अपनी चीख़-पुकार की विविधता से, अपनी अनथक गतिशीलता से, और अपनी अनवरत सृजनात्मक उमंग के वेग से कल्पना को निरंतर आश्चर्यचकित कर रहा था। लेकिन इल्या की आत्मा के अंदर हर चीज़ निस्तब्ध थी और मर चुकी थी: ऐसा लगता था कि हर चीज़ ठहर गयी है – न कोई विचार, न कोई लालसाएं, बस एक अथाह थकन के अलावा कुछ भी नहीं। ऐसी हालत में उसने सारा दिन और उसके बाद आनेवाली रात बितायी, जिसके दौरान वह डरावने स्वप्न देखता रहा। और ऐसे ही कितने ही और दिन और रातें। गाहक आते, अपनी ज़रूरत की चीज़ें लेते और चले जाते, और उन्हें देखते हुए वह कटुता से सोचता रहता:

"इन्हें मेरी कोई ज़रूरत नहीं है, और न मुझे इनकी... मैं अपनी ज़िंदगी अकेले काट दूंगा..."

गावरिक का समोवार गरम करने का काम अब मकान-मालिक की खाना पकानेवाली कर देती थी, जो एक दुबली-पतली, तेज़ मिज़ाज की औरत थी, जिसका चेहरा लाल और आंखें निस्तेज तथा निश्चल थीं। कभी-कभी उसे देखकर इल्या झुंझलाकर सोचता:

"क्या मुझे कभी ज़िंदगी की अच्छी चीज़ों का सुख नहीं मिलेगा?"

उसे नये-नये तरह-तरह के अनुभवों की आदत पड़ चुकी थी, जिनसे उसे चाहे चिड़चिड़ाहट ही क्यों न होती हो और जो भले ही उसे उद्विग्न कर देते हों, लेकिन वे ज़िंदगी को कुछ दिलचस्प भी बना देते थे। ये नये अनुभव उसे लोगों से मिलते थे। और अब उसकी ज़िंदगी में कोई लोग नहीं रह गये थे; सब एक-एक करके ग़ायब हो चुके

थे, बस गाहक रह गये थे। लेकिन बहुधा अकेलेपन का उसका यह आभास और बेहतर जीवन बिताने की उसकी लालसा हर चीज़ के प्रति अपार उदासीनता में, दम घोंट देनेवाली नीरसता के वातावरण में डूब जाती थी।

एक दिन सबेरे इल्या अभी सोकर उठा ही था और पलंग के कगर पर बैठा सोच ही रहा था कि वह आज का नया दिन किस तरह काटेगा, कि इतने में किसी ने पीछे का दरवाज़ा बार-बार खटखटाया।

यह सोचकर कि खाना पकानेवाली समोवार गरम करने आयी होगी, उसने उठकर दरवाज़ा खोल दिया और अपने सामने कुबड़े को खड़ा हुआ पाया।

"चिः, चिः," तेरेंती मुस्कराकर सिर हिलाते हुए बोला। "नौ बज गये हैं और अभी तक सेठजी ने दुकान भी नहीं खोली है।"

इल्या कमरे में जाने का रास्ता रोके उसके सामने खड़ा मुस्कराता रहा। तेरेंती का चेहरा धूप से संवला गया था, उसकी आंखों में हर्षमय, चुस्ती-भरी चमक थी, और कुल मिलाकर ऐसा लगता था कि उसमें नयी जान पड़ गयी है। उसके पांव के पास बोरे और गठरियां पड़ी थीं, और उनके बीच खड़ा वह ख़ुद गठरी जैसा लग रहा था।

"मुझे अंदर नहीं आने दोगे?" वह बोला।

कुछ भी कहे बिना इल्या गठरियां उठा-उठाकर अंदर रखने लगा, और तेरेंती देव-प्रतिमा पर अपनी नज़रें गड़ाकर झुका और उसने उंगलियों से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया।

"भगवान की कृपा से मैं फिर घर आ गया!" वह बोला। "अच्छा, तुमसे दुआ-सलाम तो कर लूं, इल्या।"

जब इल्या ने अपने चाचा को गले लगाया तो उसे ऐसा महसूस हुआ कि कुबड़े का शरीर पहले से ज़्यादा गठा हुआ और मज़बूत हो गया है।

"मैं मुंह-हाथ धोना चाहता हूं," तेरेंती ने कमरे में चारों ओर नज़र डालते हुए कहा। ऐसा लगता था कि पीठ पर बोरा लादकर घूमते-फिरते रहने की वजह से उसका कूबड़ कुछ ढल गया था।

"तुम्हारी ज़िंदगी कैसी गुज़र रही है?" मुंह पर पानी का छपाका मारते हुए उसने अपने भतीजे से पूछा।

इल्या अपने चाचा को इतना ताज़ादम देखकर बहुत ख़ुश था,

लेकिन मेज़ पर नाश्ता लगाते हुए वह अपने चाचा के सवालों का जवाब बड़ी सतर्कता से और संभल-संभलकर दे रहा था।

"तुम्हारी कैसी कट रही है?"

"मेरी? बहुत अच्छी!" तेरेंती ने आंखें मूंद लीं और परम सुख अनुभव करते हुए मुस्कराया। "तुम यक़ीन नहीं करोगे कि मेरी यात्रा कैसी शानदार रही! ऐसा लगता था जैसे मैं अमृत पी रहा हूं। यों समझ लो..."

वह मेज़ पर आकर बैठ गया, अपनी दाढ़ी उंगली पर लपेट ली और सिर एक ओर को झुकाकर बोला:

"मैं इस देश की धरती पर न जाने कितने कोस पैदल घूमा हूं, और न जाने कितने पवित्र लोगों के सामने मैंने प्रार्थना की है... मैं अभी मूरोम में संेट पीटर और फ़ाव्रोनिया के पार्थिव अवशेषों के दर्शन करके चला आ रहा हूं..."

ऐसा लग रहा था कि संतों और शहरों के नाम गिनाकर उसे बहुत संतोष मिल रहा था क्योंकि उसके होंटों पर बड़ी सौम्य मुस्कराहट और उसकी आंखों में गर्व की चमक थी। वह लयदार स्वर में बोल रहा था, जिस तरह अनुभवी कहानी सुनानेवाले परियों के क़िस्से और संतों के जीवन-चरित्र सुनाते हैं।

"पवित्र गिरजाघर के क़ब्रों के तहख़ाने में मौत का सा सन्नाटा और क़ब्र का सा अंधेरा है, और उस अंधेरे में देव-प्रतिमाओं के नीचे रखे दीप छोटे-छोटे बच्चों की आंखों की तरह चमकते हैं, और सारे वातावरण में दिव्य अनुकम्पा की भावना व्याप्त रहती है..."

अचानक मूसलाधार पानी बरसने लगा। खिड़की के बाहर पानी की छपछप और गूंज-गरज सुनायी दे रही थी, टीन की छतों पर पानी की बूंदें टप-टप गिर रही थीं। ऐसा लग रहा था कि हवा में फ़ौलाद के कसे हुए और झनझनाते हुए तार पिरो दिये गये थे।

"हुं," इल्या ने लंबी सांस भरकर कहा। "तो अब तुम्हारे दिल का बोझ हल्का हो गया?"

तेरेंती एक क्षण तक चुप रहा, फिर उसने उसकी ओर आगे झुककर आवाज़ धीमी करके कहा:

"मिसाल देकर मैं अपनी भावना समझाऊं: मेरा वह पाप मेरे

दिल को वैसे ही कचोटता रहता था जैसे कसा जूता पांव की उंगलियों को काटता है... लेकिन वह पाप मैंने अपनी मर्ज़ी से नहीं किया था – बिल्कुल अपनी मर्ज़ी से नहीं, क्योंकि अगर मैं पेत्रूखा की बात न सुनता तो वह मुझे निकाल बाहर करता। कर देता कि नहीं?"

"सो तो कर देता," इल्या ने हामी भरी।

"यही बात है! लेकिन जैसे ही मैं तीर्थ-यात्रा पर निकला मेरे दिल पर से बोझ हट गया। चलते-चलते मैं मन ही मन कहता था, देखो, भगवान, मैं पवित्रात्माओं के पास जा रहा हूं, तेरे पवित्रात्माओं के पास।"

"तो तुमने हिसाब चुका दिया?" इल्या ने मुस्कराकर कहा।

"मैं यह तो नहीं कह सकता कि भगवान मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ही लेगा," कुबड़े ने अपनी आंखें आसमान की ओर उठाकर कहा।

"लेकिन तुम्हारा अंतःकरण – अब तो वह शांत है न?"

तेरेंती एक क्षण कुछ सोचता रहा; उसकी सूरत देखने से ऐसा लगता था जैसे वह कुछ सुनने की कोशिश कर रहा हो।

"शांत है..." वह बोला।

इल्या उठकर खिड़की के पास चला गया। गंदले पानी की चौड़ी-चौड़ी धाराएं पटरियों के साथ बह रही थीं; सड़क के पत्थरों के बीच छोटे-छोटे गड्ढों में पानी भर गया था, बारिश पड़ने से गड्ढों में पानी थरथरा रहा था और सड़क खुद कांपती हुई लग रही थी। इल्या की दुकान के सामनेवाला घर भीगा और झल्लाया हुआ खड़ा था और खिड़कियों के कांच बारिश के पानी से इतने धुंधले पड़ गये थे कि उनके पीछे कोई पौधे दिखायी नहीं दे रहे थे। सड़क ख़ाली और ख़ामोश थी, बस बारिश हो रही थी और बहते हुए पानी की कलकल ध्वनि सुनायी दे रही थी। एक अकेला कबूतर कार्निस के नीचे दबा-सिकुड़ा बैठा था। हर चीज़ गीली और उदास लग रही थी।

"पतझड़ आ गया," इल्या ने मन ही मन कहा।

"क्षमा के लिए प्रार्थना किये बिना हमें क्षमा कैसे मिल सकती है?" तेरेंती ने अपना बोरा खोलते हुए कहा।

"यह बिल्कुल सीधी-सी बात लगती है: पाप किया, फिर प्रार्थना कर ली और निर्दोष हो गये," इल्या ने अपने चाचा की ओर देखे

बिना उदास भाव से कहा। "चलो, फिर पाप करना शुरू कर दो!"

"लेकिन ऐसा करने की क्या ज़रूरत है? शुद्ध जीवन बिताओ।"

"किसलिए?"

"ताकि अंतःकरण शुद्ध रहे।"

"उससे क्या फ़ायदा?"

"छिः," तेरेंती ने अस्वीकृति के भाव से कहा, "तुम ऐसी बातें कैसे कह सकते हो!"

"मैं कहता हूं, बस!" इल्या ने अपने चाचा की ओर पीठ करके खड़े रहकर हठधर्मी से कहा।

"ऐसी बात कहना पाप है!"

"मुझे परवाह नहीं।"

"तुम्हें दंड मिलेगा!"

"नहीं!"

उसने खिड़की की ओर से मुड़कर तेरेंती को देखा। कुछ देर तक कुबड़ा उसका जवाब देने के लिए शब्द खोजने की कोशिश में होंट चलाता रहा, और जब उसे उपयुक्त शब्द मिल गये तो उसने बड़े प्रभावशाली ढंग से कहा:

"ज़रूर मिलेगा! मुझे देखो – मैंने पाप किया और मुझे दंड मिला..."

"कैसे?" इल्या ने गंभीर होकर पूछा।

"मेरे डर के रूप में। हर वक़्त मैं यही सोचता रहता था: अगर किसी को पता चल गया तो?"

"ख़ैर, मैंने तो पाप किया है और मुझे डर नहीं लगता," इल्या ने तिरस्कार-भरी हंसी के साथ एलान किया।

"यह कोई खिलवाड़ नहीं है," तेरेंती ने सख़्ती से कहा।

"मैं डरता नहीं हूं। पर मेरे लिए जीना दूभर हो गया है।"

"अहा!" कुबड़े ने विजयोल्लास से कहा। "वही तो तुम्हारा दंड है!"

"किस बात का दंड?" इल्या आपे से बाहर होकर चिल्लाया। उसके जबड़े कांप रहे थे। तेरेंती ने हवा में रस्सी घुमाते हुए सहमकर उसकी ओर देखा।

24-01118

"चिल्लाओ नहीं, मत चिल्लाओ!" वह उद्विग्न होकर काना-फूसी के स्वर में बोला।

लेकिन इल्या चिल्लाता रहा। बहुत दिन से वह किसी से बोला नहीं था, और अब वह अपनी आत्मा में से वह सब कुछ उंडेले दे रहा था जो वहां उसके अकेलेपन के दिनों में जमा हो गया था।

"चोरी तो क्या, अगर तुम किसी की हत्या भी कर दो तो भी तुम्हारा कुछ नहीं होगा! तुम्हें सज़ा देनेवाला कोई नहीं होगा! सज़ा उन्हीं को मिलती है जो ठीक से काम करना नहीं जानते, जो लोग चालाक होते हैं – वे कुछ भी कर सकते हैं! कुछ भी!"

अचानक बाहर ज़ोर का धमाका हुआ और कोई चीज़ बहुत शोर करती हुई ज़मीन पर लुढ़ककर दरवाज़े के सामने आ लगी। दोनों चौंक पड़े और उन्होंने बातें करना बंद कर दिया।

"क्या था?" कुबड़े ने सहमकर धीरे से पूछा।

इल्या ने जाकर दरवाज़ा खोला और बाहर आंगन में झांका। तेज़ हवा झपटकर कमरे में घुस आयी – चीख़ती हुई, सीटी बजाती हुई और सरसराती हुई।

"कुछ बक्से गिर पड़े थे," इल्या ने दरवाज़ा बंद करके फिर खिड़की के पास जाते हुए कहा।

तेरेंती अपनी गठरियां खोलने के लिए फिर ज़मीन पर बैठ गया।

"सोचो तो तुम क्या कह रहे हो," वह इल्या से बोला। "ऐसी बात भी कोई कहता है भला – छिः, छिः, छिः! तुम्हारी नास्तिकता भगवान का कुछ नहीं बिगाड़ सकती, लेकिन वह तुम्हें ज़रूर तबाह कर सकती है। बड़ी ज्ञान की बात है यह! यात्रा में मुझे एक आदमी मिला था, उससे मैंने सुनी थी। कैसी-कैसी ज्ञान की बातें सुनने को मिलीं मुझे!"

फिर वह अनुभवों का बखान करने लगा; बोलते-बोलते वह कनखियों से अपने भतीजे की ओर देखता जाता था। लेकिन जो कुछ वह कह रहा था वह इल्या को बारिश के शोर जैसा ही लग रहा था; इल्या इन विचारों में खोया हुआ था कि वह अपने चाचा के साथ किस तरह रहेगा।

सच तो यह है कि दोनों एक-दूसरे के साथ काफ़ी अच्छी तरह रहते थे। तेरेंती ने चूल्हे और दरवाज़े के बीच बक्से जोड़कर अपने

लिए एक पलंग बना लिया था, उस कोने में जहां रात के वक़्त परछाइयां सबसे ज़्यादा घनी होती थीं। इल्या की ज़िंदगी का ढर्रा अच्छी तरह समझ लेने के बाद उसने वे सारे काम संभाल लिये थे जो किसी ज़माने में गावरिक किया करता था: वह समोवार गरम करता, दुकान की और कमरे की सफ़ाई करता, और जाकर शराबख़ाने से खाना लाता और ये सब काम करते हुए वह मुंह ही मुंह में किसी प्रार्थना के शब्द बुदबुदाता रहता। रात को वह अपने भतीजे को बताता कि किस तरह हैलेलूजा की बीवी ने अपने बच्चे को भट्ठी में फेंककर और उसकी जगह ईसा को अपनी गोद में लेकर उन्हें उनके दुश्मनों से बचाया था; किस तरह एक साधु लगातार तीन सौ साल तक चिड़ियों की आवाज़ें सुनता रहा था, संत शहीदों कीरिक और उलीता के बारे में और इसी तरह की बहुत-सी दूसरी बातें। उसकी बातें सुनकर इल्या का दिमाग़ अपने ही विचारों से भर जाता... कभी-कभी शाम को वह टहलने निकल जाता, और हमेशा शहर के बाहर खेतों की ओर खिंचा चला जाता, जहां हर चीज़ उसकी अपनी आत्मा की तरह ही शांत और अंधेरी और ख़ाली होती थी।

आने के हफ़्ते-भर बाद तेरेंती पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव से मिलने गया। वहां से वह लौटा तो बिल्कुल पस्त और निराश था, लेकिन जब इल्या ने इसकी वजह पूछी तो उसने झट से कहा:

"अरे, कुछ नहीं, कुछ नहीं। मैं वहां गया और सबसे मिला, और... और... बातें कीं।"

"याकोव कैसा है?" इल्या ने पूछा।

"याकोव का बुरा हाल है। याकोव इस दुनिया में बहुत दिन रहनेवाला नहीं है – बिल्कुल प्रेतों की तरह सफ़ेद पड़ गया है, और खांसता

तेरेंती चुप हो गया और बैठा कोने में घूरता रहा; वह बेहद उदास और दयनीय लग रहा था।

ज़िंदगी समतल, नीरस ढंग से चलती रही। हर दिन बिल्कुल उसी तरह किसी भी दूसरे दिन-सा होता था, जैसे एक ही टकसाल के ढले हुए सिक्के होते हैं। इल्या की आत्मा की गहराइयों में उदासी-भरी झुंझलाहट बहुत बड़े सांप की तरह कुंडली मारे बसी हुई थी

और उसके जीवन के सारे अनुभव को निगल गयी थी। उसके पुराने दोस्तों में से अब कोई भी उससे मिलने नहीं आता था: पावेल और माशा तो दूसरे ही रास्तों पर लग गये थे; मुटल्ली घोड़े से कुचलकर अस्पताल में मर गयी थी; पेफ़ींश्का न जाने कहां ग़ायब हो गया था। इल्या का इरादा याकोव से मिलने जाने का था लेकिन वह इसे टालता रहा; वह जानता था कि अपने मरते हुए दोस्त से कहने के लिए उसके पास कुछ नहीं था। सुबह वह अख़बार पढ़ता रहता, तीसरे पहर वह अपनी दुकान में बैठा पतझड़ की तेज़ हवा को पीली पत्तियां सड़क पर उड़ाकर ले जाते हुए देखता रहता। कभी-कभी कुछ पत्तियां उड़कर दुकान में भी आ जातीं...

"पुण्य परमपिता तीख़ोन, हमा-आ-रे लिए भगवान से प्रार्थना करना," तेरेंती कमरा साफ़ करते हुए सूखी पत्तियों की खड़खड़ाहट जैसी आवाज़ में गुनगुनाता रहता।

एक दिन इतवार को इल्या ने अख़बार खोलकर देखा तो उसकी नज़र एक कविता पर पड़ी जिसका शीर्षक था 'कल और आज। सो० नि० म० को समर्पित।' और उसके नीचे कवि का नाम लिखा था – 'पावेल ग्राचोव।'

> जिहालत के अंधे कुएं में पड़ा
> बहारें जवानी की खोता रहा,
> कभी यह न पूछा कि मंज़िल कहां?
> हक़ीक़त की राहों को रोता रहा!
> अंधेरा ही दिल में समेटे रहा,
> ख़यालों पे परदा, नज़र लापता,
> मगर रात-दिन मैं तरसता रहा,
> किरन रोशनी की, कहां है बता।
> अचानक निगाहों में सूरत तेरी
> फिरी इस तरह, ज्यों सबेरा हुआ,
> अंधेरा सिमटकर कहीं घुल गया
> जो डर रात का था वह जाता रहा।
> अंधेरे पे लानत, अंधेरा कहां!
> अंधेरे का जब वह ज़माना गया
> तो देखा, मुझे एक हमदम मिला
> औ' दुश्मन भी साफ़ पहचाना गया...

कविता पढ़कर इल्या ने ग़ुस्से से अख़बार फेंक दिया।

"कविताएं लिखो। अच्छे-अच्छे भाषण दो! दोस्त, दुश्मन! जिसका दिमाग़ नहीं चलता होगा, उसके तो सभी दुश्मन होंगे!" मुंह टेढ़ा करके उसने मुस्कराकर मन ही मन कहा। लेकिन अचानक, जैसे उसके अंदर बैठी हुई कोई दूसरी ही हस्ती हावी होती जा रही हो, उसने सोचा:

"अगर मैं ख़ुद ही जाकर उनसे मिल लूं – बस जाकर कहूं, 'लीजिये, मैं आ गया हूं, माफ़ कीजियेगा...'"

फ़ौरन उसने अपने आपसे पूछा: "लेकिन किसलिए?"

इस बहस का नतीजा यह निकला कि उसे पक्का यक़ीन हो गया कि और कुछ तो नहीं होगा बस उसे वहां से निकाल दिया जायेगा।

उसने कविता एक बार फिर पढ़ी और उसका मन पीड़ा और ईर्ष्या से भर उठा। और एक बार फिर वह उस लड़की के बारे में सोचने लगा: "वह बड़ी स्वाभिमानी है। वह मुझे उसी तरह देखेगी, और... और... मैं ख़ाली हाथ लौट आऊंगा।"

उसी अख़बार में छपी हुई बहुत-सी नोटिसों में उसे एक नोटिस वह भी दिखायी दी जिसमें कहा गया था कि तेईस सितंबर को सर्किट अदालत में वेरा कपितानोवा के मुक़द्दमे की सुनवाई होगी जिस पर चोरी का इल्ज़ाम है। यह पढ़कर उसका हृदय द्वेषपूर्ण आह्लाद से भर उठा।

"तुम बैठे कविता लिखते रहोगे, है न? और वह जेल में सड़ती रहेगी!"

"हे भगवान! मुझ पापी पर दया करना," तेरेंती आह भरकर और उदास भाव से सिर हिलाकर बुदबुदाया। उसने अपने भतीजे की ओर देखा जो अख़बार के पन्ने उलट रहा था।

"इल्या," उसने कहा।

"क्या है?"

"पेत्रूखा..." कुबड़ा दयनीय ढंग से मुस्कराया और चुप हो गया।

"क्या हुआ उसे?" इल्या ने पूछा।

"उसने मुझे लूट लिया," तेरेंती ने दबे स्वर में अपराधियों की तरह कहा और धीरे से मुस्करा दिया।

इल्या ने निरीह भाव से उसकी ओर देखा और पूछा:

"तुम दोनों ने मिलकर कितना चुराया था?"

तेरेंती ने अपनी कुर्सी मेज़ से दूर खिसकायी, सिर नीचे झुका लिया और दोनों हाथ घुटनों पर रखकर हिसाब लगाने में अपनी मदद के लिए उंगलियों पर गिनने लगा।

"कितना?" इल्या ने अपना सवाल दोहराया। "कोई दस हज़ार, है न?"

कुबड़े ने झटके के साथ अपना सिर ऊपर उठाया।

"दस?" वह आश्चर्य से बोला। "क्या कह रहे हो तुम? कुल मिलाकर तीन हज़ार छः सौ और कुछ थे। दस! अच्छी कही तुमने भी!"

"दादा येरेमेई के पास दस हज़ार से ज़्यादा थे," इल्या ने तिरस्कार-भरी हंसी के साथ कहा।

"यह झूठ है!"

"तुम ऐसा समझते हो? उसने मुझे खुद बताया था।"

"उसे गिनना भी आता था?"

"जितना तुम्हें और पेत्रूख़ा को आता है उससे कम तो नहीं आता था।"

तेरेंती ने अपना सिर फिर झुका लिया और विचारों में डूब गया।

"पेत्रूख़ा ने तुम्हारा कितना हिस्सा मारा है?" इल्या ने पूछा।

"कोई सात सौ..." तेरेंती ने आह भरकर कहा। "तो तुम्हारा कहना है कि उसके पास दस हज़ार से ज़्यादा थे? उसने इतना पैसा छिपाया कहां होगा? मैं तो समझा था कि हम लोग सारा निकाल ले गये थे... हो सकता है कि पेत्रूख़ा ने उसी वक़्त मुझे झांसा दिया हो, क्यों?"

"अपना मुंह बंद ही रखो," इल्या ने कठोरता से कहा।

"सच है, अब इसकी चर्चा करने से फ़ायदा भी क्या," तेरेंती ने गहरी आह भरकर सहमति प्रकट की।

इल्या इंसान के लालची स्वभाव के बारे में सोचने लगा, उन बुराइयों के बारे में जो आदमी पैसे के लोभ में करता है। अचानक वह कल्पना करने लगा कि उसके पास हज़ारों-लाखों रूबल हो गये हैं। अरे, कैसा मज़ा चखायेगा वह लोगों को! वह अपने सामने उनसे

नाक रगड़वायेगा। सचमुच... बदला लेने की लालसा के प्रवाह में बहकर उसने मेज़ पर ज़ोर से मुक्का मारा। आवाज़ सुनकर वह खुद चौंक पड़ा और उसने अपने चाचा की ओर एक नज़र देखा, जो अपना मुंह खोले और आंखों में भय छिपाये उसे देख रहा था।

"मैं बस कुछ सोच रहा था," इल्या ने उठते हुए खिसियाकर कहा।

"ऐसा भी होता है," कुबड़े ने अविश्वास से कहा। तेरेंती ने उसे दुकान में जाते देखा, उसके होंट निःशब्द हिल रहे थे... और हालांकि इल्या उसे देख नहीं रहा था, फिर भी वह अपनी पीठ पर उसकी संदेह-भरी दृष्टि का स्पर्श अनुभव कर रहा था। कुछ समय से वह महसूस कर रहा था कि उसका चाचा उसे ग़ौर से देखता था, उससे कुछ पूछना चाहता था, कोई बात समझना चाहता था। इसी वजह से इल्या उससे बातें करने से कतराने लगा था। जैसे-जैसे दिन बीतते गये उसे अपने चाचा की मौजूदगी से ज़्यादा झुंझलाहट होने लगी और वह अपने आपसे बार-बार पूछने लगा:

"इस तरह कितने दिन चलेगा?"

ऐसा लगता था कि उसके अंदर कोई फोड़ा पककर फूटनेवाला है; जीवन अधिकाधिक असह्य होता जा रहा था। सबसे बुरी बात तो यह थी कि उसका जी न कुछ करने को चाहता था और न कहीं जाने को। कभी-कभी उसे बिल्कुल साफ़ ऐसा महसूस होता था कि वह धीरे-धीरे एक अथाह अंधे कुएं में डूबता चला जा रहा है।

तेरेंती के वापस आने के थोड़े ही दिन बाद तात्याना व्लास्येव्ना, जो कुछ दिन के लिए कहीं बाहर गयी हुई थी, दुकान में आयी। ख़ाकी रंग की गाढ़े की क़मीज़ पहने उस गंवार कुबड़े को देखकर वह घृणा से अपने होंट भींचकर बोली:

"यही है आपका चाचा?"

"हां," इल्या ने रूखेपन से जवाब दिया।

"आपके साथ रहेगा?"

"ज़रूर..."

साझेदार की आवाज़ में ढिठाई का भाव देखकर उसने कुबड़े की ओर ध्यान देना बंद कर दिया। तेरेंती, जो गावरिक की जगह पर दरवाज़े के पास खड़ा था, अपनी दाढ़ी बटते हुए सुरमई रंग का लिबास

पहने हुए छरहरे बदन की इस छोटी-सी औरत को बड़ी दिलचस्पी से देखता रहा। इल्या भी उसे दुकान में गौरैया की तरह फुदकते देखता रहा और उम्मीद करता रहा कि वह सवाल पूछे तो वह कोई सख़्त जवाब देकर उसका दिल दुखाये। लेकिन कनखियों से उसने इल्या के ग़ुस्सैल चेहरे की जो झलक देखी उसकी वजह से उसने कोई और सवाल नहीं पूछा। वह बस काउंटर पर खड़ी बही-खाते के पन्ने उलटती रही और बताती रही कि गांव में ज़िंदगी कितनी सुखद होती है, वहां पैसा कितना कम ख़र्च होता है, और स्वास्थ्य के लिए कितना फ़ायदेमंद होता है।

"वहां एक छोटी-सी नदी थी – ऐसे मीठे पानी की, ऐसी शांत छोटी-सी नदी मैंने कभी देखी नहीं! और ऐसे मस्त साथी थे वहां, कि बस पूछो नहीं! उनमें से एक – जो तारघर में काम करता था – वायलिन बहुत अच्छा बजाता था ... मैंने वहां नाव खेना सीखा ... लेकिन किसानों के बच्चे! तुम सोच नहीं सकते कि वे किस तरह जान के पीछे पड़ जाते हैं। मच्छरों की तरह – भीख मांगते हुए चारों तरह भिन-भिनाते रहते हैं – यह दे दो, वह दे दो! उन्हें यह सब उनके मां-बाप सिखाते हैं ..."

"वे नहीं सिखाते," इल्या ने रूखेपन से कहा। "उनके मां-बाप दिन-भर काम करते हैं और बच्चों को देखनेवाला कोई नहीं होता ... आपका यह सोचना बिल्कुल ग़लत है।"

तात्याना व्लास्येव्ना ने आश्चर्य से उसे देखा और अपना मुंह इस तरह खोला जैसे कुछ कहने जा रही हो, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाती तेरेंती बड़े आदर के भाव से मुस्कराया और बोला:

"अब गांव में भले लोग रह नहीं गये हैं। एक ज़माना था कि हर गांव में वहां का ज़मींदार होता था जो बराबर वहीं रहता था। अब तो बस कभी-कभार ही वे वहां जा पाते हैं।"

तात्याना ने नज़रें घुमाकर उसकी ओर देखा, फिर इल्या की ओर, और कुछ कहे बिना फिर बही-खाता देखने लगी। तेरेंती परेशान होकर अपनी क़मीज़ मरोड़ने लगा। कई मिनट तक किसी ने भी कुछ नहीं कहा। बस जब कोई पन्ना पलटा जाता था तो उसकी सरसराहट से या जब तेरेंती अपना कूबड़ दरवाज़े के चौखट से रगड़ता था तो लकड़ी पर कपड़े के घिसने की आवाज़ से यह ख़ामोशी टूटती थी।

"तुम्हें," इल्या अचानक शांत रूखे स्वर में बोला, "अपने से ऊंची हैसियत के लोगों से बात करने से पहले उनकी इजाज़त लेनी चाहिये। 'माफ़ कीजियेगा, अगर आप मुझे कहने की इजाज़त दें ...' यह कहना चाहिये। और घुटने टेककर यह बात कहनी चाहिये।"

बही-खाता तात्याना व्लास्येव्ना के हाथ से छूटकर काउंटर के नीचे गिरने लगा लेकिन उसने बीच में ही उसे पकड़ लिया और उस पर ज़ोर से हाथ मारा और फिर ठहाका मारकर हंस पड़ी। तेरेंती सिर झुकाये सड़क पर खिसक गया ... यह देखकर तात्याना ने चुपके से एक नज़र इल्या के बिफरे हुए चेहरे पर डाली और धीरे से बोली:

"ग़ुस्सा हो? किस बात पर?"

उसकी नज़र में कुटिलता और कोमलता थी और उसकी आंखों में शरारत की चमक थी ... इल्या ने हाथ बढ़ाकर उसका कंधा पकड़ लिया ... सहसा उसका हृदय उसके प्रति घृणा और उसका आलिंगन करने की पाशविक लालसा से भर उठा, उसे कसकर अपने सीने से भींच लेने और उसकी नाज़ुक हड्डियों को चरमराता हुआ सुनने की लालसा से। दांत निकालकर इल्या उसे अपनी ओर खींच रहा था, लेकिन उसने उसकी बांह पकड़ ली और अपने आपको छुड़ाने की कोशिश की।

"रहने दो!.. मुझे छोड़ दो!.. दर्द होता है!.. क्या पागल हो गये हो?" वह दबी आवाज़ में बोली। "यह भी कोई प्यार-मुहब्बत करने की जगह है। और सुनो ... तुम अपने चाचा को भी अपने साथ नहीं रख सकते ... वह कुबड़ा है ... लोग उससे डर जायेंगे ... मुझे छोड़ दो! तुम्हें उसके लिए कोई दूसरी जगह ढूंढनी होगी ... सुन लिया?"

लेकिन इल्या ने उसे अपनी बांहों में दबोच लिया था और वह धीरे-धीरे अपना सिर उसकी फटी-फटी आंखोंवाले चेहरे पर झुका रहा था।

"क्या कर रहे हो? यहां नहीं ... छोड़ दो मुझे!"

अचानक मछली की तरह फिसलकर उसने अपने आपको इल्या की बांहों से छुड़ा लिया। उसकी आंखों के सामने जो धुंधलका छा गया था उसके पार इल्या ने उसे सड़क पर खुलनेवाले दरवाज़े के पास खड़ा देखा।

"तुम भी कैसे उजड्ड हो!" कांपते हाथों से अपने ब्लाउज़ को ठीक करते हुए उसने कहा। "थोड़ा-सा सब्र नहीं कर सकते?"

इल्या के दिमाग़ में दर्जनों प्रबल धाराओं का गर्जन गूंज रहा था। वह अपनी मुट्ठियां कसकर भींचे हुए काउंटर के पीछे निश्चल खड़ा था, और उसे इस तरह घूर रहा था जैसे केवल उसी में वह अपने जीवन की सारी बुराई और सारी व्यथा केंद्रित देख रहा हो।

"मुहब्बत का जुनून अच्छी चीज़ है, लेकिन अपने आप पर क़ाबू रखना भी आना चाहिये।"

"चली जाओ यहां से!" इल्या ने कहा।

"जा रही हूं... आज तो मैं तुमसे नहीं मिल सकती... लेकिन परसों – तेईस तारीख़ को – मेरा जन्मदिन है। आओगे?"

यह कहते हुए वह अपना जड़ाऊ पिन टटोलती रही और उसने इल्या की ओर देखा नहीं।

"चली जाओ यहां से!" इल्या ने फिर कहा; उसे पकड़कर यातना देने की प्रबल इच्छा से वह कांप रहा था।

वह चली गयी। उसके जाते ही तेरेंती आ गया।

"यह तुम्हारी साझेदार थीं?" उसने आदर के भाव से पूछा।

इल्या ने सिर हिला दिया और राहत की सांस ली।

"देखो तो उसे! इतनी छोटी-सी है, फिर भी..."

"इतनी घिनौनी," इल्या ने भारी स्वर में कहा।

"हूं," तेरेंती शंका के भाव से बुदबुदाया। इल्या को ऐसा लगा कि उसके चाचा की नज़रें उसकी थाह लेने की कोशिश कर रही थीं।

"घूर क्या रहे हो?" इल्या ने गुस्से से पूछा।

"मैं? दयालु भगवन्! क्यों, कुछ भी तो नहीं..."

"मैं जानता हूं कि मैं क्या कह रहा हूं। घिनौनी, यही है वह। मैं इससे भी बुरी बात कह सकता था और वह भी इतनी ही सच होती।"

"तो यह मामला है," कुबड़े ने सहानुभूति-भरे स्वर में शब्दों को खींच-खींचकर कहा।

"मामला क्या?" इल्या ने झिड़ककर कहा।

"मतलब यह..."

"मतलब क्या?"

इल्या के चिल्लाने से भयभीत और आहत होकर तेरेंती अपना बोझ एक टांग से दूसरी टांग पर बदलता रहा। उसका चेहरा दयनीय लग रहा था और उसकी आंखें झपक रही थीं।

"मतलब यह कि... तुम्हें मालूम है," उसने कुछ देर रुककर कहा।

मौसम पर उदासी छायी थी। कई दिन से लगातार पानी बरस रहा था। धुले हुए साफ़-सुथरे सड़क के स्लेटी रंग के पत्थर उदास भाव से आकाश को तक रहे थे, और लोगों के चेहरे भी उतने ही बुझे हुए और उदास थे। पत्थरों के बीच की दरारों में कीचड़ भर गया था जिसकी बदौलत उनका शीतल सुथरापन ज़्यादा अच्छा दिखायी दे रहा था; पेड़ों की पीली पत्तियों को मौत से पहले जैसी थरथरी ने आ दबोचा था। कोई फ़र के कपड़ों या क़ालीनों की गर्द झाड़ रहा था, और उसकी धप-धप की आवाज़ हवा को चीरती हुई सुनायी दे रही थी। सड़क के छोर पर घरों की छतों के ऊपर गहरे सुरमई और सफ़ेद बादल आसमान पर चढ़ रहे थे। बड़ी-बड़ी उमड़ती हुई लहरों की शक्ल में वे एक-दूसरे के ऊपर चढ़ते हुए निरंतर ऊंचे होते जा रहे थे, लगातार अपनी शक्ल बदलते जा रहे थे, कभी आग के धुएं जैसे लगने लगते थे, कभी पहाड़ों जैसे, कभी किसी नदी की मटमैली लहरों जैसे, और ऐसा लगता था कि वे इन सुरमई ऊंचाइयों पर केवल इस उद्देश्य से चढ़ रहे थे कि घरों पर, पेड़ों पर और नीचे की धरती पर और भी ज़्यादा ज़ोर से टूट पड़ें। अपने ऊपर की बादलों की इस चलती-फिरती दीवार को ध्यान से देखते हुए लुन्योव सर्दी और घोर निराशा से कांप उठा, और मन ही मन कहने लगा:

"मुझे सब कुछ छोड़ देना होगा... यह दुकान और हर चीज़... मेरा चाचा तात्याना के साथ मिलकर यह कारोबार चला सकता है... और मैं कहीं चला जाऊंगा..."

उसकी कल्पना की दृष्टि में एक तसवीर थी दूर तक फैले हुए भीगे-भीगे खेतों की, सुरमई बादलों से ढके हुए विस्तृत आकाश की, एक चौड़ी-सी सड़क की जिसके दोनों ओर बर्च के पेड़ लगे हुए थे, और उस सड़क पर वह ख़ुद चला जा रहा था, उसके पांव कीचड़ में धंसे जा रहे थे, उसके चेहरे पर बारिश का ठंडा पानी थपेड़े मार रहा था। और खेतों में या सड़क पर कोई दूसरा जीव नहीं था... पेड़ों

पर कौए तक नहीं थे। सिर के ऊपर मूक भाव से चलते हुए घने बादलों के अलावा कुछ भी नहीं...

"मैं अपने आपको मार डालूंगा," उसने उदासीन भाव से सोचा।

दो दिन बाद सबेरे उठने पर उसकी नज़र खुले कैलेंडर में काले अक्षरों में लिखी हुई '२३' की गिनती पर पड़ी, और उसे याद आया कि यही तो वेरा के मुक़द्दमे की सुनवाई की तारीख़ थी। दुकान से भाग निकलने का बहाना पाकर वह बहुत खुश था, और उसे उस लड़की के अंजाम से गहरी दिलचस्पी भी थी। जल्दी-जल्दी एक गिलास चाय गले से उतारकर वह तेज़ क़दमों से अदालत की ओर चल पड़ा। अभी अदालत लगने में बहुत देर थी इसलिए किसी को अंदर नहीं जाने दिया जा रहा था; उसने देखा कि फाटक के पास कुछ लोग एक गरोह में खड़े दरवाज़ा खुलने का इंतज़ार कर रहे थे। लुन्योव भी उनमें जा मिला और दीवार से पीठ लगाकर खड़ा हो गया। अदालत के सामने एक बड़ा-सा चौक था जिसके बीच में एक गिरजाघर था। पीला थका हुआ सूरज बादलों के बीच से झांककर आंखमिचौली खेल रहा था। मुश्किल से एक मिनट भी नहीं बीतने पाता था कि चौक के छोर पर एक छाया गिरती थी और पेड़ों और सड़क के पत्थरों पर सरकती हुई आगे बढ़ती आती थी, इतनी गहरी और घनी छाया कि उसके बोझ से डालें नीचे झुक जाती थीं; वह रेंगती हुई गिरजाघर पर चढ़ जाती थी और धीरे-धीरे सीढ़ियों से लेकर सलीब तक उसे ढक लेती थी, फिर वहां से लुढ़कती हुई नीचे आ गिरती थी, और चुपके-चुपके दबे पांव आगे अदालत की इमारत की ओर और उसके फाटक पर इंतज़ार में खड़े हुए लोगों की ओर बढ़ती थी...

ये उड़े हुए रंग के, भूखे चेहरेवाले लोग थे। वे थकी-थकी आंखों से एक-दूसरे को देखते थे और बोलते बहुत धीरे-धीरे थे। उनमें से एक आदमी, जिसके बाल लंबे-लंबे थे और जो एक पिचकी हुई हैट लगाये था और ठोड़ी तक के बटन लगाये हुए पतला-सा ओवरकोट पहने था, ठिठुरी हुई लाल उंगलियों से अपनी नुकीली लाल दाढ़ी बट रहा था और जगह-जगह से फटे हुए जूतों में अपने पांव बेसब्री से पटक रहा था। एक और आदमी, जो पैवंद लगा हुआ लंबा टख़ने तक का कोट पहने था और जिसने अपनी टोपी आंखों पर नीची झुका रखी थी,

अपना सिर सीने पर लटकाये, एक हाथ कोट में घुसेड़े और दूसरा जेब में डाले खड़ा था। ऐसा लग रहा था कि वह ऊंघ रहा है। जैकेट और घुटनों तक के जूते पहने काले बालोंवाला एक आदमी बिल्कुल भंवरे जैसा लग रहा था। वह कुछ बेचैन क़िस्म का था; वह रह-रहकर अपना पीला तीखे नाक-नक़्शेवाला चेहरा आसमान की ओर उठाता था, अपने आप सीटी बजाता रहता था, अपनी भवें सिकोड़ लेता था और जीभ से अपनी मूंछ पकड़ने की कोशिश करता रहता था। वह दूसरे सब लोगों से ज़्यादा बातूनी था।

"दरवाज़ा खुल रहा है न?" वह अपना सिर टेढ़ा करके कान लगाकर सुनते हुए चिल्लाया। "अभी नहीं... हुंः!..वक़्त तो हो गया होगा... लाइब्रेरी गये थे, मेरे यार?"

"नहीं, अभी जल्दी है," घड़ियाल पर मुगरी की चार चोटों जैसी आवाज़ में जवाब मिला। यह जवाब लंबे बालोंवाले आदमी ने दिया था।

"लानत है, यहां तो बड़ी सर्दी है!"

लंबे बालोंवाले ने बड़ी हमदर्दी से ख़र्राटा लिया, फिर विचारमग्न होकर बोला:

"अगर ये लाइब्रेरियां और अदालतें न होतीं तो हम लोग गरमाने के लिए कहां जाते?"

काले बालोंवाले ने कुछ कहे बिना अपने कंधे बिचका दिये। इल्या उन्हें ध्यान से देखता रहा और उनकी बातें सुनता रहा। उसने देखा कि ये वे लोग थे जो अपना पेट पालने के लिए तरह-तरह की तिकड़में करते थे, जैसे किसानों के लिए बिल्कुल बेकार दस्तावेज़ तैयार करके उन्हें धोखा देना।

फाटक के पास सड़क की पटरी पर कबूतरों का एक जोड़ा आकर उतरा। नर, जो मोटा था और जिसका ढीला-ढाला पोटा लटक आया था, अपनी मादा के चारों ओर इठला-इठलाकर चक्कर काट रहा था और ज़ोर-ज़ोर से गुटर-गूं की आवाज़ कर रहा था।

"शिः!" काले बालोंवालें ने चिल्लाकर कहा। लंबे कोटवाला चौंक पड़ा और उसने अपना सिर उठाकर देखा। उसका चेहरा सूजा हुआ था और काला पड़ने लगा था और उसकी आंखें पथरायी हुई सी लग रही थीं।

"मैं कबूतरों को बर्दाश्त नहीं कर सकता!" चिड़ियों को उड़ते देखकर काले बालोंवाले ने कहा। "इतने मोटे होते हैं... जैसे पैसेवाले दुकानदार। और उनकी गुटर-गूं की आवाज़ से तो नफ़रत होती है। क्या आपके ऊपर कोई मुक़द्दमा चल रहा है?" उसने अचानक इल्या से पूछा।

"नहीं..."

काले बालोंवाले ने सिर से पांव तक उस पर नज़र डाली।

"अजीब बात है," वह नाक के सुर में धीरे-धीरे बोला।

"इसमें अजीब क्या बात है?" इल्या ने विकृत मुस्कराहट के साथ पूछा।

"आपकी सूरत मुल्ज़िमों जैसी है!" उस आदमी ने जल्दी से कहा। "लो, दरवाज़ा खुल रहा है..."

दरवाज़ा खुलते ही सबसे पहले वही अंदर घुस गया। उसकी बात से चिढ़कर इल्या उसके पीछे-पीछे अंदर घुसा और उसने लंबे बालोंवाले के अपने कंधे से धक्का दिया।

"इतनी जल्दी न कर, उजड्ड," उस आदमी ने शांत भाव से कहा। लेकिन इस बार उसने इल्या को धक्का मारा और उससे आगे निकल गया।

इल्या ने उसकी इस हरकत का बुरा उतना नहीं माना जितना कि उस पर उसे आश्चर्य हुआ।

"अजीब बात है; धक्का देकर आगे ऐसा निकला जा रहा है जैसे बड़ा रईसज़ादा है कहीं का, और सूरत तो देखो इसकी," इल्या ने सोचा।

अदालत के कमरे में सन्नाटा और उदासी थी। हर चीज़ बोझल और रोबीली थी: हरी बनात से ढकी हुई लंबी-सी मेज़, ऊंची पीठवाली कुर्सियां, तसवीरों के सुनहरे फ़्रेम, ज़ार की आदमक़द तसवीर, जूरी की उन्नाबी रंग की कुर्सियां, कटहरे के पीछे बड़ी-सी लकड़ी की बेंच। खिड़कियां मोटी-मोटी स्लेटी दीवारों में गहरी धंसी हुई थीं; उन पर भारी-भारी सिलवटोंवाले परदे पड़े हुए थे और उनके कांच धुंधले पड़ गये थे। भारी-भरकम दरवाज़े बिना आवाज़ किये हुए खुलते थे और वर्दी पहने हुए लोगों के क़दम भी उसी तरह बे-आवाज़ पड़ते

थे। इल्या ने आंखें फाड़कर अपने चारों ओर देखा; उसे बहुत डर लगा और जब पेशकार ने एलान किया कि "हुज़ूर अदालत तशरीफ़ लाते हैं!" तो वह चौंक पड़ा और सबसे पहले उछलकर खड़ा हो गया, हालांकि उसे पता भी नहीं था कि अदालत का दस्तूर है कि सबको खड़ा होना चाहिये। अदालत में जो चार आदमी दाखिल हुए उनमें ग्रोमोव भी था, वही आदमी जो इल्या की दुकान के सामनेवाले घर में रहता था। वह बीचवाली कुर्सी पर बैठ गया, बालों पर अपने दोनों हाथ फेरे, उन्हें बिखेर लिया, और अपना कारचोबी कालर सीधा किया। उसकी सूरत देखकर इल्या को कुछ ढाढ़स बंधा; उसका चेहरा हमेशा की तरह लाल और खिला हुआ था लेकिन उसकी मूंछें ऊपर की ओर ऐंठी हुई थीं। उसके दाहिनी ओर चश्मा लगाये हुए एक देखने में बहुत भला-सा बूढ़ा आदमी बैठा था, जिसके छोटी-सी सफ़ेद दाढ़ी थी और जिसकी नाक ऊपर को उठी हुई थी; उसके बायें हाथ पर एक गंजा आदमी बैठा था, जिसकी लाल दाढ़ी दो फांकों में बंटी हुई थी और जिसका चेहरा लकड़ी जैसा निर्जीव और फीका था। एक नौजवान-सा जज, जिसका सिर गोल था और जिसके बाल बहुत छोटे कटे हुए थे और आंखें बाहर को उभरी हुई थीं, ऊंची डेस्क के पास खड़ा हुआ था। कुछ देर तक वे सब चुप रहे और उन्होंने मेज़ पर रखे हुए काग़ज़ उलट-पुलटकर देखे। इल्या रोब खाकर उन्हें देखता रहा; वह इंतज़ार कर रहा था कि उनमें से कोई अभी उठ खड़ा होगा और ऊंची आवाज़ में कोई बहुत महत्त्वपूर्ण बात कहेगा।

अचानक बायीं ओर अपना सिर घुमाने पर इल्या को पेत्रूखा फ़िलिमोनोव का जाना-पहचाना, चर्बीला, वार्निश की तरह चमकता हुआ चेहरा दिखायी दिया। वह उन्नाबी रंग की कुर्सियों की पहली क़तार में पीछे सिर टिकाये बैठा था और गंभीर मुद्रा से पब्लिक को घूर रहा था। दो बार उसकी नज़रें इल्या के चेहरे पर से छिछलती हुई गुज़र गयीं और दोनों बार इल्या का जी चाहा कि वह उछलकर पेत्रूखा से या ग्रोमोव से या आम तौर पर पूरी अदालत से कुछ कहे।

"अरे, चोर... अपने बेटे को कितनी बुरी तरह पीटा था..." ये थे वे शब्द जो इल्या के दिमाग़ में बिजली की तरह कौंध गये, और इसके साथ ही उसे अपने गले में जलन-सी महसूस हुई।

"तुम्हारे खिलाफ़ इल्ज़ाम है कि ..." ग्रोमोव बड़ी नरमी से कह रहा था, लेकिन इल्या को वह आदमी दिखायी नहीं दे रहा था जिसे संबोधित किया जा रहा था; उसकी नज़रें पेत्रूखा के चेहरे पर जमी हुई थीं और पेत्रूखा को यहां दूसरों का फ़ैसला सुनाने के लिए मौजूद पाने की भयानक असंगति को वह किसी तरह बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था।

"क्या मुल्ज़िम हमें यह बतायेगा," सरकारी वकील हाथ से अपना माथा रगड़ते हुए मुर्दा आवाज़ में कह रहा था, "कि उसने सचमुच दुकानदार अनीसिमोव से यह बात कही थी, 'ठहर जाओ! मैं तुम्हें मज़ा चखाऊंगा!'?"

एक छोटे-से रोशनदान का पल्ला बेधती हुई चीख की आवाज़ पैदा करता हुआ अपने क़ब्ज़े पर घूमा:

"चीं-ईं-ईं!"

इल्या को जूरी में जान-पहचान के दो और आदमी दिखायी दिये। पेत्रूखा के पीछे उससे ज़्यादा ऊंचाई पर सिलाचोव नामक एक ठेकेदार बैठा था। वह तगड़ा-सा आदमी था जिसके हाथ बहुत लंबे और जिसका छोटा-सा चेहरा बहुत कठोर था; वह पेत्रूखा का दोस्त था और अकसर आकर उसके साथ ड्राफ़्ट खेला करता था। लोग कहते थे कि एक बार अपने किसी मज़दूर से कहा-सुनी हो जाने पर उसने उसे पाड़ पर से नीचे ढकेल दिया था और वह आदमी बुरी तरह घायल होकर बाद में मर गया था। सामनेवाली क़तार में पेत्रूखा से एक कुर्सी छोड़कर बिसात-खाने की एक बहुत बड़ी दुकान का मालिक दोदोनोव बैठा था। इल्या अकसर उसके यहां से सामान खरीदा करता था और जानता था कि वह बेरहम और लालची था।

"गवाह! जब आपने अनीसिमोव का घर जलते हुए देखा ..."

"चीं-ईं-ईं!" खिड़की से चीख की आवाज़ निकली और इल्या के अंदर भी जैसे कोई चीज़ चीख पड़ी।

"बेवक़ूफ़!" इल्या के पास बैठे हुए आदमी ने दबी ज़बान से कहा। इल्या ने मुड़कर देखा – वही काले बालोंवाला आदमी था। उसने तिरस्कार से अपने होंट टेढ़े किये।

"कौन?" इल्या ने उसे निस्तेज आंखों से घूरते हुए धीरे से पूछा।

"वही मुल्ज़िम। उसे गवाह की धज्जियां उड़ा देने का इतना

बढ़िया मौक़ा मिला था, लेकिन उसने वह मौक़ा हाथ से निकल जाने दिया। अगर उसकी जगह मैं होता, तो ..."

इल्या ने मुल्ज़िम की तरफ़ देखा। वह लंबे क़द का नुकीले सिरवाला एक देहाती-सा आदमी था। उसकी सूरत से डर और जिहालत टपक रही थी, और उसके दांत उस थके और सताये हुए कुत्ते की तरह खुले हुए थे जो भागते-भागते ऐसे कोने में पहुंच गया हो जहां से निकलने का कोई रास्ता न हो और जिसे ऐसे दुश्मनों ने घेर रखा हो जिनसे लड़ने की उसमें ताक़त न रह गयी हो। पेत्रूखा, सिलाचोव, दोदोनोव और दूसरों ने पेट-भरे लोगों जैसी अपनी गंभीर दृष्टि उसकी ओर फेरी। इल्या को ऐसा लगा कि वे मन ही मन कह रहे थे:

"अगर पकड़ा गया तो ज़रूर अपराधी है।"

"कोई मज़ा नहीं आया," पास बैठे हुए आदमी ने कहा। "ज़रा भी दिलचस्प मुक़द्दमा नहीं है। मुल्ज़िम बुद्धू है, सरकारी वकील ढुलमुल है, गवाह सब बेवक़ूफ़ हैं, जैसा कि हमेशा होता है। अगर मैं सरकारी वकील होता, तो मैं दस मिनट में उसका काम तमाम कर देता ..."

"क्या वह सचमुच अपराधी है?" इल्या ने दबी ज़बान से पूछा, वह ऐसे कांप रहा था जैसे उसे सर्दी लग रही हो।

"लगता तो नहीं है। लेकिन उसे सज़ा ज़रूर मिलेगी। उसे अपनी सफ़ाई पेश करना नहीं आता ... देहातियों को आम तौर पर अपनी सफ़ाई पेश करना नहीं आता। सब बिल्कुल निकम्मे होते हैं! हाड़-मांस तो ढेरों होता है, लेकिन समझ-बूझ में बिल्कुल कोरे होते हैं।"

"सच बात है ..."

"तुम्हारे पास बीस कोपेक हैं?" उस आदमी ने अचानक पूछा।

"हां ..."

"मुझे दे दो ..."

इल्या ने अपना बटुआ निकालकर उसे पैसे दे दिये; उसे यह सोचने का भी वक़्त नहीं मिला कि पैसे देने चाहिये या नहीं। फिर उसने कनखियों से उस आदमी को देखकर अनायास ही प्रशंसा के भाव से सोचा:

"आदमी बड़ा चलता पुरज़ा है।"

"मेंबराने-जूरी," सरकारी वकील ने बड़ी नरमी से, रोबदार

लहजे में कहा, "इस आदमी की सूरत देखिये। इसकी सूरत तमाम गवाहों की उन गवाहियों से बढ़कर है, जिनसे इसका जुर्म पूरी तरह साबित हो चुका है। इसकी सूरत देखकर नामुमकिन है कि आपको यह यक़ीन न आ जाये कि आपके सामने एक छंटा हुआ मुजरिम खड़ा है, क़ानून का दुश्मन, समाज का दुश्मन..."

इस बात से कि "समाज के दुश्मन" के बारे में कहा गया था कि वह खड़ा है जबकि दरअसल वह बैठा हुआ था, ऐसा लगा कि वह कुछ सिटपिटा गया, क्योंकि वह धीरे-धीरे उठकर खड़ा हो गया। उसका सिर झुका हुआ था, उसके दोनों हाथ बग़ल में झूल रहे थे, और उसका पूरा लंबा और मुरझाया हुआ शरीर झुका हुआ था, मानो वह भाड़ की तरह खुले हुए इंसाफ़ के जबड़ों में छलांग लगाने को तैयार हो...

जब ग्रोमोव ने थोड़ी देर के लिए अदालत बर्ख़ास्त होने का एलान किया तो इल्या और वह काले बालोंवाला आदमी दोनों बाहर बरामदे में चले गये। उस आदमी ने अपने कोट की जेब में से एक दबी हुई सिगरेट निकालकर उसे सीधा करते हुए कहा:

"क़सम खाकर कहता है कि वह बेगुनाह है, बेवक़ूफ़ कहीं का। कहता है कि आग उसने नहीं लगायी। यहां क़सम खाने से कुछ नहीं होता; बस; अपराध चुपचाप मान लेना होता है। यह मामला बहुत संगीन है... दुकानदार को नुक़सान पहुंचा है।"

"क्या आप समझते हैं कि वह सचमुच अपराधी है?" इल्या ने विचारमग्न होकर पूछा।

"शायद है, क्योंकि वह बेवक़ूफ़ है। चालाक लोग कभी अपराधी नहीं ठहराये जाते," उस आदमी ने अकड़कर सिगरेट का कश लिया और जल्दी-जल्दी बोलते हुए विरक्त भाव से कहा।

"जूरी में ऐसे-ऐसे लोग बैठे हैं..." इल्या ने धीमे और तनाव-भरे स्वर में कहना शुरू किया।

"लोग नहीं – दुकानदार, उनमें से ज़्यादातर," काले बालोंवाले आदमी ने शांत भाव से उसकी बात को ठीक किया।

इल्या ने जल्दी से एक नज़र उस पर डाली। "उनमें से कुछ को मैं जानता हूं..." वह बोला।

"अच्छा!"

"अगर सच पूछो तो बड़े बेहूदा लोग हैं!"

"सब डाकू हैं," उस आदमी ने ऊंचे स्वर में समर्थन करते हुए कहा।

उसने सिगरेट फेंक दी और होंठ गोल सिकोड़कर सीटी बजाने लगा और ढिठाई से सबको घूरकर देखने लगा। उसका सारा शरीर, उसकी एक-एक हड्डी झटके खाने लगी और भूख से तड़पने लगी।

"कोई नयी बात नहीं है। कुल मिलाकर देखा जाये तो जिसे हमारा इंसाफ़ कहा जाता है वह ज़्यादातर एक स्वांग होता है – बिल्कुल ढोंग," उसने अपने कंधे चलाते हुए कहा। "भूखे लोगों की कुकर्म की प्रवृत्तियों को सुधारने की कोशिश करके पेट-भरे लोगों के दिमाग़ की कुछ कसरत हो जाती है। मैं अपना काफ़ी वक़्त अदालतों में बिताता हूं, लेकिन मैंने आज तक कभी नहीं देखा कि भूखा आदमी किसी पेट-भरे आदमी पर मुक़द्दमा चलाये। अगर कभी ऐसा होता है कि कोई पेट-भरा आदमी अपनी ही बिरादरी के किसी आदमी पर मुक़द्दमा चलाये, तो वह लालच की वजह से ही ऐसा करता है, उसे सबक़ सिखाने के लिए ताकि वह सब कुछ न हड़प ले, कुछ उसके लिए भी छोड़ दे।"

"जैसी कि मसल मशहूर है 'जाके फटी न पैर बेवाई, सो का जानै पीर पराई'," इल्या ने कहा।

"यह सब बकवास है! वे बहुत अच्छी तरह समझते हैं – इसीलिए तो वे इतनी सख़्ती बरतते हैं..."

"अगर वे पेट-भरे हों और ईमानदार हों तब तो कोई हर्ज नहीं है," इल्या ने धीमी आवाज़ में कहा, "लेकिन जब वे पेट-भरे होने के साथ ही बदमाश भी हों तब वे दूसरों का इंसाफ़ कैसे कर सकते हैं?"

"बदमाश तो सबसे ज़्यादा सख़्ती से इंसाफ़ करते हैं," काले बालोंवाले आदमी ने गंभीर होकर अपनी राय दी। "ख़ैर, अब एक चोरी के मामले की सुनवाई है।"

"उसमें जो मुल्ज़िम है वह मेरी जान-पहचान की है..." इल्या ने धीरे से कहा।

"अच्छा," उस आदमी ने जल्दी से इल्या पर एक नज़र डालते

हुए कहा। "ज़रा देखें तो तुम्हारी इस जान-पहचानवाली को..."

इल्या का दिमाग़ उलझा हुआ था। वह इस चलते-पुरज़े आदमी से, जो अपने शब्द वैसे ही उंडेलता रहता था जैसे कोई टोकरी में से मटर के दाने उंडेल रहा हो, बहुत-सी बातें पूछना चाहता था, लेकिन उसमें कोई ऐसी अरुचिकर और डरावनी बात थी जिसकी वजह से वह उससे पूछ नहीं पा रहा था। फिर भी यह आभास कि पेत्रूख़ा यहां इंसाफ़ करने के लिए बैठा हुआ था इतना बड़ा बोझ था कि वह उसके नीचे दबा जा रहा था और यह आभास बाक़ी हर चीज़ पर छा गया था। वह लोहे के एक ऐसे शिकंजे की तरह था जो बाक़ी तमाम चीज़ों को उसके दिल से निचोड़कर बाहर निकाले दे रहा था।

अदालत के कमरे में घुसते वक़्त उसकी नज़र पावेल ग्राचोव की गुद्दी और उसके छोटे-छोटे कानों पर पड़ी। ख़ुश होकर उसने पावेल के कोट की आस्तीन पकड़कर खींची और उसकी ओर देखकर खिलकर मुस्करा दिया। जवाब में पावेल भी मुस्करा दिया, लेकिन कुछ अनमनेपन से और बहुत कोशिश करके।

कई क्षण तक दोनों कुछ कहे बिना एक-दूसरे के सामने खड़े रहे; दोनों ही ने कोई ऐसी बात महसूस की होगी कि दोनों एक साथ बोल पड़े।

"तमाशा देखने आये हो?" पावेल ने टेढ़ी मुस्कराहट के साथ पूछा।

"वह आयी है?" इल्या ने झेंपते हुए पूछा।

"कौन?"

"वही, तुम्हारी सोफ़िया..."

"वह मेरी नहीं है," पावेल ने उसकी बात काटते हुए रुखाई से जवाब दिया।

वे अदालत के कमरे में पहुंच चुके थे।

"साथ-साथ बैठेंगे," इल्या ने सुझाव रखा।

पावेल संकोच करने लगा।

"बात यह है... मेरे साथ कुछ दोस्त हैं..."

"अच्छा, कोई बात नहीं।"

"अच्छा, मैं चलता हूं।"

पावेल जल्दी से चला गया। उसे जाता देखकर इल्या को ऐसा

लगा कि जैसे पावेल ने उसके शरीर के किसी घाव को बड़ी बेरहमी से छेड़ दिया हो। उसके सारे शरीर में टीस-सी दौड़ गयी। यह देखकर उसे बड़ी तकलीफ़ हो रही थी कि पावेल ने बहुत बढ़िया नया कोट पहन रखा था, और यह भी देखकर कि पिछले कुछ महीनों में उसका चेहरा साफ़-सुथरा और तनदुरुस्त दिखायी देने लगा था। जिस बेंच की ओर पावेल गया था उस पर गावरिक की बहन बैठी हुई थी। पावेल ने उससे कुछ कहा और उसने झट से मुड़कर इल्या की ओर देखा। उसका आगे को तना हुआ झुका चेहरा देखकर इल्या ने मुंह फेर लिया, और उसने जो दर्द और जो ग़ुस्सा महसूस किया उसने उसके दिल को और भी मज़बूती से अपनी लपेट में ले लिया।

वेरा अंदर लायी गयी। वह अपना स्लेटी रंग का जेल का लिबास पहने और अपने सिर पर रूमाल बांधे कटहरे के पीछे खड़ी थी। सुनहरे बालों की एक लट उसकी बायीं कनपटी पर पड़ी थी, उसके गाल पीले पड़ गये थे, उसके होंट भिंचे हुए थे, और वह अपनी बायीं आंख फाड़े घूर रही थी।

"जी हां... जी हां... नहीं..." उसके शब्दों की अस्पष्ट ध्वनि उसके कानों में पड़ रही थी।

ग्रोमोव उसे बड़ी दया की दृष्टि से देख रहा था और उससे इतनी नरमी से बोल रहा था जैसे बिल्ली घुरघुराती है।

"कपितानोवा, क्या तुम इक़रार करती हो कि उस दिन रात के वक़्त..." उसकी भरपूर, लचीली आवाज़ वेरा के कानों तक पहुंच रही थी।

इल्या ने एक नज़र पावेल पर डाली, जो दोहरा-सा होकर मुंह लटकाये बैठा हाथों में अपनी टोपी मसल रहा था। उसकी बग़ल में बैठी हुई लड़की सीधी तनकर बैठी थी और उसके चेहरे का भाव साफ़ कह रहा था कि वह वहां पर मौजूद सभी लोगों के बारे में फ़ैसला सुना रही थी: वेरा के बारे में, जजों के बारे में, जूरी के बारे में और पब्लिक के लोगों के बारे में। वह बराबर अपना सिर एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ घुमा रही थी, उसकी होंटों पर तिरस्कार का भाव था, और चढ़ी हुई भवों के नीचे से झांकती हुई उसकी गर्वीली आंखों में एक कठोर, क्रूर चमक थी...

"मैं इक़रार करती हूं," वेरा ने कहा। उसकी आवाज़ में बेहद गूंज थी; वह आवाज़ बिल्कुल वैसी ही लग रही थी जैसी चीनी के चिटके हुए प्याले पर चोट मारने से पैदा होती है।

जूरी के दो आदमी – दोदोनोव और उसके पास बैठा हुआ लाल बालों और चिकने चेहरेवाला आदमी – आवाज़ किये बिना अपने होंट हिला रहे थे और उस लड़की को देखकर उनकी आंखें मुस्करा रही थीं। पेत्रूखा फ़िलिमोनोव ने अपना पूरा शरीर आगे की ओर बढ़ा लिया, उसका चेहरा पहले से भी ज़्यादा लाल हो गया और उसके गलमुच्छे फड़कने लगे। जूरी के कुछ दूसरे लोग भी अपना सारा ध्यान केंद्रित करके वेरा को घूर रहे थे; इल्या इसकी वजह जानता था और इस बात से उसे घिन आने लगी।

"ये लोग उसका फ़ैसला करेंगे, और वे खुद अपनी नज़रों से उसके जिस्म को टटोल रहे हैं," उसने दांत भींचकर सोचा। उसका जी चाह रहा था कि चिल्लाकर पेत्रूखा से कहे, "अरे, हरामी! तेरे दिमाग़ में इस वक़्त क्या बात उठ रही है?"

उसके गले में कुछ अटक गया, जिसकी वजह से उसकी सांस रुकने लगी।

"अच्छा, यह बताओ... क्या नाम है तुम्हारा... कपितानोवा," सरकारी वकील ने धीरे-धीरे अपनी ज़बान चलाते हुए और गर्मी से परेशान दुंबे की तरह अपनी आंखें नचाते हुए कहा, "क्या तुम बहुत दिन से पेशा कर रही हो?"

वेरा ने अपने मुंह पर हाथ फेरा, मानो यह सवाल उसके तमतमाये हुए गाल पर चिपककर रह गया हो।

"जी हां।"

उसके उत्तर में दृढ़ता थी। सुननेवालों में सांप के रेंगने की सरसराहट जैसी खुसर-पुसर की लहर दौड़ गयी। पावेल ने अपना सिर और नीचे झुका लिया, मानो उसे छिपाने की कोशिश कर रहा हो, और अपनी टोपी को मसलता रहा।

"ठीक-ठीक बताओ, कितने अरसे से?"

वेरा ने कोई जवाब नहीं दिया; वह बस अपनी गंभीर कठोर नज़रें ग्रोमोव पर जमाये खड़ी रही।

"एक साल से? दो साल से? पांच साल से?" सरकारी वकील अपने सवाल पर अड़ा रहा।

उसने फिर भी कोई जवाब नहीं दिया। वह ऐसे निश्चल खड़ी थी और उसका रंग इतना फीका पड़ गया था कि लगता था उसे पत्थर से काटकर बनाया गया है; बस उसके सीने पर पड़े हुए रूमाल के छोर हिलडुल रहे थे।

"अगर तुम जवाब न देना चाहो तो तुम्हें इंकार कर देने का हक़ है," ग्रोमोव ने अपनी मूंछों पर हाथ फेरते हुए कहा।

यह सुनकर वेरा का वकील उछलकर खड़ा हो गया। वह एक दुबला-पतला, नुकीली दाढ़ी और बादाम की शक्ल की आंखोंवाला आदमी था। उसकी नाक लंबी और पतली थी और उसके सिर का पिछला हिस्सा चौड़ा था जिसकी वजह से उसकी शक्ल कुछ फरसे जैसी लगती थी।

"जूरी को बताओ कि तुम यह धंधा अपनाने के लिए किन बातों की वजह से मजबूर हुईं, कपितानोवा," उसने ऊंचे और तीखे स्वर में कहा।

"मुझे किसी बात ने मजबूर नहीं किया," वेरा ने सीधे अपने जजों की आंखों में आंखें डालकर कहा।

"हूं। ऐसी बात नहीं है। मैं दरअसल, जानता हूं... मेरा मतलब है कि तुमने खुद मुझे बताया था..."

"आप कुछ नहीं जानते हैं," वेरा ने कहा। उसने मुड़कर कठोर दृष्टि से अपने वकील की ओर देखा; उसकी आवाज़ में गुस्सा था, "मैंने आपको कुछ नहीं बताया था..."

मुक़द्दमे की कार्रवाई सुनने के लिए आये हुए लोगों पर जल्दी से एक नज़र डालकर वह अपने जजों की ओर मुंह करके अपने वकील की तरफ़ सिर से हल्का-सा इशारा करके बोली, "क्या मुझे इजाज़त है कि मैं इनसे बात न करूं?"

एक बार फिर सांप सरसराया, लेकिन इस बार ज़्यादा ज़ोर से और ज़्यादा खुले तौर पर।

इल्या तनाव महसूस करके कांप उठा और उसने पावेल की ओर देखा।

वह उससे कुछ उम्मीद कर रहा था, बहुत पक्के तौर पर उम्मीद कर रहा था। लेकिन पावेल अपने सामनेवाले आदमी के पीछे से देखता रहा और उसने एक शब्द भी नहीं कहा, वह अपनी जगह से हिला तक नहीं। ग्रोमोव ने मुस्कराते हुए कुछ चिकने-चुपड़े शब्द कहे, जिसके बाद वेरा धीमे दृढ़ स्वर में बोलने लगी :

"मैं बस अमीर बन जाना चाहती थी... मैंने पैसा लिया, बात बस इतनी ही है... और मैं हमेशा से ऐसी ही हूं।"

जूरी के लोग आपस में खुसर-पुसर करने लगे और उनकी त्योरियों पर बल आ गये। जजों के चेहरों से भी नाराज़गी ज़ाहिर हो रही थी। अदालत के कमरे में बहुत ख़ामोशी थी। बाहर से सड़क के पत्थरों पर सधे हुए क़दम पड़ने की चाप सुनायी दे रही थी : सिपाही क़दम मिलाकर गुज़र रहे थे।

"इस बात को देखते हुए कि मुल्ज़िम ने अपना क़सूर मान लिया है, मेरा सुझाव है..." सरकारी वकील ने कहा।

इल्या ने महसूस किया कि वह अब वहां एक क्षण भी नहीं बैठ सकता था, और वह उठकर बाहर की ओर चल पड़ा।

"शि: !" पुलिसवाले ने उसे ज़ोर से चेतावनी दी।

वह फिर बैठ गया और पावेल की तरह उसने भी अपना सिर झुका लिया। वह पेत्रूख़ा का लाल चेहरा देखना बर्दाश्त नहीं कर सकता था, जो इस वक़्त इस तरह फूला हुआ था जैसे उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंची हो। और उस ख़ुश-मिज़ाज जज ग्रोमोव के रूप में उसे एक ऐसा निश्चिंत आदमी दिखायी दिया जिसे इंसानों के बारे में फ़ैसला सुनाने की वैसे ही आदत पड़ गयी थी जैसे बढ़ई को लकड़ी के तख़्तों पर रंदा करने की पड़ जाती है। उसके दिमाग़ में एक भयानक विचार उठा :

"अगर मैं अपना अपराध मान लूं तो ये लोग मेरे साथ भी यही करेंगे... पेत्रूख़ा मुझे सज़ा सुना देगा। मुझे कालेपानी भेज देगा। और ख़ुद पहले की तरह ही चैन से रहेगा।"

उसका दिमाग़ इस विचार पर केंद्रित होकर रह गया और वह किसी की ओर देखे बिना या कुछ भी सुने बिना बैठा रहा।

"मैं... मैं नहीं चाहती कि आप उसकी चर्चा करें!" वेरा कांपते

हुए आहत स्वर में चिल्लायी, और फिर अपना गला पकड़कर और झटके के साथ अपने सिर पर से रूमाल उतारकर रोने लगी।

कमरे में गूंज भर गयी ; लड़की की चीख़ों से वहां हलचल-सी पैदा हो गयी। कटहरे के पीछे वह फफक-फफककर रो रही थी ; उसका सिसकना देखकर कलेजा फटा जाता था।

इल्या उछलकर खड़ा हो गया और उसने आगे बढ़ने की कोशिश की, लेकिन सभी लोग दूसरी दिशा में जा रहे थे और उसे पता भी नहीं चला कि कब वह बाहर बरामदे में आ निकला।

"उन्होंने उसकी आत्मा को नंगा कर दिया," काले बालोंवाले आदमी की आवाज़ सुनायी दी।

पावेल ग्राचोव दीवार से टिका खड़ा था ; उसका रंग पीला पड़ गया था, बाल बिखरे हुए थे और जबड़े कांप रहे थे। इल्या ने उसके पास जाकर उसे बड़े द्वेष से घूरा।

"तो, कैसा लगा?" वह बोला।

पावेल ने उसकी ओर देखा, अपना मुंह खोला, लेकिन कोई आवाज़ न निकली।

"तबाह कर दिया न उसे?" इल्या कहता रहा। पावेल इस तरह चौंक पड़ा जैसे किसी ने उसे चाबुक मार दी हो। एक हाथ इल्या के कंधे पर रखकर उसने उत्तेजित स्वर में कहा :

"मैंने? मैंने क्यों? हम लोग तो उनके खिलाफ़ अर्ज़ी देनेवाले हैं..."

इल्या ने उसका हाथ अपने कंधे पर से झिटक दिया ; वह उससे कहना चाहता था : "अरे! मैंने तुम्हें जजों से यह कहते नहीं सुना कि उसने पैसा तुम्हारी ख़ातिर चुराया था!" लेकिन इसके बजाय उसने कहा :

"पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव सज़ा देता है... यह कैसा इंसाफ़ है?" उसने ताना देते हुए कहा।

पावेल तनकर सीधा खड़ा हो गया। उसका चेहरा तमतमा उठा और वह जल्दी-जल्दी कुछ कहने लगा, लेकिन इल्या उसकी बात सुने बिना ही वहां से चल दिया। चेहरे पर व्यंग का भाव लिये वह बाहर निकल गया और दिन-भर लावारिस कुत्ते की तरह धीरे-धीरे सड़कों

पर टहलता रहा, यहां तक कि अंधेरा हो गया और उसे भूख के मारे मतली होने लगी।

घरों की खिड़कियों में बत्तियां जलने लगीं, और रोशनी की पीली-पीली लंबी पट्टियां बाहर निकलने लगीं, जिनकी वजह से खिड़कियों में रखे पौधों की परछाइंयों से तरह-तरह की आकृतियां बन गयी थीं। इल्या इन आकृतियों को ध्यान से देखने के लिए ठहर गया, जिन्हें देखकर उसे ग्रोमोव के घर की खिड़कियों में रखे हुए पौधों की और ग्रोमोव की बीवी की याद आयी, जो परियों की कहानियों की रानी की तरह थी, और ग्रोमोव के घर के उन मेहमानों की जो उदासीभरे गीत गाते थे, लेकिन उनके साथ जी खोलकर हंसते भी थे।

एक बिल्ली अपने पंजे झिटकती हुई दबे पांव सड़क पार कर गयी।

"देखके!" कोई चेतावनी देते हुए चिल्लाया। एक घोड़े का काला सिर तेज़ी से उसके पास से गुज़रा और उसने अपने गाल पर उसकी सांस का गरम-गरम स्पर्श महसूस किया। वह उछलकर एक तरफ़ को हट गया और चलते-चलते शराबख़ाने से दूर होता गया। गाड़ीवाले की गाली उसके कानों में गूंज रही थी।

"बोझ ढोनेवाला घोड़ा नहीं था – मेरी जान तो न जाती," उसने शांत भाव से सोचा। "लेकिन मुझे कुछ खाना चाहिये... वेरा तो अब पूरी तरह तबाह हो जायेगी... वह भी अपनी आन की पक्की है... पावेल का नाम नहीं लेना चाहती थी... वह साफ़ देख रही थी कि वहां कोई भी ऐसा नहीं था जिसे वह अपना दुखड़ा सुनाती... वह सबसे अच्छी है... उसकी जगह अगर ओलिंपियादा होती तो... नहीं, ओलिंपियादा भी अच्छी है... अगर तात्याना होती..."

इस पर उसे याद आया कि आज तात्याना का जन्मदिन था। पहले तो वह उसकी पार्टी में जाने के विचार से झिझका लेकिन अगले ही क्षण एक तीखी तपती हुई भावना उसके दिल में उठी।

गाड़ी करके वह चल पड़ा। कुछ ही देर बाद वह अव्तोनोमोव-दंपति के खाने के कमरे के दरवाज़े पर खड़ा था; तेज़ रोशनी से चकाचौंध होकर उसने अपनी आंखें सिकोड़ ली थीं और उस बड़े-से

कमरे में मेज़ के चारों ओर सटकर बैठे हुए लोगों की ओर देखकर अस्पष्ट भाव से मुस्करा रहा था।

"अरे, तुम आ गये!" कीरिक ख़ुश होकर चिल्लाया। "चाकलेट लाये? क्या? जन्मदिन मनानेवाली लड़की के लिए कोई तोहफ़ा नहीं लाये? यह कैसी बात है, यार?"

"कहां थे अभी तक?" तात्याना ने पूछा।

कीरिक ने उसकी बांह पकड़ ली और उसे मेज़ के चारों ओर ले जाकर मेहमानों से उसका परिचय कराने लगा। इल्या ने उनसे हाथ मिलाये; उसके दिमाग़ में उन सबके चेहरे आपस में मिलकर बड़े-बड़े दांतोंवाले एक लंबे-से हंसते हुए चेहरे में बदल गये। भुने हुए गोश्त की महक से उसके नथुनों में गुदगुदी-सी हो रही थी, उसके कान औरतों की बत्तख़ों जैसी आवाज़ों से गूंज रहे थे, उसकी आंखें जल रही थीं और उसे रंगों के धुंधले-धुंधले धब्बों के अलावा कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। बैठ जाने के बाद उसे आभास हुआ कि उसकी टांगों में थकन के मारे दर्द हो रहा था और भूख के मारे उसकी आंतें सूखी जा रही थीं। कुछ भी कहे बिना वह रोटी का एक टुकड़ा खाने लगा। एक मेहमान बड़े तिरस्कार से हंसा और तात्याना व्लास्येव्ना इल्या से बोली:

"मुझे बधाई क्यों नहीं दी आपने? अच्छे मेहमान हैं आप भी! आये और न दुआ न सलाम, बस खाने लगे!"

तात्याना ने मेज़ के नीचे उसके पांव को ज़ोर से ठोकर मारी और अपना चेहरा झुकाकर चायदानी में पानी उंडेलने लगी।

इल्या ने रोटी का टुकड़ा मेज़ पर रख दिया, अपने हाथ रगड़े, और ऊंचे स्वर में बोला:

"आज दिन-भर मैं अदालत में था..."

उसकी आवाज़ बातचीत की गूंज के ऊपर साफ़ सुनायी दी। मेहमानों ने बातें करना बंद कर दिया। अपने चेहरे पर उनकी नज़रें जमी हुई महसूस करके इल्या कुछ सकपका गया, और भवें झुकाकर उनके नीचे से उन्हें घूरने लगा। उन लोगों की नज़रों में अविश्वास था, जैसे उन्हें इस बात में संदेह हो कि चौड़े कंधों और घुंघराले बालोंवाला यह नौजवान उन्हें कोई भी दिलचस्प बात सुना सकता है।

कमरे में तनाव-भरी खामोशी छा गयी। इल्या के दिमाग़ में विचारों के टुकड़े चक्कर काटते रहे, और खुद वे विचार – अस्पष्ट, बिखरे हुए – अचानक गायब हो गये, मानो उसकी आत्मा के अंधकार में विलीन हो गये हों।

"अदालत में कभी-कभी बहुत अजीब क़िस्से सुनने को मिलते हैं," फ़ेलित्साता ग्रिज़्लोवा ने मीठी गोलियों का एक डिब्बा उठाकर चिमटे से मिठाई को छेड़ते हुए सपाट स्वर में कहा।

तात्याना व्लास्येव्ना के गालों पर दो लाल धब्बे उभर आये और कीरिक ने ज़ोर से अपनी नाक साफ़ की।

"अगर चर्चा छेड़ी ही है तो बात पूरी कहो," वह बोला। "तो तुमने आज सारा दिन अदालत में बिताया?.."

"इन लोगों को मुझ से उलझन हो रही है," इल्या ने सोचा, और उसके खुले हुए होंटों पर मुस्कराहट आ गयी। मेहमान फिर अलग-अलग सुरों में बातें करने लगे।

"एक बार मैंने एक क़त्ल का मुक़द्दमा सुना था," तारघर में काम करनेवाले नौजवान ने कहा; वह पीले रंग का काली-काली आंखोंवाला आदमी था और उसने छोटी-सी मूंछ रख छोड़ी थी।

"क़त्ल के क़िस्से पढ़ने और सुनने का मुझे बेहद शौक़ है!" त्रावकिन की बीवी चहककर बोली।

उसके पति ने मेहमानों पर गहरी नज़र डालकर कहा:

"मुक़द्दमों की खुली सुनवाई बहुत बड़ा वरदान है।"

"जिस आदमी पर क़त्ल का इल्ज़ाम लगाया गया था वह मेरा दोस्त था, जिसका नाम था येवगेन्येव," तारघर में काम करनेवाले ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा। "एक बार तिजोरी की रखवाली करते हुए वह एक छोटे-से बच्चे से खेलने लगा और अचानक उसने उस बच्चे को गोली मार दी।"

"कितनी भयानक बात है!" तात्याना व्लास्येव्ना ने व्यथित होकर कहा।

"उसे जान से मार दिया!" तारघर में काम करनेवाले ने चटखारा लेकर कहा।

"एक बार मुझे किसी मुक़द्दमे में गवाह की हैसियत से तलब

किया गया था," त्रावकिन ने अपनी सूखी खड़खड़ाती हुई आवाज़ में कहा, "और जब मैं वहां गया तो मैंने एक ऐसे आदमी के मुक़द्दमे की कार्रवाई सुनी जिसने तेईस डाके डाले थे। कमाल का आदमी था न?"

कीरिक ज़ोर से ठहाका मारकर हंसा। मेहमान दो टोलियों में बंट गये: एक टोली तारघर में काम करनेवाले से उस लड़के के क़त्ल का क़िस्सा सुन रही थी, और दूसरी टोली के लोग त्रावकिन से उस आदमी का क़िस्सा सुन रहे थे जिसने तेईस डाके डाले थे। इल्या अपनी नज़रें तात्याना पर इस आभास के साथ जमाये रहा कि उसके अंदर कोई लौ धीरे-धीरे जल रही थी; अभी तक उसने चमक पैदा नहीं की थी लेकिन धीरे-धीरे सुलगकर उसका दिल जलाना शुरू कर दिया था! जैसे ही इल्या को यह आभास हुआ कि अव्तोनोमोव-दंपति कितना डरे हुए थे कि वह कहीं उन्हें किसी उलझन में न डाल दे, उसका दिमाग़ ज़्यादा साफ़ होता गया।

तात्याना व्लास्येव्ना दूसरे कमरे में बोतलों से लदी हुई मेज़ के पास व्यस्त थी। उसका लाल रंग का रेशमी ब्लाउज़ दीवार के सफ़ेद काग़ज़ की पृष्ठभूमि पर एक चटकीले रंग के धब्बे की तरह चमक रहा था, और वह तितली की तरह कमरे में उड़ती फिर रही थी; उसके चेहरे पर एक ऐसी सुयोग्य गृहिणी के स्वाभिमान की दमक थी, जिसका हर काम बहुत अच्छे ढंग से व्यवस्थित था। दो बार इल्या ने उसे चुपके से अपने पास बुलाने का इशारा करते देखा, लेकिन वह गया नहीं, और यह देखकर उसे कुछ संतोष मिला कि इस बात पर वह बेचैन हो गयी थी।

"तुम वहां बुत बने क्यों बैठे हो?" कीरिक ने उससे कहा। "डरो नहीं, जो भी तुम्हारा जी चाहे कहो। ये सभी पढ़े-लिखे लोग हैं – तुम्हारी किसी बात का बुरा नहीं मानेंगे।"

इल्या ने फ़ौरन ऊंची आवाज़ में कहना शुरू किया:

"आज मेरी जान-पहचान की एक लड़की पर मुक़द्दमा चल रहा था। वह बदचलन औरत है, लेकिन इसके बावजूद बहुत अच्छी है।"

एक बार फिर सबका ध्यान उस पर केंद्रित हो गया; एक बार फिर सबकी नज़रें उस पर जम गयीं। फ़ेलित्साता येगोरोव्ना खीसें निकालकर ताने से मुस्कराने लगी; तारघर में काम करनेवाले ने

मूंछों पर हाथ फेरते हुए अपना मुंह ढक लिया; हर आदमी गंभीर और एकाग्रचित दिखायी देने की कोशिश करने लगा। तात्याना व्लास्येव्ना ने अचानक मेज़ पर बहुत-से छुरी-कांटों का जो ढेर उलट दिया था उनकी खनखनाहट इल्या के दिल में युद्ध-संगीत की तरह गूंज उठी। अपनी बात जारी रखने से पहले शांत भाव से उसने वहां पर मौजूद मेहमानों पर नज़र दौड़ायी:

"आप लोग हंस किस बात पर रहे हैं? उनमें भी कुछ बहुत अच्छी लड़कियां होती हैं।"

"होती हैं, ज़रूर होती हैं," कीरिक ने जल्दी से कहा, "लेकिन... लेकिन... खुलकर यही बात न कहो तो अच्छा है..."

"ये सभी पढ़े-लिखे लोग हैं," इल्या ने कहा। "अगर मैंने कोई ऐसी-वैसी बात कह भी दी तो ये बुरा नहीं मानेंगे!"

अचानक उसे ऐसा लगा कि उसके अंदर कोई बम फट गया है। वह बड़ी कटुता से मुस्कराया और उसके दिल की धड़कन क्षण-भर के लिए रुक गयी; उसके दिमाग़ में अचानक ढीठ शब्द पैदा हुए और उसके सीने से बाहर निकल पड़ने के लिए मचलने लगे।

"तो, उस लड़की ने किसी व्यापारी का कुछ पैसा चुरा लिया था..."

"बस यही कसर रह गयी थी," कीरिक मसखरों जैसी सूरत बनाकर और निराश भाव से सिर हिलाकर बोला।

"आप लोग ख़ुद अंदाज़ा लगा सकते हैं कि कब और कहां उसने यह पैसा चुराया होगा। और कौन जाने उसने चुराया भी न हो; मुमकिन है पैसा उसे दिया गया हो..."

"तात्याना!" कीरिक ने पुकारकर कहा। "यहां आओ! इल्या क़िस्सा सुना रहा है! बड़ा मज़ेदार क़िस्सा है!"

लेकिन तात्याना पहले ही इल्या की बग़ल में पहुंच चुकी थी।

"मुझे तो इसमें कोई मज़ेदार बात दिखायी नहीं देती," वह ज़बर्दस्ती मुस्कराकर और अपने कंधों को थोड़ा-सा बिचकाकर बोली। "बिल्कुल मामूली क़िस्सा है। सैकड़ों ऐसे क़िस्से सुन चुके हो। और यहां कोई भोली-मासूम लड़कियां तो हैं नहीं। लेकिन यह सब बाद में होता रहेगा। अब खाने की मेज़ पर चलें।"

"मेहरबानी करके," कीरिक ने चिल्लाकर कहा। "जाऊंगा भी मैं, और कुछ खाऊंगा भी मैं – हो, हो! तुक कैसा रहा? अच्छा न भी हो, लेकिन है मज़ेदार।"

"भूख बढ़ाता है," त्रावकिन ने अपना गला सहलाते हुए कहा।

वे सब लोग इल्या की ओर से मुंह फेरकर चले गये। इल्या को साफ़ दिखायी दे रहा था कि उन्हें उसकी बात सुनने में इसलिए कोई दिलचस्पी नहीं थी कि उनके मेज़बान नहीं चाहते थे कि वे कोई दिलचस्पी लें, और इस बात से वह और भी उत्तेजित हो उठा। वह उठ खड़ा हुआ और सबको संबोधित करके बोला:

"और जो लोग इस लड़की के मुक़द्दमे की सुनवाई कर रहे थे वे ख़ुद कई बार उसे इस्तेमाल कर चुके थे। उनमें से कुछ को तो मैं जानता भी हूं। वे धोखेबाज़ों से भी बदतर हैं।"

"बस, बस!" त्रावकिन ने उंगली उठाकर सख़्ती से कहा। "यह बात क़तई नहीं कही जा सकती। वे लोग जूरी के मेंबर हैं, और मैं ख़ुद..."

"यही तो बात है, जूरी के मेंबर," इल्या ने चिल्लाकर कहा। "वे किसी के साथ सच्चा इंसाफ़ कैसे कर सकते हैं जब वे ख़ुद..."

"माफ़ कीजियेगा, जूरी के ज़रिये मुक़द्दमों की सुनवाई का तरीक़ा, एक तरह से ऐसा सुधार है जिसे ज़ार अलेक्सांद्र द्वितीय ने जनता के उद्धार के लिए लागू किया था! राज्यसत्ता की ऐसी महान संस्था की आप कैसे निंदा कर सकते हैं?"

वह इल्या के चेहरे पर फुफकारा, उसके मोटे-मोटे सफ़ाचट गाल कांपने लगे, और उसकी आंखें दाहिनी ओर से बायीं ओर और फिर वापस दूसरी दिशा में फिरने लगीं। सब मेहमान उन्हें घेरकर खड़े हो गये, सभी ख़ुश होते हुए जिज्ञासा से हंगामे का इंतज़ार कर रहे थे। तात्याना का रंग पीला पड़ गया था; उद्विग्न होकर वह मेहमानों की आस्तीनें खींच रही थी:

"अरे, छोड़िये भी!" वह चिल्लाकर बोली। "कोई मज़ा नहीं है इसमें! कीरिक, लोगों से चलने को कहो!"

कीरिक भौचक्का होकर पलकें झपकाने लगा और अनुरोध करने लगा:

"बस, रहने दो! भाड़ में जायें ये सुधार और उद्धार और यह सारा फ़लसफ़ा..."

"फ़लसफ़ा नहीं, राजनीति," त्रावकिन भर्रायी हुई आवाज़ में बोला। "और जो लोग ऐसी बातें करते हैं उन्हें भरोसे लायक़ नहीं समझा जाता।"

इल्या के तन-बदन में आग लगी हुई थी। गीले-गीले होंटों और सफ़ाचट चेहरेवाले इस छोटे-से मोटे आदमी के सामने खड़े होकर उसका गुस्सा भड़कते हुए देखने में बड़ा मज़ा आयेगा। और वह अव्तोनोमोव-दंपति को अपने मेहमानों के आगे हक्का-बक्का कर देने के विचार से बेहद खुश हो उठा। वह पहले से ज़्यादा शांत हो गया, और इन लोगों से टक्कर लेने, उनका अपमान करने और उनका गुस्सा भड़का देने की उत्कट इच्छा उसके अंदर फ़ौलाद की स्प्रिंग की तरह थी जिसने उसे ऊपर उठाकर ऐसी ऊंचाई पर पहुंचा दिया था जो सहमाने के साथ ही उसे सुखद भी लग रही थी। उसका स्वर अधिक शांत और दृढ़ हो गया:

"आप मुझे जो भी चाहें कहें – आप पढ़े-लिखे आदमी हैं – लेकिन मैं अपने शब्द वापस नहीं लूंगा! क्या पेट-भरे लोग भूखे आदमी का हाल समझ सकते हैं! भूखे लोग चोर हो सकते हैं, लेकिन सो तो पेट-भरे लोग भी होते हैं।"

"कीरिक निकोदीमोविच!" त्रावकिन ने भर्राये हुए स्वर में कहा। "क्या हो रहा है? यह तो... यह तो..."

लेकिन तात्याना व्लास्येव्ना उसकी बांह पकड़कर उसे अपने पीछे खींचकर ले जाते हुए ऊंचे स्वर में बोली:

"आओ, तुम्हारी मनपसंद सैंडविचें हैं: हेरिंग मछली, उबले हुए अंडे और हरी प्याज़ के साथ मक्खन..."

"हुंह... मैं ऐसे लोगों को अच्छी तरह जानता हूं!" त्रावकिन आहत स्वर में बुड़बुड़ाया, और ज़ोर की आवाज़ करता हुआ होंटों से चटखारा मारने लगा। उसकी बीवी ने अपने शौहर की दूसरी बांह पकड़ते हुए झुलस देनेवाली नज़र से इल्या को देखा।

"बकवास पर इतना परेशान न हो, अंतोन..." वह बोली।

"मसालेदार स्टर्लेट और टमाटर," तात्याना व्लास्येव्ना अपने

सबसे सम्मानित मेहमान का गुस्सा शांत करने के लिए कहती रही।

अचानक त्रावकिन फ़र्श पर पांव जमाकर खड़ा हो गया और उसने मुड़कर इल्या की ओर देखा। "बहुत बेजा बात है तुम्हारी, नौजवान!" उसने उदारता-भरे और साथ ही फटकार के स्वर में कहा। "तुम्हें उसकी खूबियों को देखना चाहिये, चीज़ों को समझना चाहिये..."

"पर मैं नहीं समझता!" इल्या ने चिढ़कर कहा। "इसीलिए तो मैं कहता हूं: पेत्रूखा फ़िलिमोनोव क्यों दूसरों के सिर पर सवार रहे?"

मेहमान उसके पास से होकर गुज़रते रहे; वे स्पष्ट रूप से यह कोशिश कर रहे थे कि कहीं उसे छू न जायें। लेकिन कीरिक उसके पास आया और बड़ी सख़्ती से ऐसे स्वर में बोला जिससे लगता था कि वह नाराज़ है:

"लानत है, तुम भी बिल्कुल बौड़म हो, बस और कुछ नहीं।"

इल्या चौंक पड़ा; उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया, जैसे किसी ने उसके सिर पर चोट की हो। मुट्ठियां भींचकर वह कीरिक की ओर लपका। लेकिन कीरिक, जो उसकी इस हरकत को नहीं देख पाया था, तेज़ क़दम बढ़ाता हुआ दूसरे कमरे में चला गया, जहां मेज़ पर तरह-तरह के पकवान सजे हुए थे। इल्या ने गहरी आह भरी...

दरवाज़े पर से जहां वह खड़ा था उसे मेज़ के चारों ओर एक-दूसरे से सटकर भीड़ लगाये हुए लोगों की पीठें दिखायी दे रही थीं और उनके होंट चाटकर चटख़ारा लेने की आवाज़ सुनायी दे रही थी। तात्याना के लाल ब्लाउज़ का अक्स उसकी आंखों पर एक झिल्ली बनकर छा गया, जिसकी वजह से हर चीज़ धुंधली-सी दिखायी देने लगी।

"हुंह," त्रावकिन बिल्ली जैसी आवाज़ में बोला। "क्या लाजवाब खाना है! बहुत ही बढ़िया।"

"थोड़ी-सी काली मिर्च लेंगे?" तात्याना ने बहुत मीठे स्वर में पूछा।

"मैं अभी तुम्हें काली मिर्च चखाता हूं!" इल्या ने क्रूर द्वेष से फ़ैसला किया और अपना सिर पीछे की ओर झिटककर लंबे-लंबे

डग भरता हुआ मेज़ के पास जा पहुंचा। उसने मेज़ पर से किसी का शराब का गिलास लेकर तात्याना व्लास्येव्ना की ओर बढ़ाया और शब्दों का साफ़-साफ़ उच्चारण करते हुए बोला, मानो शब्दों से उसे आघात पहुंचाना चाहता हो :

"तुम्हारे नाम का, मेरी जान !"

यह सुनकर सबको सांप सूंघ गया – ऐसा लगा जैसे कोई चीज़ कान के परदे फाड़ देनेवाला शोर करती हुई नीचे आ गिरी हो, या जैसे अचानक बत्तियां बुझ गयी हों और कमरे में अंधेरा छा गया हो और उस अंधेरे में हर आदमी अपनी जगह जमकर रह गया हो। चबाया हुआ खाना भरे लोगों के खुले मुंह उनके भयभीत, स्तंभित चेहरों पर सड़ते हुए घावों जैसे लग रहे थे।

"आओ, मेरे साथ पियो! कीरिक निकोदीमोविच, मेरी रखैल से कहो कि मेरे साथ पिये। बात क्या है? हम लोग अपना गंदा काम चोरी-छिपे क्यों करें? आओ, खुलकर सामने आ जायें। मैंने यही फ़ैसला किया है – खुलकर सामने आ जाने का।"

"बदमाश कहीं का !" तात्याना की तेज़ चीख़ती हुई आवाज़ सुनायी दी।

इल्या ने उसे अपना हाथ घुमाते देखा, और जो प्लेट उसने उसके सिर का निशाना लगाकर फेंकी थी उसे उसने अपने मुक्के से रोककर एक तरफ़ गिरा दिया। प्लेट छन्न से टूटने की आवाज़ सुनकर मेहमान और भी दंग रह गये। धीरे-धीरे और चुपचाप वे मेज़ के पास से खिसकने लगे, और उन्होंने अव्तोनोमोव-दंपति को अकेले ही इल्या से मुंह-दर-मुंह निबट लेने के लिए छोड़ दिया। कीरिक एक मछली की दुम पकड़े खड़ा आंखें झपका रहा था – उसका रंग पीला पड़ गया था और वह बहुत बेवक़ूफ़ और दयनीय लग रहा था। तात्याना व्लास्येव्ना सिर से पांव तक कांप रही थी और इल्या की ओर अपना मुक्का हिला रही थी। उसके चेहरे का रंग उसके ब्लाउज़ जैसा ही लाल हो गया था और उसकी जीभ को उसके शब्दों का उच्चारण करने में कठिनाई हो रही थी।

"यह झूठ ... है ... झूठ है !" उसने अपनी गर्दन आगे बढ़ाकर फुफकारते हुए कहा।

"बता दूं मैं इन लोगों को कि तुम नंगी कैसी लगती हो?" इल्या ने निश्चिंत भाव से जवाबी वार किया। "तुमने ख़ुद अपने बदन के सारे ख़ूबसूरत तिल और मस्से मुझे दिखाये हैं – तुम्हारे पति को पता चल जायेगा कि मैं झूठ बोल रहा हूं या नहीं ..."

किसी की दबी हुई हंसी सुनायी दी। तात्याना व्लास्येव्ना ने झटके के साथ दोनों हाथ ऊपर उठाकर अपना गला पकड़ लिया और चुपचाप कुर्सी पर ढेर हो गयी।

"पुलिस को बुलवाओ !" तारघर में काम करनेवाला चिल्लाया।

कीरिक ने उसकी ओर मुड़कर देखा और अचानक सिर नीचे झुकाकर सांड की तरह इल्या की ओर झपटा।

इल्या ने उसे माथे पर धक्का दिया।

"कहां जा रहे हो?" वह डपटकर बोला। "तुम्हारी चूल-चूल तो ढीली है – एक हाथ मार दूंगा तो अंजर-पंजर सब अलग हो जायेंगे ... लेकिन सुनो – और आप सब लोग भी, आप भी सुनिये। आपको ऐसा मौक़ा कभी नहीं मिलेगा कि कोई सच्चाई आपको बताये।"

लेकिन कीरिक, जो अब तक धक्के के असर से संभल चुका था, दुबारा सिर झुकाकर इल्या की ओर झपटा। मेहमान चुपचाप देखते रहे। हर आदमी अपनी जगह खड़ा रहा, अलावा त्रावकिन के जो पंजों के बल चलते हुए कोने में जाकर सोफ़े पर बैठ गया, और दोनों हथेलियां जोड़कर उसने अपने हाथ घुटनों के बीच दबा लिये।

"बचना, नहीं तो मैं मार बैठूंगा !" इल्या ने चेतावनी दी। "मेरे पास तुम्हें चोट पहुंचाने की कोई वजह नहीं है। तुम बेवक़ूफ़, तुम किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते। तुमने मेरा कभी कुछ नहीं बिगाड़ा है ... दूर हट जाओ !"

उसने कीरिक को एक और धक्का दिया, इस बार ज़्यादा ज़ोर से, और पीछे हटकर दीवार के पास चला गया, जहां से वह मेहमानों को देखता रहा।

"तुम्हारी बीवी ख़ुद आकर मेरी बांहों में गिर पड़ी," वह बोला। "वह बड़ी तेज़ औरत है, और कमीनों में कमीनी है! लेकिन आप भी – आप सब – आप सभी बदमाश हैं ... आज मैं दिन-भर अदालत में रहा हूं और वहां मैंने फ़ैसला करना सीखा है ..."

वह इतनी बहुत-सी बातें कहना चाहता था कि अपने विचारों को व्यवस्थित नहीं कर पा रहा था और उन्हें पत्थरों की तरह उल्टा-सीधा फेंक रहा था।

"मैं तात्याना को दोष देना नहीं चाहता... वह बात तो न जाने कैसे निकल आयी... मेरे साथ हमेशा सब कुछ अपने आप ही हो जाता है। मैंने इसी तरह अचानक एक आदमी का ख़ून तक कर डाला... ऐसा करने का मेरा कोई इरादा नहीं था, लेकिन बस हो गया... तात्याना! तुम और मैं जो दुकान चला रहे हैं वह उसी पैसे से जो मैंने उस आदमी से लिया था जिसका मैंने ख़ून किया था!"

"यह पागल है!" कीरिक ने खुश होकर कहा और वह भाग-भागकर एक से दूसरे मेहमान के पास जाकर उत्कंठित स्वर में कहने लगा:

"देखा? बिल्कुल पागल है! हाय, इल्या बेचारा! बेचारा!"

इल्या ठहाका मारकर हंस पड़ा। ख़ून करने की बात मान लेने के बाद अब वह पहले से भी ज़्यादा शांत और बेझिझक महसूस कर रहा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसके पांवों के नीचे फ़र्श हो ही नहीं, जैसे वह हवा में लटका हो; उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह लगातार ऊंचा उठता जा रहा है। तगड़ा और हट्टा-कट्टा तो वह था ही, उसने अपना सिर झटके के साथ पीछे किया और सीना तान लिया। उसके घुंघराले बाल उसके चौड़े पीले माथे पर बिखर गये और उसकी आंखों में व्यंग और द्वेष की चमक आ गयी।

तात्याना उठी और लड़खड़ाती हुई फ़ेलित्साता येगोरोव्ना के पास चली गयी।

"मैं बहुत दिन से देख रही थी..." उसने थरथराते हुए स्वर में कहा। "बहुत दिन से... उसकी आंखों में वह दीवानापन... ओह, कितना भयानक है!"

"अगर वह पागल हो गया है तो हमें पुलिस को बुलाना चाहिये," फ़ेलित्साता ने इल्या को एकटक देखते हुए बड़े रोब से कहा।

"वह पागल है! बिल्कुल पागल!" कीरिक चिल्लाया।

"वह हम सब लोगों को मार डालेगा..." ग्रिज़्लोव ने चोरी से चारों ओर नज़र डालकर दबे स्वर में कहा। किसी की कमरे से चले जाने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी।

इल्या दरवाज़े के पास खड़ा था और उसके सामने से होकर गुज़रे बिना कोई बाहर नहीं जा सकता था। इल्या हंसता रहा। वह इस बात पर खुश था कि ये लोग उससे डर रहे थे; उसने देखा कि मेहमानों में से किसी को भी अव्तोनोमोव-दंपति के साथ हमदर्दी नहीं थी; अगर उन्हें उनका डर न होता तो वे रात-भर उसे उनका अपमान करते हुए सुनते रहते।

"मैं पागल नहीं हूं," उसने धमकी-भरे अंदाज़ से अपनी भवें सिकोड़कर कहा। "लेकिन जो जहां है वहीं रहे। मैं किसी को बाहर नहीं जाने दूंगा। और अगर कोई मेरे ऊपर झपटा तो मैं उस पर वार करूंगा। मैं उसे मार डालूंगा। मैं बहुत ताक़तवर हूं..."

उसने अपनी लबी बांह के सिरे पर कसी हुई मुट्ठी सामने तानी और उसे हवा में घुमाया। फिर उसने हाथ नीचे गिरा लिया।

"मुझे यह बताइये: आख़िर आप लोग किस तरह के लोग हैं? आप लोग किसलिए ज़िंदा रहते हैं? टुच्चे, भंगी, हरामी, आप लोग इसके अलावा और कुछ नहीं हैं।"

"मुंह बंद करो अपना!" कीरिक चिल्लाया।

"तुम खुद अपना मुंह बंद रखो! मैं तो अपनी बात कहकर ही मानूंगा। जब मैं आप लोगों को देखता हूं तो मुझे बड़ी हैरत होती है–आप लोग इसके अलावा करते ही क्या हैं कि पी लेते हैं और ठूंस-ठूंसकर पेट भर लेते हैं और एक-दूसरे की आंख में धूल झोंकते रहते हैं; आप लोगों को किसी से भी हमदर्दी नहीं है... आप लोग चाहते क्या हैं? मैंने साफ़-सुथरी, ईमानदारी की ज़िंदगी खोजने की कोशिश की, लेकिन वह कभी नहीं मिली! उसे खोजने के चक्कर में मैं खुद बर्बाद हो गया... कोई भला आदमी आप लोगों के बीच रह नहीं सकता – भले लोगों को तो आप तबाह कर देते हैं... मुझे देखिये – मैं अच्छा ख़ासा तगड़ा हूं और लड़ सकता हूं, लेकिन आप लोगों के बीच मेरी हालत उस लाचार बिल्ली जैसी हो जाती है जिसे किसी अंधेरे तहख़ाने में चूहों ने घेर लिया हो... आप लोग हर जगह हैं – क़ानून आप लोग बनाते हैं और हुक्म आप चलाते हैं... लेकिन दरअसल आप लोग बदमाश हैं।"

उसी वक़्त तारघर में काम करनेवाला दीवार के पास से उछला

और इल्या को चकमा देकर झपटकर कमरे से बाहर निकल गया।

"अरे! एक मेरे चंगुल से निकल भागा!" इल्या ने हंसकर कहा।

"मैं पुलिस को बुलाने जा रहा हूं!" तारघर में काम करनेवाले ने दूर से पुकारकर कहा।

"जाओ, मेरी बला से," इल्या बोला।

तात्याना व्लास्येव्ना उसकी ओर देखे बिना लड़खड़ाती हुई उसके सामने से इस तरह निकल गयी जैसे नींद में चल रही हो।

"मैंने इसे तो ठिकाने लगा दिया!" इल्या ने उसकी तरफ़ सिर हिलाकर इशारा करते हुए कहा। "यह थी ही इस लायक़, नागिन कहीं की।"

"मुंह बंद करो अपना!" कीरिक ने चिल्लाकर कहा; वह एक कोने में घुटने के बल बैठा अल्मारी की दराज़ में कुछ टटोल रहा था।

"चिल्लाओ नहीं, बुद्धू कहीं के," इल्या ने अपने सीने पर हाथ बांधकर बैठते हुए कहा। "चिल्ला किसलिए रहे हो? मैं उसे जानता हूं – मैं उसके साथ रह चुका हूं... और मैंने एक आदमी का खून किया है – पोलुएक्तोव महाजन का... याद है, मैंने कितनी बार तुमसे पोलुएक्तोव के बारे में पूछा था? इसलिए कि मैंने उसका खून किया था। और मैं भगवान की सौगंध खाकर कहता हू कि उसी के पैसे से मैंने अपनी दुकान खोली थी..."

इल्या नज़रें गड़ाकर कमरे में चारों ओर देखता रहा। डरे हुए, दयनीय लोग दम साधे दीवार के सहारे खड़े थे। इल्या अपने मन में उनके प्रति गहरा तिरस्कार अनुभव कर रहा था और उसे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था कि उसने उन्हें उस हत्या के बारे में क्यों बताया।

"आप समझते हैं कि मैं आप लोगों को यह सब कुछ इसलिए बता रहा हूं कि मुझे पछतावा हो रहा है?" उसने चिल्लाकर कहा। "जी नहीं, इस तरह की कोई बात नहीं है। मैं आप लोगों की खिल्ली उड़ा रहा हूं, बस यही कर रहा हूं मैं।"

कीरिक कोने में से निकल आया; उसका चेहरा लाल था, बाल बिखरे हुए थे, आंखों में दीवानगी थी और हाथ में वह एक रिवाल्वर लिये हुए था।

"अब तुम बचकर नहीं जा सकते!" वह चिल्लाकर बोला। "तो उसका खून तुमने किया था? अच्छा!"

औरतों के मुंह खुले के खुले रह गये। त्रावकिन, जो अभी तक सोफ़े पर बैठा हुआ था, अपनी टांगें झुलाते हुए भर्रायी हुई आवाज़ में बोला:

"सज्जनो! मैं अब यह सब कुछ और ज़्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकता। मुझे जाने दीजिये। इससे मेरा कोई वास्ता नहीं है, यह आप लोगों का परिवार का मामला है।"

लेकिन कीरिक ने उसकी बात सुनी नहीं। वह इल्या के सामने उछलता-कूदता रहा और उसे रिवाल्वर दिखा-दिखाकर चिल्लाता रहा:

"तुम्हें पता चलेगा! कालापानी भेजे जाओगे!"

"मैं नहीं समझता कि तुम्हारे उस तमंचे में कोई गोली भी है," इल्या ने थकी-थकी आंखों से उसे घूरते हुए लापरवाही से कहा। "इतने बौखलाये हुए क्यों हो? मैं भागने की कोशिश तो कर नहीं रहा हूं... जाने के लिए मेरे पास कोई जगह ही नहीं है... कालापानी? तो कालापानी ही सही। फ़र्क़ भी क्या पड़ता है?"

"अंतोन, अंतोन!" त्रावकिन की बीवी की ज़ोर से फुसफुसाने की आवाज़ सुनायी दी। "चलो, चलें!"

"मैं नहीं जा सकता, माई डियर।"

उसने अपने पति को बांह पकड़कर उठाया और नज़रें झुकाये दोनों इल्या के सामने से गुज़र गये। बगलवाले कमरे में तात्याना व्लास्येव्ना चीखती हुई सिसक-सिसककर रो रही थी।

अचानक इल्या ने अपने अंदर एक विशाल शून्य अनुभव किया, एक अंधकारमय, ठिठुरता हुआ शून्य जिसमें शरद ऋतु के आकाश पर फीके चांद जैसा एक निराशाजनक प्रश्न बीच में लटका हुआ था: "अब क्या होगा?"

"और यहीं पहुंचकर मेरी सारी ज़िंदगी खत्म हो जाती है," उसने विचारमग्न होकर धीमे स्वर में कहा।

"इस बात की कोशिश न करो कि हम लोग तुम्हारे ऊपर तरस खायें," कीरिक ने उसके सामने खड़े होकर चिल्लाकर कहा।

"मैं यह कोशिश कर भी नहीं रहा हूं... भाड़ में जाओ तुम लोग! मैं खुद कुत्ते पर तरस खा सकता हूं लेकिन तुम्हारे ऊपर नहीं। अगर

मेरा बस चलता तो मैं तुम सब लोगों का सफ़ाया कर देता – तुममें से एक-एक का! मेरे सामने से हट जाओ, कीरिक; मैं तुम्हारी सूरत देखना बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

एक-एक करके जाते वक़्त मेहमान इल्या को भयभीत नज़रों से देखते हुए कमरे से खिसकते गये। उसके लिए वे सभी केवल छोटे-छोटे सुरमई धब्बों जैसे थे जिन्हें देखकर उसके मन में न कोई विचार जागृत होते थे न भावनाएं। उसकी आत्मा का सूनापन फैलता गया और उस पर पूरी तरह छा गया। वह एक-दो मिनट तक चुपचाप बैठा कीरिक के चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ सुनता रहा, फिर उसने धीरे से हंसकर कहा:

"आओ, कुश्ती लड़ें, कीरिक, लड़ोगे?"

"मैं तुम्हारे भेजे के पार गोली उतार दूंगा," कीरिक ने चीख़कर कहा।

"तुम्हारे पिस्तौल में गोली नहीं है!" इल्या हंसा और फिर बोला, "कुश्ती में मैं तुम्हें ज़रूर पछाड़ दूंगा! कितना मज़ा आयेगा मुझे!"

फिर उसने एक नज़र बाक़ी मेहमानों पर डाली और अपनी आवाज़ ऊंची किये बिना बहुत सादगी से कहा:

"काश मुझे मालूम होता कि कौन-सी ताक़त तुम सब लोगों का सफ़ाया कर सकती है! लेकिन मुझे नहीं मालूम है!.."

इसके बाद उसने कुछ नहीं कहा – बस, निश्चल बैठा रहा।

थोड़ी ही देर में पुलिस का एक अफ़सर दो पुलिसवालों के साथ अंदर आया।

उनके पीछे-पीछे तात्याना व्लास्येव्ना आयी, जिसने इल्या की ओर इशारा करके हांपते हुए कहा:

"इसने अभी खुद माना है... कि पोलुएक्तोव का खून... इसी ने किया है, उस महाजन का... याद है?"

"क्या इस बात का पक्का सबूत कोई दे सकता है?" अफ़सर ने जल्दी से कहा।

"क्यों नहीं? मैं दे सकता हूं," इल्या ने शांत भाव से थके हुए स्वर में कहा।

अफ़सर मेज़ के पास बैठकर लिखने लगा और दोनों पुलिसवाले

इल्या के दोनों ओर खड़े हो गये। इल्या ने उनकी ओर देखा और गहरी आह भरकर सिर झुका लिया। सिर्फ़ काग़ज़ पर क़लम चलने की खरखर की आवाज़ से कमरे की निस्तब्धता भंग हो रही थी, और बाहर अंधेरा एक ठोस काली दीवार की तरह खिड़कियों से सटा खड़ा था। एक खिड़की के पास कीरिक खड़ा बाहर रात के अंधेरे में घूर रहा था। अचानक उसने अपना रिवाल्वर एक कोने में फेंक दिया और अफ़सर से बोला:

"सवेल्येव! इसे ज़ोर का एक मुक्का मारकर छोड़ दो। यह पागल है।"

अफ़सर ने कीरिक की तरफ़ देखा, एक क्षण कुछ सोचा, फिर बोला:

"ऐसा नहीं कर सकता... उसने तो कुसूर मान लिया है..."

कीरिक जवाब में सिर्फ़ आह भरकर रह गया।

"तुम बहुत नरमदिल हो, कीरिक निकोदीमोविच," इल्या ने व्यंग-भरे स्वर में कहा। "कुछ कुत्ते होते हैं ऐसे – उन्हें चाहे जितना पीटो, वे फिर भी प्यार से दुम हिलाते रहते हैं... या शायद इसकी वजह यह न हो कि तुम्हें मुझ पर तरस आ रहा हो – शायद महज़ इसलिए ऐसा कर रहे हो कि तुम डरते हो कि मैं मुक़द्दमे के वक़्त तुम्हारी बीवी के बारे में सब कुछ बता दूंगा? डरो नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा! मुझे तो उसके बारे में सोचकर भी शर्म आती है, उसके बारे में बात करना तो दूर रहा।"

कीरिक जल्दी से बग़लवाले कमरे में जाकर कुर्सी पर धड़ से बैठ गया।

"अच्छा, तो," अफ़सर ने इल्या की ओर मुड़कर कहा, "इस काग़ज़ पर दस्तख़त कर दोगे?"

"कर दूंगा..."

उसे पढ़े बिना ही इल्या ने उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिख दिया: इल्या लुन्योव। सिर उठाने पर उसने देखा कि अफ़सर उसे आश्चर्य से घूर रहा था। कुछ सेकंड तक वे दोनों एक-दूसरे की आंखों में आंखें डाले घूरते रहे; एक की आंखों में ललचायी हुई दिलचस्पी और कुछ ख़ुशी थी, दूसरे की आंखों में शांत उदासीनता।

"क्या तुम्हारा अंतःकरण तुम्हें कचोट रहा था?" अफ़सर ने पूछा।

"इस दुनिया में कोई अंतःकरण नहीं है," इल्या ने निश्चय के साथ कहा।

वे फिर चुप हो गये। थोड़ी ही देर बाद कमरे से कीरिक की आवाज़ सुनायी दी।

"इसका दिमाग़ ख़राब हो गया है..."

"आओ, चलो," अफ़सर ने अपने कंधे उचकाते हुए कहा। "मैं तुम्हारे हाथ नहीं बांधूंगा, लेकिन... लेकिन... भागने की कोशिश न करना!"

"भागकर जाऊंगा कहां?" इल्या ने थोड़े-से शब्दों में पूछा।

"अच्छा, बहरहाल, क़सम खाओ। भगवान की क़सम खाओ!"

"मैं भगवान पर विश्वास नहीं करता..."

अफ़सर ने लाचारी से अपना हाथ हिलाया। "आओ, चलो," वह बोला।

अपने आपको चारों ओर से रात के अंधेरे और नमी में घिरा हुआ महसूस करते ही इल्या ने एक लंबी सांस ली, रुका और ऊपर आसमान को तकने लगा; आसमान इतना काला और नीचा था कि छोटी-सी घुटी हुई कोठरी की कलौंस-भरी छत जैसा लग रहा था।

"आओ, चलो," पुलिसवाले ने कहा।

वह चल दिया। सड़क के दोनों ओर मकान ऊंची-ऊंची चट्टानों की तरह खड़े थे। उसके पांवों के नीचे कीचड़ छप-छप कर रहा था, सड़क कहीं नीचे और भी गहरे अंधेरे में जा रही थी। इल्या एक पत्थर से टकराया और गिरते-गिरते बचा। उसकी आत्मा के सूनेपन में एक सवाल लगातार धड़कता रहा: "अब क्या होगा? क्या पेत्रूखा मेरे मुक़द्दमे का फ़ैसला करेगा?"

इस प्रश्न ने उसकी आंखों के सामने उस मुक़द्दमे की तस्वीर ला खड़ी की जो उसने अभी कुछ देर पहले देखा था – ग्रोमोव की प्यार-भरी आवाज़, पेत्रूखा का लाल चेहरा...

जिस पांव से ठोकर लगी थी उसकी उंगलियों में उसने दर्द महसूस किया और उसने अपने क़दम धीमे कर दिये। उसके कानों में "पेट-भरे लोगों" से संबंधित कहावत के जवाब में काले बलोंवाले आदमी

की खरी बात गूंज रही थी: "वे बहुत अच्छी तरह समझते हैं – इसीलिए तो वे इतनी सख़्ती बरतते हैं।"

फिर उसे ग्रोमोव की चिकनी-चुपड़ी आवाज़ सुनायी दी:

"क्या तुम इक़रार करती हो?..."

और फिर सरकारी वकील की ऊंघती हुई आवाज़ आयी:

"अच्छा, यह बताओ, मुल्ज़िम..."

उसे पेत्रूखा की चढ़ी हुई त्योरियां और उसके चलते हुए मोटे-मोटे होंट दिखायी दिये।

उस्तरे की धार जैसी तेज़ अकथनीय पीड़ा ने उसे आ दबोचा।

उसने आगे छलांग मारी और सड़क के पत्थरों को कसकर ढकेलता हुआ अपना पूरा ज़ोर लगाकर दौड़ने लगा। उसके कानों में हवा सीटी बजा रही थी, उसकी सांस हांपती हुई चल रही थी, अंधेरे में अपने शरीर को निरंतर आगे बढ़ाते जाने के लिए वह बांहें ज़ोर-ज़ोर से झुला रहा था। उसके पीछे पुलिसवालों के थप-थप करते हुए भारी क़दमों की आवाज़ सुनायी दे रही थी। सीटी की आवाज़ हवा को काटती हुई गूंज उठी और किसी ने भारी आवाज़ में चिल्लाकर कहा:

"पकड़ो! पकड़ो!"

इल्या के चारों ओर की सभी चीज़ें – मकान, सड़क, आसमान – चक्कर काट रही थीं और हिल रही थीं और एक बड़े-से ठोस काले पिंड की शक्ल में उसे कुचले दे रही थीं। अपनी थकन से बेख़बर और पेत्रूखा को देखने के भय से व्याकुल होकर वह आगे की ओर झपटता चला जा रहा था। परछाइयों के बीच से कोई धुंधली-सी सपाट चीज़ उसकी आंखों के सामने उभरी और उस पर निराशा की भावना छा गयी। उसे याद आया कि आगे चलकर सड़क ठीक दाहिनी ओर मुड़कर बड़ी सड़क से जा मिलती है। वहां लोग होंगे और वह पकड़ा जायेगा।

"आओ, पकड़ो मुझे!" वह आवाज़ का पूरा ज़ोर लगाकर चिल्लाया और सिर झुकाकर उसने अपनी रफ़्तार और तेज़ कर दी... उसके सामने पत्थर की एक सुरमई दीवार खड़ी थी। रात के अंधेरे में लहर के टकराकर टूट जाने जैसा धमाका सुनायी दिया। एक छोटा-सा, दबा-दबा धमाका, और फिर उसके बाद सन्नाटा छा गया।

दो और काली परछाइयां भागती हुई दीवार के पास पहुंचीं।

एक क्षण के लिए वे दोनों ज़मीन पर पड़ी हुई तीसरी परछाईं पर झुकीं ... कुछ और लोग पहाड़ी की ढलान पर भागते हुए आये ... चीखने की आवाज़ें। भागते हुए क़दमों की आहट, सीटी की तीखी आवाज़ ...

"मर गया, क्या?" एक पुलिसवाले ने हांपते हुए कहा।

दूसरे ने माचिस जलायी और उकड़ूं बैठ गया। उसके पांवों के पास कसकर भिंची हुई एक मुट्ठी ज़मीन पर टिकी हुई थी जो धीरे-धीरे ढीली पड़ रही थी।

"बिल्कुल ... अरे, इसकी खोपड़ी तो आर-पार खुल गयी है।"

"यह देखो। उसका भेजा।"

अंधेरे में से काली आकृतियां उभरती रहीं।

"बदनसीब शैतान," खड़ा हुआ पुलिसवाला बुदबुदाया। दूसरा भी उठकर खड़ा हो गया, उसने उंगलियों से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया, और थके हुए हांपते स्वर में बोला :

"ख़ैर, बहरहाल – भगवान उसकी आत्मा को शांति दे!"

१६००–१६०१

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है :

रादुगा प्रकाशन,
१७, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

त्रोयेपोल्स्की ग०। **श्याम कर्णी श्वेत बीम।**
लघु उपन्यास

कुत्ते की वफ़ादारी की इस मर्मस्पर्शी, दुखांत कहानी के लिए लेखक गव्रिईल त्रोयेपोल्स्की को राज्य पुरस्कार मिल चुका है और इस कहानी पर फ़िल्म भी बन चुकी है।

...बीम के मालिक बूढ़े लेखक को अस्पताल में भरती होना पड़ता है। बस यहीं से कुत्ते की भटकन, उसकी अच्छे-बुरे लोगों से मुलाकातें शुरू हो जाती हैं।

बीम की, जो अपने मालिक के लौटने की आस आखिर तक नहीं छोड़ता, कहानी सर्वोत्तम रूसी यथार्थवादी गद्य की परंपरा में लिखी गयी है।
पुस्तक सचित्र है।
१३×२० सें, २८८ पृ०

क्रांति ज्वार के मोती। क्रांति की कहानियां

"हमारा सौभाग्य है कि लोगों को समाजवादी जीवन के बारे में और उसे कैसे साकार बनाया गया, इस बारे में बताने का अवसर सबसे पहले हमें मिला है," अलेक्सांद्र फ़देयेव के ये शब्द इस संग्रह के अन्य लेखक – सोवियत देश के प्रथम शिक्षा जन-कमिसार अ० लुनाचार्स्की, अकादमीशियन ब० बोंच-ब्रुएविच, सुविख्यात क्रांतिकारी अ० कोल्लोन्ताई, साहित्यकार म० गोर्की, म० शोलो-खोव, क० फ़ेदिन, व्से० इवानोव, क० पाउस्तोव्स्की और वे० पानोवा – भी साधिकार कह सकते हैं।

इस संग्रह में प्रकाशित कहानियां बताती हैं कि अक्तूबर क्रान्ति की तैयारियां कैसे की गयी थीं और गृहयुद्ध के वर्षों में क्रांतिप्रेरित जनता ने कैसे अनुपम शौर्य का प्रदर्शन किया था।

संग्रह में लेखकों का संक्षिप्त परिचय और कई दस्ता-वेज़ी चित्र भी दिये गये हैं।
११×१७ सें०, ३२८ पृ०, सजिल्द, सचित्र

М. Горький

ТРОЕ

Повесть

На языке хинди

Перевод сделан по изданию М. Горький, Полное собрание сочинений, т. 5, „Наука", 1970.